छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा **चतुर्दश सत्र**

बुधवार, दिनांक 27 जुलाई, 2022

(श्रावण 05, शक सम्वत् 1944)

[अंक 06]

Web copy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

बुधवार, दिनांक 27 जुलाई, 2022

(श्रावण 5, शक संवत् 1944)

विधान सभा पूर्वाह्न 11:00 बजे समवेत हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

<u>तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर</u>

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बहुत दिन बाद मुख्यमंत्री जी का प्रश्न पहले नम्बर पर है । हम लोगों को इसमें पूछने का अवसर दे दीजिएगा । मुख्यमंत्री जी से पूछने की इच्छा सबको रहती है ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल हरेली है और आज सत्र का आखरी दिन है । उसके लिए आपको बधाई ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, आज पहली बार मुख्यमंत्री जी पहले नम्बर में फंसे हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- फंसने की क्या बात है ?

अध्यक्ष महोदय :- देखते हैं कि धरम लाल जी उनको कितना फंसा पाते हैं ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी को फंसाने की जरूरत थोड़ी है । उन्होंने जो खुद किया है, वे उसी में फंसे हुए हैं । हमको फंसाने की क्या जरूरत है ?

अध्यक्ष महोदय :- आप भसीन जी का प्रश्न कर रहे हैं ।

अनियमित, संविदा, दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों का नियमितिकरण

[सामान्य प्रशासन]

1. (*क्र. 795) श्री विद्यारतन भसीन : क्या मुख्यमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- प्रदेश में कार्यरत अनियमित, संविदा, दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी को नियमित करने के लिए क्या कोई समिति का गठन किया गया है ? यदि हॉ तो सदस्य कौन-कौन हैं, कब-कब बैठकें हुई हैं तथा समिति के

द्वारा क्या अनुशंसाएं की गई हैं और उन पर क्या कार्यवाही की गई है ? यदि अनुशंसा नहीं की गई है तो कब तक की जावेगी ?

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :जी हाँ। सामान्य प्रशासन विभाग के आदेश क्रमांक एफ 12-1/2019/1-3, दिनांक 11.12.2019 द्वारा प्रमुख सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग तथा सार्वजनिक उपक्रम विभाग की अध्यक्षता में निम्नानुसार समिति गठित की गई है-

1	प्रमुख सचिव, विधि और विधायी कार्य विभाग	- सदस्य
2	सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग	- सदस्य-सचिव
3	सचिव, वित्त विभाग	- सदस्य
4	सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग	- सदस्य
5	सचिव, आदिम जाति तथा अनुसूचित जनजाति विकास विभाग	- सदस्य

समिति की बैठक दिनांक 09.01.2020 को सम्पन्न हुई है। समिति द्वारा बैठक में की गई अनुशंसा निम्नानुसार है:-

(1) विभागों में पदस्थ अनियमित, दैनिक वेतनभोगी एवं संविदा पर कार्यरत कर्मचारियों की संख्या की पूर्व उपलब्ध औपचारिक जानकारी प्राप्त की जाये।(2) विधि एवं विधायी कार्य विभाग का परामर्श/अभिमत प्राप्त किया जाए।(3) पूर्व में गठित समिति द्वारा अब तक की गई कार्यवाही की जानकारी प्रस्तुत की जाए।समिति द्वारा की गई अनुशंसा अनुसार विभागों तथा उनके अधीनस्थ विभागाध्यक्ष कार्यालय/निगम/मंडल/आयोग/संस्था आदि में पूर्व से कार्यरत् अनियमित, दैनिक वेतनभोगी एवं संविदा पर कार्यरत कर्मचारियों की जानकारी चाही गई है। नियमितीकरण के संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा विधि एवं विधायी कार्य विभाग से भी अभिमत प्राप्त किया जा रहा है। विधि विभाग द्वारा उक्त के संबंध में महाधिवक्ता का अभिमत चाहा गया है। विधि विभाग के टीप दिनांक 28.05.2019 में लेख किया गया है कि महाधिवक्ता का अभिमत प्राप्त होने पर सामान्य प्रशासन विभाग को प्रेषित किया जायेगा, जो अपेक्षित है। प्रश्न उपस्थित नहीं होता।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी ने घोषणा-पत्र में यह कहा था कि जितने भी अनियमित, संविदा एवं दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी हैं, हम उन सबको नियमित करेंगे । सन् 2018 में चुनाव होने के बाद अभी 2022 तक की क्या स्थिति है ? उन्होंने उत्तर दिया है कि एक समिति बनाई गई है और उस समिति की एक बैठक होने की जानकारी दी है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि यह जो समिति बनाई गई है, उसकी कुल कितनी बैठकें हो गई हैं ? और समिति ने जानकारी के लिए जो सिफारिश की है, अनुशंसा की है, क्या वह जानकारी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आ गई कि प्रदेश में कुल कितने अनियमित, संविदा और दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी हैं और उनकी संख्या क्या है ?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रमुख सचिव, वाणिज्य एवं उद्योग तथा सार्वजनिक उपक्रम विभाग की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई है, जिसमें प्रमुख सचिव विधि-विधायी, सचिव सामान्य प्रशासन विभाग, सचिव वित्त विभाग, सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग एवं सचिव आदिमजाति तथा अनुसूचित जनजाति विकास विभाग सदस्य हैं । इनकी पहली बैठक 09.01.2020 हुई है और इसमें यह निर्णय लिया गया है कि किन-किन विभागों में, निगम मण्डलों में कितने-कितने दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी हैं और उसकी जानकारी एकत्रित की जा रही है । कुछ विभागों की जानकारी आ गई है । कुछ विभागों की जानकारी नहीं आई है, लेकिन यह भी कहा गया है कि विधि विभाग से अभिमत ले लिया जाये और विधि विभाग के अभिमत के बाद ही इसमें फैसला लिया जाएगा क्योंकि इसमें बहुत सारे न्यायालयीन प्रकरण भी हैं और उन सबको देखते हुए कोई फैसला लेना पड़ेगा ।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि विधि विभाग से अभिमत के लिए प्रतीक्षा में है । विधि विभाग को 2019 में पत्र भेजा गया है, उसके बाद अभी तक उनका अभिमत नहीं आया है । अभिमत नहीं आया है तो इसके लिए कितनी बार पत्राचार की गई है और जब समिति 2019 में गठित की गई है तो क्या इन 5 वर्ष के कार्यकाल की अवधि में हम उम्मीद करें कि विधि विभाग का अभिमत आ जाएगा, उसके बाद ही इसमें आगे की कार्यवाही होनी है। मुख्यमंत्री जी ने बताया कि कुछ जगह से जानकारी नहीं आई है । यह 2020 का है । सन् 2019 में अभिमत के लिए विधि विभाग को पत्र गया है और 2020 की बैठक के बाद जिन विभागों की जानकारी आ गई और जिन विभागों की जानकारी नहीं आई। सामान्य प्रशासन विभाग आपके पास में है, फिर भी सन् 2020 से अभी तक जानकारी नहीं आई है, यह बहुत आश्चर्यजनक बात है । यही से आप एक बार निर्देश कर देंगे तो आधे घंटे के अंदर जानकारी आ जाएगी, लेकिन 2020 के बाद में जानकारी नहीं आई है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता जी, बिना अनुमोदन के ट्रांसफर हुए हैं, उनकी जानकारी मुख्यमंत्री जी ने सामान्य प्रशासन विभाग से तत्काल बुलवा ली ।

श्री धरम लाल कौशिक :- उसको तो कर लेंगे । मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि इनकी दूसरी बैठक कब होगी और जानकारी नहीं आई है तो वह जानकारी कब तक आ जाएगी । अभिमत के लिए कितने बार पत्राचार किया गया है और ए.जी. या विधि विभाग के द्वारा कब तक अभिमत कमेटी के पास जायेगी, यह जानकारी देंगे ?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सभी विभागों को पत्र लिखने के लिए निर्देशित करूंगा ताकि जल्दी से जल्दी जानकारी आ जाये, निगम मण्डलों से भी जानकारी आ जाये। दूसरी बात

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

यह है कि मुझे जो जानकारी मिली है कि विधि विभाग के द्वारा ए.जी. से अभिमत लेने के लिए पत्राचार किया गया है। वह पत्राचार कब-कब किया गया है, मैं उसकी अतिरिक्त जानकारी दे दूंगा। लेकिन उन्होंने ए.जी. से अभिमत लिया है।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय,..

अध्यक्ष महोदय :- अपने शेष लोगों के लिए प्रश्न बचा दीजिये।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, घोषणा-पत्र को आत्मसात किया गया है। मैं आपको बताना चाहूंगा कि इसमें कौन-कौन से विभाग हैं, लोक निर्माण, सिंचाई, सफाई कर्मी, मनरेगा कर्मी, विद्या मितान, अतिथि शिक्षक, होमगार्ड, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कर्मी, स्वास्थ्य कर्मी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानीन, वन कर्मी, पी.एच.ई. कर्मी ऐसे अनेक विभाग के कर्मचारी हैं। घोषणा-पत्र को आत्मसात किया गया है और इन सबको नियमित करने की बात आई है। तो अभी तक अभिमत नहीं आना, इससे सरकार की नीयत स्पष्ट दिख रही है कि सरकार की नीयत क्या है ? सन् 2019 के बाद अभी तक अभिमत नहीं आया है और विभाग से जानकारी नहीं आया है। तो माननीय मुख्यमंत्री जी, मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि एक तो जानकारी कब तक आ जायेगी, उसको सुनिश्चित करें, कब तक अभिमत आ जायेगी, सुनिश्चित करें। आपने जो घोषणा-पत्र जारी किया है कि हम नियमित करेंगे, तो इनको कब तक नियमित करेंगे, समय-सीमा बताने का कष्ट करें ?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, समय-सीमा बताना तो संभव नहीं है। लेकिन यह है कि हम कोशिश करेंगे कि अतिशीघ्र, जल्दी से जल्दी हो जाये। कमेटी की बैठक हुई है और सभी विभागों को पत्र लिख दिया गया है। जानकारी आयेगी, हमें घोषणा-पत्र की बड़ी चिंता है। निश्चित रूप से आप खुद ही देख रहे हैं कि एक साल चुनाव में निकला, दो साल कोरोना में निकला, हम लोग कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़ते रहे। अब समय मिला है, हम लोगों ने घोषणा-पत्र में जा कहा है, हम निश्चित रूप से पूरी करने की कोशिश करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोयद, मुझे व्यक्तिगत तौर पर मुख्यमंत्री जी से ऐसे उत्तर की अपेक्षा नहीं थी। आज के ही प्रश्नोत्तरी में प्रश्न नं. 16 में बृजमोहन जी ने प्रश्न पूछा है। सामान्य प्रशासन की जो समिति बनी है, वह ठीक है। लेकिन उसमें लिखा है कि कुछ लोगों को नियमित किया जा चुका है और अभिमत प्राप्त हो चुके हैं। आप प्रश्न नं. 16 के परिशिष्ट को देख लीजिये, जिसमें उन्होंने 25 लोगों को नियमित किया है। परिशिष्ट दो पेज का है, जिसमें वित्तीय वर्ष 2019-20 में तृतीय श्रेणी के 6 लोग तथा चतुर्थ श्रेणी के 5 लोग हैं, वित्तीय वर्ष 2020-21 में तृतीय श्रेणी के 7 लोग और चतुर्थ श्रेणी के 2 लोग हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, कुल 25 लोगों को तो नियमित किया गया है। तो इन 25 लोगों को किस आधार पर नियमित किया गया है, जब मुख्यमंत्री जी यह जवाब दे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रहे हैं कि अभी महाधिवक्ता से अभिमत नहीं आया है और बाकी प्रक्रियाएं नहीं हुई हैं। तो ये 25 लोग किस आधार पर नियमित हुए हैं ?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब 16 वें नंबर का प्रश्न आयेगा तो मैं उत्तर दूंगा। 16वें नंबर का प्रश्न पहले पूछोगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप दोनों प्रश्नों को देख लीजिये। यह विधानसभा की अवमानना है। सवाल समय का नहीं है। एक ही प्रश्न, एक ही तरह की चीज है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब ये मानेंगे तभी तो 16वें नंबर का प्रश्न आयेगा। ये मानने को तैयार ही नहीं हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के 25 लोगों को नियमित किया गया है। यह मुख्यमंत्री जी ने स्वीकार किया है और आज ही स्वीकार किया है। मैं कोई पिछली बात नहीं कह रहा हूं और ना अगले दिन के प्रश्न की बात कर रहा हूं। मुख्यमंत्री जी कहे कि 16वें नंबर का प्रश्न आयेगा तब प्रश्न करें तो मुख्यमंत्री जी की विश्वसनीयता खत्म हो जायेगी तो फिर विधानसभा में बचा क्या ? यदि दल के नेता ऐसा उत्तर देंगे तो बचेगा क्या ? माननीय अध्यक्ष जी, मैं चाहता हूं कि आप इस पर संज्ञान लें, आप संज्ञान लीजिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये ज्यादा विचलित हो रहे हैं, इनका मेडिकल टेस्ट कराया जाये।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, सदन में यह परम्परा रही है कि एक ही श्रेणी के प्रश्न एक साथ एक ही दिन लग जाते हैं तो कई बार सदन में आसंदी से निर्देश हुए हैं कि दोनों प्रश्नों को एक साथ ले लिया जाये। कई बार ऐसा हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- आपका कोई प्रश्न है क्या ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं इस प्रश्न कर रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- प्रश्न जिसका भी हो।

श्री शिवरतन शर्मा :- मेरे प्रश्न का उत्तर तो आ जाये।

श्री अमरजीत भगत :- आप सीधे यहां से आसंदी को भी डायरेक्शन दे रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपका प्रश्न है ?

श्री अमरजीत भगत :- आप आसंदी को भी सीधे यहां से डायरेक्शन दे रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं आयेगा। आप प्रश्न करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके (मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल) प्रश्न में तो कम से कम गम्मत मत करें। आप सक्षम हैं, हम मानते हैं कि आप सक्षम हैं।

श्री अमरजीत भगत :- आसंदी को आप डायरेक्शन दे रहे हैं । ऐसे थोड़े न होता है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- हम मानते हैं, आप सक्षम है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी...।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपना प्रश्न करिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी ने अपने जवाब में लिखा है कि 11-12-2019 को प्रमुख सचिव की अध्यक्षता में समिति गठित हुई । इस समिति की पहली बैठक 9-1-2020 को हुई है । माननीय मुख्यमंत्री जी का उत्तर है । इसमें आखिरी में पैरे में लिखा है विधि विभाग की टीप दिनांक 28-5-2019 में उल्लेख किया गया है कि महाधिवक्ता का अभिमत प्राप्त कर लिया जाये । आप इस विषय पर 11-12-2019 को समिति गठित कर रहे हो । पहली बैठक 9-1-2020 को हो रही है । इस विषय पर आप 28-5-2019 को टीम मंगा रहे हो । यह अपने आप में बड़ी घटना है ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न करिये ना, क्या करना चाहते हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रश्न यही कर रहा हूँ कि आपने विधि विभाग की टीप किस आधार पर 28-5-2019 को मंगाई है ? जबकि आपकी बैठक ही पहली बार 9-1-2020 को हुई है ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शासन किसी से भी अभिमत मंगा सकता है । जरूरी नहीं है कि कमेटी गठन हो । वह जो अभिमत मंगाये हैं, कमेटी गठित होने के बाद जो अभिमत आयेगा, उसमें इन्क्लूड कर देंगे । उसमें क्या है, शासन मंगा सकता है । हम तो नियमितीकरण करने की बात कर रहे हैं तो शासन अभिमत मंगा लिया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप बात कर रहे हो ...। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं इनकी बात कर रहा हूँ । दोनों एक साथ पुछेंगे तो कैसे होगा ? इनको पूछने दीजिए ।

श्री अमरजीत भगत :- आप लोग 15 साल में तो कभी किये नहीं है ।

श्री भूपेश बघेल :- जब वह प्रश्न पूछ रहे हैं तो आप बैठे । अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन है, दो-दो माननीय सदस्य एक साथ खड़े होंगे, कैसे होगा ।

(माननीय सदस्य श्री अजय चन्द्राकर के बैठने पर)

श्री भूपेश बघेल :- हॉं, अब ठीक है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, आप मेरा प्रश्न सुन लीजिए । हमारा जो प्रश्न है, उसमें यह है कि कब-कब बैठकें हुई तथा समिति द्वारा क्या अनुशंसायें की गई और उन पर क्या कार्यवाही की गई ? यदि अनुशंसा नहीं की गई तो कब तक की जायेगी ? आप बोल रहे हो कि हमने विधि विभाग से टीप मंगाई । इस समिति की अनुशंसा पर हमने प्रश्न किया है । हमारा जो प्रश्न है, जो समिति गठित हुई है, उसी अनुशंसा पर, जो हमने पूछा नहीं, आप बोल रहे हैं कि हमने पहले टीम मंगा ली । जो हमने पूछा नहीं है, आप उसका उत्तर काहे को लिख कर दे रहे हो ? यह पहला विषय है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूँ कि 9-1-2020 को बैठक सम्पन्न हुई है । इस बैठक को ढ़ाई साल से ऊपर हो गये हैं । ढ़ाई साल में अगर विधि विभाग ने रिपोर्ट नहीं दी है, दोबारा बैठक नहीं हुई है, क्या इसके लिये किसी स्तर पर सरकार ने समीक्षा की है । समीक्षा हुई है तो समीक्षा बैठक में कौन-कौन उपस्थित था ? समीक्षा में क्या निर्णय लिया गया, इसकी जानकारी सदन को अवगत करा दें ।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, यह हमेंशा कन्फूयज करने की कोशिश करते हैं । शिवरतन जी को इसमें बड़ी महारत है ।

अध्यक्ष महोदय :- उलझाने की ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं सुना नहीं हूँ, फिर से आप एक बार बोल दो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कन्फ्यूज करते हो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मैं कन्फ्यूज नहीं करता ।

श्री भूपेश बघेल :- शिवरतन जी, मैं बोल रहा हूँ तो आप सुन तो लो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने मेरे ऊपर आरोप लगाया है ना कि मैं कन्फ्यूज करता हूं । आप उत्तर देने में कन्फ्यूज हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- आप बैठ जायें तो मैं उत्तर दूँ । माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लाईन जो आप पढ़े हैं, विधि विभाग की टीप 28-5-2019 में उल्लेख किया गया है कि महाधिवक्ता से अभिमत प्राप्त करने हेतु सामान्य प्रशासन विभाग को प्रेषित किया जाये । अध्यक्ष महोदय, इसी पैरा के ऊपर पहला लाईन पढ़ लेंगे, नियमितीकरण के संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा विधि विधाई कार्य विभाग से अभिमत प्राप्त किया जा रहा है । सामान्य प्रशासन विभाग ने विधि विभाग को पत्र लिखा कि इस मामले में अपना अभिमत दें । कमेटी की बैठक जो है वह 9-1-2020 को हुई है । प्रमुख सचिव, उद्योग की अध्यक्षता में कमेटी का गठन किया गया है । अभिमत सामान्य प्रशासन विभाग से मांग लिया गया है । इसमें गलत क्या है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप हमारा प्रश्न पढ़ लें ।

अध्यक्ष महोदय:- चलिये, अनूप नाग जी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, हमारा प्रश्न पढ़ लें ना । हमने अपने प्रश्न में बहुत स्पष्ट लिख है कि कब-कब बैठे हैं, इस समिति द्वारा क्या-क्या अनुशंसायें है और क्या कार्यवाही की गई ?

श्री भूपेश बघेल :- हमने तो बता दिया है कि एक बैठक हुई है । उसको जबरदस्ती उलझा रहे हैं । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- मंत्री जी उत्तर पूछते रहे हैं । (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- गंभीर मामला है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- घोषणा पत्र को आत्मसात किया गया है । एक बैठक हुई है ..(व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- तीन साल को अभिमत ...(व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- सब की अपेक्षायें जगाई । व्यवधान एक बैठक हुई उसके बाद बैठक ...व्यवधान दोबारा कब बैठक होगी । वर्ष 2019 का मामला है, आज 2022 हो गया । उसके बाद में अभिमत नहीं आया । जवाब तो आ ही नहीं रहा है । (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- वर्ष 2019 का मामला है तो अभिमत क्यों नहीं आया । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- वर्ष 2022 हो गया, उसके बाद अभिमत नहीं आया । मंत्री जी का जवाब तो आ ही नहीं रहा है । (व्यवधान) या बता दें कि इतने ...(व्यवधान) बता दें कि कितने तारीख तक नियमितीकरण कर देंगे । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- 2500 नियमित हो गये । ...(व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- कैबिनेट का अनुमोदन है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी, सदन को गुमराह कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- प्रतिपक्ष के नेता जी को बोलने दिया जाये।

श्री सौरभ सिंह :- सुप्रीम कोर्ट का 2006 का क्लीयर कट निर्देश है कि नियमितिकरण नहीं हो सकता। इनको पता था, तब भी इन्होंने जन घोषणा पत्र में जोड़ा।

श्री धरमलाल कौशिक :- असली बात यह है। उसको बताना चाहिए। (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- किसी राज्य में नियमितिकरण नहीं हुआ है। कोर्ट का निर्देश था कि नियमितिकरण नहीं हो सकता, उसके बाद भी जनघोषणा में शामिल किया गया । (व्यवधान)

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- 15 साल में आप लोगों ने कुछ नहीं किया।

श्री सौरभ सिंह :- यह सुप्रीम कोर्ट का निर्णय है इसलिए 03 साल से अभिमत नहीं आया और न ही अभिमत आयेगा।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोगों ने समस्या को इतना बढ़ा दिया था तो इतनी जल्दी कैसे होगा।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय सौरभ सिंह जी अब तो केन्द्र सरकार ने 04 साल वाला अग्निवीर शुरू कर दिया है। कभीं यह देश भर में लागू कर दिया कि सब विभागों में 04 साल ही रखा जायेगा तो उसमें भी विचार करना पड़ेगा न, ऐसे थोड़ी है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय मुख्यमंत्री जी, सुप्रीम कोर्ट का 2006 का निर्णय है, नियमितिकरण नहीं हो सकता। आपको पता था, जब आप इधर थे तो उस प्रश्न को आप लगाते थे।

श्री भूपेश बघेल :- सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना न हो इसलिए अभिमत मांगा गया है।

श्री सौरभ सिंह :- इसीलिए अभिमत नहीं आ रहा है। 03 साल 02 महीने में अभिमत नहीं आ रहा है और न आयेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भूपेश बघेल :- आप कैसे बोल दिये कि नहीं आयेगा। अभिमत आयेगा और निर्णय भी आयेगा। एकत्रित भी कर रहे हैं और निर्णय भी आयेगा। आप चिंता मत करो। लेकिन डर इस बात का है कि यदि अग्निवीर सभी विभागों में लागू कर दिये तब क्या होगा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी तो उत्तर नहीं दिये हैं, अगले सत्र में उत्तर आयेगा। वर्तमान में तो उत्तर आ नहीं रहा है।

श्री अमरजीत भगत :- आप लोगों ने 15 साल में कुछ नहीं किये इसलिए जनता ने आप लोगों को सबक सिखाया है।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट तो सुनिये। प्रश्न तो सौरभ सिंह जी भी कर रहे हैं मगर वह मुस्कुराते हुए प्रश्न कर रहे हैं। आप प्रश्न आक्रोशित होकर कर रहे हैं। यह प्रश्न जबरदस्ती कर रहे हैं। ऐसा कैसे होगा ? आप प्रश्न को प्रश्न की तरह करिये न।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, मैंने प्रश्न आपकी अनुमति से किया है।

अध्यक्ष महोदय :- आप कितनी बार अनुमति लेंगे ? आप तो यहां आसंदी में बैठते हैं, आप सभापति हैं, एक व्यक्ति कितने बार पूरक प्रश्न कर सकता है, आप यह बता दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने सिर्फ एक प्रश्न किया है और pointed प्रश्न किया है।

अध्यक्ष महोदय :- उसको तीन बार में प्रश्न किया है। आप उसी प्रश्न को दोहरा रहे हैं जिसको कौशिक जी ने किया है। आज तो आपको दिल भर खेलना है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत pointed प्रश्न किया है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उसकी समय-सीमा बता दें न। एक प्रश्न पूछे हैं, उसकी समय सीमा बता दें। इसके बाद जरूरत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न पूछ लीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- हम तो पूछ रहे हैं, शिवरतन शर्मा जी, अजय चन्द्राकर जी भी पूछ रहे हैं। उसकी समय-सीमा बता दें।

अध्यक्ष महोदय :- महाराज, वही-वही प्रश्न पूछ रहे हैं न।

श्री अमरजीत भगत :- इनको तो अपने नेता पर भरोसा नहीं है, जब नेता जी खड़े होते हैं तो सब लोग खड़े हो जाते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- एक तो मुख्यमंत्री जी का पहला प्रश्न आया है, पहली बार आया है, उसके बाद आप लोग ऐसे चढ़ रहे हैं जैसे लड़ाई हो रही है। आप प्रश्न करिये न।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ले देकर तो फंसे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- तो फंसाईये न। किसको आपत्ति है ? आप अच्छे से फंसाईये। एक ही जगह का मत पकड़िये न, सब जगह का पकड़िये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा pointed प्रश्न था और आपसे आग्रह कर रहा हूं कि मेरे pointed प्रश्न का आप pointed उत्तर दिला दीजिए। दिनांक 09.01.2020 को समिति की पहली बैठक संपन्न हुई। इस बैठक के बाद आपने अनुशंसा की है कि विधि विभाग का अभिमत मांगा गया है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि उसके बाद ढाई साल तक कभी इस विषय पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। क्या आपने कभी इसके लिए मंत्रिमंडल स्तर पर समीक्षा बैठक की ? यदि समीक्षा बैठक हुई तो उस बैठक में कौन-कौन उपस्थित थे और क्या निर्णय लिया गया, आप यह जानकारी दे दें।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहली बात तो यह है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- एक बार उत्तर तो आने दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- सब लोग प्रश्न कर लें उसके बाद उत्तर दे देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आप भी प्रश्न पूछ लीजिए, एक साथ उत्तर दे देंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर तो आ जाये। मुख्यमंत्री जी उत्तर देने के लिए खड़े हुए और फिर बैठ गये। माननीय अध्यक्ष जी, मैंने pointed प्रश्न किया है, आप उसका उत्तर दे दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- उसका pointed उत्तर दे रहे हैं, आप सुनेंगे तब न।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सारे सदस्य एक साथ पूछ लें मैं उसके बाद एक साथ उत्तर दे दूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम नहीं पूछ रहे हैं, आप उत्तर दे दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- आप पहले प्रश्न पूछ लीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, आसंदी के कहने से मैंने pointed प्रश्न किया है, माननीय मुख्यमंत्री जी उत्तर क्यों नहीं दे रहे हैं ? वह क्यों बैठे हैं ? क्या माननीय मुख्यमंत्री जी के पास मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं है ? और यदि उत्तर नहीं है तो आप बोल दीजिए कि मैं उत्तर देने की स्थिति में नहीं हूं, उत्तर नहीं दे सकता। यदि आपके पास उत्तर है तो उत्तर दीजिए । यह तो सदन का अपमान है कि हम प्रश्न कर रहे हैं और मुख्यमंत्री जी बैठे हुए हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने आपके ही निर्देशों में प्रश्न पूछा है।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने निर्देश दिया है तो आप कितनी देर तक प्रश्न पूछेंगे यह बता दीजिये?

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मेरे एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं आया है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न का उत्तर नहीं आया है तो एक प्रश्न एक घण्टे तक चलेगा?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री कवासी लखमा :- 20 मिनट हो गये। 20 मिनट तक पूछेंगे?

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने पूछा है कि जब बैठक वर्ष 2020 में हुई तो वर्ष 2019 में अभिमत कैसे ले लिया गया। मैं बताना चाहता हूं कि समिति का गठन वर्ष 2019 में कर लिया गया था और बैठक वर्ष 2020 में हुई। इस बीच में सामान्य प्रशासन विभाग ने विधि विभाग से अभिमत ले लिया। अभिमत को उसमें जोड़ने की बात है। जो जानकारी लेनी है वह कमेटी ले, चाहे सामान्य प्रशासन विभाग ले, तो जानकारी मंगा ली गयी। अब वह अभिमत आयेगा तो उसमें जोड़ दिया जायेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं आया है।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं आया तो ठीक है, श्री अनूप नाग जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पूछा था कि क्या आपने समीक्षा की?

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, कोई लिमिटेशन है या नहीं है?

श्री भूपेश बघेल :- क्या?

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। मैंने आपसे पूछा था कि क्या आपने समीक्षा की? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- श्री अनूप नाग

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, नियम .. (व्यवधान)आपने समीक्षा की? इसका जवाब आ ही नहीं रहा है। (व्यवधान)

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- अध्यक्ष महोदय, (व्यवधान) उसके तहत एक सप्लीमेण्ट्री क्वेश्यन किया जा सकता है। आप लोग उस नियम की भी अवहेलना कर रहे हैं। कभी कोई खड़ा हो जाता है, कभी कोई खड़ा हो जाता है।

एक माननीय सदस्य :- अध्यक्ष महोदय, (व्यवधान) तो याद नहीं आया। इन लोगों ने खुद 15 साल में इसके बारे में कभी नहीं सोचा। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सवाल का जवाब ही नहीं आ रहा है।

श्री संतराम नेताम :- (व्यवधान) 20 मिनट में ... (व्यवधान)।

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष महोदय, (व्यवधान) क्या कोरोना काल में कोई बैठक हो सकती थी?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आप प्रदेश के पूरे कर्मचारियों का नियमितीकरण करने का कष्ट करें।

श्री अमरजीत भगत :- वाह, बहुत खूब। यह घड़ियाली आंसू है।

श्री कवाली लखमा :- आप लोगों ने 15 साल में क्यों नहीं किया?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- श्री अनूप नाग।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, हम लोग चाहते हैं कि यह समय-सीमा बता दें। यह बता दें कि समीक्षा बैठक कब करेंगे? कुछ भी जवाब नहीं आ रहा है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने पहले ही उत्तर दे दिया है। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने जो सवाल पूछे, उनके सारे सवाल आ गये हैं। उन्होंने जो प्वाइंटेड प्रश्न पूछा, मैंने उनके प्वाइंटेड उत्तर दे दिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप समय-सीमा नहीं बता रहे हैं। आप कब समीक्षा करेंगे, वह नहीं बता रहे हैं। एक बैठक किये हैं तो 12 बजे तक .. (व्यवधान)।

श्री भूपेश बघेल :- पहले सुनो तो। अब मैं बोल रहा हूं तो आप सुन नहीं रहे हैं। नेता जी, आपने सवाल किया, मैं उत्तर देने की कोशिश कर रहा हूं। आप जब सवाल कर रहे थे तब मैं बैठा था। अब मैं जब कृपा करके खड़ा हो गया हूं तो आप बैठ जाईये।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं बैठ जाता हूं।

श्री भूपेश बघेल :- ... यह खड़े ही रहते हैं। आप सब लोगों की वही स्थिति है।

श्री शिवरतन शर्मा :- सब बैठे हैं। आपको सुनने के लिये बैठे हैं।

श्री भूपेश बघेल :- आपने सारे सवाल किये। मैंने एक-एक करके उत्तर दे दिये। आपने पूछा कि आप कब बैठक करेंगे, कब तक की जानकारी एकत्रिक करेंगे। मैंने उन सारे बिंदुओं पर कहा कि एक-एक करके हम अतिशीघ्र कर देंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- एक का भी जवाब नहीं आया।

श्री धरमलाल कौशिक :- तो उसमें जवाब कहां आया है?

श्री भूपेश बघेल :- आप फिर खड़े हो गये?

श्री धरमलाल कौशिक :- हम वही तो बोल रहे हैं कि आप उसमें जवाब दीजिये। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, इस बात की तकलीफ है कि जब मैं जवाब देने के लिये खड़ा हुआ हूं तो आपने फिर वैसी किया कि आप खड़े हो गये। (व्यवधान) मैं जब खड़ा हुआ हूं, (व्यवधान) जब जवाब दे रहा हूं, तब तो चुप बैठना चाहिये।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, ये हर बार अलग-अलग प्रश्न कर रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- जवाब आना चाहिये। अभिमत नहीं आया।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं जवाब तो दे रहा हूं। क्या अभी मेरा जवाब कम्पलीट हुआ है? अभी मेरा जवाब कम्प्लीट ही नहीं हुआ है ओर आप खड़े हो गये हैं। यह तो गलत बात है और यह परंपरा भी ठीक नहीं है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आपको असंतुष्ट होने का पूरा अधिकार है और इसके लिये इस संविधान में जो व्यवस्था है, वैसा करिये। यदि आपके सवाल का जवाब नहीं आया तो आप जहां जाना चाहते हैं जो सकते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, हमारा उत्तर नहीं आया। मैंने पूछा है कि क्या आपने समीक्षा की? समीक्षा में (व्यवधान)। आप उत्तर दीजिये ।

श्री अमितेश शुक्ल :- अध्यक्ष महोदय, जहां मुख्यमंत्री जी खड़े हो गये हैं तो यह शिवरतन शर्मा जी क्यों खड़े हो जाते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने सिर्फ यह प्रश्न किया है कि क्या आपने समीक्षा की?

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, असल में शिवरतन शर्मा जी को समझ नहीं आ रहा है। जब नेता जी ने पूछा तो मैंने बताया कि प्रमुख सचिव, उद्योग उसके बाद उनके सदस्य के कोई ..। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- यह तो आपने समिति की..(व्यवधान)।

अध्यक्ष महोदय :- हर बार..।

श्री भूपेश बघेल :- फिर, फिर। सुनो तो सही, एक मिनट सुनो।

श्री शिवरतन शर्मा :- जब वर्ष 2020 के बाद समिति की बैठक नहीं हुई तो मैंने...।(व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- मैं जब (व्यवधान)। यह तो गलत बात है, यह बीच में उठ जाते हैं। जब मैं खड़ा होकर बोल रहा हूं तो यह बोलने नहीं दे रहे हैं। मैं तो जवाब दे रहा हूं तो उसको सुन लो। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- यह कौन-सा तरीका है? यह कौन सा तरीका है? (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- यह कौन-सा तरीका है?

श्री धरम लाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, यह तो संवैधानिक प्रक्रिया है। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- जब मैं बोल रहा हूं तो आप मुझे बोलने नहीं दोगे? जब मैं जवाब दे रहा हूं तो जवाब तो देने दो। आपको सुनना तो चाहिये। मैं जब बोल रहा हूं तो क्या आपको खड़ा होना चाहिये? यह सदन की परंपरा है?

श्री अमरजीत भगत :- यह कौन सा तरीका है?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोग कभी संतुष्ट होंगे या नहीं?

श्री भूपेश बघेल :- मैं जब जवाब दे रहा हूं। आप मुख्यमंत्री का जवाब नहीं सुन पा रहे हैं। आप इतने धैर्यशील है।

एक माननीय सदस्य :- जब मुख्यमंत्री जी जवाब दे रहे हैं तो आपको रूकना चाहिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिये। आप बैठ जाईये। मैं कोई व्यवस्था नहीं दे रहा हूं मैं सिर्फ यह बता रहा हूं कि।

श्री भूपेश बघेल :- मैं जब खड़ हो रहा हूं...।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी सदन पर पेपर पटक रहे हैं, अब वह पराकाष्ठा हो गयी। यदि हम लोगों की बात में पेपर पटकने की स्थिति आ गई तो वह पराकाष्ठा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- मुख्यमंत्री जी जवाब देने की स्थिति नहीं समझ रहे हैं।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्नकाल है या आधे घण्टे की चर्चा का समय दिया गया है ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय कंवर जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने अपने जीवन में पहली बार इस बात को देखा।

अध्यक्ष महोदय :- इसी प्रश्न में 25 मिनट हो गये। मैं खड़ा हूँ। कृपया आप लोग बैठ जाएं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पेपर पटक कर गुस्सा व्यक्त कर रहे हैं। (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, तो हम लोग प्रश्न नहीं करते।

अध्यक्ष महोदय :- इसी पहले प्रश्न में 25 मिनट हो चुके हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रश्न का उत्तर तो आये।

अध्यक्ष महोदय :- पहली बार फंसे है, बोल रहे हैं। उसके बाद क्या करना चाहते हैं ? (व्यवधान)

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- यह कोई जरूरी है कि आप जैसा चाहते हैं, वैसा उत्तर आएगा ? यह कोई जरूरी है कि आप जैसा चाह रहे हैं, वैसा उत्तर आएगा ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय श्री अनूप नाग जी, आप अपना दूसरा प्रश्न पूछिए।(व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बात यह है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय श्री अनूप नाग जी, आप अपना प्रश्न पूछिए।(व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- यह आप लोगों को समझना चाहिए। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रश्न का कोई उत्तर नहीं आया है।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तो प्रश्नकाल है। इसके बाद मंत्रि-मण्डल के विरूद्ध अविश्वास का प्रस्ताव बचा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रश्न का कोई उत्तर नहीं आया है। (व्यवधान)

वाणिज्यिक कर (आबकारी) मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लोग प्रश्न तो पूछ नहीं रहे हैं। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

अध्यक्ष महोदय :- सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित।

(11.26 से 11.38 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :

11:38 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय :- अनूप नाग जी।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी का जवाब नहीं आया है।

अध्यक्ष महोदय :- उस संदर्भ में तो मैंने...।

श्री धरमलाल कौशिक :- नहीं, मैं एक बार पूछ लेता हूं। मुख्यमंत्री जी जो जवाब देना चाहें। हम उम्मीद करते हैं कि मुख्यमंत्री जी के जवाब सकारात्मक आएंगे। माननीय मुख्यमंत्री जी, मैंने आपको केवल तीन बातों को कहा है। वर्ष 2019 से अभिमत के लिए गया है, अभिमत वापस नहीं आया, क्या अभिमत आया ? वह आपके पास नहीं है। आपने कमेटी बनाई, एक बार बैठक हुई, दोबारा उसकी बैठक नहीं हुई। तीसरा, कमेटी की बैठक उसकी कब समीक्षा करेंगे, उसका अभिमत कब तक आ जाएगा और नियमितीकरण कब तक करेंगे, कृपया इतना बता दीजिए ?

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता प्रतिपक्ष ने पहले ही तीनों सवाल कर लिए हैं और मैंने तीनों सवाल का बिन्दुवार उत्तर दिया। पहली बात, यह है कि बैठक एक बार हुई है। छिपाने वाली कोई बात नहीं है। दूसरी बात, यह है कि विधि विभाग से अभिमत मांगा गया है, उन्होंने ए.जी. से अभिमत लेने के लिए पत्राचार किया। तीसरी बात, यह है कि बहुत सारे विभाग की जानकारी आ चुकी है। मैंने पहले भी कहा कि विभागों में अनियमित कर्मचारी हैं, निगम मंडलों में भी अनियमित कर्मचारी हैं, उसकी जानकारी ली जा रही है। कुछ विभागों की जानकारी आ गयी है, कुछ विभागों की जानकारी नहीं आई है। अंतिम बात, नेता जी ने जो बात कही कि इसे कब तक कर लेंगे ? मैं बहुत जल्दी फिर से निर्देशित करूंगा, इस कमेटी की जल्दी बैठक कर लें और इसकी समीक्षा कर लें। जो-जो विभाग या निगम मंडल ने जानकारी नहीं दी है, उसे फिर से कहा जाए कि वह उनकी जानकारी ले लें और जो विधि विभाग का अभिमत होगा, उसके हिसाब से आगे बढ़ेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक प्रश्न ।

अध्यक्ष महोदय :- अनूप नाग जी आप पूछेंगे कि मैं दूसरी जगह जाउं ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- अब हो गया महाराज । सब तो हो गया, अब क्या चाहिए? (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने केवल यह कहा कि अभी वर्ष 2022 है और वर्ष 2023 में चुनाव है तो चलिये 6 महीने और सही, क्या वर्ष 2022 तक आखिरी में कर देंगे ? इतना माननीय मुख्यमंत्री जी बतायेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- अब वे तो बोल ही रहे हैं कि मैं जल्दी से जल्दी मंगवा रहा हूं उसमें आप कितनी बार करेंगे ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग माननीय मुख्यमंत्री जी के इस जवाब से संतुष्ट नहीं हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- हां, तो मत रहिए न । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग मुख्यमंत्री जी के जवाब से संतुष्ट नहीं हैं । इसमें साढ़े 3 साल में आपका अभिमत नहीं है और उसकी बैठक न हो और यह होगा भी नहीं तो हम असहमत हैं और इसलिये हम बहिर्गमन कर रहे हैं ।

समय :
11:41 बजे

बहिर्गमन

शासन के उत्तर के विरोध में

(नेता प्रतिपक्ष, श्री धरमलाल कौशिक के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा शासन के उत्तर के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया गया।)

श्री कवासी लखमा :- 15 साल में संतुष्ट नहीं हुए तो कब संतुष्ट होंगे ?

तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर (क्रमश:)

विधानसभा क्षेत्र अंतागढ़ अंतर्गत विकास खण्ड अंतागढ़ एवं कोयलीबेड़ा में जल जीवन मिशन अंतर्गत लाभांवित ग्राम

[लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी]

2. (*क्र. 883) श्री अनूप नाग : क्या लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत विकासखण्ड अंतागढ़ एवं कोयलीबेड़ा में दिनांक 01 जनवरी, 2020 से दिनांक 30 जुन, 2022 के मध्य जल जीवन मिशन अंतर्गत कितने ग्रामों को

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

लाभान्वित करने हेतु चयनित किया गया? ग्रामवार सूची उपलब्ध करावें। **(ख)** प्रश्नांश ''क'' के अनुसार योजनांतर्गत चयनित कितने ग्रामों में कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा कितने कार्य अपूर्ण हैं? अनुबंधित फर्मवार, व्यय सहित वर्षवार जानकारी उपलब्ध करावें ? अपूर्ण होने का कारण स्पष्ट करें तथा कब तक पूर्ण किये जावेगें। **(ग)** प्रश्नांश ''ख'' के अनुसार जल जीवन मिशन अंतर्गत् क्या किसी प्रकार की अनियमितता की शिकायत प्राप्त हुई तो क्या कोई जांच कार्यवाही संस्थित की गई? उक्त जांच में किसे दोषी पाया गया तथा उस पर क्या कार्यवाही की गयी?

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरु रुद्र कुमार) : **(क)**अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत विकासखण्ड अंतागढ़ एवं कोयलीबेड़ा में दिनांक 01 जनवरी 2020 से दिनांक 30 जुन 2022 के मध्य जल जीवन मिशन अंतर्गत 420 ग्रामों को लाभान्वित करने हेतु चयनित किया गया है। ग्रामवार सूची **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-''अ'' अनुसार** है। **(ख)** प्रश्नांश "क" अनुसार योजनांतर्गत चयनित 420 ग्रामों मे से 66 ग्रामों हेतु कार्यादेश जारी किये गये है जिसमें से 05 ग्रामों में कार्य पूर्ण, 37 प्रगतिरत एवं 24 अप्रारम्भ है। इसके अतिरिक्त चयनित ग्रामों में से 62 ग्रामों में 127 सोलर पावर पंप स्थापना हेतु छत्तीसगढ़ राज्य अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (क्रेडा) को कार्यादेश जारी की गई थी, जिसमें से 93 पूर्ण, 21 अपूर्ण व 13 अप्रारंभ है। अनुबंधित फर्मवार व्यय की वर्षवार जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-''ब'' अनुसार** है। कोविड-19 महामारी के कारण। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में अर्हतानुसार पात्र निविदाकारों की अनुपलब्धता एवं क्षेत्र में निविदाकारों द्वारा निविदा में भाग न लेना। माह सितम्बर वर्ष 2023 तक पूर्ण किया जाना लक्षित है।**(ग)** प्रश्नांश "ख" के अनुसार जल जीवन मिशन अंतर्गत कार्यो में किसी प्रकार की अनियमितता की शिकायत प्राप्त नही हुई है। अतः शेषांश का प्रश्न ही उपस्थित नही होता है।

श्री अनूप नाग :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा सवाल अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत नलजल योजना की व्यवस्था के संबंध में था । चंकि पी.एच.ई. मंत्री जी से मेरे सवाल का जवाब मिल गया है, मैं जवाब से संतुष्ट हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- अनूप नाग जी ।

श्री अनूप नाग :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं संतुष्ट हूं । मेरे सवाल का जवाब आ गया है ।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ. के.के. ध्रुव । आपका पहला प्रश्न है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही जिले मे हाथियों के उत्पात के निराकरण हेतु शासन की नीति

[वन एवं जलवायु परिवर्तन]

3. (*क्र. 728) डॉ. के.के. ध्रुव : क्या वन मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही जिले में हाथियों के उत्पात एवं जनधन की धनि से संबंधित समस्या के निराकरण हेतु शासन की क्या योजना है ?

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) : गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही जिले में हाथियों के उत्पात से संबंधित निराकरण हेतु केन्द्रीय योजना प्रोजेक्ट एलीफेंट एवं राज्य योजना हाथी रहवास क्षेत्र का विकास संचालित है जिसमें हाथियों के उत्पात से संबंधित निराकरण हेतु निम्न कदम अपनाए जाते है:-**1.** प्रदेश में दो हाथी रिजर्व का गठन किया गया है ताकि हाथियों को इसमें भरपूर भोजन एवं पानी मिल सके फलस्वरूप हाथी जंगल में ही रहे और आबादी क्षेत्र में न आवें। **2.** वन्यप्राणी संरक्षण एवं संवर्धन हेतु वन्यप्राणी रहवास एवं कॉरिडोर क्षेत्रों में जल स्त्रोतों का निर्माण, चारागाह विकास कार्य, अखाद्य खरपतवार का उन्मूलन, अग्नि सुरक्षा आदि कार्य संपादित किया जाता है ताकि हाथियों को पर्याप्त भोजन एवं पानी उपलब्ध हो सकें।**3.** हाथियों के समूह के आगमन कीपूर्व सूचना हाथी मित्र दलों द्वारा तथा वन कर्मचारियों द्वारा संभावित विचरण ग्रामों में सूचना वायरलेस, मोबाईल एवं माईक (ध्वनी विस्तारक यंत्र) से सचेत किया जाता है, ताकि हाथी मानव-द्वंद्व कम हो सके। **4.** ग्रामीणों के फसल, संपत्ति हानि, मकान क्षति एवं जनहानि होने पर प्रभावित ग्रामीणों को समय पर शासन द्वारा निर्धारित दर पर मुआवजा का भुगतान करना।**5.** बहुउद्देशीय गजराज वाहन के उपयोग से प्रभावित क्षेत्रों में तत्काल पहुंचना, सहायता पहुंचाना एवं आवश्यकतानुसार हाथियों का ट्रेकिंग करना।**6.** ग्रामीणों को किन-किन गांवो में हाथी विचरण की संभावना है की पूर्ण जानकारी आकाशवाणी कार्यक्रम "हमर हाथी हमर गोठ"के माध्यम से प्रतिदिन शाम **05.05** बजे अंबिकापुर, रायपुर, बिलासपुर और रायगढ़ आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित किया जा रहा है।**7.** हाथियों के आगमन की जानकारी विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त कर इंटरनेट का उपयोग से प्रभावित गांवों में एलीफेंट अलर्ट सिस्टम " SAJAG" के माध्यम से ग्रामिणों को सतर्क किया जाता है।**8.** हाथियों को रेडियों कॉलरिंग किया जाकर उनकी विचरण की जानकारी प्राप्त करना जिससे हाथी-मानव द्वंद्व को कम किया जा सकें।**9.** विभाग द्वारा हाथी प्रभावित ग्रामों में निरंतर जन-जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से हाथियों के साथ साहचार्य स्थापित करने, हाथी-मानव द्वंद्व से बचने के उपाय के बारे में जागरूक किया जा रहा है। **10.** बस्तियों से दूर वनक्षेत्र से लगे हुए स्थानों में रहने वाले ग्रामीणों को हाथी आने की संभावना होने पर सुरक्षित स्थानों में ले जाकर उनके रहने एवं खानपान की व्यवस्था की जाती है।**11.** ऐसे सामग्री जिसकी गंध हाथियों को रहवास स्थलों की ओर आकर्षित करती है को हाथी आने की संभावना होने पर सुरक्षित स्थानों में परिवहन कराकर रखा जाता है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. के.के. ध्रुव :- जी । माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा वन मंत्री जी से प्रश्न है कि गौरेला, पेण्ड्रा-मरवाही जिले में हाथियों के उत्पात एवं जनधन की हानि से संबंधित समस्या के निराकरण हेतु शासन की क्या योजना है ? चूंकि मुझे शासन की योजना की जानकारी मिल गयी है । मैं आपके माध्यम से माननीय वन मंत्री जी से निवेदन करता हूं कि गौरेला-पेण्ड्रा, मरवाही जिले में भी हाथी रिजर्व का गठन किया जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया । वहां पर गौरेला, पेण्ड्रा-मरवाही में जगह है ? आपको पता है कि वहां इसके पहले भालू रिजर्व बना है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं-नहीं, वह बना ही नहीं है ।

डॉ. के.के. ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी भालू कम हो गये हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भी थोड़ा सा पूछूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- हां, पहले हो जाने दीजिये ।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके पहले 4 हाथी रिजर्व पहले से हैं । तमोर-पिंगला, सेमरसोत, बादलखोल और एक लेमरू और हाथियों के अनुकूल जिस प्रकार की जलवायु है उन स्थानों को चिन्हित करके किया जाता है । यहां पर मरवाही क्षेत्र में स्थायी रूप से हाथियों का विचरण नहीं रहता । वे आते हैं और चले जाते हैं इसलिये हाथी रिजर्व की जरूरत नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय :- क्या आप संतुष्ट हैं ? नये विधायक हैं इसलिये उनको पूरा संतुष्ट करिये ।

डॉ. के.के. ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी के जवाब से संतुष्ट हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बहुत बढ़िया । श्री धर्मजीत जी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हाथी से प्रभावित यह हम लोगों का भी विधानसभा क्षेत्र है । इसमें माननीय मंत्री जी ने जो 11 प्रकार से हाथियों के बचाव के उपाय बताये हैं उनमें से मैं उनसे 6वें नंबर के उपाय के बारे में और 11वें नंबर के बारे में प्रश्न पूछना चाहता हूं । माननीय मंत्री जी, आपने 6वें नंबर में लिखा है कि ग्रामीणों को किन-किन गांवों में हाथी विचरण की संभावना है की पूर्ण जानकारी, आकाशवाणी कार्यक्रम, हमर हाथी हमर गौठ के माध्यम से प्रतिदिन 5 बजकर 5 मिनट पर अंबिकापुर-रायपुर, बिलासपुर और रायगढ़ आकाशवाणी केंद्र से प्रसारित किया जाता है। मैं इसमें यह पूछना चाहता हूं कि आकाशवाणी तो प्रसारित कर रहा है लेकिन वहां के गरीब वनवासियों के पास तो रेडियो नहीं है तो वे कैसे सुनते होंगे ? थोड़ा प्रेक्टिकल होना चाहिए । माननीय मंत्री जी, आप दोनों बातों का एक-साथ जवाब दे दीजियेगा । थोड़ा प्रेक्टिकल हो जाईये चूंकि आपके पास तो बहुत सा फंड है । वह हाथी एरिया जो प्रभावित है उनको प्रत्येक परिवार में एक-एक रेडियो आप अपने विभाग की तरफ से दे दीजिये तब तो आकाशवाणी से वे लोग हमर हाथी हमर गौठ सुनेंगे । दूसरा, 11वां नंबर को जरा पढ़िए, यह भी बहुत महत्वपूर्ण है । इसमें हाथी का बहुत खतरा पैदा होता

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है । ऐसी सामग्री जिनकी गंध हाथियों को रहवास स्थलों की ओर आकर्षित करती है को हाथी के आने की संभावना होने पर सुरक्षित स्थानों में परिवहन कराकर रखा जाता है मतलब हाथी के गंध की शक्ति इतनी तेज है कि अगर किसी भी घर में चावल, महुआ या और कोई भी चीज होगी तो वह ठीक उसी कमरे को तोड़ता है जिसमें यह रहता है बाकी किसी रहने वाले कमरे को, कपड़े वाले कमरे को या बर्तन वाले कमरे को नहीं तोडता है तो मेरा मतलब है बार-बार जैसे आपने कहा कि उनको उठाकर ले जाते हैं फिर पहुंचा देते हैं उसकी बजाय आप उनको अगर कोई ऐसा बर्तन दें जिसमें उसकी गंध बाहर न जाये या ऐसी कोई कोठी दें जिसमें उनका अनाज वहीं घर में रहे और उसकी खुश्बू हाथी तक न पहुंचे तो क्या रेडियो और बर्तन इन दोनों ही दिशा में आपका विभाग विचार करके हाथी प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को क्या यह देने का काम आप करेंगे ?

श्री शैलेश पाण्डे :- आदरणीय धर्मजीत भैया, आपके पीछे वाले कहीं नाराज न हो जायें ? आप जरा देखकर बोलिए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं-नहीं, मैं तो उन्हीं के इंतजाम की बात कर रहा हूं भई । तो कृपया थोड़ा बताईये ।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्रामीणों को किन-किन गांवों में हाथी विचरण की संभावना है इसकी जानकारी हमर हाथी हमर गोठ के द्वारा दी जाती है लेकिन केवल इतना ही नहीं किया जाता । हाथियों के आगमन की जानकारी विभिन्न स्रातों से प्राप्त कर इंटरनेट का उपयोग करके प्रभावित गांव में एलीफेंट एलर्ट सिस्टम..।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैंने बाकी पढ़ लिया है। मैंने बाकी पूरा पढ़ लिया है। मैंने क्रमांक 6 और क्रमांक 11 के परिप्रेक्ष्य में आपसे मांग की। बाकी मैंने आपका क्रमांक 1 से 11 पूरा पढ़ लिया है। अभी मैं 15 मिनट वही कर रहा था।

श्री मोहम्मद अकबर :- एक मिनट सुनिए न। आप जवाब तो सुनिए न। मेरा यह कहना है कि केवल हमर हाथी हमर गोठ कार्यक्रम से ही पूरा सिस्टम बन गया है, ऐसा नहीं है। अनेक उपाय हैं, जिसका समय-समय पर पालन किया जाता है। अब आपने कहा कि ऐसी सामग्री जिसकी गंध हाथियों के रहवास स्थलों को आकर्षित करती है, हाथी आने की संभावना होने पर सुरक्षित स्थानों में परिवहन कराकर रखा जाता है। हाथियों की सुनने की जो शक्ति है, वह इंसान से 20 हजार गुना अधिक है।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह तो मैं खुद बोल रहा हूं।

श्री मोहम्मद अकबर :- और ऐसी स्थिति में आपने जो कहा कि ऐसी कोई व्यवस्था बनाये कि वह गंध बाहर न जाए, यह कैसे संभव है? यह व्यावहारिक नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, सौरभ जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अगर आप उसमें कोशिश करेंगे। जो खुले में पड़े रहता है, उसकी गंध सीधे पहुंच जाती है। अगर बर्तन में रहेगा तो वह गंध कम जायेगी और मंत्री जी, हाथी के पैर में तो सेंसर भी लगा है। वह तो जब रेलवे ट्रैक क्रॉस करता है तो पहले अपना एक पैर रखकर देखता है कि इधर से ट्रेन थोड़ी आ रही है या इधर से। उसके बाद वह उसमें सूंड़ लगता है और सूंड़ से देखता है तब वह रेलवे ट्रेक क्रॉस करता है। हाथी की क्षमता है कि वह 22 साल पहले जहां जाता है, वहां वह फिर पहुंच जाता है। उसकी याददाश्त भी बहुत तेज है। काया भी बहुत विशाल है। उसके कान भी बड़े-बड़े हैं। तो उससे तो तुलना हो ही नहीं सकती। अगर वहां पर कोई बर्तन देने का प्रावधान हो, एल्यूमिनियम के बर्तन में बहुत ज्यादा खर्च तो नहीं आता है। आप विचार करिये न। हो सकता है कि शायद कम हो जाये।

अध्यक्ष महोदय :- विचार कर लीजिएगा। मैं समझता हूं कि एल्यूमिनियम के बर्तन से खुशबू बाहर निकलती होगी। स्टील की बर्तन हो तो मैं एक बार समझ सकता हूं कि नहीं निकलेगी। चलिए, सौरभ जी।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय विधायक जी की जो चिंता थी, शायद वे व्यक्त नहीं कर पाये।

अध्यक्ष महोदय :- तो उधार की चिंता आप क्यों ले रहे हैं?

श्री सौरभ सिंह :- नहीं, मैं उस क्षेत्र की जनता की बात कर रहा हूं। माननीय वन मंत्री जी, वहां पर हाथी आ गया और मरवाही में हाथी ने जबर्दस्त नुकसान किया, जहां वे रहते हैं, जहां वे रहते हैं, उससे 5-7 किलोमीटर आगे और उसके बाद वह वहां से चला गया और वहां के जो किसान हैं, उनके खेतों में नुकसान किया और घरों का नुकसान किया। उसका compensation आज तक नहीं मिला है। उसको दिलवा दीजिए। यही मेरी मांग है। यह दिलवा दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- यह बहुत अच्छी बात है।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- आप जवाब दीजिए न। मरवाही और उनके क्षेत्र में बहुत दूरी है। आप अगली बार अपना प्रश्न कर लें। आप इतना जवाब दीजिए।

श्री मोहम्मद अकबर :- जिस मुआवजा के बारे में आपने बात कही, मैं दिखवा लूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, डमरूधर पुजारी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

<u>गरियाबंद में सामूहिक नल जल योजना व फिल्टर प्लांट की स्वीकृति</u>

[लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी]

4. (*क्र. 779) श्री डमरूधर पुजारी : क्या लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)** राज्य सरकार द्वारा आत्मसात जन घोषणा पत्र, 2018 में सुपेबेड़ा को लेकर क्या क्या घोषणा की गई थी और उसमें कितनी घोषणायें पूर्ण हो गई हैं ? सुपेबेड़ा में सामूहिक नल जल व फिल्टर प्लांट की स्वीकृति कब मिली है, कब निविदा की गई है और कब कार्य प्रारंभ हुआ है, ठेकेदार कौन हैं एवं कब तक कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा ? दूषित/अस्वच्छ जल पीने से हुई बीमारी के कारण विगत 03 वर्षो में सुपेबेड़ा में कितने लोगो की मृत्यु हुई है ? **(ख)** जल जीवन मिशन के अंतर्गत गरियाबंद में घर-घर में नल पहुंचाने के क्या लक्ष्य इस व पिछले वित्तीय वर्ष में रखे गए थे और कितने घरों में लक्ष्य के अनुरूप नल पहुंचा दिए गए हैं और कितने घरों में पहुंचाना शेष है, व कब तक पहुंचाए जाएंगे तथा किस ठेकेदार को यह कार्य दिया गया है और किस दर पर दिया गया है ? **(ग)** गरियाबंद में सामूहिक नल जल की कुल कितनी योजनाएं चल रही हैं, कितनी स्वीकृत हैं ? कितनी पूर्ण हो गई है ? कितनी अपूर्ण हैं ?

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरु रुद्र कुमार) : **(क)** राज्य सरकार द्वारा आत्मसात जन घोषणा पत्र 2018 में सुपेबेड़ा को लेकर कोई भी घोषणा नहीं की गयी थी, अपितु ग्राम सुपेबेड़ा एवं आस-पास के 08 ग्रामों में तेलनदी से पेयजल हेतु समूह जल प्रदाय योजना की घोषणा माननीय लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्रीजी एवं माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा दिनांक 02.02.2019 को सुपेबेड़ा प्रवास के दौरान की गई है। फिल्टर प्लांट की स्वीकृति पृथक से नहीं दी गयी है, अपितु दिनांक 13.08.2021 को प्रशासकीय स्वीकृति प्राप्त सुपेबेड़ा समूह जल प्रदाय योजनांतर्गत फिल्टर प्लांट निर्माण का कार्य सम्मिलित है। पूर्व में निविदा क्रमांक-61 दिनांक 24.08.2021 एवं सिस्टम क्रमांक-82159 से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की गई थी। निविदा प्रकरण में न्यूनतम निविदाकार द्वारा निविदा की वैधता अवधि बढ़ाने हेतु असहमति व्यक्त की गई है, जिसके परिप्रेक्ष्य में राज्य स्तरीय स्कीम सेक्शनिंग कमेटी (एस.एल.एस.एस.सी.) की बैठक दिनांक 18.05.2022 में लिये गये निर्णय अनुसार पुन: निविदा आमंत्रण के निर्देश दिये गये है। पुन: निविदा आमंत्रण/एजेन्सी का निर्धारण की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। अत: कार्य प्रारंभ का प्रश्न उपस्थित नहीं होता। कार्य पूर्ण करने का समयावधि बताया जाना संभव नहीं है। दूषित/अस्वच्छ जल पीने से मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला गरियाबंद के प्रतिवेदन अनुसार विगत 03 वर्षों में किसी भी व्यक्ति की मृत्यु नहीं हुई है। **(ख)** जल जीवन मिशन के अंतर्गत जिला गरियाबंद में इस वर्ष कुल 68738 व पिछले वित्तीय वर्ष में कुल 78,833 घरों में जल जीवन मिशन के तहत घर-घर में नल पहुंचाने के लक्ष्य निर्धारित रखे गये थे। लक्ष्य के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अनुरुप इस वर्ष (08 जुलाई 2022 तक) 12,021 व पिछले वित्तीय वर्ष 11,559 घरों में नल पहुंचा दिये गये है और 1,06,464 घरों में नल पहुंचाना शेष है, जिसे माह सितम्बर वर्ष 2023 तक पूर्ण किया जाना लक्षित है। जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-"अ" अनुसार** है। ठेकेदार को उक्त कार्य किस दर पर दिया गया है, की जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र-"ब"** अनुसार है।**(ग)** गरियाबंद में कोई भी सामूहिक नल जल योजना नहीं चल रही है, अतः पूर्ण एवं अपूर्ण का प्रश्न उपस्थित नहीं होता। अपितु 01 सुपेबेड़ा समूह जल प्रदाय योजना स्वीकृत है।

श्री डमरूधर पुजारी :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मेरे क्षेत्र की बात है और सुपेबेड़ा ग्राम है। मगर मंत्री लोग जाते हैं और घोषणा करते हैं। वर्ष 2018 के जनघोषणा पत्र में सुपेबेड़ा का नाम है या नहीं। यह गलत संदेश दिये हैं और उत्तर गलत आया है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- जो गलत उत्तर आया है, उसके लिए प्रक्रिया है, उस प्रक्रिया का आप उपयोग करें।

श्री डमरूधर पुजारी :- महोदय जी, गलत उत्तर दिये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- तो करिए न। हमने कहां कहा? उसमें प्रक्रिया है।

श्री डमरूधर पुजारी :- जनघोषणा पत्र में सुपेबेड़ा में हवाई एम्बुलेंस सुविधा प्रदान करने का, मंत्री महोदय जी ने गलत जानकारी दी है कि जनघोषणा पत्र 2018 में नहीं है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि जनघोषणा पत्र में सुपेबेड़ा का नाम है या नहीं है?

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, मंत्री जी, अगर आप जवाब देना चाहे तो दें।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- सम्मानीय अध्यक्ष जी, पी.एच.ई. से रिलेटेड जनघोषणा पत्र में कुछ नहीं था, लेकिन उसके बावजूद भी माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में सुपेबेड़ा की योजना हमने बनायी है, जिसमें सुपेबेड़ा के साथ में हमने 8 गांव और सम्मिलित किया है, जिसका बहुत जल्दी काम भी शुरू हो जायेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी। आपकी अनुमति हो तो।

अध्यक्ष महोदय :- आपका हर प्रश्न में पूछना जरूरी है? पहले उन्हें तो प्रश्न कर लेने दीजिए। आपके पीछे जो ओरिजनल प्रश्नकर्ता हैं, उन्हें बोल रहा हूं। जो प्रश्नकर्ता हैं, पहले वे तो अपना प्रश्न पूछ लें, उसके बाद करते रहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं, मैं अपना बता रहा हूं। शेष प्रश्न में कोई पूरक प्रश्न नहीं है।

श्री डमरूधर पुजारी :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, सुपेबेड़ा में किडनी की बीमारी से मौत हो रहे हैं और मंत्री लोग जाते हैं और घोषणा करते हैं। जनघोषणा पत्र 2018 में है कि सुपेबेड़ा, सरगुजा, बस्तर में एयर एम्बुलेंस हवाई जहाज सेवा करेंगे। माननीय मंत्री जी, अभी तक नहीं किये हैं। उसके लिए क्या विचार किया जाये?

श्री गुरू रूद्र कुमार :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एयर एम्बुलेंस मेरे विभाग से संबंधित नहीं है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी ने जवाब दिया कि जन घोषणा पत्र का मामला मेरे विभाग से संबंधित नहीं है । जन घोषणा पत्र 2018 को इस सरकार ने आत्मसात किया है और जब सरकार ने आत्मसात किया है तो सारे..।

अध्यक्ष महोदय :- यह पहली बार बोल रहे हैं आप ?

श्री शिवरतन शर्मा :- प्रश्न ही कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न करिये ना, आपकी भूमिका लम्बी होती है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- बिना भूमिका के तो प्रश्न..।

अध्यक्ष महोदय :- आज आखिरी दिन है महाराज ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि जन घोषणा पत्र को इस सरकार ने आत्मसात किया है या नहीं ?

अध्यक्ष महोदय :- वह तो जवाब दे दिया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- और अगर आत्मसात किया है तो सुपेबेड़ा के लिए उसमें क्या घोषणा की गई है, यह बता दें ?

अध्यक्ष महोदय :- जन घोषणा पत्र में सुपेबेड़ा शामिल ही नहीं था ।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसमें उल्लेख है माननीय अध्यक्ष जी ।

अध्यक्ष महोदय :- वे कह रहे हैं कि पी.एच.ई. की तरफ से तो शामिल नहीं है।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- पी.एच.ई. का काम है स्वच्छ जल उपलब्ध कराना ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप कहेंगे तो मैं जन घोषणा पत्र की कॉपी आपको अभी उपलब्ध करा देता हूं ।

श्री डमरूधर पुजारी :- जैसे अन्य दुर्गम क्षेत्रों में हवाई एम्बुलेंस की सेवा प्रदान की जाएगी ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- अध्यक्ष महोदय, मैं इनको बताना चाहूंगा कि पी.एच.ई. विभाग का काम है पीने के लिए स्वच्छ जल उपलब्ध कराना । पीने के जल को लेकर सुपेबेड़ा के सिलसिले में जन घोषणा पत्र में हमने कुछ नहीं लिया था ।

अध्यक्ष महोदय :- वे कह रहे हैं कि देख लो सुपेबेड़ा कहां लिखा है ? अगर अन्य मामले में लिखा हो तो ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- वह अलग चीज है, पी.एच.ई. से संबंधित नहीं है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, मेरा जो प्रश्न था । सुपेबेड़ा से संबंधित मामला है । किडनी की बीमारी के चलते वहां बहुत बड़ी संख्या में मौत हुई है ।

अध्यक्ष महोदय :- सब जानते हैं महाराज, कोई नई बात बताओ ना ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी, स्वास्थ्य मंत्री जी विपक्ष में रहते हुए कई बार सुपेबेड़ा गए हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी भी उसके बाद भी गए हैं । साढ़े तीन साल में नलजल योजना पूरी नहीं हो पाई और जन घोषणा पत्र में आपने जो घोषणा सुपेबेड़ा के संबंध में की उसको भी आपने पूरा नहीं किया । आप यह कहकर नहीं बच सकते कि जनघोषणा पत्र में पी.एच.ई. का कोई उल्लेख नहीं है । इस सरकार ने अगर जन घोषणा पत्र को आत्मसात किया है ।

अध्यक्ष महोदय :- फिर आप ज्यादा समय ले रहे हैं महाराज । आज आखिरी दिन है कम से कम पांच प्रश्न होने दीजिए ।

श्री डमरूधर पुजारी :- स्वच्छ पेयजल के नाम से घोषणा की गई थी लेकिन अभी तक वह पूरी नहीं हुई है, साढ़े तीन साल होने जा रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न क्रमांक 5, श्री विक्रम मंडावी ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय । मैं आपने अनुरोध कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं भी आपसे अनुरोध कर रहा हूं । कम से आज पांच प्रश्न लेने दीजिए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं जन घोषणा पत्र की बात नहीं कर रहा हूं । मैं वहां परिस्थिति के अनुसार लगातार मौत हो रही है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं भी तो यही कह रहा हूं, दुनिया जानती है, हर पेपर में छपा है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- लगातार मौत हो रही है और उसके बाद मंत्री जी 2019 में गए थे, स्वास्थ्य मंत्री जी और पी.एच.ई. मंत्री जी 2019 में गए थे । योजना स्वीकृत हो गई ।

अध्यक्ष महोदय :- राज्यपाल कब गए थे, आपको पता है । राज्यपाल महोदया वहां गईं थीं, पता है ? उसका भी बताइए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- मेरा मुख्य प्रश्न यह है कि मंत्री जी स्वयं गए, राज्यपाल गईं, स्वास्थ्य मंत्री जी गए, घोषणा करके आए, बजट में शामिल हो गया, शामिल होने के बाद, 2019 के बाद अभी कार्य प्रारंभ नहीं हुआ है । वहां पर मुख्य रूप से पानी की समस्या है । उसके कारण लोग लगातार मर रहे हैं । मैं मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं, आप 2019 में गए, योजना स्वीकृत हो गई, उसके बाद इस योजना का कार्य कब तक प्रारंभ कर दिया जाएगा ? अभी तक प्रारंभ नहीं हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय :- जल्दी जवाब दीजिए, प्रश्न क्रमांक 5 शुरू होगा ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- अध्यक्ष महोदय, जब स्वास्थ्य मंत्री जी और हमारा सम्मिलित रूप से दौरा हुआ । निश्चित तौर पर हमने वहां ग्रुप वाटर स्कीम की घोषणा की । पहले राज्य मद से माननीय मुख्यमंत्री जी ने फंड उपलब्ध कराया, पहले हमने राज्य मद से उस योजना को तैयार किया, फिर बाद में

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जे.जे.एम. आया, जे.जे.एम. आने के बाद फिर पूरी योजना को जे.जे.एम. में शिफ्ट किया गया । फिर जब योजना पूरी तरह से बन कर तैयार हुई तो पाईप की कीमत एकदम से आसमान छूने लगी। जिसके कारण एस.ओ.आर. में दुबारा परिवर्तन करना पड़ा और आज की स्थिति में पाईप की कीमत के हिसाब से एस.ओ.आर. तैयार करके दुबारा टेंडर लगाया जा चुका है, बहुत जल्दी काम शुरू हो जाएगा ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत जल्दी करिये । वहां सबसे ज्यादा लोग परेशान हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अभी तक इनका टेंडर फाइनल नहीं हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय :- टेंडर फाइनल करवाते हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- उसके बाद ये वहां के लोगों को कब स्वच्छ पानी पिलाएंगे, वहां लगातार मौत हो रही है । बाकी चिंता न करें तो कम से कम यह चिंता तो करें ।

अध्यक्ष महोदय :- यथाशीघ्र करिये ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- अध्यक्ष महोदय, मैंने पूरे डिटेल में बता दिया ।

अध्यक्ष महोदय :- हां ठीक है ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- टेंडर लग चुका है, बहुत जल्दी शुरू हो जाएगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं वही तो कह रहा हूं 2019 के बाद 2022 चल रहा है ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- मैं आपको 2023 तक पूरा करके दे दूंगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अभी तक योजना प्रारंभ नहीं हुई है ।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- जो चीज आपके द्वारा 15 साल में नहीं हुई, मैं 2023 तक पूरा करके दूंगा ।

श्री डमरूधर पुजारी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी केवल आश्वासन ही देते हैं, काम होना-जाना है नहीं । साढ़े तीन साल हो गए हैं, लोग पानी के कारण किडनी की बीमारी से मर रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आपके लिए अच्छा है वह तो । आपके भविष्य के लिए अच्छा है, जो कुछ हो रहा है ।

<u>बीजापुर जिले में वन विभाग अंतर्गत स्वीकृत कार्य</u>

[वन एवं जलवायु परिवर्तन]

5. (*क्र. 887) श्री विक्रम मंडावी : क्या वन मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- बीजापुर जिले में कैम्पा तथा नरवा, गरूआ, घुरवा, बाड़ी योजनान्तर्गत विभाग में वर्ष 2020 - 21 एवं 2021 - 22 में कितने कार्य स्वीकृत किए गये हैं ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) : बीजापुर जिले में कैम्पा तथा नरवा, गरूआ, घुरवा, बाड़ी योजनांतर्गत विभाग में वर्ष **2020-21** एवं **2021-22** में स्वीकृत कार्य का विवरण निम्नानुसार है :-

योजना का नाम	**मद का नाम**	**स्वीकृत कार्य की संख्या**	
		वर्ष 2020-21	**वर्ष 2021-22**
1	**2**	**3**	**4**
कैम्पा योजना	कैम्पा मद	**467**	**702**
भू-जल संरक्षण कार्य (नरवा विकास)	कैम्पा मद	**17**	**18**
आवर्ती चराई योजना (गरूआ विकास)	मनरेगा	**33**	**0**
वर्मीकम्पोस्ट निर्माण कार्य (घुरवा विकास)	वन प्रबंधन समिति	**26**	**0**
बाड़ी विकास कार्य	-	**0**	**0**
योग वर्ष **2020-21** एवं **2021-22**		**543**	**720**

श्री विक्रम मंडावी :- माननीय अध्यक्ष जी, मैंने वन मंत्री महोदय जी से कैम्पा संबंधित प्रश्न किया था। माननीय मंत्री जी का जवाब आ चुका है। मैं उससे संतुष्ट हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया। प्रश्न क्रमांक 06, श्री कुलदीप जुनेजा।

प्रश्न संख्या : 06 XX XX

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न संख्या 07, श्री शिवरतन शर्मा। अब इसमें जितनी देर लगना है, लगे। आपको कोई नहीं रोक रहा है। इनके प्रश्न में अकेले सिर्फ वही प्रश्न करेंगे, कोई पूरक प्रश्न नहीं होगा।

<u>प्रदेश में जल जीवन मिशन योजना में लक्ष्य निर्धारण एवं नल कनेक्शन प्रदाय</u>

[लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी]

7. (*क्र. 702) श्री शिवरतन शर्मा : क्या लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि :- **(क)**प्रदेश में जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत वर्ष 2019-20, 2020-21, 2021-22 तथा वर्ष 2022-23 में कितना लक्ष्य निर्धारित किया गया तथा उक्त वर्ष में केन्द्र शासन को

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रस्ताव कितने राशि का भेजा गया तथा कितने की स्वीकृति प्राप्त हो गयी? **(ख)**क्या केन्द्र को प्रेषित प्रस्ताव राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन का अनुमोदन प्राप्त कर राज्य सरकार द्वारा भेजा गया है ? अनुमोदन हेतु क्या नियम हैं ? **(ग)**उक्त अवधि में जल जीवन मिशन में कितनी कितनी राशि की निविदा जारी की गयी तथा कितने निविदा में कार्य पूर्ण हो गया है, कितने में कार्य जारी है? कितनी निविदा निरस्त की गयी ? **(घ)** पूरे प्रदेश में कितने कितने नल कनेक्शन प्रदाय कर दिये गये तथा कितने नल कनेक्शन देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था?

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरु रुद्र कुमार) : **(क)** वर्ष 2019-20 में 7.86 लाख (कार्ययोजना नहीं भेजी गई) तथा क्रमशः वर्ष 2020-21 में 20.61 लाख, वर्ष 2021-22 में 22.15 लाख एवं वर्ष 2022-23 में 23.57 लाख एफ.एच.टी.सी. का लक्ष्य निर्धारित था। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020-21 में रूपये 3540.13 करोड़, वर्ष 2021-22 में रूपये 7411.01 करोड़ एवं वर्ष 2022-23 में रूपये 8089.88 करोड़ की कार्ययोजना पर स्वीकृति प्रदान की गई। प्राप्त स्वीकृति के विरूद्ध वर्ष 2019-20 में रूपये 208.04 करोड़, वर्ष 2020-21 में रूपये 445.52 करोड़, वर्ष 2021-22 में रूपये 1908.96 करोड़ एवं वर्ष 2022-23 में रूपये 2223.98 करोड़ की राशि आबंटित की गई। **(ख)** जल जीवन मिशन की मार्गदर्शिका अनुसार राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन द्वारा कार्ययोजना भारत सरकार को प्रेषित की जाती है। भारत सरकार से सैद्धांतिक सहमति पश्चात् राज्य जल एव स्वच्छता मिशन (शीर्ष समिति) से अनुमोदन किया जाता है। **(ग)** जानकारी **पुस्तकालय में रखे प्रपत्र अनुसार** है। **(घ)** जानकारी निम्नानुसार है :-

वर्ष	**लक्ष्य**	**प्रदाय किये गये कनेक्शन**
2019-20	7.86 लाख	96,827
2020-21	20.61 लाख	1,51,069
2021-22	22.15 लाख	4,45,110
2022-23	23.57 लाख	1,86,138 (दिनांक 30 जून, 2022 की स्थिति में)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले तो मैं कुछ बातें आपके संज्ञान में ला दूता हूँ ..।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रश्न करते रहिये। आपके पास 11 बजे तक का समय है।

श्री शिवरतन शर्मा :- कि यह सरकार और सरकार के अधिकारी विधान सभा को कभी गंभीरता से नहीं लेते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- फिर आप भूमिका दे रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, मैं भूमिका इसलिए मांग रहा हूँ, क्योंकि उत्तर गलत आता है।

अध्यक्ष महोदय :- उत्तर गलत आने का प्रक्रिया तो है ना।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम प्रक्रिया में तो जायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- हाँ, जाईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- लेकिन आपके माध्यम से कठोर कार्रवाई का निर्देश हो जाये तो ज्यादा अच्छा है।

अध्यक्ष महोदय :- होगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- 21 तारीख को रंजना साहू जी के प्रश्न में उत्तर आया कि सरकार ने ...।

अध्यक्ष महोदय :- फिर आप दूसरी तरफ जा रहे हैं।

एक माननीय सदस्य :- यह विधान सभा का ही प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- विधानसभा का प्रश्न है तो पहले अपने प्रश्न में तो आ जाओ फिर दूसरी जगह जाना। आप अपने प्रश्न को पूछ लीजिये फिर दूसरी तरफ जाना।

श्री शिवरतन शर्मा :- सरकार ने लगभग 6,25,204 कनेक्शन दे दिये हैं।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- आप एक बात बताईये, आप पिछले प्रश्न की बात कर रहे हैं। मैंने आपको हजार पन्ने का जवाब दिया है। पहले आप उसी हजार पन्ने में से तो कुछ पूछ लीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं हजार पन्ने को पढ़ कर बात कर रहा हूं। आपने मेरे प्रश्न को पूरा सुना है?

श्री गुरू रूद्र कुमार :- आपने कहाँ पढ़ा है? आप पहले हजार पन्ने को पढ़िये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, आज मुझे उत्तर दिया कि 30 जून तक 08,79,144 लोगों को कनेक्शन दे दिया गया और वही तारीख को रंजना साहू जी के प्रश्न में इन्होंने कहा कि हमने 6,25,204 को कनेक्शन दिया है। पहला, आप यह बता दीजिये कि रंजना साहू जी का जो प्रश्न था, वह सही था या आपने मुझे उत्तर दिया था, वह सही था?

श्री गुरू रूद्र कुमार :- अध्यक्ष जी, पूरे प्रदेश में लगातार काम चल रहा है, क्योंकि न हमें मिशन मोड पर काम करना है। हमारे अधिकारी speadly काम करवा रहे हैं तो निरंतन दिन-ब-दिन हाउस ऑफ कनेक्शन बढ़ते जा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, हम दोनों के तारांकित प्रश्न में 30 जून, 2022 तक पूरी कनेक्शन देने की बात कही गई है।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष जी, पूरी बात को कवासी लखमा जी समझ रहे हैं, लेकिन लखमा जी नहीं समझ रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, इनको सितंबर, वर्ष 2023 तक 19,74,000 कनेक्शन देना है, लेकिन आजतक सिर्फ 8,79,144 कनेक्शन दे पाये हैं, जोकि वह स्वयं स्वीकार कर रहे हैं। इनका जो लक्ष्य है, उस लक्ष्य के 10 प्रतिशत के आसपास कनेक्शन है। मंत्री जी, आपने कभी समीक्षी की है कि हम लक्ष्य को पूरा क्यों नहीं कर पा रहे हैं? इसके लिए दोषी कौन है? और पिछले लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाये, इसके लिए दोषी मानते हुए किसी के ऊपर में कार्रवाई की है, आप जरा यह बता दें?

श्री गुरू रूद्र कुमार :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं 10 प्रतिशत वाली बात में पहले मैं यह कहना चाहूंगा कि इन्होंने जब प्रश्न लगाया था, यह तब की बात थी।

अध्यक्ष महोदय :- क्या चीज का 10 प्रतिशत?

श्री गुरू रूद्र कुमार :- वह जो कनेक्शन की बात कर रहे हैं। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि आज की तारीख में प्रदेश में 25 प्रतिशत काम हो चुका है। हमारी जब से सरकार बनी है, तब से आज की तारीख में हमें जीरो (0) प्रतिशत से काम प्रारंभ करना पड़ा रहा है। इन्होंने 15 साल में किये होते तो हमें जीरो (0) प्रतिशत से प्रारंभ नहीं करना पड़ता। आज हमारे कनेक्शन और बढ़े हुए होते। मैं आपके माध्यम से बताना चाहूंगा कि हम इसको आगे निरंतर करके लक्ष्य को पूरा करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बात करते रहिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 74,19,000 कनेक्शन का लक्ष्य है, उन्होंने 30 जून तक 8,79,000 कनेक्शन दिया है। आज माननीय मंत्री जी कह रहे हैं कि हमने 25 प्रतिशत कनेक्शन पूरे कर लिये हैं। चलिये आप 25 प्रतिशत को संख्या में बता दीजिये? कितने कनेक्शन पूरे हो गये, आप उसकी संख्या बता दीजिये?

श्री अतितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं 14वें नंबर पर प्रश्न लगाया हूं, उसमें एक पूरक प्रश्न पूछ सकता हूँ क्या?

अध्यक्ष महोदय :- नहीं। (हंसी)

श्री गुरू रूद्र कुमार :- माननीय अध्यक्ष जी, 12 lakh, 79 thousand, 51 कनेक्शन ।

अध्यक्ष महोदय :- हिंदी में बोल दीजिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- मंत्री जी, एक बार फिर से बोल दीजिये।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- 12,79,000 कनेक्शन।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा। अब यह 74 लाख का 25 प्रतिशत 12 लाख हो गया क्या, आप जरा बता दीजिये?

अध्यक्ष महोदय :- अगली बार इनको कैलकुलेटर दे देना।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- आप गणना कर लीजिये कि 74 लाख का 25 प्रतिशत 12 लाख हो गया क्या? आदरणीय गुरू जी, मंत्रि-मण्डल में आपकी स्थिति को हम सब जानते हैं। आप चाहते हुए लक्ष्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। आप बार-बार तां बोल रहे हैं कि हमने 15 साल में कुछ नहीं किया। यह योजना ही वर्ष 2019-20 में शुरू हुई है तो इसमें 15 साल में क्या होगा? आपकी सरकार बनने के बाद यह योजना शुरू हुई है। अभी भी आपने कहा कि 25 प्रतिशत कर दिये और संख्या 12 लाख बता रहे हैं।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- और भी तो काम था।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- शिवरतन जी, मैं बता दे रहा हूं कि आज की स्थिति में जो मैं 25 प्रतिशत के हिसाब से बोल रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्नकाल समाप्त।

(प्रश्नकाल समाप्त)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

12:00 बजे

प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने की अवधि में वृद्धि करने का प्रस्ताव

(1) "कृषि विभाग में सामग्री प्रदायकर्ता कम्पनी/फर्मों को बलैक लिस्टेड/डीबार/प्रतिबंधित किया जाना और इससे संबद्ध विषयों की जांच हेतु गठित समिति" का प्रतिवेदन

श्री धनेन्द्र साहू (सभापति) (जांच समिति) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, प्रस्ताव करता हूं कि "कृषि विभाग में सामग्री प्रदायकर्ता कंपनी/फर्मों को बलैक लिस्टेड/डीबार/प्रतिबंधित किये जाने और इससे संबद्ध विषयों पर सदन की जांच समिति" का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तु हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - "कृषि विभाग में सामग्री प्रदायकर्ता कंपनी/फर्मों को बलैक लिस्टेड/डीबार/प्रतिबंधित किये जाने और इससे संबद्ध विषयों पर सदन की जांच समिति" का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(2) "शैक्षणिक संस्थाओं में हाजिरी हेतु बायोमेट्रिक टेबलेट की खरीदी और इससे संबंद्ध विषयों की जांच हेतु गठित समिति" का प्रतिवेदन

श्री संतराम नेता (सभापति) (जांच समिति) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि "शैक्षणिक संस्थाओं में हाजिरी हेतु बोयोमेट्रिक टेबलेट की खरीदी और इससे संबद्ध विषयों की जांच हेतु गठित समिति" का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि "शैक्षणिक संस्थाओं में हाजिरी हेतु बोयोमेट्रिक टेबलेट की खरीदी और इससे संबद्ध विषयों की जांच हेतु गठित समिति" का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

(3) विशेषाधिकार समिति को जांच, अनुसंधान एवं प्रतिवेदन हेतु संदर्भित प्रकरण पर प्रतिवेदन

श्री मोहन मरकाम (सभापति) (विशेषाधिकार समिति) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ विधानसभा प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियमावली के नियम - 228 के उप नियम (1) के परन्तुक की अपेक्षानुसार माननीय श्री धर्मजीत सिंह, सदस्य, छत्तीसगढ़ विधानसभा द्वारा प्रबंध संचालक, छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड, रायपुर के विरूद्ध समिति को संदर्भित विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 28/11/2019 एवं माननीय श्री धनेन्द्र साहू, सदस्य छत्तीसगढ़ विधानसभा द्वारा श्री कुंभन दास आड़िया एवं श्री अंबरीश आिड़या के विरूद्ध समिति को संदर्भित विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 10/11/2020 पर जांच, अनुसंधान एवं प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - माननीय श्री धर्मजीत सिंह, सदस्य, छत्तीसगढ़ विधानसभा द्वारा प्रबंध संचालक, छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड, रायपुर के विरूद्ध समिति को संदर्भित विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 28/11/2019 एवं माननीय श्री धनेन्द्र साहू, सदस्य छत्तीसगढ़ विधानसभा द्वारा श्री कुंभन दास आड़िया एवं श्री अंबरीश आिड़या के विरूद्ध समिति को संदर्भित विशेषाधिकार हनन की सूचना दिनांक 10/11/2020 को, विशेषाधिकार समिति को जांच, अनुसंधान एवं प्रतिवेदन हेतु संदर्भित प्रकरण पर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की अवधि में आगामी सत्र के अंतिम दिवस तक की वृद्धि की जाए ?

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

नियम - 239 के अन्तर्गत विचाराधीन सूचनाएं

अध्यक्ष महोदय :-

1. माननीय सदस्य, श्री अजय चंद्राकर एवं श्री बृजमोहन अग्रवाल द्वारा माननीय श्री अमरजीत भगत, खाद्य मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन एवं माननीय श्री रविन्द्र चौबे, कृषि मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 19/2020 दिनांक 19.08.2020 ।
2. माननीय सदस्य, सर्वश्री अजय चंद्राकर, शिवरतन शर्मा एवं सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 33/2022 दिनांक 21.07.2022 ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

3. माननीय सदस्य, सर्वश्री अजय चंद्राकर, शिवरतन शर्मा एवं सौरभ सिंह द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 34/2022 दिनांक 21.07.2022 ।
4. माननीय सदस्य, सर्वश्री अजय चंद्राकर, शिवरतन शर्मा एवं सौरभ सिंह द्वारा माननीय विधि मंत्री श्री मोहम्मद अकबर के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 35/2022 दिनांक 21.07.2022 ।

मेरे समक्ष विचाराधीन है।

<u>नियम 167 (1) के अंतर्गत अग्राह्य विशेषाधिकार भंग की सूचना</u>

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य श्री चंदन कश्यप द्वारा श्री जितेन्द्र सिंह, प्रबंधक (निलंबित), छत्तीसगढ़ हत्सशिल्प विकास बोर्ड के विरूद्ध प्रस्तुत विशेषाधिकार भंग की सूचना क्रमांक 32/2022 दिनांक 04.07.2022 को विचारोपरांत मैंने अपने कक्ष में अग्राह्य कर दिया है ।

<u>अध्यक्षीय उद्‌गार</u>

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्यगण, अब अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा प्रारंभ होगी, उसके पहले मैं आप सभी से कुछ कहना चाहता हूं । प्रजातंत्र की विशिष्टता का यह एक अनुपम उदाहरण है कि सत्ता पक्ष के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव की सूचना देकर प्रतिपक्ष अपनी बात कहता है, सरकार की चूक, उसकी विफलता के बारे में संसदीय प्रक्रिया अंतर्गत इस सर्वोच्च मंदिर में अपनी बात कहता है । मेरा आप सभी से यह अनुरोध है कि कृपया जब आप अपने भाषण में अपने विचार व्यक्त करेंगे तो अनावश्यक आरोपों से बचें, आरोपों की पुनरावृत्ति ना करें, किसी सदस्य द्वारा जिस तथ्य का उल्लेख कर दिया जाये, उसी को दोबारा मत कहें । इसके अलावा सबसे महत्वपूर्ण अनुरोध यह है कि कृपया अपनी बात कहते समय शिष्टता, शालीनता, गरिमा तथा संसदीय शब्दावली का प्रयोग करें तथा सदन की गरिमा का भी ध्यान रखें । ऐसे व्यक्ति के खिलाफ कोई आरोप नाम से मत लगायें, जो सदन का सदस्य नहीं है । यथासंभव एक-दूसरे के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना व्यक्त करते हुए अपनी बात कहें । एक दूसरे के प्रति व्यक्तिगत आरोप लगाने से भी आपको बचने का प्रयास करना चाहिए । आशा है कि आप सभी इन बातों का अवश्य ध्यान रखेंगे ।

अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के लिए सायं 5:30 बजे तक का समय निर्धारित है, आप सभी से अनुरोध है कि अपने विचार रखते समय इस समय-सीमा का ध्यान रखेंगे । वैसे मैं 5:30 घंटे को यहां

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के निर्धारित समय में बांटू, उसको भी सुन लीजिए, आप नहीं मानेंगे, फिर भी सुन लीजिए । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए 4 घंटे, 8 मिनट । भारतीय जनता पार्टी 56 मिनट, जनता कांग्रेस पार्टी 17 मिनट, बहुजन समाज पार्टी 9 मिनट ।

चर्चा प्रारंभ करते हैं । आईए, आज के वन डे मैच में जो ओपनर बैट्समैन है, मैं उनका स्वागत करता हूं ।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा छोटा सा निवेदन है ।

अध्यक्ष महोदय :- अभी मत करिए । थोड़ी देर बाद कर लीजिएगा ।

समय :
12:06 बजे

मंत्रि-मंडल के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव

"यह सदन मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल एवं उनके मंत्रि-मंडल के विरूद्ध अविश्वास व्यक्त करता है ।"

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल एवं उनके मंत्रि-मंडल के विरूद्ध अविश्वास व्यक्त करता है ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ कि "यह सदन मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल एवं उनके मंत्रि-मंडल के विरूद्ध अविश्वास व्यक्त करता है ।" चर्चा प्रारंभ करें।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, मेरा एक ही प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय :- नेता जी, आपने आरोप-पत्र नहीं दिया है ? अभी रूक जाओ न, यहां मामला गड़बड़ हो रहा है ।

श्री धरम लाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, मैं आरोप-पत्र सभा पटल पर रखता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- जनाब बृजमोहन अग्रवाल जी अपनी बात शुरू करें ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो अविश्वास प्रस्ताव होता है, यह इस लोकतंत्र की एक बहुत बड़ी और सुन्दर उपलब्धि है कि सदन में बहुमत होने के बाद भी विपक्ष को यह अधिकार है कि अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से पूरे प्रदेश की जनता को, देश की जनता को सरकार की कमजोरियां बताते हैं । मुख्यमंत्री जी बैठे हुए हैं, शायद शासन में बैठे हुए, सत्ता में बैठे हुए लोगों को भी यह नहीं मालूम होता है कि उनकी सरकार में क्या चल रहा है? मैं भी मंत्री रहा हूं। हमें बहुत सारी चीजें तो सदस्यों के प्रश्नों के माध्यम से, ध्यानाकर्षण के माध्यम से मालूम पड़ता है। इसलिए माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने शुरूआत में हम लोगों के लिए कुछ सुझाव दिए, मैं तो चाहूंगा कि हमारे सदस्यों के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव में जो कहा जाता है, उसको सरकार गंभीरता से लें। उसके लिए उद्वेलित होने की जरूरत नहीं है, उसके लिए नाराज होने की जरूरत है। हम किसी व्यक्ति के खिलाफ आरोप नहीं लगाते हैं, हम सरकार के खिलाफ आरोप लगाते हैं, हम पद के खिलाफ आरोप

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

लगाते हैं, हम सरकार की कारगुजारियों के खिलाफ आरोप लगाते हैं, हम जनता के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आरोप लगाते हैं। अब यह कैसी सरकार है ? हम इस सरकार के बारे में कह सकते हैं कि यह सरकार एक ऐसा कुनबा है, हम कहते हैं कि घरों में बर्तन बजते हैं, लेकिन इस कुनबे में तो लट्ठ चल रहे हैं। इस कुनबे में तो लोकतन्त्र में जो गोलियां चलती हैं, वह चल रही है। इस कुनबे में तो एक दूसरे के ऊपर आरोप-प्रत्यारोप लग रहे हैं। इस कुनबे में तो मुख्यमंत्री को तो मंत्री पर विश्वास नहीं है और मंत्री को मुख्यमंत्री पर विश्वास नहीं है। मंत्रियों को अधिकारियों पर विश्वास नहीं है। इस लोकतन्त्र में तो उल्टी गंगा बह रही है। शासन को प्रशासन पर विश्वास नहीं है। अगर इस प्रदेश की जनता के लिए कोई काम करता है तो शासन का यदि कोई हाथ-पैर होता है, तो प्रशासन होता है। प्रशासन को शासन पर विश्वास नहीं है और इस शासन के ऊपर जनता को विश्वास नहीं है। इसलिए हमने यह अविश्वास प्रस्ताव लाया है। मैं इस अविश्वास प्रस्ताव पर कहना चाहूंगा कि --

"कुर्सी है तुम्हारा, जनाजा तो नहीं,
कुछ कर नहीं सकते तो उतर क्यों नहीं जाते।"

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी बोले है कि लट्ठम-लट्ठ बज रहा है। इनके समय में तो भारतीय जनता पार्टी का चुनाव हो रहा था तो लट्ठम-लट्ठ बज रहा था और आज के तत्कालीन प्रधानमंत्री उस समय पर्यवेक्षक बनकर आये थे और वह बैंच के नीचे घुसकर अपनी जान बचाये थे।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सभी सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि आज कोई सदस्य ज्यादा व्यवधान ना डालें। अपनी-अपनी बात कहने दें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :-अध्यक्ष महोदय,

"कुर्सी है तुम्हारा, जनाजा तो नहीं,
कुछ कर नहीं सकते तो उतर क्यों नहीं जाते।"

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष महोदय, मैं भी बोल देता

" हमने कई जलजले देखे कार में,
हम कब से बैठे हैं अग्रवाल साहब के इस प्रकार के शायर के इंतजार में।"

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया है। यह शायद देश के इतिहास में, छत्तीसगढ़ के इतिहास में, विधानसभा के इतिहास में पहली बार हुआ है कि हमारा अविश्वास प्रस्ताव लाने के पहले एक मंत्री ने अविश्वास प्रस्ताव ले आया। आप, मुख्यमंत्री हैं। अगर कोई मंत्री, मुख्यमंत्री के ऊपर अविश्वास करता है तो क्या उस मंत्री को मंत्रिमण्डल में रहने का अधिकार है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके एक मंत्री अमर अग्रवाल थे, रमन सिंह जी के नेतृत्व में काम नहीं करूंगा, करके कुर्सी छोड़ दिए थे। भूल गए क्या ?

श्री धर्मजीत सिंह :- तो रमन सिंह जी उसका इस्तीफा भी स्वीकार कर दिए थे। मालूम या नहीं ? इस्तीफा स्वीकार कर लिये थे। वह इस्तीफा देकर घर नहीं आ पाये थे, इस्तीफा स्वीकार हो गया था। आप भी ऐसी हिम्मत करके करिये।

डॉ. शिव कुमार डहरिया :- हमारे मंत्री ने कोई इस्तीफा नहीं दिया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अगर आपके ऊपर भरोसा नहीं कर रहे हैं तो बर्खास्त कर दो, बर्खास्त कर दो न।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शायद सम्माननीय सदस्य को याद नहीं है कि अभी यू.पी. में इनके एक एस.सी. मंत्री ने यह लिखकर अमित शाह जी को इस्तीफा दिया है कि मैं एस.सी. हूं, मुझे प्रताड़ित किया जा रहा है, काम नहीं करने दिया जा रहा है, इसलिए मैं मंत्री पद से इस्तीफा देता हूं। भूल गये ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- उनका नाम दिनेश खटीक है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के पास अपने बारे में बताने के लिए कुछ नहीं है। यह सरकार कभी दिल्ली की बात करेगी, कभी यू.पी. की बात करेगी, कभी बिहार की बात करेगी। अगर थोड़ी भी गैरत होती कि एक मंत्री ने मुख्यमंत्री पर आरोप लगाया तो मुख्यमंत्री में दम नहीं है उसको मंत्रिमण्डल से निकाले और वह मंत्री भी पद से चिपका रहना चाहता है। उसका आत्मसम्मान नहीं है। हम लोग तो सुनते थे कि जो राजा-महाराजा होते हैं, उनमें कुछ आत्म सम्मान होता है । ऐसी सरकार पर हम कैसे विश्वास करें ?

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन भईया, दोनों चीजें विरोधाभाषी है । जब दम नहीं है तो सरकार कैसे चल रही है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के राज में तो हर चीजों में खाली शिगूफेबाजी, खाली जुमलेबाजी, बड़ी-बड़ी बातें करना, आप भी यहां पर चेयर पर बैठे हुये हैं । आप देखते हैं कि हम लोगों के प्रश्नों पर कैसे जवाब आते हैं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपके यहां है, जुमलेबाजी ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ऐसा है, मैं अभी बताऊंगा कैसे जुमलेबाजी है, सत्तू भईया ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- बताईये, बताईये ।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय ...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मेरे को तो दु:ख है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- देखो यादव जी, तुमको बोलने का समय मिलेगा, उस समय बोलना । डिस्टर्ब मत करिये । समय कम है और सब को अपनी समयसीमा में बात करने दीजिए । वोरा जी प्लीज ।

श्री अरूण वोरा :- मेरे को यह पूछना था...।

अध्यक्ष महोदय :- उनसे मत पूछिये ।

श्री अरूण वोरा :- अगर 15 साल में कुछ किये होते तो इतनी सीटें कम कैसे आती ?

अध्यक्ष महोदय :- आपका नौवें नंबर पर नाम है, आप उस समय बोल लीजिए । प्लीज ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सच कोने में दुबका है, दरारों से झांक रहा है । झूठ मदमस्त होकर छत्तीसगढ़ के चौराहों पर नाच रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- वाह, वाह । आपने यह कहां-कहां से बटोरे । (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप देखते हैं कि इस सदन में झूठ कैसे नाचता है । हमारे अजय चन्द्राकर जी, बार-बार चेयर लीडर की चर्चा करते हैं । वह लोग कैसे नाचते हैं ? मैं उसकी यहां पर चर्चा नहीं करना चाहता हूँ । आज पूरे छत्तीसगढ़ की हालत क्या है ? कहीं स्कूल उजड़े हैं, कहीं गौठान उजड़ें हैं, कहीं सड़कें नहीं दिखती, कहीं घर नहीं बन पाये, कहीं सब लोग मायूस हैं, कहीं सरकार सोती है, सबके लिये कांटे बोती है, अब तुम्हारे वायदे की खुल चुकी है पोल, अब तो बतला दो जरा, यह तख्त तुम कब छोड़ोगे ?

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, क्या यह कवि सम्मेलन है ? अविश्वास प्रस्ताव में बोल रहे हो कि कवि सम्मेलन में बोल रहे हो ?

अध्यक्ष महोदय :- गुड क्वेश्चन ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, अटल बिहारी वाजपेयी जी के पुण्य तिथि में हंस रहे थे, ऐसे लोग हैं । यह हमको सबक सीखा रहे हैं । बृजमोहन जी, दुनिया ने देखी है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं आरोप नहीं लगा रहा हूँ । इनके मंत्री ने आरोप लगाया है, गरीबों के 8 लाख मकान नहीं बन पा रहे हैं ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, मैं आपसे अनुमति इसलिए मांग रहा था, लोक सभा में टंगा हुआ है, कौन-कौन से शब्द सदस्यों को बोलना है, कौन सा नहीं बोलना है । ऐसे बोलने वाले 4 लोग हैं । बर्खास्त किये जाये, ऐसा बोलने वाले, ऐसे चार लोग हैं । देख लेना । (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, हम दादी का तो दूध-भात रखते हैं, इसलिए जवाब नहीं देते ।

श्री कवासी लखमा :- आपकी मोदी जी की सरकार है, असंसदीय शब्द टंगा है कि नहीं टंगा है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, थोड़ी लज्जा आनी चाहिये । हमारे इस विधान सभा के सदस्यों इस प्रदेश के 18 लाख लोगों के सिर से छत छीन ली जाये, हम जो आरोप लगा रहे हैं, उसको

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

झुठलाया जाये । आपके ही विभाग का मंत्री कहता है कि मैं 8 लाख लोगों में से एक को भी घर नहीं दे पाया । (शेम-शेम) 10 हजार करोड़ रूपये जो छत्तीसगढ़ को मिलते, वह नहीं मिल पाये हैं, मैं इससे दु:खी हूँ । यह मैं नहीं कह रहा हूँ, यह आपका मंत्री कह रहा है । मुख्यमंत्री में भी दम नहीं है, उस मंत्री में भी दम नहीं है । दोनों इस सदन के सदस्य हैं, एक मुख्यमंत्री बनकर बैठे हैं, एक मंत्री बनकर बैठे हैं । 18 लाख लोगों को उनकी छत नहीं मिल पाई है ।

श्री कवासी लखमा :- दम नहीं है, उसको निकाल दो । कुछ भी बोलते जा रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 18 लाख लोगों को अगर उनकी सर की छत नहीं मिल पाई। हर गरीब आदमी का सपना होता है कि उसके जीवन में उसका एक घर बन जाये। इस देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी गरीबों को छत देना चाहते हैं। आप 70-70 हजार करोड़ रुपये का कर्ज ले लेते हैं।

श्री अरूण वोरा :- बृजमोहन जी, जब उन्होंने अपने घोषणा पत्र में बात कही थी तो 02 करोड़ नौजवानों को नौकरी क्यों नहीं दिये ? आज वह 18 करोड़ हो गये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- वोरा जी, प्लीज उनको डिस्टर्ब मत करिये।

श्री अरूण वोरा :- बृजमोहन जी बोल रहे हैं कि 18 लाख लोगों को छत नहीं दे पाये। केन्द्र सरकार से पैसा नहीं मिल रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- वह जो बोल रहे हैं उसको सुनिये और आप अपने समय में बोलते समय उनकी बातों को मुंहतोड़ जवाब दीजिए। क्या मैंने मना किया है ? आप अपनी बारी आने दीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम तो आपका संरक्षण चाहते हैं। इस प्रदेश की जनता का यह सदन सबसे बड़ा प्रतिबिंब है। इससे बड़ा कोई दोष हो सकता है, पाप हो सकता है, अन्याय हो सकता है। 18 लाख लोगों के सर से छत छीनने वाली कोई सरकार है तो इस सरकार के ऊपर में हम अविश्वास नहीं करेंगे तो क्या करेंगे ? 18 लाख घर मिलते तो छत्तीसगढ़ को 15 हजार करोड़ रुपये केन्द्र सरकार से मिलते। यह सरकार बड़ी-बडी बातें करती हैं। इस सरकार में अगर हम शासन के अलावा मंडल, आयोग, पी.यू.सी. को देख लें तो पौने दो लाख करोड़ रुपये का कर्ज यह सरकार ले चुकी है। 70 हजार करोड़ रुपये का कर्ज शासन ने लिया है। 01 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का कर्ज पब्लिक अंडरटेकिंग ने लिया है

समय :
12:21 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए)**

श्री कवासी लखमा :- छत्तीसगढ़ के लिए बोल रहे हैं लेकिन केन्द्र सरकार ने कितना कर्ज लिया है, उसको भी बताईये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, सरकार कोई नियम, कायदे कानून से चलती है। हमारी सरकार नियम, प्रक्रियाओं से चलती है। सरकार बिगनिश रूल्स से चलती है। यह कभी हुआ है कि मंत्रियों के ऊपर चीफ सेकेटरी की कमेटी बनी है। मंत्री निर्णय नहीं लेंगे, उनके निर्णयों की समीक्षा चीफ सेकेटरी करेंगे। यह कौन सी सरकार, कहां की सरकार है ? यह कौन सा नियम, कानून है ? मुझे तो उस समय कई बार कोफ्त होती है कि हमारे ऑल इंडिया सर्विस के अधिकारी सरकार के गलत निर्देशों को ऑख-मूदकर मान लेते हैं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, इनके दल को 56 मिनट समय मिला है, यह 12 मिनट बोल चुके हैं। इनके तरफ से और कितनी लोग बोलेंगे?

श्री ननकीराम कंवर :- जब 56 मनिट बोल लें, तब आप उसके बाद बोलना। तब आरोप लगाना।

श्री अमरजीत भगत :- क्या आप नहीं बोलेंगे ? चलिये ठीक है, आप बोल रहे हैं, उसको मान लेते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, अगर इस सरकार को अपने विरूद्ध सुनने की ताकत नहीं है तो आपने बहुत सारे विधान सभा में नियम तोड़े हैं। प्रश्नकाल को स्थगित करके आपने बजट प्रस्तुत किया है। यह पहला सत्र है जो वीरगति को प्राप्त होगा, पूरा हो रहा है। आज तक के विधान सभा में एक भी सत्र पूरा नहीं हुआ है और इनके मंत्री खड़े होकर बोल रहे हैं, हमको समय बता रहे हैं।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भैया, यह तो मालूम है कि आपके अविश्वास प्रस्ताव का क्या हश्र होना है, आपको भी मालूम है, हमको भी मालूम है। लेकिन आप समय-सीमा का देखियेगा, आप लोंगों का 56 मिनट है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, हमें मालूम है कि हमारे अविश्वास प्रस्ताव का हश्र क्या होगा। पर हमें यह भी मालूम है कि यह अविश्वास प्रस्ताव इस सरकार को जनता के बीच में नंगा कर देगा, इसके कपड़े निकाल देगा। इसको बेआबरू कर देगा। जनता के बीच में मुद्दे पहुंच जायेंगे। आप तो चिंता इस बात कि करो कि 2023 में आपका क्या होगा ?

श्री संतराम नेताम :- 75 सीटें आयेगी।

श्री द्वारिकाधीश यादव (खल्लारी) :- जनता ने 2018 में कैसे आपके दल का कपड़ा उतारा है। आप इसको भी याद कर लीजिये। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, यह झूठ की, फरेब की, अन्याय की, अत्याचार की, सरकार है। यह सरकार संविधान, कानून, बिजनेस, रूल्स, किसी को नहीं मानती। आज क्या स्थिति है? एक विधायक कलेक्टर के ऊपर राजद्रोह का आरोप लगाते हैं। सरकार क्या करती है? विधायक कौन है? विधायक हमारे दल का नहीं है। आप बोलेगे तो मैं नाम भी ले दूंगा कि किसने आरोप

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लगाया है। मंत्रियों में और उन सब के बीच में विरोधाभास होता है। प्रदेश में तीन साल में 25 हजार बच्चे और 1 हजार गर्भवती माताओं की मृत्यु हो जाती है। कृषि मंत्री बोलते हैं कि यह भारत सरकार के आंकड़े हैं, यह झूठे हैं। उसके बाद इसी प्रदेश के कद्दावर मंत्री हैं, वह कहते हैं कि नहीं, यह आंकड़े केन्द्र सरकार को हम ही ने भेजे थे। स्वास्थ्य मंत्री बोलते हैं कि हम ही ने यह आंकड़े भेजे थे। 25 हजार बच्चे और 1 हजार गर्भवती महिलाओं की मृत्यु हो जाती है लेकिन आपको लज्जा नहीं आती, आपको शर्म नहीं आती। आप स्वीकार करें, मुख्यमंत्री जी स्वीकार करें कि हम व्यवस्था को सुधारेंगे, हम व्यवस्था को अच्छा करेंगे। बच्चों की मृत्यु न हो, हम इसको देखेंगे। हर चीज को झूठलाने से मतलब नहीं होगा।

एक मंत्री कहते हैं कि कलेक्टर भ्रष्ट है, यह मैं नहीं कह रहा हूं। आपने कलेक्टर का क्या किया? एक कमाई वाले जिले से हटाकर, दूसरे कमाई वाले जिले में भेज दिया। क्या यही सरकार है? इसलिये हमारी अविश्वास है।

एक विधायक मंत्री के ऊपर आरोप लगाते हैं कि मंत्री जी मेरी हत्या करवाना चाहते हैं, तो क्या हम ऐसे मुद्दों पर अविश्वास प्रस्ताव न लाये? आप बहुमत पर इतरायेंगे। जनता ने हमको जिम्मेदारी दी है कि सरकार की गलतियों को हम जनता के सामने लाये, सरकार को जगाये, हम पहरेदार है। हम आपकी गलतियों को, आपकी चोरियों को रोककर, आपको सुरक्षित कर रहे हैं। यदि हम इन मुद्दों को न उठाये, तो शायद यह छत्तीसगढ़ नारकीय बन जायेगा, यह छत्तीसगढ़ अत्याचार का केंद्र बन जायेगा, यह छत्तीसगढ़ अन्याय का केंद्र बन जायेगा।

एक विधायक बोलते हैं कि थानों में रेट लिस्ट लगनी चाहिये। बलात्कार, छेड़छाड़, अपहरण, हत्या, चाकूबाजी, शराब, गांजा, चरस, अफीम के धंधे में क्या-क्या रेट है, थानों में उसकी रेट लिस्ट लगनी चाहिये। यह मैं कह रहा हूं? पूरे प्रदेश की जनता ने वीडियो कांफ्रेंसिंग में सुना है, उसके बाद भी यह सरकार कहती है कि हम बहुत अच्छे से चल रहे हैं।

एक विधायक कहती है कि रेत माफिया के इशारे पर मेरे पति को गिरफ्तार किया गया है। यह मैं कह रहा हूं? विधायक सुरक्षित नहीं है, विधायक का पति सुरक्षित नहीं है। यदि माफियाओं को सुरक्षित करने के लिये विधायिका का भी अपमान हो तो वह चलेगा। यदि पैसा कमाने के लिये विधायिका का भी अपमान हो तो वह चलेगा। हम फिर भी मूकदर्शक बनकर बैठे रहे, हम चुप-चाप बैठे रहे?

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भैया, सुनेंगे? आप कई तरह के आरोप लगा रहे हैं, चलिये यह तो आपका धर्म है।

सभापति महोदय :- देखिये, समय-सीमा निर्धारित है। माननीय सदस्य के भाषण के बीच में बहुत ज्यादा टोका-टोकी न करें। उनको बोलने दें। माननीय बृजमोहन जी, आप भी जल्दी समाप्त करें।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, यह तो फ्रेंडली है। हम आग्रह करके पूछ रहे

हैं। माननीय हमें अवसर दे रहे हैं। माननीय बृजमोहन भईया, आपको मालूम होगा कि अगर किसी देश का प्रधानमंत्री दौर में आये और यह कहे कि बृजमोहन, इस बार ए.के. 47 लेकर आया हूँ, कोई नाटक नहीं चलेगा। यह बहुत गंभीर बात है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, एक संसदीय सचिव, जिनको आपने लंगड़ा, लूला बना दिया है। वह न बोल सकते हैं, न वह काम कर सकते हैं, न वह विधायकी के जैसे प्रश्न पूछ सकते हैं। वह आरोप लगाता है। जुंआ, सट्टा, अवैध शराब बेचने के खिलाफ, संसदीय सचिव चक्का जाम करता है। यह कैसी सरकार है ? यह कौन सी सरकार है ? कभी-कभी हम लोग भी किसी काम के लिए अधिकारियों को फोन करते हैं, माननीय विधायक लोग भी फोन करते हैं हमारी लॉबी में चर्चा होती है तो कहते हैं कि भईया आजकल तो सब काम हाऊस से होवत हे। यह हाऊस कौन है ? हाऊस कहां है ? उसकी संवैधानिक स्थिति क्या है ? हमको भी बोलते हैं कि सर, जरा आप हाऊस से फोन करवा दीजिए। यह कौन सा हाऊस है?यह कहां का हाऊस है ? यह लोकतंत्र है। लोकतंत्र में मंत्रि-मण्डल है, लोकतंत्र में शासन, प्रशासन है। लोकतंत्र में कहीं हाऊस का उल्लेख नहीं है। विधान सभा का उल्लेख है। यह कौन सा हाऊस है ? पूरी जनता जानना चाहती है कि यह कहां का हाऊस है ? मालूम नहीं, हाऊस के मुखिया को मालूम है या नहीं ? कि उनके नाम से कितने फोन जाते हैं। कहां-कहां, किसको-किसको फोन जाते हैं ? कहीं हाऊस के नाम का दुरूपयोग तो नहीं हो रहा है। हम इसलिये चेताना चाहते हैं हम इसलिए आपकी आंखें खोलना चाहते हैं। कल ही यहां पर चर्चा हुई कि कैसे, एक जिले के कलेक्टर ने तीन दिन के अंदर 30 करोड़ रूपये के ऑर्डर दे दिया और फिर उन्होंने कहा कि हाऊस से फोन आया था। यह आपकी जानकारी में हो, यह लोकतंत्र है। यह बहुत बड़ा प्रदेश है, यहां बहुत अधिकारी, कर्मचारी होते हैं जो नाम का दुरूपयोग करते हैं। हर काम के लिए जो खुद नहीं करना चाहते। वह बोल देते हैं कि वहां से फोन करवा दीजिए, यहां से फोन करवा दीजिए, जो उनके अधिकार क्षेत्र में है।

माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ की जनता ने बहुत उम्मीदों के साथ में नये सपने संजोए कि हमने 15 सालों में जो काम किया, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार उससे अच्छा काम करेगी और उनके नेतृत्व में सरकार काम करेगी। आपको जनता ने इतना बहुमत दिया। छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश के इतिहास में कभी छत्तीसगढ़ में इतना बड़ा बहुमत नहीं मिला। आज साढ़े तीन सालों में जनता की उम्मीदों का गला घोंट दिया गया है। मुख्यमंत्री जी, वह छत्तीसगढ़ को कैसे देखेंगे ? आजकल तो वह प्रवासी मुख्यमंत्री हो गए हैं। कभी यू.पी, कभी असम, कभी उत्तराखण्ड, अब हिमाचल और गुजरात जाते हैं। छत्तीसगढ़ की जनता ने उन्हें यहां के लिए चुना है। आप प्रवास करिये। हमारी शुभकामनाएं हैं आप कांग्रेस के बड़े नेता बनिए, राष्ट्रीय नेता बनिए, परंतु छत्तीसगढ़ की जनता ने आपको इतना बड़ा बहुमत दिया है। आपसे उम्मीदें, आशाएं हैं। कभी आप अपने अंतरमन में झांक कर देखिए कि क्या आप उनके साथ न्याय कर पा रहे हैं ? माननीय सभापति महोदय, चलिए, छत्तीसगढ़ की जनता को गुमराह करे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

तो समझ में आता है। अपने राष्ट्रीय नेताओं को भी गुमराह कर देते हैं। इनके राष्ट्रीय नेता बोलते हैं कि छत्तीसगढ़ में हर गांव में फुड पार्क लग गया है। गांव के लोग टमाटर लेकर जाते हैं, उनको पेमेण्ट मिल जाता है और वहां पर टमाटर का कैचप बन जाता है। हम लालटेन लेकर ढूंढ रहे हैं, हम टार्च लेकर ढूंढ रहे हैं, हम ढूंढ रहे हैं, कहां है फूडपार्क ? कहां गया फूडपार्क ? क्या फूडपार्क भी चोरी हो गया ? छत्तीसगढ़ की जनता को गुमराह करें तो समझ में आता है। अपने राष्ट्रीय नेताओं को भी गुमराह करते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी, आपके बहुत से सलाहकार हैं।

सभापति महोदय :- माननीय बृजमोहन जी, समय सीमा का ध्यान रखें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं बैठ जाता हूं।

सभापति महोदय :- नहीं बैठिए मत, समय सीमा का ध्यान रखिए कह रहा हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप कहें तो मैं बैठ जाता हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- प्रथम वक्ता हैं।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय सभापति महोदय, नहीं-नहीं, प्रथम वक्ता की बात नहीं है। यह अविश्वास प्रस्ताव है।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- बैठ जाईये न, समय सीमा का ध्यान रखिए। माननीय नेता जी कितना बोलेंगे ? जितना समय दिया है उतना ही तो बोलेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह अविश्वास प्रस्ताव है और अविश्वास प्रस्ताव पर आप यदि चाहेंगे कि चर्चा न हो, साढ़े तीन साल का...। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- चर्चा नहीं, समय सीमा का ध्यान रखें। माननीय अध्यक्ष जी ने जो आग्रह किया, मैंने उसी का अनुरोध किया है।

श्री धरमलाल कौशिक :- यदि अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा न हो और उनको बार-बार समय बताएं। मतलब इतने घबराए हुए हैं। इतने सदस्य होने के बाद घबराए हुए हैं कि बार-बार समय बता रहे हैं। आपको इतने समय की छूट दी गयी है। अभी तो शुरूआत की है, थोड़ा सुनते जाईये। वह आपका भी काम आएगा। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कोई घबराए हुए नहीं हैं। आपको कितना समय मिला है, उतना ही तो बोले हैं। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- सदन में अविश्वास प्रस्ताव पर 18-18 घंटे चर्चा हुई है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, आप भी इस सदन के सदस्य हैं। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हो गया न और कितना बोलेंगे ? माननीय सभापति जी, इनको बैठाईए। इनका समय खत्म हो गया। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, इस ढंग से बोलना, आप कितना समय बोलेंगे यह सही है क्या ? (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मैंने क्या कहा, यही तो कहा है कि समय सीमा का ध्यान रखें। मैंने क्या कहा था ? माननीय सौरभ जी बैठिए। शिवरतन जी बैठिए। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- हर समय टोका टाकी करना ठीक नहीं है।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय सभापति महोदय, अभी आपने अध्यक्ष जी ने जो व्यवस्था दी है, उसका स्मरण दिलाया। अलग-अलग दल हैं, उनका समय निर्धारित किया गया है। कांग्रेस को 4 घंटा से कुछ अधिक, भा.ज.पा. को एक घंटे से कुछ कम, ब.स.पा. और जोगी कांग्रेस को भी 9 मिनट का समय आसंदी ने व्यवस्था दी है। आपने उसका स्मरण दिलाया। बृजमोहन जी अचानक कह रहे हैं, मैं बैठ जाता हूं। आपको 56 मिनट अकेले बोलना है तो अकेले बोल लीजिए। 10 लोगों को बोलना है तो 10 लोग बोल लीजिए, उसमें क्या तकलीफ है।

श्री ननकीराम कंवर :- बोलने तो दीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- आप सुन तो लीजिए।

सभापति महोदय :- चर्चा करना है तो आप समय सीमा का भी ध्यान रखिए। निर्धारित समय सीमा में चर्चा प्रस्ताव कर पूर्ण भी करना है।

श्री भूपेश बघेल :- आप अभी से कह रहे हैं। सदन के नेता खड़े हैं तब तो सम्मान कीजिए। मैंने अनुमति लेकर पूछा है। मैं अनुमति लेकर बात कर रहा हूं। कम से कम उतना तो ध्यान रखिए। मेरा निवेदन यह है कि जो अध्यक्ष जी ने आसंदी से व्यवस्था दी है, उस नियम का पालन होना चाहिए।

श्री अमितेश शुक्ल :- बाद में मत बोलिए कि समय नहीं मिल रहा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, आपने अविश्वास प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है कि हमने दिया है, चर्चा कराई जाए। आप पिछला रिकार्ड निकालकर देख लीजिए। 3 बार विपक्ष में रहे हैं। उनकी गणना कर लीजिए।

सभापति महोदय :- मैंने यही तो कहा है कि समय सीमा का ध्यान रखें।

श्री धरमलाल कौशिक :- गणना करने के बाद आप हमारे समय को बताएंगे कि हमको कितना समय मिला है ? थोड़ी गणना कर लीजिए। या तो आप यह कहिए कि सरकार अविश्वास प्रस्ताव से भाग रही है।

श्री भूपेश बघेल :- भाग नहीं रहे हैं।

श्री अरूण वोरा :- नहीं भाग रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह भाग रही है। चर्चा कराना नहीं चाह रही है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- माननीय नेता जी, मैंने यही तो कहा कि समय सीमा का ध्यान रखिए। क्या गलत कहा है ? (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- इतना डर, आखिर इतना घबराए हुए क्यों हैं, मैं यह बोल रहा हूं। इतना बहुमत के बाद क्यों घबराए हुए हैं। मुख्यमंत्री जी को बड़े मन से बोलना चाहिए। चाहे रात हो जाए, कल सुबह तक चलना चाहिए। जो चर्चा करना चाहेंगे, चर्चा करेंगे। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- 38-40 लोग हुआ करते थे। अब 14 लोग हो गए हैं...। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- माननीय बृजमोहन जी।

श्री भूपेश बघेल :- आसंदी ने जो बात कही है, उनके समय सीमा का ध्यान रखें। उन्होंने इतना ही कहा है और आपको तकलीफ होने लगी।

सभापति महोदय :- टोकाटाकी नहीं। माननीय बृजमोहन जी।

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, मेरा एक निवेदन है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, एक मिनट। इस सदन में अविश्वास प्रस्ताव पर 18-18 घंटे चर्चा हुई है। नेता प्रतिपक्ष का भाषण अकेले तीन घंटा हुआ है। सदन परंपराओं से चलता है, नियमों से नहीं चलता। आप पुरानी पंरपराओं को देख लीजिए। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अब इनको बोलने मत दीजिए।

सभापति महोदय :- माननीय अध्यक्ष जी ने जो अनुरोध किया है, मैंने उसी को रिपीट किया है। बैठिए। मैंने यही तो कहा है कि समय सीमा का ध्यान रखिए। क्या अलग कहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय..।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति महोदय, इनका समय खत्म हो गया है और कितना बोलेंगे ? इनका समय खत्म हो गया, 14 लोगों का समय उतना ही रहता है। हम लोग 38-39 लोग हुआ करते थे। उस हिसाब से समय मिलता था। अब पुरानी बातों को दोहरा रहे हैं। माननीय नेता जी इनका समय खत्म हो गया है। जो समय सीमा में है, उसी में बात होना चाहिए। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- समय निकाल करके गणना करा लें।

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति महोदय, एक मिनट।

सभापति महोदय :- चंद्राकर जी, बैठिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, अगर आपका निर्देश होगा।

सभापति महोदय :- निर्देश नहीं, मैंने यही तो कहा कि आप समय सीमा का ध्यान रखें। यही तो कहा और क्या कहा ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह अपने समय सीमा का ध्यान ही नहीं रख रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप भी इस सदन के सदस्य रहे हैं। माननीय सदन के नेता भी सदस्य रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सदन के सदस्य रहे हैं नहीं, अभी सदन के सदस्य हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, इस सदन में इसके पहले भी कई बार अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हुई है । (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- लेकिन वे बोल रहे हैं कि हमको ज्यादा समय दें ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मुझे बोलने तो दीजिये ।

श्री कवासी लखमा :- हम लोग यह बोल रहे हैं कि उस समय 40-45 लोग रहते थे, अभी 14 लोग हैं तो उतना समय थोड़ी न होगा । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे केवल यह कह रहा हूं कि हम लोग भी कई बार उस चर्चा में शामिल हुए हैं लेकिन यह कभी नहीं हुआ कि समय का निर्धारण आसंदी की बजाय सत्तापक्ष के मंत्री तय करें । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नहीं, आसंदी ने तय किया उसको हम आपको याद दिला रहे हैं । आप इसको याद नहीं रख रहे हैं । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- माननीय अध्यक्ष जी ने अनुरोध किया है । उसी के अनुसार मैंने बात कही है । (व्यवधान)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- आसंदी ने उसे तय किया है । मंत्री जी नहीं कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आजतक कार्यमंत्रणा समिति में आसंदी से जो समय तय होता है । आजतक अगर निर्धारित समय में कोई भी चर्चा पूरी हुई होगी तो आप जो भी सजा देंगे, हम लेने के लिये तैयार हैं । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उसे आसंदी तय करेगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, ऐसा होता नहीं है । आप चर्चा कराईये, अवश्य चर्चा हो, अच्छी चर्चा हो । आप सुनिये, उसका जवाब दीजिये । प्रदेश की जनता देख रही है । अब कौन कितने मिनट बोलेगा और कौन नहीं बोलेगा । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह तो हमको मालूम है कि प्रदेश की जनता देख रही है । (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- टू दि पाइंट बात करिए न । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इसीलिये तो हम यह बोल रहे हैं कि छत्तीसगढ़ की जनता ने आपको जितना समय दिया है उतना ही बोलिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- ऐसा नहीं होता है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपको उससे ज्यादा अधिकार नहीं है । क्यों अधिकार रहेगा ? (व्यवधान) छत्तीसगढ़ की जनता ने आपको जितना समय दिया है उतने ही बोलने का अधिकार है, आप उससे ज्यादा नहीं बोल सकते हैं । बहुत गलत बात है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- ये कौन होते हैं ? (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष को विशेषाधिकार है और उनकी अनुमति से हम लोग बोल रहे हैं । (व्यवधान)

अजय चंद्राकर :- यदि आप सहमत हैं तो बताईये । सरकार की यदि इच्छा है तो बताईये । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- बैठिए । बृजमोहन जी, अपना भाषण जारी रखिये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, आप भी इस सदन के विपक्ष में सदस्य रहे हैं बाकी सदन के नेता भी रहे हैं । हम लोगों ने देखा है कि सुबह 8-8 बजे तक हम लोगों ने बैठकर अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा की है । सुबह 4 बजे तक, सुबह 8 बजे तक लेकिन आज क्या हो गया है ? (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आज छत्तीसगढ़ की जनता ने आप लोगों का समय खत्म कर दिया है । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- बृजमोहन जी, माननीय अध्यक्ष महोदय जी ने जो अनुरोध किया था उसी को मैंने कहा है । गलत क्या कहा ? बैठिए । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति महोदय, इनका समय खत्म हो गया है । (व्यवधान) छत्तीसगढ़ की जनता ने इनको बोलने का समय ही नहीं दिया। (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, आसंदी का हमेशा सम्मान होता है । बृजमोहन जी आप महीने भर बोलिये लेकिन सत्य तो बोलिये, असत्य कथन मत करिये । प्रदेश की जनता भी सुन रही है । हम लोग सत्यवादी हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भैया, ठंडा गये हैं । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- मंत्री जी, आप बोल दीजिये न कि आप वैसा ही चाहते हैं। आप यदि वैसा चाहते हैं तो वैसा कर लेते हैं । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- जनता जैसा चाहती है वैसा चलेगा । आपके हिसाब से थोड़ी न चलेगा । (व्यवधान)

समय :

12:43 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये एक घंटे बोल चुके हैं, अब इनका समय खत्म हो गया है । ये बोलते हैं कि छत्तीसगढ़ की जनता ने 14 लोगों को चुनकर भेजा है तो समय भी 14 लोगों के हिसाब से मिलना चाहिए । हम लोगों से तुलना करते हैं, हम लोग तो 39-40 लोग हुआ करते थे, उस हिसाब से समय मिलता था । (व्यवधान) आज 14 लोग हैं तो 14 लोगों के हिसाब से ही समय मिलेगा न ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में चर्चा करानी है कि नहीं करानी है ? (व्यवधान) मुख्यमंत्री खड़े होकर बोल दें कि नहीं करानी हैं तो हम लोग नहीं करेंगे । मुख्यमंत्री जी खड़े होकर बोल दें कि हमको अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा नहीं करानी है, हम आलोचना नहीं सुन सकते, भ्रष्टचार के बारे में मत बोलें, जो अनियमितता हुई है उसके बारे में मत बोलें । बोल दें कि चर्चा नहीं करानी है तो हम चर्चा नहीं करेंगे । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- 15 सालों में जितना भ्रष्टाचार किये हो उसी का तो नतीजा है । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मंत्री जी आप किस भाषा का उपयोग कर रहे हैं ?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेजा जी ने मुझे कहा है कि इस अविश्वास प्रस्ताव में चर्चा नहीं कराना चाहते तो हम लोग क्यों इसे स्वीकार करते ? हमने तो सदन में चर्चा कराना स्वीकार किया । इतनी तकलीफ क्यों है ? आपको जितने आरोप लगाना है, जितनी बातें कहनी हैं कहिए । अब आसंदी से माननीय सभापति जी ने आपको ही इतना ही कहा कि समय-सीमा का ध्यान रखें । क्यों कहा ? उसके पहले माननीय अध्यक्ष महोदय जी ने व्यवस्था दे दी थी । अब उतना दिये तो आपको तकलीफ होने लगी और सारे लोग खड़े हो गये । जब आप खड़े होते हैं तब कोई बात नहीं । सदन के नेता खड़े हुए तो सभी लोग खड़े हो जायेंगे, कोई मर्यादा नहीं । आप यदि खड़े हों और इधर से 2-3 खड़े हो गये तो आपको तकलीफ होने लगती है तब सदन की मर्यादा तार-तार हो जाती है और हम लोग खड़े होते हैं तो समय की मर्यादा बरकरार रहती है । आपकी यही व्यवस्था है न ? नेता जी, आप जैसा चलाना चाहेंगे वैसा नहीं चलेगा । पहले भी चर्चा हुई है, घंटो चर्चा हुई है । हमने भी इसी सदन में रात-रातभर जागकर आपको सहयोग किया है लेकिन डॉ. शिवकुमार डहरिया जी बिल्कुल ठीक कह रहे हैं । हमारी संख्या कभी भी 35-39 से कम नहीं रही। आप ही 14 की संख्या में सिमट गये हैं। 14 की संख्या में सिमट गये हैं तो अध्यक्ष जी ने आपको उतना समय दिया। आपको अध्यक्ष जी ने आसंदी से व्यवस्था दी। आप पालन कीजिए। थोड़ा सा आगे हो जायें, लेकिन समय का ध्यान तो रखेंगे। मान लीजिए 56 मिनट दिया है, इसका मतलब 5 घंटे, 60 मिनट आप थोड़ी न बोलेंगे। ठीक है। 56 मिनट

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

है। घंटा हो जायेगा। डेढ़ घंटा हो जायेगा, लेकिन इसका मतलब थोड़ी है कि आप असीमित समय तक बोलते रहें।

श्री ननकीराम कंवर :- एक मिनट। माननीय अध्यक्ष जी, मैं बहुत ही तकलीफ के कारण बोल रहा हूं। मुख्यमंत्री जी, आपका कोई विधायक तो सुनने वाला नहीं है, न मंत्री आपकी मानने वाले नहीं। ये बताइए जब बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- ये क्या बात हुई? (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- आप गलत बात करते हो। (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- यह गलत बात है। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप गलत बात बोलते हो। (व्यवधान)

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- गलत बात बोल रहे हैं। यह भारतीय जनता पार्टी का आंकड़ा है। (व्यवधान)

श्रीमती छन्नी चंदू साहू :- बात को वापस लेना चाहिए। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- आपने हमें जो समय दिया है, वह समय हमें मिला नहीं है। (व्यवधान)

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- आपकी कितनी सुनी जाती थी, सबको मालूम है। (व्यवधान)

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- ये लोग केवल विवाद कर रहे हैं। (व्यवधान)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- विधायक जी को अपनी बात को वापस लेना चाहिए। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- मैं अध्यक्ष जी से पूछकर बोल रहा हूं। (व्यवधान)

श्रीमती छन्नी चंदू साहू :- ननकीराम जी को सोच समझकर जवाब देना चाहिए। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- आपने जो समय दिया है। वह समय अभी हुआ नहीं है। कोई पार्टी देखकर समय निकाल रहे हैं। हमें समय मिला नहीं है। इन्हें टोकने की क्या जरूरत है? (व्यवधान) हम क्यों नहीं बोल सकते ? मैं अध्यक्ष जी से पूछकर बोल रहा हूं। (व्यवधान)

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- आपकी कितनी सुनने थे, सबको मालूम है। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- आप बीच-बीच में क्यों टोकते हैं, यह बताइए। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सीनियर विधायक होकर आप गलत बात कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तो उनका समय हुआ नहीं है। जब समय नहीं हुआ है तो ये क्यों टोकते हैं? हम सब अपना समय उन्हें देना चाहते हैं। पूरा समय जो मिला है, वह समय देना चाहते हैं। आप सुनने की हिम्मत तो रखिए। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- आप वरिष्ठ सदस्य और मंत्री रहे हैं। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- आप सुनने की हिम्मत रखिए। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- सुन रहे हैं। सुन रहे हैं। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप कुछ भी बोलेंगे तो थोड़ी न सुनेंगे। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- मैं अध्यक्ष जी से अनुमति लेकर बोल रहा हूं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- जो मुंह में आये वह बोल रहे हो। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- यहां आपकी दादागिरी नहीं चलेगी। (व्यवधान)

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- हल्ला करने की नीयत मत रखिए। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- कौन मंत्री बात नहीं मान रहा है। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- आप वरिष्ठ मंत्री रहे हैं। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- इनकी सरकार में क्या चल रहा है, यह पूरा प्रदेश जानता है। आप लोग जब चाहे तब खड़े हो जाते हो। वे तो इस्तीफा भी दे दिये हैं। यह पूरा प्रदेश जानता है। और जब मुख्यमंत्री जी खड़े हैं, उस समय आप भी खड़े हो जाते हो। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप लोग बैठिए।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये कुछ भी बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- आप इतने वरिष्ठ हैं। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप सभी बैठिए। (व्यवधान)

श्री प्रकाश शक्राजीत नायक :- आप गृह मंत्री रह चुके हैं। (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- बोलिए-बोलिए। विपक्ष को बहुमत के कारण दबाया नहीं जा सकता। (व्यवधान) विधान सभा बहुमत के आधार पर नहीं चलेगा। नियम-प्रक्रिया के आधार पर चलेगा। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बहुमत से ही चलेगा। (व्यवधान) बबा, बहुमत के आधार पर ही चलता है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, चलिए, बैठिए। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- लोकतंत्र ने हमें बहुमत दिया है। बहुमत से ही सरकार चलती है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्रिगण, प्लीज-प्लीज। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- इनकी सरकार में तो कोई सुनता नहीं था। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कुत्ता नहीं पूछता था। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत भगत जी, चर्चा में आपका भी नाम लिखा हुआ है। डहरिया जी का भी नाम लिखा हुआ है। वोरा जी का नाम लिखा है। सभी का नाम लिखा है। सब अपने-अपने समय का उपयोग करिए। आप उन्हें डिस्टर्ब मत करिए। उनके पास वैसे भी समय कम है। आप उन्हें रोकेंगे, टोकेंगे तो वे लोग समय बढ़ायेंगे। उन पर दया करिये। उनके पास बहुत कम समय है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष जी, हमें आप पर विश्वास है, लेकिन वे अनावश्यक ज्यादा समय लेंगे, तो हमें खड़ा होना ही पड़ेगा।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, आपने व्यवस्था दी थी, सभापति जी ने बोला कि समय-सीमा का ध्यान रखें। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए। स्वस्थ चर्चा होने दीजिए। आरोप-प्रत्यारोप मत लगाइए।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष जी, इसकी शुरूआत ही वहीं से हुई जो आपने व्यवस्था दी। आपने समय-सीमा निर्धारित कर दिया कि इतने घंटे सत्ता पक्ष बोलेंगे। इतना विपक्ष बोलेंगे। दूसरा दल और तीसरे दल इतना समय बोलेंगे। आसंदी से ही सभापति जी ने इतनी बात कही कि समय-सीमा का ध्यान रखें। ये जितनी बात कह रहे हैं, केवल आसंदी की व्यवस्था के खिलाफ ही बोल रहे हैं। हम लोग कहां कुछ बोल रहे हैं। आसंदी ने केवल इतना ध्यान दिलाया कि आप समय-सीमा में रहिए। समय-सीमा का ध्यान रखें। इतना बोले हैं तो फिर इतनी तकलीफ क्यों हो रही है?

अध्यक्ष महोदय :- चलिए। बृजमोहन जी।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं जवाब तो दे दूं। मैंने बोला था इसलिए मैं बोल रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- इनका समय कट कर लिया जाये। ये सब अपना समय उनको दे रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- फिर जबरन के बोल रहे हैं।

श्री ननकीराम कंवर :- मैं गलत नहीं बोलता। जैसे बीच-बीच में खड़े होते हैं, वैसे खड़े नहीं होता। माननीय अध्यक्ष जी, मैंने केवल इतना ही बोला था कि हम बृजमोहन जी को अपना समय दे देंगे।

अध्यक्ष महोदय :- हां, ठीक है।

श्री ननकीराम कंवर :- उसमें क्या दिक्कत था।

अध्यक्ष महोदय :- कोई दिक्कत नहीं है।

श्री ननकीराम कंवर :- बीच-बीच में टोकने की क्या जरूरत थी? क्या आपको ज्यादा बोलना है, ये टोक रहे हैं। बीच में टोकने की क्या जरूरत है, जब वे बोल रहे हैं तो।

श्री अमितेश शुक्ल :- हम लोग सहमत हैं, चलिए बृजमोहन भइया ।

अध्यक्ष महोदय :- बृजमोहन जी, आप बोलिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उनका तो खत्म हो गया, अब दूसरा नाम पुकार लिया जाए अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- बृजमोहन जी, बोलिए ना आप ।

श्री अमितेश शुक्ल :- 56 मिनट तक बृजमोहन जी को बोलने दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- उनको समापन तो करने दीजिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य के खड़े होने पर)

अध्यक्ष महोदय :- चन्द्राकर जी, क्या चाहते हैं आप ?

श्री अजय चन्द्राकर :- इस विषय में समय के पालन में 5-6 बार व्यवस्था के लिए खड़े हुए हैं, मैं एकाध लाईन बोलना चाहता हूं यदि आप अनुमति दें तो । अनुमति देंगे तो ।

अध्यक्ष महोदय :- एक लाईन बोलेंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने एकाध लाईन कहा । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने छोटे से राजनीतिक जीवन में ऐसा पहली बार देख रहा हूं । आज दो विचित्र घटनाएं घटीं । एक विचित्र घटना का तो उल्लेख नहीं करता, प्रथम वक्ता का भाषण शुरू हुआ, संसदीय कार्यमंत्री भी बैठे हैं, यदि हमें घड़ी देखकर सदन चलाना है तो फिर इसकी व्यवस्था आप अध्यक्ष के स्थायी आदेश में शामिल कर दीजिए, बाकी नियमों में शामिल कर दीजिए, औचित्य समाप्त हो जाएगा कि सदन उसी हिसाब से चलेगा । आप व्यवस्था दे दीजिए, क्यों माननीय मुख्यमंत्री जी को बार-बार खड़ा होना पड़े ? संसदीय कार्यमंत्री जी यदि चाहते हैं कि इसी व्यवस्था से छत्तीसगढ़ हमेशा चलेगा तो विपक्ष को मंजूर है । आप व्यवस्था दे दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, ये बातें आप लोग कहने में..।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आसंदी ने आदेश दे दिया है, आप थोड़ा कान लगाकर सुना करो ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री महोदय..।

श्री भूपेश बघेल :- यह व्यवस्था तो आपसे ही आई है । उसके बाद अजय जी दुबारा व्यवस्था क्यों मांग रहे हैं ? यह व्यवस्था तो आसंदी से ही आई है और एक बार नहीं दुबारा आई है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने कहा कि छत्तीसगढ़ में इस-इस दल को इतना समय आवंटित है । आज तक जिस दिन से विधान सभा या विधायकी का काम हिंदुस्तान में शुरू हुआ है ।

श्री अमरजीत भगत :- मिस्टर चंद्राकर, टुडे यू आर वेरी डिप्रेस्ड, अंडरस्टैंड ।

श्री अजय चन्द्राकर :- उस दिन से निश्चित एलॉट समय में काम नहीं हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं होता ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बार-बार आग्रह इसी बात का आ रहा है । सारे लोग इसी बात को कह रहे हैं कि आपका टाईम हो गया, आपका टाईम हो गया । माननीय मुख्यमंत्री जी शुरूआत के 20 मिनट में कम से कम 20 बार खड़े हो चुके हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप सुनिये तो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरा यह कहना है कि आप इसमें स्थायी आदेश दे दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- आप कहते हैं कि सदन नियम से चलता है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आप स्थायी आदेश दे दीजिए छत्तीसगढ़ की विधान सभा आगे ऐसे ही चलेगी ।

अध्यक्ष महोदय :- फिर आप आ गए कि आप स्थायी आदेश दे दीजिए । फिर आपने कहा व्यववस्था दीजिए । आप किसी का भी सुनेंगे । व्यवस्था करूं, नियम का पालन करूं, परम्परा देखूं, स्थायी आदेश पढ़ूं, किस बात को करूं ?

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष जी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- परम्परा से तो चल ही नहीं रहा है, नियम का हवाला दे रहे हैं तो आप नियमों में करिये ।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने तो यह कहा कि प्रारंभिक तौर पर साढ़े पांच बजे तक का समय निश्चित है, प्रारंभिक तौर पर । वह बढ़ेगा भी, आप मानने वाले तो हैं नहीं। आप ज्यादा बढ़ाएंगे, आपका डबल हो जाएगा, उसमें क्या होगा ?

श्री कवासी लखमा :- थोड़ा-थोड़ा बढ़ेगा, 40 लोग बोलने वाले हैं ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं 21वीं बार खड़ा हो रहा हूं, लेकिन अध्यक्ष जी से अनुमति लेकर, आपकी तरह नहीं कि हर समय एक्सपर्ट कमेंट करने के लिए बिना अनुमति के खड़े हो जाते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय ..।

श्री भूपेश बघेल :- अभी कौन सी अनुमति ली है आपने ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, अब समापन की ओर बढ़िये । 12 बजकर 10 मिनट से उन्होंने प्रारंभ किया है, उनको अपना भाषण खत्म तो करने दीजिए । चलिए । आप भी तो समय देखो ना, मैं कहां बोल रहा हूं, अभी तो सभी लोगों को बोलना है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ मिलाकर लगभग 33 सालों से विधायक हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- हम और आप साथ ही साथ हैं, आप चिंता मत करिये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप और हम साथ में हैं । इन 33 सालों में 10 बार हमने अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा सुनी है । आज तक कभी भी अविश्वास प्रस्ताव की चर्चा को रोकने की कोशिश नहीं हुई ।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं होती, नहीं होती ।

श्री भूपेश बघेल :- आज अजीब नजारा है । यह अजीब नजारा है अध्यक्ष महोदय। आप उस पर मत जाइए ना, आप चर्चा शुरू कीजिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, मैं उस जाना चाहता हूं । मैं उस पर इसलिए जाना चाहता हूं कि सरकार हमको बोलने नहीं दे रही है, आपका संरक्षण चाहिए । आपका संरक्षण चाहिए ।

श्री अमरजीत भगत :- आपकी बहुत इज्ज़त है, आपके साथ गणित तो आपके दल वाले कर रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी अविश्वास प्रस्ताव की प्रथम चर्चा में 12 बार खड़े हो जाएं । उनके मंत्री 28 बार खड़े हो जाएं । आप रिकॉर्ड निकाल लें, आप रिकॉर्ड निकाल लें । जब आप लोग पैदा नहीं हुए थे तब माननीय ननकीराम कंवर जी संसदीय सचिव थे, विधायक थे । वे खड़े होते हैं तो उनको बोलने नहीं दिया जाता । ये सदन मर्यादा से चलेगा या कैसे चलेगा ? अभी शुरू हुआ है, अभी खेला शुरू हुआ है । 2023 में जनता आपको इसका जवाब देगी ।

श्री अमरजीत भगत :- इस सरकार में आप लोगों का बहुत सुनवाई हुई है। ननकी दादा जी, आप लोगों की सरकार में आप लोगों का सुनावाई नहीं हो रहा था।

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी, प्लीज ।

श्री ननकी राम कंवर :- आप लोगों का खेला खत्म हो चुका है।

श्री अरूण वोरा :- बृजमोहन जी, खेला तो आपने ने शुरू किया है तो समाप्त आप खुद ही करेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह 2 और 3 का तो ठीक है, लेकिन पता नहीं कि अरूण वोरा जी को क्या हो गया है? पता नहीं कि अरूण वोरा जी को क्या हो गया है? वह बार-बार खड़े हो रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उनको बुखार है। वह गोली खाकर आये हैं।

श्री अरूण वोरा :- हाँ, मेरे को बुखार है, यह बात तो सही है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय वोरा जी और हमारे अमितेश शुक्ला जी, दोनों पिन्हार हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, चलिये अब। देखिये, आप शुरूआत करने वाले पहला व्यक्ति है, इसलिए समाप्त अच्छा करिये।

श्री अरूण वोरा :- यह पिन्हार क्या है, मुझे समझ नहीं आया?

अध्यक्ष महोदय :- अच्छा वृत्ति करिये ताकि कोई केस ना कर पाये। सब लोग केस करने के लिए दौड़ रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरे को कैच करना इतना आसान नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- लेकिन बात तो हो रही है। (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन ही, इधर वाले आपसे बहुत प्रेम करते हैं। आपके साथ गणित आपके दल वाले कर रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मैं बोल रहा हूँ कि आपको कैच करना चाहते हैं। मैं आपका कैच करने की बात नहीं कर रहा हूँ।

श्री अमितेश शुक्ल :- आप तो 15 साल से क्लीन बोल्ड हो। मुख्यमंत्री जी को पहले भी कितना अफसोस हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं नहीं चाहता कि आज कम से कम स्थगित किया जाय। आप लोग बेहतर ढंग से चर्चा करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, आप बताईये ना। आप पूरे रिकार्ड निकाल कर देख लीजिये, मैंने एक भी शब्द ..।

अध्यक्ष महोदय :- आप उन बातों को छाड़िये ना। आप तो बुजुर्ग हैं। आपको 33 साल का अनुभव है ना?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, उसके बाद भी मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- आप बोलिये ना, आपको कौन रोक रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, मुख्यमंत्री जी के सलाहकार हैं। सरकार तनख्वाह, घोड़ा, गाड़ी, बंगला देती हैं और वह कांग्रेस के पदाधिकारी हैं, वह उत्तर प्रदेश के चुनाव के प्रभारी हैं। आपने कभी-कभी तनख्वाहखोर, तनख्वैया सलाहकार देखा है? इस सरकार में क्या हो रहा है? यदि आप गलत परंपरा डालेंगे तो वह इतिहास बनता है, लोग उसको दोहराते हैं। कम से कम ऐसा तो नहीं होना चाहिये। सरकार के पास में इसका कोई जवाब है? हम लोग बचपन से कहावत सुनते आ रहे हैं - "रेत से तेल निकालना"।

श्री अमरजीत भगत :- आपके समय जितने आई.ए.एस. थे, सबकी पत्नियाँ सलाहकार थी ।

अध्यक्ष महोदय :- आज आपका ज्यादा हो रहा है।

श्री अरमजीत भगत :- एन.जी.ओ. में सब सलाहकार थे।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, सब समय गड़बड़ हो रहा है। प्लीज।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, रेत से तेल निकालना। मतलब क्या सरकार आंख बंद करके बैठी हैं? क्या उनके कानों में सुनाई नहीं देता?

अध्यक्ष महोदय :- क्या बाल से खाल नहीं सकता है तो रेत से तेल नहीं निकल सकता है?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बाल में खाल है।

अध्यक्ष महोदय :- खाल में बाल है, बाल में खाल थोड़ी है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अब यह करिश्मा तो भूपेश बघेल जी, उनके मंत्री और उनकी सरकार ही कर सकती है। अभी तक वह जो रेत में से तेल निकालना वाली कहावत थी, उसको कोई चरितार्थ कर रहा है तो भूपेश बघेल जी की सरकार कर रही है। कल हम यहां पर पर्यावरण की चर्चा कर रहे थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- देखिये माननीय सदस्य जी, आपको पिछले एकाध हफ्ते के समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि आई.जी., बिलासपुर ने गांजा को जला कर बिजली पैदा किया। तो यह नये-नये प्रयोग तो होते रहेंगे। आप क्यों तकलीफ कर रहे हैं? (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- चलिये, आपको धन्यवाद। आपने ज्ञानवर्द्धन किया। अध्यक्ष जी, हमने तो यह भी सुना है कि गौठान में बिजली बन रही है, आप देखकर आयेंगे तो बतायेंगे कि कैसे बिजली बन रही है ? क्या होता है कि उत्तर प्रदेश का चुनाव आता है, असम का चुनाव आता है, सीमेंट के रेट बढ़ जाते हैं, लोहे के रेट बढ़ जाते हैं, रेत के रेट बढ़ जाते हैं, यह रेत आम आदमी, गरीब आदमी की आवश्यकता है। कई बार तो मेरे माथा शर्म से झुक जाते हैं कि ये अधिकारी क्या करते हैं? कहीं पर ट्रांसमिशन लाईन के नीचे रेत खोद दी गई। अधिकारी क्या बोलेते हैं कि नया टॉवर लगा है। आपमें दम हैं तो बोलिये ना कि जिन लोगों ने रेत खोदी हैं, उनको जेल के शिकंजों में भेजेंगे। राजनीतिक कार्यकर्ताओं के ऊपर तो अपराध दर्ज होता है। सरकारी काम में बाधा, सरकार की संपत्ति को चोरी करने वाले लोगों के खिलाफ अपराध दर्ज क्यों नहीं होता ह ? वह आपके कौन हैं? उनके खंभे के नीचे से रेत खोद कर ले जाई जा रही है और आप उनका नया खंभा बना देंगे। यह क्या हो रहा है ? 15 जून के बाद रेत की खुदाई के ऊपर प्रतिबंध लग जाता है। क्या आपके पी.आर.ओ. आपको प्रेस की कटिंग नहीं देते हैं ? क्या आपको समचार पत्रों की वीडियो नहीं दिखाते है ? कार्रवाई किस पर होती है ? कार्रवाई रेत की खुदाई करने वाले के ऊपर नहीं होती है बल्कि कार्रवाई तो ट्रांसपोर्टर पर होती है। वह कौन है ? माननीय मुख्यमंत्री जी, आपको याद होगा कि इसी सदन में मैंने कहा था कि माननीय मुख्यमंत्री जी, आप जो रेत की पॉलिसी बना रहे हैं इससे इसमें शराब माफिया आएंगे। आपके टेण्टर में 200, 400 और 1000-1000 टेण्डर भरे जाएंगे। छत्तीसगढ़ में माफिया राज पैदा हो जाएगा। आपने कहा था कि नहीं-नहीं, हम छत्तीसगढ़ के लोगों को रेत के ठेके देंगे। आज क्या हो रहा है ? आप नाम पढ़ लीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- मैं देख रहा हूं और मेरे ख्याल से अविश्वास प्रस्ताव में आपके 84 बिंदु हैं। 84 बिंदु हैं न ? आप कुछ बिंदु अपने पीछे वालों के लिए भी छोड़ दीजिए। अविश्वास प्रस्ताव में आपके 84 या 86, कितने बिंदु हैं ? मैं आपको कुछ और नहीं बोल रहा हूं। मैं आपको केवल इतना बोल रहा हूं कि आप कुछ बिंदु इनके लिए भी छोड़ दीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने पूरे बिंदुओं पर नहीं बोलूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यदि मैं अपने 84 बिंदुओं पर बोलूंगा तो रात के 12 बजे तक केवल मुझे अकेले को समय देना पड़ेगा क्योंकि इस सरकार के ऐसे-ऐसे कारनामें हैं। मैं तो 10-20 बिंदुओं पर बोलूंगा और मेरे 10-20 बिंदुओं से यह सरकार विचलित हो रही है। माननीय मुख्यमंत्री जी विचलित हो रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- आप मजाक बहुत करते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये। आप अपना भाषण जारी रखिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब यह सरकार छत्तीसगढ़ को अवसाद में डूबा रही है। यह क्या हो गया है ? माननीय मुख्यमंत्री जी, हम आपके क्षेत्र में गये थे। 4 लोगों ने आत्महत्या कर ली और उनको जला दिया गया। अभनपुर में कितने लोगों को जला दिया गया ? छत्तीसगढ़ के लोग आत्महत्या कर रहे हैं। यह परसों की घटना है। अभनपुर में 4 लोगों ने रेल की पटरी में जाकर आत्महत्या की।

श्री धनेन्द्र साहू :- अभनपुर में किसको जला दिया गया ?

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- आप इसको भी बताइये न कि गुजरात में नकली दारू पीकर 40 लोग मरे हैं। आप यह कहां की घटना बता रहे हैं ? यहां पर अभनपुर विधानसभा क्षेत्र के एम.एल.ए. खड़े हैं तो आप उनको क्यों बोल रहे हों ?

श्री धनेन्द्र साहू :- बृजमोहन जी, अभनपुर में तो रेल लाइन है ही नहीं। अभनपुर में रेल लाइन नहीं है तो आप वहां पर किसको कंटवा दिये ?

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आप उनको कौन-सा ब्रांड पिला दिये थे ? मुख्यमंत्री जी के विधानसभा क्षेत्र पाटन में ऐसा मार-पीट हुआ है जिसका हिसाब नहीं है। आप वहां पर कौन-सा ब्रांड दे दिये थे ?

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभनपुर में तो रेल लाइन ही नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह महासमुंद की घटना है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अब महासमुंद हो गया। (हंसी)

श्री कवासी लखमा :- यह झूठ बोल रहे हैं। इनका झूठ सिद्ध हो गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले साढ़े 3 सालों में प्रदेश में आत्महत्या की बाढ़ आ गई है। सरकार कहती है कि प्रदेश का हर वर्ग खुशहाल है। किसानों को भरपूर पैसा मिल रहा है। आदिवासियों के हितों में भरपूर योजनाएं हैं। युवकों को रोजगार दे दिया गया है। महिलाओं का उत्थान हो गया है तो फिर प्रदेश अवसाद में क्यों है ? प्रदेश में साढ़े 3 साल में 24,529 लोगों ने आत्महत्याएं की है। क्यों ? प्रदेश खुशहाल है। हरा-भरा है। लहलहा रहा है। यदि आपने छत्तीसगढ़ को सोने की चिड़िया बना दिया है तो फिर यहां पर आत्महत्याएं क्यों हो रही हैं ? छत्तीसगढ़ में रोज 25 लोग आत्महत्या कर रहे हैं। यदि आप एवरेज निकालेंगे तो प्रतिदिन 25 लोग आत्महत्या कर रहे हैं। साढ़े 3 साल में 9,000 युवाओं ने आत्महत्या की है और 752 किसानों ने आत्महत्या की है। छत्तीसगढ़ की ऐसी दुर्दशा किसने बना दी है ? गरीब, किसान, मजदूर को भी न छोड़े भ्रष्टाचारी, बचा-खुचा भी अब लूट कर बना रहे हैं भिखारी। आपने सुना होगा, यह मैं नही बोल रहा हूं। बेचारे एक गरीब आदमी के परिवार

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में किसी की मृत्यु हो गई तो वह उसकी बॉडी लेने गया तो थानेदार ने उससे कहा कि 50,000 रूपये दो, तब इसकी बॉडी मिलेगी। यह क्या हो रहा है ? उसके बाद भी आप बोलते हैं कि सब खुशहाल हैं। यहां अमन-चैन है। पूरे छत्तीसगढ़ में खाद-बीज के लिए किसान दर-दर भटक रहे हैं। माननीय कृषिमंत्री जी बैठे हैं। मेरे पास आंकड़े हैं। आज भी सरकार के गोडाउन में 3 लाख टन से ज्यादा खाद डबल लॉक में पड़ी हुई है, वह सिंगल लॉक में क्यों नहीं पहुंचती ? खाद क्यों नहीं मिलती, बीज क्यों नहीं मिलता ? माननीय मुख्यमंत्री जी, मंत्री जी आपकी अव्यवस्था के कारण खाद और बीज नहीं मिलती । हमारी भी सरकार थी । हमने यह निर्णय किया था कि वैगन से खाद सीधा सिंगल लॉक में जाएगा, सीधा सोसायटियों में जाएगा । आपके यहां तो माफिया नियंत्रित करते हैं कि सोसायटियों में नहीं जाना चाहिए । वहां खाद जाएगा तो हमसे कौन खरीदेगा । आखिर ये सब क्या हो रहा है ? मुख्यमंत्री जी, आपने घोषणा-पत्र में कहा था कि हमारी सरकार के दो साल का बचा हुआ बोनस आप देंगे, उसका क्या हुआ ? अब आप सत्ता में आ गए हैं, वह दो साल का बोनस कहां गया ? अभी आपने अनुपूरक बजट रखा । 50 हजार किसानों को पम्प का कनेक्शन देना है, उसके लिए 500 करोड़ चाहिए । अभी अगस्त आने वाला है । कितने महीने बचे हैं । पम्प के कनेक्शन कितने दिनों में मिलेंगे? आप किसानों की खुशहाली की बात करते हैं । किसानों के मध्य कालीन ऋण का क्या हुआ, किसानों के दीर्घकालीन ऋण का क्या हुआ ? माननीय अध्यक्ष जी, आप और हम जानते हैं कि जो ऋण माफी होती है, ऋण माफी में किसान को उऋण बनाना है तो उसको दीर्घकालीन ऋण, मध्यकालीन ऋण माफ होने चाहिए । आपने पिछले वर्ष का अल्पकालीन ऋण माफ कर दिया और ढिंढोरा पीट रहे हैं । आज किसानों के ऊपर में 5000 करोड़ रूपए से ज्यादा राष्ट्रीयकृत बैंक का मध्यकालीन ऋण, दीर्घकालीन ऋण बाकी है । आपने घोषणा में कहा था कि किसानों के सभी कर्जे माफ किये जाएंगे । माननीय मुख्यमंत्री जी बैठे हैं। इन्होंने अपने घोषणा-पत्र में कहा था कि हम सिंचाई को दुगुना कर देंगे । अभी माननीय मंत्री जी का जवाब में आया कि खाली 1 प्रतिशत सिंचाई बढ़ी है । वह कहां से दुगुनी होगी, आप किसानों के खुशहाली की बात कर रहे हैं । माननीय मुख्यमंत्री जी, चिराग परियोजना में वर्ल्ड बैंक से, नाबार्ड से लोन के लिए हमारे समय में प्रस्ताव गया था, वह स्वीकृत होकर आ गया । आदिवासी ब्लॉकों के लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी बनाने के लिए चिराग योजना लाई गई है । उसका क्या हाल है ? अधिकारियों की पत्नियां उसमें नौकरी कर रही हैं । चिराग परियोजना ऐसे चलेगी ? वह भी भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है ।

माननीय अध्यक्ष जी, इस सरकार की गौधन न्याय योजना को पूरे विश्व में, पूरे देश में चर्चा है कि पूरे देश के लोग देखने आ रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- जल्दी करिए न, एक घंटा होने वाला है, 2 मिनट बचे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, एक घंटे में 30 मिनट व्यवधान हुआ है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं समझ गया, फिर भी मैं कह रहा हूं कि जल्दी करिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, अगर आप टोकेंगे तो हम लोग बोल नहीं पाएंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं नहीं टोक रहा हूं, समय टोक रहा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, आजतक इतिहास में कभी भी नहीं हुआ है कि प्रथम वक्ता को समय न दिया जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्रथम वक्ता हैं तो ऐसी गोली चलाईए कि कहीं जाकर लगे । आपकी गोली तो इधर-उधर भाग रही है ।

श्री अमरजीत भगत :- इतने दिन में इनका भाषण भोथरा गया है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप कुछ ठोस बात करिए, आप कहां लगे हैं । आज आपकी गोली निशाने पर जा ही नहीं रही है, क्या बात है ? मैं कह दूंगा तो टोकना हो जाएगा, मगर जितना तीखा आप बोलने के लिए प्रसिद्ध हैं, उतना तीखापन आज नहीं है । मैं आपको उत्प्रेरित कर रहा हूं । इनका भाषण धारदार चलता है तो भाषण धारदार चले न ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, गोधन न्याय योजना में अभी तक 3,37,507 लोगों को 148 करोड़ रूपए दिए गए हैं । प्रति व्यक्ति कितना होता है ? 2 साल में 4276 रूपए होता है । महीने का कितना हुआ ? महीने का 200-250 रूपए हुआ । 200-250 रूपए तो एक दिन की मजदूरी हो जाती है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, बृजमोहन जी कम से कम गोधन न्याय योजना में न बोलें, गाय के लिए जितने काम हमारी सरकार ने किया है, उसमें इनको प्रशंसा करनी चाहिए, जो गोधन न्याय योजना के बारे में बोल रहे हैं । गाय की असली रक्षा करने वाला कांग्रेस की सरकार है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, यह सरकार 140 करोड़ रूपए की गोबर खरीदती है और 115 करोड़ रूपए उसके विज्ञापन में खर्च कर देती है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- गाय का गोबर बेचने से गाय की इज्जत बढ़ी है । आज हमारी सरकार ने किया है । आप लोग सिर्फ ढिंढोरा पीटते हैं । हमने गौ माता की रक्षा की है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, पत्रकारों को तो हरबोलवा बनने के लिए मजबूर किया जा रहा है । रविन्द्र चौबे जी से, मुख्यमंत्री जी से पूछ लो कि क्या शब्द होता है ?

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग भी इनके लिए नये-नये शब्द खोजकर रखो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लिखोगे तो जेल जाओगे, दिखाओगे तो फर्जी केस बनेगा, बोलोगे तो थाने में पिटाई होगी और छापोगे तो जीना हराम कर देंगे। छत्तीसगढ़ में पत्रकारों की ये हालत है। लोग ऐसी हालत में क्या करेंगे ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज महिलाओं के अपराध के मामले में छत्तीसगढ़ की क्या हालत हो गई है ? बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं। सामूहिक दुष्कर्म की बाढ़ आ गई है। बलात्कार के मामले में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

छत्तीसगढ़ देश के छठवे नंबर हैं, महिला अपराध में 12वे नंबर पर है और महिलाओं की बात करते हैं ? माननीय अध्यक्ष जी, इस प्रदेश की 20 हजार महिलाओं को बेरोजगार बनाने का, उनके पेट पर लात मारने का किसी ने काम किया है, तो यह भूपेश बघेल की सरकार ने ready to eat बंद करके किया है। बड़ी-बड़ी बात कर रहे थे कि हम महिलाओं को काम देंगे। यहां महिला बाल विकास मंत्री जी हैं, उनका वीडियो मेरे पास है। उन्होंने, उन महिलाओं को जाकर कहा कि आप चिंता मत करिये, आपको 15 रूपया किलो ट्रांसपोर्टिंग का मिलेगा लेकिन आज उनको एक रूपया किलो मिल रहा है। एक स्वसहायता समूह को 3 हजार किलो का ट्रांसपोर्टिंग करना है, 3 हजार रूपये महीने में 20 महिलाएं कैसे चलेंगी ?

महिला एवं बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंडिया) :- 15 हजार मिल रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कैसे चलेंगी ? क्या हो रहा है ? किसी एक ठेकेदार को, अगर आप किसी एक जेब गरम करने वाले को उपकृत करने के लिए इस प्रकार का काम करेंगे, तो छत्तीसगढ़ कैसे बचेगा ? आज बेरोजगार युवा दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं, बेरोजगारों के साथ अन्याय हो रहा है, अत्याचार हो रहा है।

श्री अमितेष शुक्ल :- भईया, सबसे कम बेरोजदारी दर यहां पर है।

श्री अरूण कुमार वोरा :- बृजमोहन जी, देश के 12 करोड़ लोग बेरोजगार हो गए, उसके बारे में आपका क्या ख्याल है ? बताईये। रोजगार तो नहीं दे सके और आप छत्तीसगढ़ की बात कर रहे हैं। हम देश की बात करते हैं इसमें छत्तीसगढ़ भी समाहित है।

श्री अमितेष शुक्ल :- बृज भईया, देश की सबसे बेरोजगारी यहां है। दिल्ली मे क्या हालत है, आप जान रहे हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे भी प्रश्न के उत्तर में माननीय मुख्यमंत्री जी ने बताया है कि पूरे छत्तीसगढ़ में साढ़े 3 साल में 18,199 बेरोजगारों को रोजगार दिया गया है। होर्डिंग्स में छपता है कभी 5 लाख छपता है, कभी 4 लाख छपता है, कभी 2 लाख छपता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि युवा बेराजगार हैं। क्योंकि छत्तीसगढ़ में ऐसे ही कांग्रेस की सरकार है। बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं।

श्री संतराम नेताम :- 2 करोड़ लोगों को रोजगार मिला, वह केन्द्र का क्या है ? 2 करोड़ का क्या किया, उसको भी बता दीजिये ? मोदी जी ने बोला था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बेरोजगारी भत्ते का क्या हुआ ? मुझे भी कहा गया था कि 10 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध करायेंगे नहीं तो 25 सौ रूपया बेरोजगारी भत्ता देंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने कहा कि हमने 185 एम.ओ.यू. किए हैं। 80 हजार करोड़ रूपये का इनवेस्टमेंट होगा। एम.ओ.यू. पर्व मनाया गया। एम.ओ.यू. पर्व का क्या हुआ ? 15 सौ करोड़ रूपया भी इन्वेस्टमेंट नहीं हुआ। 8 उद्योग भी नहीं आये। उसमें जिन उद्योगपतियों को एम.ओ.यू. करना

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है, उसमें प्रति टन (हाथ से इशारा किया) ये क्या है ? आज पूरे छत्तीसगढ़ का क्या हालत हो रही है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसलिए बोल रहा हूं कि पूरे छत्तीसगढ़ की बदहाली है, आज छत्तीसगढ़ के श्रमिकों के मद का पैसा, मुख्यमंत्री जी यह आपके टैक्स का पैसा नहीं है ? आपके खजाने का पैसा नहीं है, 7 सौ करोड रूपये छत्तीसगढ़ के श्रमिकों का श्रम कल्याण मण्डल, भवन सन्निर्माण मण्डल में पड़ा हुआ है। वह श्रमिकों का पैसा है। उनको पिछले साढ़े 3 साल से उनको एक रूपया भी नहीं दिया जा रहा है। श्रमिकों का पैसा खाने वाली यह सरकार है। माननीय मुख्यमंत्री जी, सिंचाई मंत्री जी मैं भी इसी सदन में, इसी सत्र में था। आपको याद होगा, हमने बोधघाट परियोजना के बारे में कहा था। क्या हुआ, टॉय-टॉय फिस्स । बड़ी-बड़ी बात करते हो ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, अब चलिये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- 13 करोड़ रूपये, एक ऐसी एजेंसी को जो ब्लैक लिस्ट में है, क्यों उसको दे दिया गया ? आज तक उसकी रिपोर्ट नहीं आई, सत्यनारायण शर्मा जी बैठे हैं, जब मैं सिंचाई मंत्री था, बार-बार पूछते थे कि वेवकॉस एजेंसी कौन सी है, उसको कितना पैसा दिया गया है, उसको ब्लैक लिस्ट क्यों नहीं किया गया, आज क्या हो रहा है ? माननीय मंत्री जी, माननीय मुख्यमंत्री जी, छत्तीसगढ़ की सिंचाई योजनायें किस हालत में है, आपने 4 सिंचाई योजनाओं को पूरा करने के लिए कहा था, लाखों हेक्टेअर सिंचाई की क्षमता बढ़ेगी, अरपा भैंसाझार आज तक पूरा क्यों नहीं हुआ, गंगरेल तांदुला लिंक का आज तक सर्वे क्यों नहीं हुआ, पैरी महानदी लिंक का सर्वे क्यों नहीं हुआ, अहिरंग खारंग लिंक के प्रोजेक्ट, रेहन अटेंम्ट लिंक का सर्वे क्यों नहीं हुआ ? आप एक प्रतिशत सिंचाई की सुविधायें बढ़ा नहीं पाये । आज यह बोलते हैं कि अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा मत करो । अपराध की स्थिति तो इतनी बद्तर हो गयी है,

देखोगे तो हर रोड पर मिल जायेंगी लाशें ।
ढूंढोगे तो छत्तीसगढ़ में कातिल नहीं मिलेगा ।।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ अपराध का गढ़ बन गया है । छत्तीसगढ़ में अफीम, गांजा, चरस, मार्फिन यह तो मजाक हो गया है । मैं राजधानी का विधायक हूँ, छत्तीसगढ़ के हर व्यक्ति का सपना होता है कि उसका बच्चा रायपुर में आकर रहे, रायपुर में आकर पढ़े, मेरा एक मकान हो । अब रायपुर में लोग अपने बच्चों को भेजने से घबरा रहे हैं । परसों की घटना है, एक नवजवान लड़की ने एक गूंगे, बहरे को चाकू से गोद दिया ।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग जो प्रश्नकाल में और ध्यानाकर्षण में बात कर चुके हैं, उसी को अगर अविश्वास प्रस्ताव में करोगे तो मजा कैसे आयेगा ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बीच में कभी नहीं बोलता ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मैं तो बोल रहा हूँ ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बृजमोहन जी से कहना चाहूंगा कि जितनी देर तक इन्होंने आरोप लगाये हैं, यह आरोप पूरी तरह से चूँ-चूँ का मुरब्बा ही साबित हो रहा है । यह चूँ-चूँ का मुरब्बा है । (मेजों की थपथपाहट)

संसदीय कार्यमंत्री श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, आज आप आसंदी से बिल्कुल ठीक-ठीक बोल रहे हैं । क्या है कि सत्र में जितनी घटनायें बार-बार चर्चा में आ गया है, उसी वाट्स एप को बृजमोहन जी बार-बार चला रहे हैं । आज बिल्कुल ठीक बोल रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं बोल सकता हूँ कि नहीं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं, आप बोल सकते हैं । आप बोल भी रहे हो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपको बोलने का अधिकार है ।

अध्यक्ष महोदय :- मर्यादा के हिसाब से, नियम के हिसाब से, स्थायी आदेश के हिसाब से, व्यवस्था के हिसाब से, क्या मैं बोल सकता हूँ कि आप लोग किस तरह से भाषण दे रहे हैं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष जी, आप अच्छा बोल रहे हैं । आप जो कह रहे हैं ना, हम लोग समझ रहे हैं । उन्होंने चाकूबाजी की घटना का जिक्र किया, तीन दिन पहले उठा चुके थे । आपने टोका ना । आप समझ लीजिए, जितनी घटनायें हुई है, वाट्स एप का पूरे रिप्ले कर रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं कह रहा हूँ कि अविश्वास प्रस्ताव है, कोई ठोस बातें आ जाये तो ज्यादा अच्छा हो । कम समय में ज्यादा अच्छी बातें हो सकती है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, गांव-गांव, शहर-शहर रेप हो रहा है, न्याय का हर अंग ऑंख मूंदकर सो रहा है, सो रही है पुलिस, जागे हुये हैं अपराधी, अन्याय को बढ़ावा देने हो गई है सरकार आदी, कूपोषित हो गई है सरकार की जुबान, पीड़ित को ही दोषी बताकर पुलिस कर रही है गुमान । आज छत्तीसगढ़ में अपराध, नशे का व्यापार, व्ही.आई.पी. रोड, यह क्या हो रहा है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ आर्थिक बदहाली का शिकार है । छत्तीसगढ़ में शिक्षा व्यवस्था बदहाल हो गयी है । आज हम शिक्षा के मामले में देश में 36 वें नंबर पर हैं । शिक्षा के लिए प्रतिवर्ष केन्द्र सरकार से 10 हजार करोड़ रूपया मिल रहा है । वह पैसा कहां जाता है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में 60 हजार स्कूलें हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- 36 वां नंबर किसमें है, यह आपने बताया नहीं है । राज्य से ज्यादा, एकाध दो गेप करके हम लोगों को नंबर दे रहे हो क्या ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हॉं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ना, अब खत्म करिये ना ।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह नंबर कहां से तय कर लिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- 26 राज्यों में तीसरे नंबर पर है ।

श्री अरूण वोरा :- आज छत्तीसगढ़ सब मामलों पर नंबर 1 है ।

अध्यक्ष महोदय :- समाप्त करिये ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- [XX][1], आज तो पता नहीं चल रहा है। वह कुछ भी बोले जा रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- [XX]

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, समय हो गया है, बाकी सदस्य भी बोलने के लिए हैं।

अध्यक्ष महोदय :- हॉ, हो गया।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत सारी जानकारी तो पूछ लिये, मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि अभिषेक सिंह यह क्या है ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बहुत बढ़िया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वामी आत्मानंद जी का हम सम्मान करते हैं। वह विवेकानंद जी के अनुयायी रहे हैं। पूरे देश में और विश्व में उनका नाम है। स्वामी आत्मानंद स्कूलों के नाम पर क्या हो रहा है ? छत्तीसगढ़ में 60 हजार स्कूलें हैं, 60 हजार स्कूलों में आपने 300 स्कूलें खोल दीं। स्वामी आत्मानंद जी भी वहां पर बैठे हुए देख रहे होंगे।

श्री गुलाब कमरो:- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी सरकार में 3000 स्कूल बंद हुए थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं आपको एक किस्सा बताना चाहता हूं।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मुख्यमंत्री जी को बधाई देनी चाहिए। आलोचना करने से नहीं होगा। अगर उन स्कूलों का स्वामी आत्मानंद जी के नाम से किया है माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है। उसकी लिए बधाई देना छोड़ कर क्या आलोचना करोगे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धमतरी में नगरी के श्रृंगी ऋषि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में, यह देखिये खेल कैसे होता है, 6 करोड़ रुपये कलेक्टर ने स्कूल की बिल्डिंग बनाने के लिए स्वीकृत किये। 6 करोड़ रुपये को कलेक्टर ने 4 पंचायतों को बांट दिया। तुम जाली लगाओगे, तुम बिल्डिंग बनाओगे, तुम दरवाजे लगाओगे। यह भ्रष्टाचार का कैसे आलम है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- लेकिन माननीय विधायक जी, मैं बताना चाहती हूं वह स्कूल इतना अच्छा बन रहा है कि आस-पास में वैसा स्कूल कहीं बना ही नहीं है। वह देखने लायक है, आप जाकर देखिये।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, आप मत बताईये।

---

[1] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, वह स्कूल 04 साल से नहीं बना है। अब सुनिये न, वह विधायक जी बोल रही हैं। मैं नहीं बोल रहा हूं।

श्री अमितेश शुक्ल :- कुछ कन्फ्यूजन है।

श्री अमरजीत भगत :- एकदम ऑउट ऑफ कंट्रोल हो रहे हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वह ऋंगी ऋषि स्कूल एकदम टूट-फूट गया था। आप लोगों ने 15 साल से ध्यान नहीं दिया। अभी वह स्कूल इतना अच्छा बना है कि लोग तारीफ करते थक नहीं रहे हैं। ऐसा स्कूल तो उस एरिया में बना ही नहीं है।

श्री देवेन्द्र यादव :- भैया की नींद पूरी नहीं हुई है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार भ्रष्टाचार में नये-नये तरीके खोज रही है। क्या कभी आज तक हुआ है कि 6 करोड़ की स्कूल को 4 सरपंचों को निर्माण के लिए दे दिया गया। आज उसकी लागत 12 करोड़ रुपये हो गई है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वह स्कूल जैसा भी बना है, लेकिन अच्छा बना है। वह देखने लायक है। पैसे का सदुपयोग हुआ है।

श्री अमरजीत भगत :- आप जब शिक्षा मंत्री थे तो प्रदेश में 3 हजार स्कूल बंद किया था। हमारी सरकार स्कूल खोल रही है तो उसमें आप प्रश्नचिन्ह खड़ा कर रहे हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- कार्य में बाधा भाजपा के लोग ही उत्पन्न कर रहे थे, वह चाहते थे कि स्वामी आत्मानंद स्कूल नहीं बने।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, स्वामी आत्मानंद जी के सानिध्य में मैंने भी काम किया है। मैं भी उनके साथ रहा हूं। उनका आशीर्वाद मुझे भी मिला है। पर स्वामी आत्मानंद जी के नाम पर क्या इस प्रदेश के 50 लाख बच्चों के भविष्य को बर्बाद किया जायेगा ? यह बड़ी-बड़ी बात कर रहे हैं। 300 स्कूलों में कितने लोगों की भर्ती किये, प्रश्न के उत्तर में 400 की भर्ती होना बताया है। 300 स्कूलों में कितने लोगों की भर्ती हुई है, 400 लोगों की भर्ती हुई है। मेरे पास प्रश्न का जवाब है। बाकी टीचर कहां गये ? आज अंग्रेजी स्कूल खुलना चाहिए, हम उसका स्वागत करेंगे। प्रश्न में आया है, पर उसके नाम से कम्पयूटर, टेबल सप्लाई हो गया है पर कम्पयूटर ऑपरेटर नहीं है। टीचर नहीं हैं। आखिर स्वामी आत्मानंद जी के नाम पर खुलने वाली स्कूलें।

श्री कवासी लखमा :- हमारे संतराम जी ने अबूझमाड़ के स्कूलों का प्रश्न उठाया था, वह प्रश्न क्यों लगायेंगे, उनको आप पूछो। यह बूढे हो गये हैं, इनका दिमाग काम नहीं कर रहा है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- नगरी में भारतीय जनता पार्टी राजनीति कर रही थी।

अध्यक्ष महोदय :- मजा नहीं आ रहा है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री संतराम नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह गलत बयान दे रहे हैं, वह ऐसा नहीं है। वह सरकारी स्कूल का था, आत्मानंद स्कूल का नहीं है।

श्री कवासी लखमा :- क्या आप ऐसे असत्य बोलोगे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह सरकार की ऐसी योजना है, 6 करोड़ रुपये को 04 पंचायतों में बांटकर एक बिल्डिंग बनाई जायेगी, यह भ्रष्टाचार का नायाब नमूना है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वह श्रृंगी ऋषि स्कूल भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में इतना टूटा-फूटा था कि इनको देखने की फुरसत नहीं थी।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय विधायक जी उस स्कूल के बारे में क्या बोल रही हैं, उसको सुन तो लीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनको मौका मिलेगा।

अध्यक्ष महोदय :- कृपया, आप समाप्त करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शहरों की हालत..।

श्री कवासी लखमा :- आपके 100 झूठ हो गये हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- शहरों की हालत इतनी बुरी, इतनी खराब हो गयी है। रायपुर राजधानी है। यहां सारे मंत्री, सारे विधायक रहते हैं। इसकी हमेशा चिंता की जाती है कि राजधानी का स्वरूप अच्छा हो। आज राजधानी में क्या हालत हो रही है? मैंने प्रश्न पूछा था पिछले 3.5 साल में सिर्फ 54 करोड़ रूपये स्वीकृत हुए हैं और माननीय मुख्यमंत्री जी ने घोषणा की कि नगर निगम को 10 करोड़ रूपये, नगरपालिका को 5 करोड़ रूपये, नगर पंचायतों को 3 करोड़ रूपये मिलेगा।

श्री कवासी लखमा :- मिल रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं मिला। माननीय मंत्री जी बोलते हैं..।

(आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) के खड़े होकर कुछ कहने पर)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये न, चलिये न।

श्री ननकीराम कंवर :- भैया, आप अपने विभाग में भाषण दे देना। शराब विभाग में भाषण दे देना।

श्री कवासी लखमा :- उसके बाद पार्षदों की तन्ख्वाह बढ़ी है, तुम्हारे वार्ड पार्षद की तन्ख्वाह बढ़ी है। आपने तो 15 साल में 15 पैसा नहीं बढ़ाया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदन को सूचना

अध्यक्ष महोदय :- आज भोजन अवकाश नहीं होगा। मैं समझता हूं कि सदन इससे सहमत है। भोजन की व्यवस्था आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री मोहम्मद अकबर की ओर से माननीय सदस्यों के लिये लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिये प्रथम तल पर की गयी है। कृपया सुविधानुसार ग्रहण करें।

बृजमोहन जी, अब आपका एक घण्टे से ज्यादा हो गया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्योंकि आज हमने सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है। इसलिये हम आज इस सरकार के द्वारा आयोजित भोजन नहीं करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बढ़िया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमेशा ऐसा होता रहा है कि अध्यक्ष महोदय की तरफ से भोजन की व्यवस्था होती रही है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, बहुत अच्छी बात है। यह तीखा प्रहार है, अब समाप्त करिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नगरीय प्रशासन में तो बड़ा खेल चल रहा है। एक काशी है, काशी के पास जाकर भागीरथी प्रयास करना होता है।

श्री संतराम नेताम :- उधर, आपकी तरफ से कई लोग निपट कर आ गये हैं। मैंने खुद देखा है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये हो गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं 5 मिनट में समाप्त करूंगा। नगरीय प्रशासन विभाग, क्योंकि मैं इस नगर से...।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- अध्यक्ष महोदय, एक मिनट। बृजमोहन जी, एक मिनट। हमारे द्वारा जो भोजन की व्यवस्था आयोजित की गई है, आपने उसका इनकार कर दिया तो आप आयोजित कर दें, हम लोग खा लेंगे। (हंसी)

श्री संतराम नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने खुद देखा है कि कई लोग तो निपट कर आ गये। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आजकल ऐसी परंपरा है कि जब अविश्वास प्रस्ताव आता है तब भोजन आपकी तरफ से होता है और हम लोग उसमें इनवॉल्व होते हैं।

श्री मोहम्मद अकबर :- हम तो आपके इंतजाम में भी खाने को तैयार हैं।

अध्यक्ष महोदय :- यहां हमारे आने के बाद यह पहला अवसर मिला है, इसलिये पता नहीं चला। यदि आपकी पुरानी व्यवस्था होगी तो ऐसा करेंगे।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी भी तो हमारे दल के सदस्य है। तो उनके द्वारा आयोजित खाना कैसे खाओगे? बताओ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री ननकीराम कंवर :- आप यह भूल जाईये कि वह आपके सदस्य है। वह आपके सदस्य नहीं है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसा भी कर सकते हैं कि इनको खाने के लिये दे देते है, आप उसका पैसा दे दीजियेगा।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, वह कह दे न। उसका बिल वह पटा देंगे, उसमें क्या दिक्कत है। अकबर भाई, बिल इनके पास भिजवा दीजियेगा।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बृजमोहन जी, सुनिये। अध्यक्ष जी ने कहा कि आपकी बातों में उतनी धार नहीं है, हम लोग भी एक घण्टे से सुन रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि खोदा पहाड़ और निकली चूहियां। यह आरोप तो पूरे तरीके से निराधार है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी, नगरीय प्रशासन विभाग में इतनी बुरी हालत है। आपने नगर निगम को 10 करोड़ रूपये, नगरपालिका को 5 करोड़ रूपये और नगर पंचायतों को 3 करोड़ रूपये देना घोषित किया। काशी के पास जाकर भागीरथी प्रयास करना पड़ता है कि जो 17.50 प्रतिशत देगा, उसको 10 करोड़ मिलेगा, उसको 5 करोड़ मिलेगा, उसको मिलेगा 3 करोड़।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो गलत बात है। जिस दिन मुख्यमंत्री जी ने घोषणा की उसके बाद सारे निकायों को पैसे पहुंच गये हैं। इनके निकाय का भी..।

श्री अजय चंद्राकर :- झूठ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, मेरे पास लिस्ट है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, यह तो इस तरीके से, इन लोग तो अपने कार्यकाल की बात कर रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, हम चुनौती देते हैं कि पैसे नहीं मिले हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, यह इस तरीके से बेबुनियाद और अनर्गल बातें कर रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मैं चुनौती देता हूं कि स्वीकृति का लेटर गया है, लेकिन पैसा कहीं नहीं गया है। जब तक 3.5 प्रतिशत नहीं जायेगा, तब तक पैसा निर्धारित नहीं होगा। मैं चुनौती देता हूं।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, इनके पास.. (व्यवधान)।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग खत्म करिये। प्लीज।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, इनको क्या पता होगा। सब महापौर तो हमारे हैं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे यहां परसो नगर पंचायत वाले आये थे और धन्यवाद देकर गये है, वहां 3 करोड़ रूपये स्वीकृत हुआ है। इस प्रकार का..।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, यदि नगरों का विकास नहीं होगा और नगरों के विकास के लिये मुख्मयंत्री जी की घोषणा के बाद काशी जाना पड़ेगा, भागीरथी जाना पड़ेगा, तो यह क्या है? मुख्यमंत्री जी, जरा देखिये, यह रायपुर शहर है, यह राजधानी है। राजधानी को पैसा क्यों नहीं मिल रहा है? यहां पर विकास क्यों नहीं हो रहा है? यहां पर भ्रष्टाचार क्यों हो रहा है? बिना पैसे के कोई काम क्यों नहीं हो रहे हैं?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटा सा उदाहरण देता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- वह अपना भाषण खत्म कर रहे हैं, उनको खत्म करने दीजिए।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग विधायक कॉलोनी में रहते हैं। 15 सालों में इनकी सरकार में हम चिल्ला-चिल्ला कर थक गये। माननीय अमरजीत भगत जी वहां रहते हैं वह कहते थे कि एक दिन माननीय बृजमोहन जी को विधान सभा क्षेत्र में घूमाकर लाईये, वहां पर कैसा निर्माण हुआ है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज माननीय कवासी लखमा जी माननीय बृजमोहन जी के पीछे पड़ गये हैं और इनकी खैर नहीं है। (हंसी) माननीय अध्यक्ष महोदय, लखमा भारी पड़ रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने तो अभी एक विभाग के बारे में बोला, बाकी हमारे मंत्री बोलेंगे। हम आपको बता देंगे कि इस प्रदेश में भ्रष्टाचार की इंतहा हो गई है।

श्री संतराम नेताम :- लेकिन आपके कार्यकाल के 15 सालों में जो हुआ, उससे कम ही हुआ है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश में अन्याय, अत्याचार की इंतहा हो गई है। यहां बिना पैसे के कोई काम नहीं होता। छत्तीसगढ़ की जनता त्रस्त हो गई है, यहां वनवासी, आदिवासी त्रस्त हैं। हमारे जनजाति के बंधु त्रस्त हैं।

अध्यक्ष महोदय :- वह अब समापन कर रहे हैं। उनको समापन करने दीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज नदियों की धाराओं को बदला जा रहा है। यहां के पर्यावरण को बर्बाद किया जा रहा है, यहां कानून-व्यवस्था की स्थिति जर्जर हो गई है और ऐसी स्थिति में इस सरकार को एक मिनट भी रहने का अधिकार नहीं है। यह सरकार सहकारिता, सहकारिता आन्दोलन की हत्या करती है, यह सरकार जनप्रतिनिधियों के अधिकारों को छिनती है। यह सरकार पत्रकारों के अधिकारों को छिनती है, यह सरकार गरीबों के मकान को छिनती है। "करप्शन से, पैसे से भर रहे हैं अपना पेट।

आ गई है, आपकी एक्सपाईरी डेट।।"

अध्यक्ष महोदय :- आपको धन्यवाद्।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप तैयार हो जाईये। ठीक है। आपका बहुमत है। आप एक-डेढ़ साल सरकार में रह सकते हैं, परंतु एक-डेढ़ साल के बाद छत्तीसगढ़ की जनता आपको माफ नहीं करेगी।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बस्तर में ऐसी परिस्थितियां नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अब हो गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,नकली पंच की जमीन तक कब्जा कर लेते हैं। उनके ऊपर कोई कार्यवाही नहीं होती। कल हमने मुद्दा उठाया कि यह क्या हो रहा है ?

अध्यक्ष महोदय :- मैं वही तो बोल रहा हूँ कि कल वही मुद्दा उठाया और आज फिर वही मुद्दा उठा रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे रायपुर शहर, राजधानी को बर्बाद करने का काम किया जा रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास बोलने के लिए तो बहुत विषय हैं, मेरे पास तो बोलने के लिए इतना मटेरियल है कि शायद हम दो दिन भी बैठेंगे तो वह समय कम पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल, कम पड़ेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो कहना चाहता हूँ कि सदन की सबसे बड़ी प्रापर्टी, सबसे बड़ी परम्परा अविश्वास प्रस्ताव है और हमने इस परम्परा को निभाया है। हमने मुख्यमंत्री, मंत्रि-मण्डल, माननीय सदस्यों के ध्यान में यह बातें लायी हैं। आपके पास डेढ़ साल का समय है। इन डेढ़ सालों में आप परिस्थितियों को ठीक करने की कोशिश करिये। यह छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा सदन है, यह सबसे बड़ी पंचायत है। छत्तीसगढ़ की जनता निगाहों से टकटकी लगाकर, हमको देख रही है कि यहां से हमको न्याय मिलेगा। अगर हमको यहां से भी न्याय नहीं मिला तो फिर कभी छत्तीसगढ़ की जनता माफ नहीं करेगी। मैं चाहूंगा । हमारा बहुमत नहीं है, हमने अविश्वास प्रस्ताव रखा है ..।

अध्यक्ष महोदय :- फिर भी हमने जरूरत से ज्यादा समय दिया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर भी नहीं। यह देश के इतिहास में रखा जाता है।

अध्यक्ष महोदय :- आपको धन्यवाद्।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से हमने सरकार को जागृत करने की कोशिश की है। सरकार की जानकारी में बहुत से विषय नहीं थे, उनको जानकारी में लाने की कोशिश की है। मैं इस बात की उम्मीद करता हूँ कि इस अविश्वास प्रस्ताव से जनता के बीच में मुद्दे पहुंचेंगे । वर्ष 2023 के चुनाव में इस सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए जनता जागृत होगी और यह सरकार अपने आप में सुधार लायेगी। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद् देते हुए, मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम (कोंडागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के द्वारा हमारी सरकार, माननीय भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया है, उसमें मैं अपनी बात कहना चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, तात्कालीन प्रदेश अध्यक्ष और हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी भूपेश बघेल जी ने एक नारा दिया था। "वक्त है बदलाव का" वर्ष 2018 के चुनाव में छत्तीसगढ़ की महान जनता ने कांग्रेस पार्टी पर विश्वास किया और 78 सीटों के साथ सरकार बनाने का मौका दिया। हमारी सरकार आने के बाद लगातार इस प्रदेश में विकास कार्य, निर्माण कार्य हो रहे हैं और पूरे देश में हमारी सरकार पर एक विश्वास बना है। विपक्ष के साथियों ने अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं। 15 साल जो भ्रष्ट, निकम्मी, सरकार थी, उस सरकार को उखाड़ फेंकने में छत्तीसगढ़ की महान जनता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। लोकतंत्र में, प्रजातंत्र में जनता बड़ी होती है और जनता के आदेश को हम सबको मानना पड़ता है। माननीय डॉ. रमन सिंह जी जो कल तक सत्ता में रहते थे, दम भरते थे। उनके हर भाषण में यह बातें आती थी, अगली बार विपक्ष दो लाईन में सिमटकर रह जाएगी। डॉ. रमन सिंह की बातों का शायद असर हो गया और विपक्ष दो लाईन में सिमटकर रह गया।

समय :
1:36 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति जी, मैं बाल कवि बैरागी के उन पंक्तियों से अपनी बात की शुरूआत करना चाहता हूं।

''लग रहा है दिलरूबा, लड़खड़ाती चाल से
फिर मरा हुआ चूहा निकालेंगे, फटी रूमाल से''

सभापति महोदय, खोदा पहाड़ निकली चुहिया। यह जो 84 बिन्दुओं का अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

(मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल), संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) एवं खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) द्वारा आपस में बात करने पर)

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति महोदय, आसंदी की ओर पीठ करके बात करते हैं क्या ? आप तो बड़े ज्ञाता हैं, हर बात पर व्यवस्था देते हैं। अभी एक सीनियर मंत्री आसंदी की ओर पीठ किए थे। अभी और आसंदी की ओर पीठ करके बात कर रहे थे। आप बड़े ज्ञानी आदमी हैं, मुझे बहुत व्यवस्था देते हैं।

सभापति महोदय :- जहां व्यवस्था देनी होगी, मैं वहीं व्यवस्था दूंगा। चलिए।

श्री अजय चंद्राकर :- आप स्वीकार कर लिए न, आसंदी की तरफ मैं भी पीठ करके कर सकता हूं। स्वीकार कर लिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय सभापति महोदय, यह ज्यादा डिस्टर्ब कर रहे हैं, इनको बेंच में खड़ा किया जाए। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- मैं कोई डिस्टर्ब नहीं कर रहा हूं, आप कुछ भी बोल रहे हैं।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार के ऊपर विपक्ष द्वारा जो 84 बिन्दुओं का आरोप पत्र लगाया गया है, एक भी आरोप सिद्ध नहीं होता। माननीय सभापति महोदय, पहला आरोप, विश्वासघाती सरकार जिसने जन घोषणा पत्र पर आत्मसात कर वादों को पूरा न कर जनता के साथ विश्वासघात किया। हम जनता के बीच 36 वादों के साथ गये थे और 36 वादों में हमारी सरकार आने के बाद लगभग 30 वादे पूरे किए हैं। मैं हमारी सरकार के मुखिया को धन्यवाद देना चाहता हूं कि दो घंटे के अंदर छत्तीसगढ़ के लगभग 19 लाख किसानों का...। सभापति महोदय :- अध्यक्ष जी, एक मिनट।

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति जी, हम लोग अब अविश्वास प्रस्ताव में चर्चा कर रहे हैं, यदि मोहन मरकाम जी इस चुनौती को स्वीकार कर लें तो अविश्वास प्रस्ताव में जन घोषणा पत्र के बारे में चर्चा नहीं करेंगे। वह 34, 35, 36 जितने वादे हैं, खुली मंच में बहस करने के लिए तैयार हो जाएं तो हम इस अविश्वास प्रस्ताव में एक लाईन बहस नहीं करेंगे। खुले मंच में जनता के सामने बहस करेंगे, आप व्यवस्था दे दीजिए।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, हमारी सरकार ने लगभग 30 वादों को पूरा किया है। 15 साल भारतीय जनता पार्टी की सरकार भी रही है। मैं विपक्ष के साथियों से पूछना चाहता हूं, उनके तीनों चुनावों के घोषणा पत्र, संकल्प पत्र मेरे पास है। मैं विद्वान सदस्य श्री अजय चंद्राकर जी से पूछना चाहता हूं, आपने वर्ष 2003 में कहा था कि हर जरूरतमंद बेरोजगार 12 वीं पास युवक, युवतियों को 500 रूपए बेरोजगारी भत्ता देंगे। आपकी सरकार 15 साल थी, आपने कितने युवाओं को बेरोजगारी भत्ता दी। दूसरी बात, प्रत्येक आदिवासी परिवार के एक व्यक्ति को नौकरी देंगे। छत्तीसगढ़ में हमारे 78-80 लाख आदिवासी परिवार हैं, आपने कितने आदिवासी परिवारों के व्यक्ति को नौकरी दी। तीसरी बात, लघु और सीमांत किसानों का कर्ज माफ करेंगे। आपकी 15 साल सरकार रही, आपकी सरकार ने कितने किसानों का कर्ज माफ किया। उसके साथ-साथ वर्ष 1990 तक आपने वन भूमि काबिजों को पट्टा देने की बात की। अजय चंद्राकर जी, आपने कितने लोगों को पट्टा दिया। आपने वर्ष 2008 का घोषणा पत्र, संकल्प पत्र में कहा था कि हम पलायन मुक्त छत्तीसगढ़ बनाएंगे, भय मुक्त छत्तीसगढ़ बनाएंगे, भयमुक्त छत्तीसगढ़ बनायेंगे । उसके साथ-साथ आपने कहा था कि हम किसानों को 24 घंटे बिजली देंगे, उसके साथ-साथ आपने कहा था कि किसानों को धान पर राज्य सरकार की ओर से 270 रूपये प्रति क्विंटल बोनस देंगे । उसके साथ-साथ हम एक-एक दाना धान खरीदेंगे । आपने कितने वायदे पूरे किये ? इसके साथ ही वर्ष 2013 का आपका घोषणा-पत्र कि हम 2100 रूपये धान का समर्थन मूल्य

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

देंगे, 300 रूपये प्रति क्विंटल बोनस देंगे । मेट्रो और मोनो रेल चालू करेंगे, आपकी सरकार ने कितना किया ? आपने एक बड़ी बात कही थी कि किसानों का एक-एक दाना धान खरीदेंगे । यह आपका वर्ष 2013 का संकल्प पत्र है, क्या इसके बारे में आप कुछ नहीं कहेंगे ? हमारी सरकार पौने 4 साल की सरकार है । हमारी सरकार ने 36 वायदों में से 30 वायदे पूरे किये हैं ।

माननीय सभापति महोदय, ये बड़ी-बड़ी बातें करते हैं । इनके [XX][2] उन्होंने तो बड़े-बड़े वायदे किये थे कि अच्छे दिन आयेंगे । अच्छे दिन तो भारतीय जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के आगे चूंकि वर्ष 2013-14 में भारतीय जनता पार्टी की संपत्ति 780 करोड़ रूपये और वर्ष 2019-20 में भारतीय जनता पार्टी की संपत्ति 4847 करोड़ रूपये । अच्छे दिन किसके आये ? जनता कंगाल और भाजपा मालामाल । यह भारतीय जनता पार्टी है ।

माननीय सभापति महोदय, ये लोग कहते हैं कि कांग्रेस पार्टी ने 70 सालों में क्या किया ? सचमुच सही कह रहे हैं । आज 70 सालों में कांग्रेस पार्टी के पास 588 करोड़ की संपत्ति है और भारतीय जनता पार्टी के पास वर्ष 2013 से 2019 तक 4800 करोड़ की संपत्ति है । यह कहां हैं ? आज भारतीय जनता पार्टी के नेता यह सवाल पूछते हैं कि कांग्रेस पार्टी ने 70 सालों में क्या किया ? कांग्रेस पार्टी ने 70 सालों में इस देश में परिसंपत्तियां बनायीं और देश को आगे बढ़ने का, देश को विकास के रास्ते पर ले जाने का काम किया । [XX] के भाषणों में यह बात आती है कि देश बदल रहा है और असलियत यह है कि आज देश बिक रहा है । आज अगर रोजगार की बात होती है । कृपया रोजगार मांगकर सरकार को शर्मिंदा न करें क्योंकि [XX] तो खुद पिछली सरकार द्वारा बनायी गयी संपत्तियों को बेचकर चल रही है । [XX] जो बड़े-बड़े वायदे करते थे, आज [XX] वे कह रहे थे कि देश को बिकने नहीं दूंगा । आज देश बिक रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, व्यवस्था का प्रश्न है ।

सभापति महोदय :- आपका नाम है, आप बाद में अपनी बात रखियेगा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

सभापति महोदय :- इसमें क्या व्यवस्था ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, सदन की मान्य परंपरा रही है कि जो व्यक्ति इस सदन में जवाब देने नहीं आ सकता । उसका नाम लेकर के आरोप नहीं लगाना चाहिए । माननीय [XX] देश के प्रधानमंत्री हैं, वे यहां आकर जवाब नहीं दे सकते हैं इसको विलोपित किया जाना चाहिए । यह इस सदन की सामान्य परंपरा रही है या फिर हम लगायेंगे तो फिर विलोपित नहीं होना चाहिए । दोनों बातें सुन लीजिये । अगर आप इसको विलोपित नहीं कर सकते तो फिर हम लगायेंगे तो आप विलोपित मत करियेगा ।

---

[2] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- लगायेंगे ही ।

सभापति महोदय :- चलिये, कार्यवाही देख ली जायेगी । कार्यवाही देखकर उचित कार्यवाही कर दी जायेगी ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने वर्ष 1948 में आई.टी.आई. बनायी थी, वर्ष 1950 में प्लानिंग कमीशन बनाया था, वर्ष 1991 में आई.आई.टी. बनाया था, वर्ष 1952 में एम्स बनाया था, वर्ष 1954 में सेल बनाया था, वर्ष 1955 में भिलाई स्टील प्लांट बनाया था, वर्ष 1956 में ओ.एन.जी.सी. बनाया था, वर्ष 1958 में डी.आर.डी.ओ. बनाया था, वर्ष 1961 में आई.आई.एम. बनाया था, वर्ष 1964 में ईसरो बनाया था और वर्ष 1964 में भेल बनाया था । यह हमारी सरकार है और इन परिसंपत्तियों को बेचने का काम [XX][3] कर रही थी । देश के आदरणीय श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी साहब ने कहा है, इतिहास गवाह हे कि किसी देश की विरासतें बिकने का कारण सिर्फ उस देश की सरकार की अति निकम्मापन है, ऐसी सरकारों को उठाकर बारह फेंक देना चाहिए। भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र में बैठी [XX] की सरकार की बात है, खाउंगा न और न खाने दूंगा। माननीय सभापित जी, रूपया पहुंचा 80 पार, गैस वाले मांगे हजार। जून में 1 करोड़ 30 लाख बेरोजगार अनाज पर भी जी.एस.टी. का भार, हाथ पर हाथ धरे तमाशा देख रही है मोदी सरकार। यह देश की पहली सरकार है जो आज एक गरीबों का निवाला छिनने वाली कोई सरकार है तो भारतीय जनता पार्टी की मोदी जी की सरकार है। वर्ष 2014 से वर्ष 2022 तक महंगाई कहां पहुंच रही है। उन्होंने क्या नारा दिया था कि बहुत हो गई महंगाई की मार, अब की बार मोदी सरकार। अब देश की जनता कह रही है। अब बहुत हो गई महंगाई की मार, बस करो मोदी सरकार। आज देश की 135 करोड़ जनता कह रही है। माननीय सभापति जी, वर्ष 2014 से वर्ष 2022 तक गेहूं में 27 प्रतिशत तक महंगाई में वृद्धि, चावल में 21 प्रतिशत की वृद्धि, अरहर दाल में 47 प्रतिशत की वृद्धि, प्याज में 67 प्रतिशत की वृद्धि, आलू में 23 प्रतिशत की वृद्धि, टमाटर में 37 प्रतिशत की वृद्धि, सरसों तेल में 95 प्रतिशत की वृद्धि, हर चीज महंगी हो रही है और तो और कल तक हिंदू खतरे में होता था, आज दूध, दही, पनीर से लेकर हर चीज में जी.एस.टी. लग रहा है और मटन और मुर्गा में जी.एस.टी. नहीं लग रहा है। तो आखिर कौन खतरे में है।

श्री कवासी लखमा :- शर्मा जी, हर चीज महंगा हो रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- सबका जवाब दूंगा। आप सुनने के लिए तैयार रहना।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, अब तो सेलून, प्लंबर, केटरिंग, ब्रोकर, फोटोग्राफी में भी जी.एस.टी. लगाने का निर्णय मोदी सरकार कर रही है। आज कहीं न कहीं आज बड़ी-बड़ी बातें कहते थे। आज क्रूड ऑयल जब हमारी सरकार थी वर्ष 2004 से वर्ष 2014 तक, वर्ष 2008 में उच्चतम 147

[3] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन हेतु नहीं

डॉलर प्रति बैरल कच्चे तेल की कीमत थी। उस समय 50 रूपये 65 पैसा पेट्रोल पर, 34 रूपया 86 पैसा डीजल पर हुआ था। आज कच्चे तेल की कीमत है, उसके बाद भी पेट्रोल और डीजल शतक मार रहे हैं। आज कहीं न कहीं प्रधानमंत्री उज्जवला योजना में बड़े-बड़े वादे किये थे। आज पेट्रोल पंप में प्रधानमंत्री जी का जो हंसता हुआ चेहरा वहां डाला गया था, फैक्स में चिपकाया गया था, मगर उस पेट्रोल पंप से जनता गुजरती है तो आजकल जनता भी मोदी जी के चेहरे में पत्थर फेंकने लगी है। माननीय सभापति जी, 3 करोड़ 59 लाख लोगों ने नहीं भराया सिलेंडर और 1 करोड़ 20 लाख लोगों ने सिर्फ एक बार एल.पी.जी. के सिलेंडर..।

श्री कवासी लखमा :- सभापति जी, हमारा प्रदेशाध्यक्ष खड़े हैं। इनका जवाब दे रहे हैं तो पूरा सीट खाली हो रहा है। ये क्या हो गया? ये क्या अविश्वास प्रस्ताव है? आप सुनने का भी ताकत रखिए।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, जब हम लोग विपक्ष में थे तो एक कनवा बाबा हुआ करते थे तो पूरे देश में बहुत ज्यादा घूम-घूमकर कहते थे। क्या कहते थे कि मोदी जी आयेंगे तो पेट्रोल 30 रूपये लीटर और गैस सिलेंडर 300 रूपये हो जायेगा। आज पेट को ऊपर-नीचे करते-करते योगा कराते-कराते 16 हजार करोड़ के एक बिजनेसमैन बन गये। आज उसके बारे में विपक्ष के साथी क्यों नहीं कहते? आज लगातार हमारी सरकार कह रही है। आज देश बिक रहा है। जो देश बेचने वाले भी 2 ही हैं, [XX]; [XX] देश की परिसम्पत्तियों को ख़रीदने वाले भी गुजरात के दो लोग ही हैं । एक उद्योगपति तो मोदी जी के 8 साल के कार्यकाल में सम्पत्ति के मामले में बिल गेट्स से भी आगे निकल गया है । सभापति जी अक्सर कहते थे कि आज हिंदू ख़तरे में है । इंडोनेशिया में 20.2 करोड़ मुसलमान होने के बावजूद भी वहां 1.8 करोड़ हिंदू शांति से रहते हैं । इंडोनेशिया में 20 हजार के नोट पर गणेश भगवान की छाया चित्र है, क्योंकि वहां आर.एस.एस. और बी.जे.पी. नहीं हैं । देश में जहां-जहां आर.एस.एस. और बी.जे.पी. हैं वहां देश को बांटने का, देश को बेचने का, देश को तोड़ने का काम करते हैं । सभापति जी, मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के बारे में कहना चाहता हूं । "जीवन भर एक काम करता रहा, धूल चेहरे पर थी और आईना साफ़ करता रहा ।" ये 15 साल सरकार में रहे, भ्रष्ट रहे, निकम्मे रहे और छत्तीसगढ़ को लूटने का काम करते रहे । चेहरे की कालिख को नहीं हटाया और आईना को साफ करते रहे । सभापति जी, आज गुजरात मॉडल की बात होती है, आज गुजरात मॉडल का नाम लेकर देश में आए लेकिन गुजरात मॉडल की हकीकत यह है 6 हजार करोड़ का बड़ा कोयला घोटाला, 9 हजार करोड़ का ड्रग्स जप्त, 23 हजार करोड़ की बैंक धोखाधड़ी । इन उपलब्धियों के लिए हम किसको धन्यवाद् दें ? माननीय मोदी साहब को दें ? सभापति जी, क्या यही गुजरात मॉडल है? सभापति जी, जब डॉ. मनमोहन सिंह जी की सरकार थी तो पूरी दुनिया में डॉ. मनमोहन सिंह सरकार का डंगा बजता था और हमारा देश तीसरी महाशक्ति के रूप में उभरा था । अमेरिका, चीन के बाद दुनिया में हमारे देश का रूतबा हुआ करता था और मोदी जी की सरकार में भारत अब विकासशील देश भी नहीं है । वर्ल्ड

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बैंक ने जाम्बिया और घाना जैसे देशों के साथ भारत को रखा है । यह सब भारतीय जनता पार्टी की सरकार और मोदी है तो मुमकिन है । यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार आज देश को बेचने का काम कर रही है ।

सभापति महोदय, हमारी सरकार की नीतियां, योजनाएं ऐसी हैं, आम जनता, किसान हो, मजदूर हो, बेरोजगार हो इसी कारण राज्य में वाहनों की बिक्री में 205 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है । यह छत्तीसगढ़ मॉडल है । छत्तीसगढ़ मॉडल की पूरे देश में चर्चा होती है । कोरोनाकाल में भी हमारी सरकार की नीतियों, हमारी सरकार की योजनाओं के कारण आम जनता के जेब में पैसा डला । इसी कारण छत्तीसगढ़ में व्यापार, व्यवसाय भी बूम कर गया । सभापति महोदय, हमारी सरकार की नीतियों के कारण हम आगे बढ़ रहे हैं । भारतीय जनता पार्टी की नेताओं को तकलीफ हो रही है । हमारी सरकार की योजनाओं के कारण 3 सालों में 76 हजार ट्रेक्टर खरीदे गए, इसका मतलब साफ है कि यहां की योजनाओं के कारण प्रदेश आगे बढ़ रहा है । जहां आज देश में बेरोजगारी दर 8 प्रतिशत से अधिक है, वहीं छत्तीसगढ़ में बेरोजगारी दर 0.6 प्रतिशत है । सभापति महोदय, आज हम कह सकते हैं और गर्व कर सकते हैं कि हमारी सरकार की नीतियां, योजनाएं बहुत अच्छी हैं, इसीलिए हम आगे बढ़ रहे हैं। विपक्ष के साथियों ने जो 84 आरोप लगाए हैं, एक भी आरोप में दम नहीं लगता है । सभापति जी, भारतीय जनता पार्टी के लोग इस देश की जनता की भावनाओं के साथ कैसे खेलते हैं ? दुनिया में लगभग 800 प्रकार के खेल खेले जाते हैं, लेकिन भावनाओं से खेलना से भारती जनता पार्टी का पसंदीदा खेल है। जो सच है, इसको स्वीकार करना पड़ेगा। भक्तों सच भी कभी सुन लिया करो। आर.एस.एस. ने 11 दिसंबर, 1949 में डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का पुतला दहन किया था, आर.एस.एस. ने वर्ष 1948 में तिरंगे को पैरो तले रौंदा था। यह भारतीय जनता पार्टी का चाल-चरित्र है। भारत जनता पार्टी के लोग देश की आजादी, देश के नव निर्माण, देश के विकास में एक उंगली न कटाये हो, एक नाखुन न कटाये हो, वह हमें राष्ट्रवाद की परिभाषा बताते हैं।

माननीय सभापति जी, और तो और दु:खदायी घटना जब नागपुर के कुछ तीन युवकों ने आर.एस.एस. के कार्यालय में 26 जनवरी, 2001 को नागपुर में जो केस क्रमांक 176/2000 है, यह मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को याद दिलाना चाहता हूं और आर.एस.एस. के कार्यकर्ताओं ने नागपुर के कार्यालय में तिरंगा झण्डा फहराने के विरूद्ध में तीन युवकों के विरूद्ध में एफ.आई.आर. दर्ज किया। इसका मतलब साफ है कि नागपुर के कार्यालय में वह हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा नहीं फहरा रहे थे। आज कहीं न कहीं भारतीय जनता पार्टी का चाल-चरित्र पूरा देश देख रहा है। कहीं न कहीं शहीद भगत सिंह जी के फांसी को रोकने की चिट्ठियाँ गांधी जी ने लिखी थी। उनकी फांसी के बाद गांधी जी, पण्डित नेहरू जी, डॉ. अंबेडकर जी एवं पेरियार और सुभाष चंद्र बोस जी ने भी श्रद्धांजलि दी। मगर गोलवलकर,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हेडवेकर, मुंजे, सावरकर और मुखर्जी सहित किसी भी संघीय नेता ने भगत सिंह जी को श्रद्धांजलि नहीं दी। यह हमको राष्ट्रवाद की परिभाषा बताते हैं।

मानननीय सभापति जी, मैं कहना चाहता हूं कि "हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम वो क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।" सभापति जी, आज वह जो 10वां आरोप लगाये हैं कि संवैधानिक ढांचे के सिद्धांत का पालन न करने वाली सरकार और विपक्ष को कुचलने वाली, उसका सोच का दमन करने वाली सरकार 10वां और 13वां ..।

श्री शिवरतन शर्मा :- मरकाम जी, आसंदी भी सुन रही है कि माननीय मरकाम जी के भाषण में किन-किन नामों, किन-किन संस्थाओं का उल्लेख हुआ है। मैं आपसे सिर्फ यही आग्रह करता हूँ कि जब हम लोग बोलेंगे तो उस समय इस बात का ध्यान रखना। हमको जवाब देना आता है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- हम लोग गंभीरता से आपकी बात को सुन रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम लोग गंभीरता से आपकी बात सुन रहे हैं और गंभीरता से जवाब देंगे। आापका धैर्य कितना है, यह हम देखेंगे और हम उम्मीद करते हैं कि हमारी बातों को आसंदी भी धैर्य से सुनेगी। हम एक-एक बात का जवाब देंगे।

श्री कवासी लखमा :- मरकाम साहब बोल रहे हैं ना कि तुम्हारे सामने वाला पूरा सीट खाली है। कैसे छोड़कर चले गये। ऐसा थोड़ी होता है। पहले भाषण दिये, उनको रहना चाहिये।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, जो 10वां और 13वां आरोप है, उस आरोप में मैं कहना चाहता हूं कि जो चुनी हुई सरकारों को अपजश करना भारतीय जनता पार्टी के फितरत में है। जो पैसा, पावर, गुंडई भाजपा के फितरत में है। आप ही देखिये, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा सरकार को अपजश करना भारतीय जनता पार्टी की सरकार में है, यह कांग्रेस के फितरत में नहीं है। आजकल जो संवैधानिक संस्थाएँ ई.डी., सी.बी.आई. और आई.टी. है, यह तो आज भारतीय जनता पार्टी के एजेंट की तरह काम कर रही हैं। आजकल ई.डी. का तो रोल है। ई.डी. का तो फूल फार्म Election management department रख देना चाहिये, क्योंकि जब-जब चुनाव नजदीक आते हैं तो भारतीय जनता पार्टी को जिताने का काम ई.डी. करती है और यह हमारी सरकार पर आरोप लगाते हैं। यह संवैधानिक संस्थाओं का दुरूपयोग कर रहे हैं। माननीय सभापति महोदय, आज लगातार...।

श्री शिवरतन शर्मा :- अब परीक्षा लेंगे।

श्री कवासी लखमा :- आप तो एकदम नाराज हो गये।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, आज भारतीय जनता पार्टी लगातार जो काम कर रही है विपक्ष को दबाने का काम कर रही है लेकिन हम डरने वाले नहीं हैं। हम अंग्रेजों से कभी नहीं डरें। इस देश में 300 सालों तक अंग्रेजों का राज चला और उनके बारे में कहा जाता था कि विश्व में अंग्रेजों का राज कभी अस्त नहीं होगा, लेकिन उन अंग्रजों की सरकार को भी अस्त करने का काम हमारे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नेताओं ने और कांग्रेस पार्टी ने ही किया। यह भारतीय जनता पार्टी के हाफ पेन्ट गैंग वाले हमको क्या सिखाएंगे ? है न ? हम गांधी जी के अनुयायी हैं। सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं हो सकता है। हम इनसे लड़ेंगे और वर्ष 2024 में माननीय राहुल गांधी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार बनेगी। यह हमको डरांएगे। यह लगातार हमारे नेताओं को परेशान किये जा रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- वर्ष 2024 में कहां सरकार बनेगी ? आप छत्तीसगढ़ की विधानसभा की बात कर रहे हैं या कहीं और की बात कर रहे हैं ? आप इसको थोड़ा क्लियर तो कर दीजिए।

श्री कवासी लखमा :- वर्ष 2023 में रायपुर में और वर्ष 2024 में दिल्ली में हमारी सरकार बनेगी।

श्री अजय चंद्राकर :- आप बहुत अच्छा भाषण दे रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- सबसे पहली बात तो यह है कि क्या आपने मरकाम जी पूरा भाषण सुना ?

श्री अजय चंद्राकर :- मैं बिल्कुल सुना हूं। इस अंक को सुना हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- मरकाम जी इंडोनेशिया तक पहुंचे हैं तो आप किस बात पर आपत्ति कर रहे हैं ?

श्री अजय चंद्राकर :- हो सकता है कि यह बाली जी और हनुमान जी के दर्शन करके आये हों ?

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं-नहीं। हम लोग उनके भाषण को मंत्र-मुग्ध होकर सुन रहे थे। इंडोनेशिया में कितने प्रतिशत मुसलमान और कितने प्रतिशत हिंदू हैं। सऊदी अरब और यह छत्तीसगढ़ की विधानसभा में बैठकर ही वर्ष 2024 में सरकार बना दिये और आप यह तो बताइये कि आप ई.डी. के यहां धरना-प्रदर्शन करने के लिए गये थे या नहीं ? आपको आज भी ई.डी. के यहां जाना है और आप यहां दिख रहे हैं। आपको जाना चाहिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मरकाम जी, मैंने अनुमति लिया हूं तो आप मेरी एक लाइन सुन लीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- क्या यह अभी टी.व्ही. ब्रेक के बाद फिर बोलेंगे ? अभी आप बैठ गये हैं तो फिर दोबारा क्यों बोल रहे हैं ? नहीं, रहने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- भाजपा ने अंबेडकर के साथ जो किया, उसको आपने बोला। यदि आपके पास अकल, नॉलेज, पढ़ाई या कुछ भी होगी तो आप यह बताइये कि अंबेडकर के साथ कांग्रेस ने क्या व्यवहार किया ? यदि आपको नहीं पता तो आप मुझसे पूछिये, मैं आपको यही पर बताऊंगा कि कांग्रेस ने अंबेडकर के साथ क्या व्यवहार किया।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप यह क्या बोल रहे हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मोहन मरकाम जी। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- शिवरतन जी, बांधी जी, आपसे मेरा निवेदन है कि आप बैठिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- उनको विधि मंत्री बनाये थे। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय।

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, आपको अवसर मिलेगा। आप बैठिये।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- कांग्रेस ने डॉ. अंबेडकर को मंत्री बनाने का ऑफर किया था। वह पार्टी में नहीं थे तो भी उनको मंत्री बनाने का ऑफर दिया।

श्री मोहन मरकाम :- कांग्रेस पार्टी ने अंबेडकर जी को संविधान बनाने का मौका दिया। उसके साथ-साथ अंबेडकर जी को देशप्रेम के...। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- अंबेडकर जी को कांग्रेस का समर्थन नहीं...। क्या अंबेडकर जी को कांग्रेस ने संविधान सभा में रखा था ?

सभापति महोदय :- अजय चंद्राकर जी, आप बैठिये-बैठिये। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं बैठा हूं और मैं कुछ नहीं बोल रहा हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- मोहन जी, मेरे पास इसका सोर्स है। (व्यवधान)

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- यह कहां पर लिखा है ?

श्री मोहन मरकाम :- हम सुन लिये, सुन लिये।

सभापति महोदय :- बांधी जी, बैठिये। आप बैठिये। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- आपकी सरकार झूठ बोलती है।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आप कितना झूठ बोल रहे हैं।

सभापति महोदय :- बैठिये। मोहले जी, यह उचित नहीं है। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- क्या अंबेडकर को कांग्रेस ने भेजा था संविधान सभा में? क्या अंबेडकर को कांग्रेस ने भेजा था ?

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- अंबेडकर महापुरूष हैं उनके बारे में ऐसा नहीं बोलना चाहिए।

सभापति महोदय :- यह विषय उद्भूत नहीं होता है। (व्यवधान)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- यह आजादी के नेताओं का अपमान करेंगे और यहां के नेताओं के बारे में बोल रहे हैं।

सभापति महोदय :- डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी जी, आप बैठिये। मोहले जी, बैठिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, एक मिनट। आप बोल तो लिये हैं और कितना बोलेंगे ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, अंबेडकर जी को सबसे बड़ा सम्मान कांग्रेस पार्टी ने दिया है। कांग्रेस पार्टी ने उनको देश का संविधान बनाने का मौका दिया था। हमारी सरकार बनने के बाद...। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- देखिये, यह विषय उद्भूत नहीं होता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसके बाद वह अल्फ्रेड पार्क में मारे गये। चंद्रशेखर आजादी की किसने मुखबिरी की ?

सभापति महोदय :- माननीय सदस्यों से आग्रह है कि अहिंसा और सहिष्णुता तक चर्चा सीमित रखें।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप संघ पर आरोप लगा रहे हों तो मैं आपके ऊपर आरोप लगा रहा हूं और आपको बता रहा हूं कि...। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- कृपया अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा करें और अपनी बात कहें ।

श्री धर्मजीत सिंह :- 71 विधायकों में सर्वाधिक एक ही विधायक वही हैं । और मैंने एक दिन इनका बयान पढ़ा था। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- चन्द्रशेखर आजाद को मरवाने के लिए मुखबिरी किसने की थी । पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की थी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आखिरी बार वे किससे मिलने गए थे (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप बैठिए । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- इतना कठिन प्रश्न मत पूछो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आखरी बार वे किससे मिलने गए थे । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, कांग्रेस पार्टी ने देश का संविधान बनाने की जिम्मेदारी बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर को दी थी । इतिहास गवाह है । देश की प्रथम सरकार पंडित जवाहरलाल नेहरू की सरकार ने देश का प्रथम कानून मंत्री बनाना था ।

श्री अजय चन्द्राकर :- इतना गलत बात मत करो । इनके ज्ञान पर [XX][4] है इसीलिए कांग्रेस की यह दशा है । कांग्रेस ही दशा इसीलिए है । अपनी पार्टी के बारे में यह नहीं जानते । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- [XX] विलोपित करें । जो विषय अविश्वास प्रस्ताव के संबंधित नहीं है, कोई भी माननीय सदस्य उसका उल्लेख न करें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, उनकी गलत बात नहीं आनी चाहिए । यह विधान सभा है । इतिहास के बारे में विधान सभा में बोलते हैं तो पूरी जिम्मेदारी और जवाबदारी से बोलना चाहिए । (व्यवधान) गलत बात बोल रहे हैं, एकाध दस्तावेज को दिखा दीजिए ।

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, आप बैठिए, आपको मौका मिलेगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, एक मिनट तो मेरी बात सुन लीजिए, मैं तो बैठ ही जाऊंगा । मैं अभी थोड़ी बोल रहा हूं, मुझे तो बाद में बोलना है ।

---

[4] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- वह अंतरिम सरकार थी, कांग्रेस की सरकार नहीं थी, न वे अधिकृत थे, एकाध दस्तावेज दिखाएं, गलत बात बोल रहे हैं । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- वे कुछ भी बोलते रहेंगे और हम चुपचाप सुनते रहेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- गलत बात रिकार्ड में नहीं आनी चाहिए । एकाध दस्तावेज हो तो दिखा दें (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आपको बोलने का मौका मिलेगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वे दस्तावेज दिखा दें, गलत बात बोल रहे हैं (व्यवधान) जो वे बोल रहे हैं, उसके दस्तावेज पटल पर रखें । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- उनके बाबू ने जो लिखकर दिया, कांग्रेस सरकार में बड़े-बड़े बाबू लोग बैठे हैं, उन्होंने लिखकर दिया है । वहां कितने ज्ञानी लोग बैठते हैं, वह हमें मालूम है । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- इतना क्यों चिल्ला रहे हैं ? (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- इतनी तिलमिलाहट क्यों हो रही है ? इतिहास साक्षी है कि गांधी जी के हत्यारों को सुनने की हिम्मत नहीं हो रही है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, एक मिनट तो सुन लीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह असत्य कथन कह रहे हैं (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मैं दिखवा लूंगा । जो विलोपित हो सकता है, उसे विलोपित किया जाएगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, आपसे पूछकर बोलेंगे, उसको थोड़ी विलोपित करेंगे । मरकाम जी को बिठाईए तो हम कुछ बोल लें ।

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, जो कांग्रेस दल के नहीं थे, श्यामाप्रसाद मुकर्जी जी, उनको भी कश्मीर मामलों के हमारी सरकार ने बनाया मंत्री था।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह कांग्रेस की सरकार थी ही नहीं, वह अंतरिम सरकार थी । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी, बैठिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- गलत बात बोल रहे हैं । वह कांग्रेस की सरकार थी ही नहीं । 1947 में अंतरिम सरकार थी । उसमें सभी दल के लोग थे । ये बार-बार गलत बात बोल रहे हैं । रिकार्ड में गलत बात मत आये । रिकार्ड में है कि सबसे ज्यादा गलत बात आ रही है । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- थोड़ी बहुत ज्ञान है तो उसको ले ले (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, मैं यह कह रहा हूं कि अविश्वास प्रस्ताव तो हमने रखा है, पर हमसे ज्यादा दुखी तो वे खुद हैं । एक दिन मैंने इनका बयान पढ़ा था कि जोगी कांग्रेस के लोग बड़े-बड़े पदों में बैठे हुए हैं । शिक्षा विभाग के खिलाफ इनका बयान था, मैं उसमें आगे बोलूंगा ।

सभापति महोदय :- धर्मजीत जी, बैठिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम :- सभापति महोदय, आरोप क्रमांक 3 और 7 में कहना चाहता हूं । हमारी सरकार सत्ता में आने के बाद छत्तीसगढ़ में किसानों के लिए लगातार काम कर रही है । डॉ. रमन सिंह ने जो वादे किये थे, वह कभी पूरे नहीं हुए। उनके सरकार के कार्यकाल में 9270 करोड़ रूपए का कृषि ऋण था, मगर हमारी आने के बाद उस कर्ज को भी माफ किया गया । सभापति जी, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल में खेती-किसानी घाटे का सौदा हुआ करता था, मगर हमारी सरकार ने किसानों के हित में लगातार काम किये और दो घंटे के अंदर कर्ज माफ करके यहां के किसानों को आगे बढ़ाने का काम किया । (मेजों की थपथपाहट) भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में 9270 करोड़ रूपए ऋण का लगभग 18 लाख किसानों का कर्ज हमारी सरकार ने माफ किया । 17 लाख से अधिक किसानों का 244 करोड़, 18 लाख सिंचाई कर भी हमारी सरकार ने माफ किया । 5 लाख से ज्यादा किसानों को मुफ्त और रियायती दर पर बिजली देकर सालाना 900 करोड़ रूपए राहत देने का हमारी सरकार ने काम किया है । हमारी सरकार ने पहले वर्ष 2018-19 में 80 लाख, 38 हजार मीट्रिक टन धान खरीदा । 2019-20 में 83 लाख, 94 हजार मीट्रिक टन धान खरीदा, 2020-21 में 92 लाख टन धान खरीदा और 2021-22 में 105 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा, जो भारतीय जनता पार्टी के 15 साल के शासनकाल में औसत 60 लाख मीट्रिक टन धान भारतीय जनता पार्टी के नेता और सरकार ने नहीं खरीदा, जो एक-एक दाना धान खरीदने की बात कह रहे थे ।

माननीय सभापति जी, हमारी सरकार ने वर्ष 2021-22 में राजीव गांधी किसान न्याय योजना के तहत 19 लाख किसानों को 5,702 करोड़ रूपये प्रोत्साहन राशि सीधी सहायता मिली। वर्ष 2021-22 में 5,600 करोड़ रूपये की इनपुट सब्सिडी दी गई। हमारी सरकार की योजनाओं पर किसानों ने भरोसा जताया। राज्य में किसान खेती को लाभ का सौदा माना। इसीलिए लगातार जितने भी चुनाव हो रहे हैं, चाहे नगरीय निकाय चुनाव हो, पंचायत चुनाव हो, जितने भी चुनाव हुए हैं,उसमें कांग्रेस पार्टी सफल रही। कहा जाता है कि शहरों में भारतीय जनता पार्टी का दबदबा होता है। मगर हमारी सरकार की नीतियों, योजनाओं को लेकर शहरों की जनता के बीच में गये और 14 के 14 नगर निगम जीतने में सफल हुए। मैं माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल साहब को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उनकी योजनाएं, शहर की जनता हो, गांव की जनता हो, बेरोजगार हो, किसान हो, उद्योगपति हो सबके लिए ऐसी नीतियां बना रही हैं जो आम जनता को भा रही है। मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से पूछना चाहता हूं कि हमने 28 जिला पंचायतों में से 20 जिला पंचायत चुनाव जीता, 146 जनपदों में से 114 जनपदों में जीता।

श्री रजनीश सिंह :- 2019 के लोकसभा चुनाव को क्यों छोड़ा, वह भी बताओ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, लगभग 80 प्रतिशत तो मोदी जी झूठ बोलकर जीतें हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- झूठ असंसदीय भाषा है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, हमारी सरकार ने किसानो का कर्ज माफ किया। हमारी सरकार में 3 वर्ष के भीतर राज्य में पंजीकृत किसानों की संख्या 15 लाख 77 हजार, 392 से बढ़ाकर 22 लाख 66 हजार से ज्यादा पहुंच गई है। इसका मतलब साफ है कि आदरणीय मुख्यमंत्री जी, आदरणीय कृषि मंत्री जी हम ऐसी योजनाएं बनाते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- छत्तीसगढ़ का अलग से कोई विदेशी मुद्रा भण्डार हो तो वह भी बताने के लिए बोल दो।

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार की योजनाओं से कहां 15 लाख पंजीकृत किसान और कहां 22 लाख पंजीकृत किसान, यह हमारी सरकार की योजनाओं का फल है। आज हम लगातार काम कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के नेता लगातार हमारी सरकार के ऊपर कर्ज बढ़ाने की बात करते हैं। जब हम सरकार में आये तो डॉ. रमन सिंह की सरकार हम लोगों के ऊपर 42 हजार करोड़ रूपये का विरासत में छोड़कर गई थी। आज सरकार उसी का लगभग 10 हजार करोड़ रूपया ब्याज पटा रही है। सभापति जी, हम देखते हैं कि विगत 3 वर्षो में 2018-19 से 2020-21 तक केन्द्र सरकार से राज्य को करों के हिस्से की राशि 14,628 करोड़ रूपया छत्तीसगढ़ राज्य को लेना है। छत्तीसगढ़ राज्य उत्पादक राज्य है। हम लोगों को जो जी.एस.टी. का क्षतिपूर्ति मिलता था, वर्ष 2022 के बाद छत्तीसगढ़ को लगभग 5 हजार करोड़ रूपये का नुकसान हो रहा है। इसके साथ-साथ अन्य कई देयतायें हैं, लगभग 24 हजार करोड़ रूपये से अधिक राशि केन्द्र सरकार द्वारा राज्य सरकार को देना है। अजय चन्द्राकर जी, अगर वह राशि हमको मिल जाता तो हम लोगों को कर्ज लेने की जरूरत नहीं पड़ती। माननीय सभापति जी, अनमान है कि केन्द्र में बैठी मोदी जी की सरकार पर, भारत पर लगभग 621 अरब डालर का विदेशी कर्ज है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, यह छत्तीसगढ़ की सरकार पर चर्चा हो रही है या मोदी जी की सरकार पर चर्चा हो रही है ?

श्री मोहन मरकाम :- मोदी सरकार पर।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं-नहीं, आज किस पर चर्चा हो रही है ?

श्री मोहन मरकाम :- मोदी जी की सरकार पर।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- छत्तीसगढ़ सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया है।

सभापति महोदय :- निवेदन किया है कि अविश्वास प्रस्ताव तक ही चर्चा सीमित रखें।

श्री अमितेश शुक्ल :- भाई, बताना पड़ेगा। मोदी जी के बारे में अध्यक्ष जी को बताना पड़ेगा। मोदी जी ने क्या किया है, अध्यक्ष जी बतायेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अविश्वास प्रस्ताव में जो आरोप लगाये हैं, उसका वह जवाब दें।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- देखिये, महंगाई में तो फर्क पड़ता ही है न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमने अविश्वास प्रस्ताव पर जो आरोप लगाये हैं, उसका जवाब दें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम :- मैं पाईंटवाइज जवाब दे रहा हूं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- उनकी नीतियां छत्तीसगढ़ को भी प्रभावित कर रही है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- छत्तीसगढ़ को मोदी सरकार पूरा प्रभावित कर रही है।

सभापति महोदय :- मैंने निर्देशित कर दिया है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- चाहे उज्जवला योजना हो, चाहे ...(व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, भारत सरकार का लगभग 621 अरब डॉलर का विदेशी कर्ज है और अगले महीने इसमें से 267 अरब डॉलर मेच्योर हो रहा है । यानी कि हर हाल में मोदी सरकार को चुकाने पड़ेंगे । जिस ढंग से हमारे पड़ोसी राज्य कर्ज के बोझ तले वहां के राष्ट्रपति झोला लेकर भाग गये, हमें लगता है कि देश का प्रधान सेवक भी जिसने इस देश को कर्ज के बोझ में डाल दिया है, मुझे लगता है कि वर्ष 2022 तक झोला उठाकर भागने पर मजबूर हो जायेगा । (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- मुख्यमंत्री जी ने भाषण सुनकर इनको सही डांटा था ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, आरोप क्रमांक 20 छत्तीसगढ़ को अपराधगढ़ बनाने वाली सरकार । माननीय सभापति जी, हमारी सरकार आने के बाद जितने भी लगातार घटनायें घट रही है, उस पर तत्काल कार्यवाही हो रही है । भारतीय जनता पार्टी के डॉ.रमन सिंह जी की सरकार जो 15 साल तक रही है, उसमें तो 50 हजार से अधिक हत्या, बलात्कार से लेकर ऐसी घटनायें घटी और 27 हजार हमारे छत्तीसगढ़ की बेटियां यहां से गुम हो गई । भाजपा शासित राज्यों के आंकड़े ..।

श्री अजय चन्द्राकर :- कोंडागांव के कलेक्ट्रेट में अपराध क्या हुआ है बताओ तो ? मेरी सरकार मी टू की सरकार है...। क्या हुआ था ? कल कोंडागांव कलेक्ट्रेट में क्या हुआ था ? अकबर जी, कोंडागांव कलेक्ट्रेट में क्या हुआ था ? क्या हुआ था ? उल्लेख करिये, थोड़ा । ऐतिहासिक घटना घटी थी । मैं बताहूंना ऐतिहासिक घटना ला ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, आज उत्तरप्रदेश वर्ष 2018 में 3,42,355 वर्ष 2019 में 3,53,131 वर्ष 2020 में 3,55,118 गुजरात जहां से प्रधानमंत्री जी आते हैं, जहां से गृह मंत्री जी आते हैं, गुजरात वर्ष 2018 में 1,47,574 वर्ष 2019 में 1,39,503 और वर्ष 2020 में 3,81,849 ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- सब को मालूम है कि क्या घटना घटी थी ?

एक माननीय सदस्य :- आंकड़ो से बात कर रहे हैं आंकड़ो से ।

श्री मोहन मरकाम :- वर्ष 2018 से वर्ष 2020 तक डबल हो जाता है, यह है इस देश के प्रधानमंत्री और देश के गृह मंत्री के राज्य का गुजरात । भारतीय जनता पार्टी का हरियाणा ...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम तो छत्तीसगढ़ के बारे में बोल रहे थे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- माननीय सदस्यों से आग्रह है कि अविश्वास प्रस्ताव तक अपने आपको सीमित रखे ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, मैं तो 26 वें नंबर का पाईंट रख रहा हूँ । यह जो आरोप लगा है ...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- क्या मोदी सरकार के कार्यकलापों पर चर्चा हो रही है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसे ही बोलूंगा । इससे भी तीखा । व्यवधान नेपाल से कौन ...(व्यवधान)

सभापति महोदय :- अविश्वास प्रस्ताव के बिन्दुओं पर अपनी बात कहें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेपाल में कौन दारू पीने गया था, माननीय अध्यक्ष महोदय ? कांग्रेस का एक बड़ा नेता, जिसका मैं नाम लूंगा । नेपाल में दारू पीने गये थे ।

श्री अमरजीत भगत :- मोहन मरकाम गुड स्पीच ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह बोल रहे हैं तो हम वैसी बोलेंगे ।

सभापति महोदय :- मैंने उनको निर्देशित कर दिया है ।

श्री मोहन मरकाम :- मध्यप्रदेश, हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम राहुल गांधी जी के खिलाफ आरोप लगायेंगे । सोनिया के खिलाफ आरोप लगायेंगे । हम उनके खिलाफ आरोप लगायेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेपाल में दारू पीने गये थे । लाईस ऑफ ब्रिन्च में । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- माननीय मरकाम जी, माननीय मरकाम जी । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- जैसा बोले हैं, वैसा बोलेंगे । उससे ज्यादा ...(व्यवधान)

सभापति महोदय :- निर्देशित कर दिया है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नियम सब के लिये है ।

श्री मोहन मरकाम :- भारतीय जनता पार्टी की सरकार 2 लाख 40 हजार 470 और वर्ष 2020 में 2,83,381 उत्तराखंड भारतीय जनता पार्टी की सरकार 1,14,439 और 13,000, ये जितने भी राज्य हैं, भारतीय जनता पार्टी के शासित राज्य हैं, सबसे ज्यादा क्राईम का ग्राफ इन राज्यों में है । माननीय सभापति महोदय, यह हमारी सरकार के ऊपर आरोप लगाते हैं । आज देश के सुप्रीम कोर्ट के जज को भी कहना पड़ रहा है कि देश में कानून नहीं बचा है, सुप्रीम कोर्ट को भी बंद कर देना चाहिये । जस्टिस अरूण मिश्रा जी, सुप्रीम कोर्ट के यह कह रहे हैं कि देश के कानून को इस हाल में बनाकर रखे हैं । आज कहीं न कहीं मोदी जी की जोड़ी, शाह जी की जोड़ी..।

श्री अमरजीत भगत :- Mister Chandrakar you are a understand. This is a crime report all over India. Mostly state is BJP Government.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, भारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता नुपुर शर्मा जी का बयान जुबान-जुबान पर है।

श्री अजय चन्द्राकर :- न इनको समय बताया जायेगा, न इनको टोका जायेगा, न इनको नियम बताया जायेगा।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, भारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता नुपूर शर्मा जी ने ऐसा बयान दिया। सुप्रीम कोर्ट को भी उस पर टिप्पणी करनी पड़ी। देश की सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि नुपूर शर्मा जी का बयान देश में आग झोकने का काम किया है। यह भारतीय जनता पार्टी के लोग सिर्फ नफरत फैलाना जानते हैं, भाई को भाई से लड़ाना जानते हैं। कभी देश के लिए तो कुछ नहीं किये। देश को बांटने और तोड़ने का प्रयास करते हैं। माननीय सभापति जी, देश में आदिवासियों के खिलाफ सबसे ज्यादा 23 प्रतिशत अत्याचार मध्यप्रदेश में होते हैं जहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। आज यह हमारी सरकार को क्या आईना दिखायेंगे? हमारे सरकार लगातार छत्तीसगढ़ की प्रगति, खुशहाली के लिए काम कर रही है। जो बातें होती हैं, हमारी सरकार लगातार काम कर रही हैं। हमें लगता कि हमारी सरकार जो बातें कर रही है, वह कार्य लगातार कर रही है। भारतीय जनता पार्टी की 15 साल की सरकार रही, वन अधिकार मान्यता कानून 2006 के तहत पट्टा देने का हमारी यू.पी.ए. की सरकार ने कानून बनाया था। उस योजना के तहत छत्तीसगढ़ में साढ़े 08 लाख आवेदन आये थे, मगर यहां की डॉ. रमन सिंह की सरकार ने मात्र 04 लाख लोगों को वनाधिकार पट्टा दिया। मैं हमारी सरकार के मुखिया को धन्यवाद देना चाहता हूं कि साढ़े 04 लाख आवेदनों को हमारी सरकार आने के बाद पुनर्विचार किया और आदिवासी के साथ-साथ अन्य पिछड़े वर्गों को भी पट्टा देने का काम किया। यह देश की पहली सरकार है। आज देश का 76 प्रतिशत वनोपज हमारे छततीसगढ़ में खरीदा जाता है। वर्ष 2021-22 में 165 करोड़ रुपये का लघु वनोपज खरीदी करने वाला देश का पहली राज्य छत्तीसगढ़ है। भारतीय जनता पार्टी की डॉ. रमन सिंह जी की सरकार में मात्र 07 वनोपज की खरीदी की जाती थी, हमारी सरकार में 65 वनोपज की खरीदी की जाती है। इन्होंने तो हमारे छत्तीसगढ़ के आदिवासी भाईयों को गाजर, मूली समझ लिया था। पेदागुलूर, चेनागुलूर, मरकमभीड़मेह हो, हमारे कितने बेजुबान आदिवासियों को मौत के घाट उतारने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया। कई बेगुनाह लोगों का जेल में बंद करने का काम किया। मैं सरकार के मुखिया को धन्यवाद देना चाहता हूं कि अब तक विभिन्न न्यायालयों में लंबित 718 प्रकरणों को हमारी सरकार ने वापिस लिये हैं जिसमें 944 अभियुक्त दोषमुक्त हुए हैं। जो बेगुनाह थे उनको भी नक्सली बनाकर यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने प्रकरण दर्ज किया था। माननीय सभापति जी, इसीलिए जो 29 सीटें हैं, छत्तीसगढ़ का आदिवासी समाज जाग गया था, इन 29 सीटों में 27 सीटें जीतें और 03 सामान्य सीट से भी जीते। यह भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को सबक सिखाया कि आप अन्याय, अत्याचार करोगे, भले आदिवासी शांत है, मगर वह देख रहा है। 15

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

साल आपकी सरकार ने जो अन्याय आदिवासियों के साथ किया वह अन्याय को छत्तीसगढ़ की जनता ने देख लिया। टाटा, बिडला बस्तर के लोहण्डीगुड़ा में उद्योग लगाने के लिए आये। बस्तर चमन बन जायेगा, बस्तर का विकास होगा। 1707 किसानों की 4200 एकड़ जमीन इन्होंने अधिग्रहित की। टाटा ने तो जमीन अधिग्रहित की और बस्तर की जनता को टाटा, बाय-बाय करके चले गये। लेकिन यदि वहां के आदिवासियों को जमीन वापस करने का काम किसी ने किया है तो हमारी सरकार के मुखिया भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है। यदि वर्ष 2018-19 से लेकर वर्ष 2022-23 तक राज्य में 12,71,565 क्विंटल लघु वनोपज को 345 करोड़ रूपये देकर खरीदने वाली कोई सरकार है तो वह भूपेश बघेल जी सरकार, कांग्रेस की सरकार है। हमारी सरकार ने वर्ष 2019 से लेकर 2021 तक तेंदू पत्ता संग्राहकों को 1563 करोड़ रूपये का पारिश्रमिक और 2022 में संग्रहित 15.7 लाख मानक बोरा तेंदू पत्ता के एवज में 12 लाख से अधिक संग्राहकों को 630 करोड़ रूपये का भुगतान किया है।

माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार आज लगातार काम कर रही है। आज हमारी सरकार कोदो-कुटकी को भी 3000 रूपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य की दर से खरीद रही है। हमारी सरकार ने मुख्मंत्री हाट बाजार क्लीनिक योजना के तहत दूरस्थ अंचलों में अब तक 79859 शिविरों के माध्यम से 30,23,000 से अधिक मरीजों का इलाज किया है।

सभापति महोदय :- माननीय मरकाम जी, और कितना समय लगेगा?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, मैं सरकार का पहला वक्ता हूं। आधा घण्टा और दे दीजिये थोड़ी देर में खत्म कर दूंगा।

सभापति महोदय :- आप 50 मिनट बोल चुके हैं। संक्षेप में करिये।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, हाट बाजार क्लीनिक योजना के माध्यम से 19,03,500 लोगों की जांच की गयी है। जिसमें 39,000 लोगों की एच.आई.व्ही., 309 लोगों की उक्त रक्त चाप, 5,18,010 लोगों की मधुमेह, 2,50,636 लोगों की मलेरिया, 2,75,500 लोगों की एनिमिया, 1,00,614 लोगों की नेत्र शिविर, 25,962 लोगों की टी.बी. और 52,862 गर्भवती महिलाओं की ए.एन.सी. की जांच की गयी है।

सभापति महोदय, मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान के माध्यम से 3.5 सालों में कुपोषण दर में 8.7 प्रतिशत की बड़ी कमी दर्ज की गयी है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार 15 सालों तक रही है। कुपोषण की दर कहां 42 प्रतिशत हुआ करती थी। हमारी सरकार आज लगातार काम कर रही है कि लोगों का जीवन स्तर सुधरे। हमारी सरकार यहां डी.एम.एफ. मद से लेकर, बस्तर विकास प्राधिकरण से लेकर अन्य मदों से लोगों का जीवन स्तर सुधारने के लिये लगातार काम कर रही है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, अब तक मुख्यमंत्री सुपोषण योजना के माध्यम से 3.5 सालों में वर्ष 2019 में 4,33,000 कुपोषित बच्चों को चिन्हित करके मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान प्रारंभ किया गया। अब तक 2,10,000 बच्चे कुपोषण के चक्र से बाहर तथा 1,00,000 महिलाएं एनीमिया से बाहर हो गयी।

सभापति महोदय, हमारी सरकार महतारी जतन योजना के माध्यम से 1,71,000 गर्भवती बहनों को रेडी टू ईट के माध्यम से गर्म भोजन देने का काम कर रही है। हम लगातार काम कर रहे हैं।

माननीय सभापति महोदय, विपक्ष के साथियों की तरफ से लगातार बातें आ रही थी। विद्वान सदस्य, श्री बृजमोहन अग्रवाल जी कह रहे थे कि प्रधानमंत्री आवास के लिये पैसे जारी नहीं हुए हैं। मैं हमारे मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने राज्यांश की राशि की व्यवस्था करने के लिये विकल्प विचार किया और प्रधानमंत्री आवास योजना के लिये राज्य सरकार द्वारा 662 करोड़ रूपये की राज्यांश की राशि अपने संसाधनों से उपलब्ध करवाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है।

श्री अमितेश शुक्ल :- बृजमोहन अग्रवाल सुन रहे हैं?

श्री मोहन मरकाम :- यदि प्रधानमंत्री आवास योजना में, प्रधानमंत्री जी का नाम है तो पूरी राशि क्यों नहीं देते? जब इसका नाम इंदिरा आवास हुआ करता था, तब इस योजना के लिये केंद्र सरकार शत् प्रतिशत राशि दिया करती थी। आज आपने जिन बातों का आरोप लगाया है, आज उनके भी जवाब है।

माननीय सभापति महोदय, आज हमें कहीं न कहीं यह लग रहा है कि भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के पास कुछ मुद्दे नहीं हैं, इसीलिये वे लगातार इस ढंग से आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे हैं। आज यहां छत्तीसगढ़ के चाहे पंचायत प्रतिनिधि हो, चाहे मनरेगा मजदूर हों, हमारी सरकार ने सभी के हितों का संरक्षण करने का काम किया है। आज लगातार हमारी सरकार जो काम कर रही है। आज हमें लगता है कि जो बातें हैं कभी भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को यह बात समझ में नहीं आएगी। संत कबीर जी ने सही बात कही है, मैं यहां कबीर के वह वाक्य पढ़ना चाहूंगा :-

मल-मल धोये शरीर को धोय न मन का मैल।
नहाये गंगा गोमती, रहे बैल के बैल।।

माननीय सभापति महोदय, यह कबीर जी की पंक्तियां हैं। यह चरित्रार्थ भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के ऊपर सही बैठता है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अजय चन्द्राकर जी, आपको कुछ समझ में आ रहा है ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, पूर्व के माननीय सदस्य शिक्षा के बदहाल व्यवस्था की बात कर रहे थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, आपके बिना इशारे के मंत्रिगण अपने विवेक से भी खड़े होते हैं। अभी माननीय डहरिया जी ने विवेक का प्रदर्शन किया। कभी हम उनको इतना विवेकवान नहीं देखे थे। वह आपके बिना इशारे के खड़े हो गए। कल पहली बार किताब खोले थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, इस प्रदेश में 15 सालों तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही है। डॉ. रमन सिंह जी के कार्यकाल में बदहाल शिक्षा व्यवस्था थी। आठवीं के 65 फीसदी बच्चे दूसरी कक्षा की किताब भी नहीं पढ़ पाते थे। यह भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में शिक्षा व्यवस्था थी। इस प्रदेश में 51 हजार 880 पद शिक्षकों की रिक्त थी। भारतीय जनता पार्टी के शासन काल में 3 हजार स्कूल बंद कर दिया गया था, आदर्श स्कूलों को बंद कर दिया गया था। हमारी सरकार ने फिर से जगरगुण्डा जैसे स्कूलों को चालू कर दिया।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, जिस अधिकारी कागज बनाया है, आप उनके ऊपर जरूर कार्यवाही कीजिएगा। उनको जो कागज पकड़ायें हैं आप उनके ऊपर जरूर कार्यवाही कीजिएगा। यदि प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष अपना भाषण देखकर बोलें तो सरकार की क्या हालत होगी ? यदि मेरी सरकार दिल्ली में भी है तब भी मैं उसके बारे में 4 घण्टा भाषण दे सकता हूँ। मैं सांसद-वांसद कुछ भी नहीं हूँ तो भी। यह कौन लिखकर दिया है ? वह कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष हैं वह सरकार की उपलब्धियों को देख-देखकर पढ़ेगा।

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार ने 3000 स्कूलों को भी चालू कर दिया। उसके साथ-साथ हमारी सरकार ने 14580 शिक्षकों की भर्ती, 1345 प्रोफेसरों की भर्ती, नये जिलों में 10 हजार शिक्षकों की भर्ती करने का निर्णय लिया है। आज नीति आयोग के अनुसार वर्ष 2030 तक देश के 40 प्रतिशत लोगों की पहुंच पीने के पानी तक नहीं पहुंचेगी। यह नीति आयोग कहता है। हमारी सरकार आने के बाद नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी योजना लायी गई। एक वैज्ञानिक सोच के साथ पानी के सतही जल, बरसात के जल को हम कैसे संचय कर सकते हैं ? हम कैसे बचा सकते हैं ? हमारी सरकार ने उसके लिए योजनाएं बनायीं और आज नदी नालों को बांधकर, सतही, बरसात के जल को आगे संचय करने का काम कर रहे हैं। आज कहीं न कहीं हमारी सरकार उस पर काम कर रही है।

श्री कवासी लखमा :- माननीय मोहन मरकाम साहब, आप बढ़िया बोल रहे हैं। आप थोड़ा और अच्छे से बोलिए। अभी माहौल ठण्डा हो गया है। उधर मैदान खाली है।

श्री अजय चनद्राकर :- वह बहुत अच्छा बोल रहे हैं। इन्हीं का पूरा भाषण चलने दीजिए।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, लगातार हमारी सरकार नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी योजना के तहत काम कर रही है। हमारे किसानों, पशु पालकों, जीव-जन्तुओं से लेकर, सबको उसका लाभ मिल रहा है। आज कहीं न कहीं जो आरोप भारतीय जनता पार्टी के नेता, हमारी सरकार पर आरोप लगाते हैं। भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में 36 हजार करोड़ रूपये का नान घोटाला हुआ था, अगस्ता घोटाला हुआ था, पनामा पेपर में नाम आया था, उसके बारे में भारतीय जनता पार्टी के नेता कुछ नहीं कहेंगे ? इनके 15 सालों के कुकर्मों के कारण, छत्तीसगढ़ की जनता देख चुकी थी इसीलिये इनको 14 सीटों में डेढ़ लाईन में बैठा दिये। यह लोग डेढ़ लाईन में बैठ गये। कहीं न कहीं हमारी सरकार

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

काम कर रही है। आज हमें लगता है कि कहीं न कहीं हमारी सरकार लगातार काम कर रही हैं। हमें लगता है कि हमारी सरकार काम कर रही है। मैं संत कबीर जी की उन बातों को दोहराना चाहूंगा । क्योंकि समय की मार, ज्ञानी, गुड़ी, अज्ञानी, सभी झेलते हैं। आज उसी का परिणाम है कि जो हालत है, वह आज भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को मिल रहा है। समझदार व्यक्ति समय से डरता है। इसीलिए मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से कहना चाहता हूं, समय आपके अनुकूल नहीं है। आपको समय ने आईना दिखाया है। छत्तीसगढ़ की जनता ने आपको समय दिखाया है। इसीलिए आरोप-प्रत्यारोप छोड़िए, हमारी सरकार बहुत अच्छा काम कर रही है।

वाणिज्य कर (आबकारी) मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- मरकाम जी, छत्तीसगढ़ की जनता ने आईना दिखाया है लेकिन इनकी प्रभारी आती है तो इनको पूछती भी नहीं है। न बृजमोहन जी को पूछते हैं, न डॉ. रमन सिंह सिंह जो को पूछते हैं। वह अलग-अलग घूमती है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, हमारी सरकार कहीं न कहीं काम कर रही है। आज हमें लगता है कि 23 नंबर में ठोस नक्सली नीति नहीं है। आज हमारी सरकार की जो नीतियां हैं, वह शांति, विश्वास और विकास के एजेंडे पर चल रही है। उसी का परिणाम है कि पहले कोण्डागांव जिले में 5 किलोमीटर तक नक्सलियों का राज चलता था, मैं जहां से आता हूं, उस क्षेत्र को भी केन्द्र सरकार ने नक्सली मुक्त जिला घोषित किया है। इसका मतलब साफ है कि हमारी सरकार की नीतियां बहुत अच्छी है। आज जो बातें आ रही है, हमारी सरकार लगातार काम कर रही है। 26 नंबर में सम्माननीय वरिष्ठ विधायक पूर्व मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल जी आरोप लगा रहे थे कि स्वामी आत्मानंद स्कूल भगवान भरोसे है।

श्री अजय चंद्राकर :- संसदीय कार्य मंत्री जी, इनके भाषण की कॉपी की एस.आई.टी. जांच कराईए।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, आज पूरा देश देख रहा है। आज उन स्कूलों में होड़ मची हुई है। आई.ए.एस., आई.पी.एस. और बड़े-बड़े बिजनेसमेन भी अपने बच्चों को स्वामी आत्मानंद स्कूल में भर्ती कराना चाह रहे हैं। मतलब, स्वामी आत्मानंद स्कूल का क्रेज कितना है, यह पता चलता है। आधुनिक भारत के स्वप्नदृष्टा श्रद्धेय राजीव गांधी जी ने पूरे देश में नवोदय विद्यालय खोलकर गरीब तपके के लोगों को पढ़ने के लिए आगे बढ़ाया था। मैं इस सरकार के मुखिया को धन्यवाद देना चाहता हूं। नवोदय विद्यालय के माध्यम से गरीब तपके के होनहार बच्चों को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। 31 नंबर में विशेष संरक्षित जनजातियों के अस्तित्व को मिटाने के लिए सरकार तुली है। माननीय सभापति जी, इन वर्गों की जो विशेष जनजातियां हैं, चाहे वह बैगा, मुरिया, बिंझवार हो। पहली बार ऐसा हुआ है कि हमारी सरकार ने उनको नौकरी देने की घोषणा की है, उनको आर्थिक, सामाजिक रूप से आगे बढ़ाने का काम अगर किसी ने किया है, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- माननीय मरकाम जी, कृपया समाप्त करें।

श्री मोहन मरकाम :- मैं 10 मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं।

सभापति महोदय :- उसको और संक्षिप्त करिए।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति जी, छत्तीसगढ़ की संस्कृति को विकृत करने का काम किसी ने किया है तो भारतीय जनता पार्टी की डॉ. रमन सिंह जी की सरकार ने किया है। एक करोड़ में करीना कपूर को बुलाकर ठुमके लगवा सकते हैं। (शेम-शेम की आवाज) यहां की जो हमारी संस्कृति है, उसको हमने बढ़ाने का काम किया है। यहां तीजा,पोला, को बढ़ावा दिया है। श्री बृजमोहन अग्रवाल जी और श्री अजय चंद्राकर जी, गेड़ी चढ़ने का भी प्रयास कर रहे थे। एक को पकड़कर गेड़ी चढ़ने का भी प्रयास कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ की संस्कृति को कभी सीखे नहीं हैं। हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ की मान और गौरव को बढ़ाने का काम किया है। माननीय सभापति जी, खनिज न्यास निधि के भ्रष्टाचार का बयान आया ? भ्रष्टाचार का बयान भारतीय जनता पार्टी के शासन में होता था। इन लोग डी.एम.एफ. के पैसे से स्वीमिंग पुल, हेयर स्टीट बनाते थे। उसके साथ-साथ बड़े बिल्डिंग नहीं बनाते थे। मगर हमारी सरकार की सोच है कि जहां खनिज उत्खनन होता है, उस क्षेत्र की जनता का जीवन स्तर सुधरना और खनिज न्यास निधि की राशि को उसी जिले में खर्च करने का ऐतिहासिक निर्णय हमारी सरकार ने लिया है । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, निर्धन रोजगार भूमिहीन योजना में भारी भ्रष्टाचार। इसमें भी आपको तकलीफ होती है । मैं हमारी सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं जो भूमिहीन हैं, जिनके पास एक डिसमिल भी जमीन भी नहीं है उनको सालाना 7,000 रूपये देने का काम अगर किसी ने किया है तो माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने किया है । (मेजों की थपथपाहट) इसमें भी आपको खोट दिखता है, यह तो सीधे खाते में जाता है । जिनके पास एक डिसमिल जमीन नहीं है, यह सोच आपके पास नहीं थी । यह सोच होती तो शायद आप लोगों की यह दुर्गति नहीं होती।

माननीय सभापति महोदय, 56 नंबर आरोप । परिवहन नाके में चालू और अवैध वसूली करने वाली सरकार । आपको यह आरोप शोभा नहीं देता । केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी जी मध्यप्रदेश सरकार को चिट्ठी लिखते हैं, जो मध्यप्रदेश के नाकों में अवैध वसूली हो रही है उस पर रोक लगाईये । आपको मध्यप्रदेश सरकार को यह बताना चाहिए, जो भारतीय जनता पार्टी की सरकार है । क्या यहां इसके बारे में ऐसे कोई प्रकरण आये ? केवल और केवल आरोप लगा देने से, तथ्यहीन आरोप लगा देने से चूंकि इनकी फितरत में है । केवल आरोप लगाना, असत्य बोलना, जनता को गुमराह करना यह भारतीय जनता पार्टी की फितरत में है।

माननीय सभापति महोदय, 62 नंबर आरोप । लोकतंत्र के महत्वपूर्ण स्तंभ पंचायतों के अधिकारों को अधिकारविहीन करने वाली सरकार, हमारी सरकार ने पंचायत प्रतिनिधियों को अधिकार दिया है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ड्राईंग पावर दिया है, जनपद अध्यक्ष और जिलापंचायत अध्यक्ष को चाहे वह पंच हो, सरपंच हो, जनपद सदस्य हो या जिला सदस्य हो सबका मानदेय बढ़ाने का काम अगर किसी ने किया है तो हमारी सरकार ने यह काम किया है । सरकारी क्षेत्र में रोजगार व नौकरी देने वाली सरकार, हमारी सरकार की नीतियां, चंद्राकर साहब ये ऐसी नीतियां हैं जहां बेरोजगारी दर 0.6 प्रतिशत है । पूरे देश में यहां सबसे कम बेरोजगारी दर है, आज हमें कहीं न कहीं यह लगता है कि जहां हरियाणा में बेरोजगारी दर 23 प्रतिशत है, वहीं छत्तीसगढ़ में बेरोजगारी दर 0.6 प्रतिशत है । यह हमारी सरकार है । आज हमें लगता है कि आपातकाल जो आपने 75 नंबर आरोप लगाया है । अघोषित आपातकाल लगाने वाली सरकार, यह तो केंद्र में बैठी मोदी जी की सरकार है । कोई चूं नहीं करता है, यह विपक्ष को भी दबाना चाहते हैं लेकिन विपक्ष डरने वाला नहीं है । आज यह लगातार हमारी नेता आदरणीय सोनिया गांधी जी और राहूल गांधी जी को परेशान करने का प्रयास करते हैं । हमारी संपत्ति नेशनल हेराल्ड कांग्रेस की संपत्ति है, अगर कांग्रेस पार्टी 90 करोड़ रूपये नेशनल हेराल्ड के कर्मचारियों को तन्ख्वाह के लिये देती है, यदि बाप अपने बेटे को देता है तो यह कहां से मनी लांड्रिंग का केस बनता है ? डॉ. रमन सिंह जी, उनके बेटे अभिषेक सिंह जी और अन्य नेताओं के ऊपर करोड़ों रूपये का हाईकोर्ट में भी प्रकरण दर्ज है उनके ऊपर ई.डी. क्यों कार्यवाही नहीं करती ? ई.डी. उनसे पूछताछ क्यों नहीं करती है ? आज कहीं कहीं विपक्ष को दबाने का काम कोई कर रहा है तो मोदी सरकार कर रही है ।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, मैं भारतीय जनता पार्टी की मोदी सरकार से यह कहना चाहता हूं कि अपनी बुलंदी पर इतना नाज न कर मोदी जी, हमने तो आसमां से भी तारे टूटते देखे हैं । सत्ता आती है, सत्ता जाती है, जो सत्ता का गुरूर है, सत्ता का घमंड है ज्यादा दिनों तक चलने वाला नहीं है । देश की जनता भी देख रही है और छत्तीसगढ़ की जनता भी देख रही है । आने वाले वर्ष 2023 में भी जीतेंगे और वर्ष 2024 भी राहूल गांधी जी के नेतृत्व में देश में हम सरकार बनायेंगे । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- माननीय मोहले जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मोहन मरकाम जी नाम ले रहे हैं मोदी जी का, पर भूपेश बघेल जी को बोल रहे हैं। मोहन मरकाम जी ने मोदी जी के नाम पर जितने आरोप लगाये हैं न, वह सब भूपेश बघेल पर लगाये हैं।

श्री कवासी लखमा :- आप किसके नाम पर लगाये हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- निशाना कहीं और और नजरें कहीं है।

सभापति महोदय :- माननीय मोहले जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- मोहन मरकाम जी खुद बहुत दुखी व्यक्ति हैं और अभी मैंने उनका बयान पढ़ा कि पूरे जोगी कांग्रेस वालों को इधर पद मिल गया है। आप दुखी क्यों हो गये? जोगी यूनिवर्सिटी में काबिलियत है। अब आप लोगों में कोई काबिलियत नहीं है तो कोई क्या करेगा?

श्री अजय चन्द्राकर :- भयंकर। एकदम भयंकर और भयानक विद्वतापूर्ण भाषण था।

श्री शिवरतन शर्मा :- इतना विद्वान प्रदेशाध्यक्ष तो कभी कोई हो ही नहीं सकता।

सभापति महोदय :- मोहले जी, चर्चा प्रारंभ करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- गांधी जी के नाम पर आप कह रहे हैं तो गांधी जी के कोई 5 कार्य बता दें तो वे बोलने के लिए तोतरा गये कि गांधी जी के 5 काम क्या हैं। वे नहीं बता सके। ऐसा भयंकर भाषण था।

श्री शिवरतन शर्मा :- ऐसा प्रदेशाध्यक्ष तो दिखता ही नहीं है।

सभापति महोदय :- मोहले जी, बोलना प्रारंभ करें।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय सभापति महोदय, मंत्रिमंडल के विरूद्ध विश्वास प्रस्ताव लाने का मतलब है, अविश्वास इन्होंने नहीं किया कोई काम खास, इसलिए हम लाये हैं प्रस्ताव अविश्वास। ये कर रहे हैं विश्वासघात, इस कारण लाये हैं जनता के प्रति विश्वासघात। इसी कारण हम अपनी करेंगे बात।

श्री रामकुमार यादव :- ए कका। बबा तैं पाये हस पारी, लेकिन झन मारबे तैं लबारी। (हंसी)

समय :
2:47 बजे

(सभापति महोदय (श्री बघेल लखेश्वर) पीठासीन हुए)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- अउ तैं बहुत शोर मा खा जाबे गारी। तुम्हर बात हावै ज्यादा लबारी। माननीय सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव लाने का ये मतलब में बताना चाहूंगा, अगर हम इनके हिस्ट्री के बारे में कहें, कैसे हुई ये सत्ता की सृष्टि, बता रहे हैं हम इनकी हिस्ट्री। ये जब सत्ता में नहीं थे। इनके नेता जो आज इस विधान सभा में नहीं हैं, जिसको जानते हैं नाम है सिंहदेव और इनके नेता ऊपर वाले, मैं नाम लूं या नहीं लूं, क्योंकि इन्होंने हमारे प्रधानमंत्री का बहुत नाम लिया था। तो मैं नाम नहीं लेता हूं। इनके दिल्ली वाले राष्ट्रीय नेता।

श्री अजय चन्द्राकर :- बोलो नाम।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- इनके राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी, वे आकर फैलाये यहां आंधी और कौन सा फैलाये आंधी, सबको बुलाये और सिंहदेव जी पूरा प्रचार किये जा-जाकर, 36 प्रकार के घोषणा पत्र को तैयार किये, नाम है टी.एस. देव। मतलब टी.एस. किये। प्रशासकीय त्रुटि। टी.एस. क्या-क्या होता है। अगर पंचायत में कोई भी कार्य होता है तो पहले टी.एस. किया जाता है तो वैसे कार्य के लिए टी.एस.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

देव और टी.एस. कर दिये। पूरा हो गया। इनकी 36 योजनाओं की घोषणा हुई और घोषणा के पहले इनके माननीय नेता, आज के तत्कालीन मुख्यमंत्री और सभी नेता उस समय अध्यक्ष थे। सभी लोगों ने हाथ में गंगा जल लेकर कसम खाया और कौन-कौन कसम खाये, हम नहीं जानते हैं। क्या कसब खाये, हम नहीं जानते, पर सुने हैं कि कसम खाये और किसमें हाथ में चूल्लू भर पानी था या कहानी था या जल था या गंगा जल था, ये हम नहीं जानते। पर गंगा जल की कसम खाये। कौन सा कसम खाये।

श्री कवासी लखमा :- कका, गंगा जल के कसम नहीं खाये क्या?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- शराब की कसम नहीं खाये । शराब का भी कसम है। बतायेंगे न। शराब चुप नहीं तो हो जाओगे खराब। अब गंगा जल का कसम खाने के बाद क्या हुआ? अब सीधा हम 36 घोषणा किये कि शिक्षित बेरोजगारों को हम काम देंगे। बेरोजगारी भत्ता देंगे। शराबबंदी करेंगे। इन्होंने फिर कहा कि हम महिलाओं को भत्ता देंगे। निराश्रित को देंगे और विधवाओं को देंगे, दिव्यांगों को देंगे, अनेक-अनेक 36 प्रकार की घोषणा जैसे बिजली का बिल माफ, कांग्रेस का कहना साफ, सत्ता दे दो हमें आप। किसको कहे, जनता को। इस कारण कसम के कारण इन्हें सत्ता मिली। अगर छत्तीसगढ़ में आज भी कोई कसम इमान कह देगा, उसकी बात को विश्वास किया जाता है। 15 साल की सरकार का हम लोगों का विश्वास नहीं किया, क्योंकि ये कसम खाये थे। हम कसम खाकर 15 साल सरकार नहीं बने, पर इनके पास बात ही नहीं था। ये कई साल सत्ता में थे, पर कसम खाने के कारण विश्वास किये और इनको 68 सीटें मिलीं। सत्ता पाने के बाद इन्होंने पहले जो वायदा किया था उसको निभाने का प्रयास किया । 2500 रूपए प्रति क्विंटल धान की मूल्य दे दिया । लेकिन उसके लिए इन्होंने की किश्तबंदी, 4 किश्तों में देंगे । पहले बन गए लंदी-फंदी और 4 किश्तों में की धान की किश्तबंदी । इन्होंने दूसरी बात शराब बंदी के बारे में की, शराब बंदी नहीं की, इनको करते हम बंदगी, इन्होंने शराब की नहीं की बंदी, शराब की कर दी नसबंदी । यह सरकार है । यह सरकार है लंदी-फंदी ।

श्री कवासी लखमा :- सभापति जी, यह कौन सी कहानी सुना रहे हैं, लंदी-फंदी, क्या यही इनका अविश्वास प्रस्ताव है ? इनके पास बोलने के लिए कुछ है ही नहीं । केवल लंदी-फंदी, इनकी आदत है फंदी कर रहे हैं ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- खाए हैं कसम, नहीं तो हो जाओगे भसम । यह सोचने की आवश्यकता है । गंगाजल को हम भगवान मानते हैं, देवता मानते हैं, इस बात को इन्होंने ध्यान में नहीं रखा । इन्होंने 36 प्रकार की जो कस्में खाई हैं ।

श्री रामकुमार यादव :- तता तता अरियाए आउ तोर मति मोला लगत हे छरियाय ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- हमारे बृजमोहन जी बोल चुके हैं, कसम खाने के बाद क्या हुआ ? इन्होंने कहा था हम देंगे आवास, शहर को फोकट में आवास, सबको कर दिया उदास, इसी कारण लाए हैं हम अविश्वास । यह हमको सोचने की जरूरत है, लोगों को आवास नहीं मिला । मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- चलिए, समाप्त करिये ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- अभी तो मैंने शुरू किया माननीय । कहते हैं कि माननीय मोदी जी दिल्ली से पैसा नहीं दे रहे हैं । इधर खेलते हैं माननीय मुख्यमंत्री डंडा-गिल्ली, और आरोप लगाते हैं दिल्ली, बने हुए हैं यहां शेख चिल्ली ।

श्री कवासी लखमा :- सभापति जी, ये क्या बकवास कर रहे हैं ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- जब आपने वायदा किया तो फिर आप खुद पैसा दो, आवास दो । दिल्ली वाले 60 परसेंट देते हैं, आप 40 परसेंट क्यों नहीं देते ? आपने कसम खाई है अगर कसम खाई है तो आपको देना चाहिए । इसलिए हमारा अविश्वास प्रस्ताव है । आपने कहा हम करेंगे किसानों का कर्जा माफ, नहीं किया माफ, अपने आप सोच लो अपने आप, क्यों नहीं माफ किया ? हम कर्जा माफी की बात आगे करेंगे । आपने कहा बिजली का बिल करेंगे हाफ, जब पूछा गया तो मुख्यमंत्री जी ने बताया कि 400 यूनिट का माफ करेंगे । उन्होंने कहा पूरा नहीं करेंगे माफ, तो कैसे नहीं होगा इसका पत्ता साफ ? आज हमको यह सोचने की आवश्यकता है कि हमने किस कारण अविश्वास प्रस्ताव लाया है । अविश्वास प्रस्ताव के और भी कारण हैं । अगर मैं छोटी-छोटी बात बोलूं तो कृषि में आप देखेंगे, कृषि में गोबर खरीद रहे हैं, गोबर कितने में खरीद रहे हैं, 2 रूपए किलो और बेच कितने में रहे हैं, 10 रूपए किलो । अब इसको पेट साफ करने वाला डाकू कहें या गड़बड़ करने वाला । वर्मी खाद, समय करें बर्बाद, बेकार का खाद, इस कारण सोचने की आवश्यकता है। वर्मी खाद भी मिट्टी मिला हुआ, गुणवत्ताहीन । यह हमारे लिए सोचने की बात है।

श्री कवासी लखमा :- कवि सम्मेलन है । बृजमोहन जी ने उनको सिखा दिया।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, मैंने बचपन में एक कहानी सुनी थी । एक राजा था, वह राजा भी भू अक्षर के थे, भुम्मासुर । भुम्मासुर ने शंकर भगवान से वरदान मांगने के लिए तपस्या की और तपस्या की तो ऐसी तपस्या की कि शंकर भगवान खुश हो गए और कहा कि मांगो वरदान । उन्होंने वरदान मांगा कि मैं जिसमें हाथ रखूंगा वह जल कर भस्म हो जाए । शंकर भगवान ने वरदान दे दिया। उसका छोटा सा राज्य था, उन्होंने अनेक राजाओं पर चढ़ाई की और सभी तरफ अपना साम्राज्य जमा लिया । क्योंकि वे जिसके ऊपर हाथ फेरते थे, वह जलकर भस्म हो जाता था, इस तरह उसने सारा राज्य पा लिया । राज्य पाते-पाते ऐसी घटना हुई कि जिसने वरदान दिया उनकी श्रीमती की तरफ उनका ध्यान गया और ध्यान इतना गया कि उसे अपनाने का मन बना लिया । हमारी माता पार्वती देवी शर्मा गईं । उनकी रक्षा करने के लिए विष्णु भगवान आए और उन्होंने मोहिनी रूप रखा । उन्होंने कहा जैसा कहो मैं तैयार हूं किंतु मैं ऐसे में आपके साथ नहीं रहूंगी, आप डांस कर दो । उसने डांस करना शुरू किया, उसे क्या डांस कहते हैं ?

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री पुन्नूलाल मोहले :- सभापति महोदय, समाप्त कहां हुआ है। मैं आपको कहानी बता रहा हूं, आप सुनते जाईये। वह ऐसा डांस किये, ऐसा हाथ रखो, ऐसा हाथ सिर में रखो। भस्मासुन सिर में हाथ रख दिया और भस्मासुर भस्म हो गया। ऐसे ही कहानी इस सरकार की है। इन्होंने अपने हाथ में चुल्लू भर पानी लेकर कसम खाये हैं। वह जिसके तरफ भी हाथ रख रहे हैं, वह सिंहदेव जी के तरफ हाथ रखें तो सिंहदेव जी भाग गये। जो सिंह थे, वह देव बन गये, वह जंग में चले गये। यहां पर पता ही नहीं है और हम सत्ता में बैठे हैं। कई लोगों का शुरू कर दिये। अभी हमारे तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष मोहन मरकाम जी बोल रहे थे। वह क्या किये, वह डाट खा गये। ऐसे कई देखे होंगे, जितने सदस्य हैं, कोई न कोई उनके ऊपर कहा। अभी माननीय बृजमोहन जी ने उनके ऊपर कहा।

सभापति महोदय :- माननीय विषय पर आईये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- हमारे नगर पंचायत, जिला पंचायत, जिला पंचायत में अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है और हमारे सदस्यों को हटा लिया जाता है, उनके पद को छीन लिया जाता है। यह भी तो ऐसी बने हैं। यह भी तो भू-अक्षर वाले हैं, उस समय भी यह भू-अक्षर वाले थे।

सभापित महोदय, जहां तक मैं बताना चाहूंगा कि अंतर क्या है? मेरा कहने का मतलब है कि यदि हम आगे बात करना शुरू करें कि इन्होंने बिजली का बिल हाफ क्यों नहीं किये? यदि मैं बताना शुरू करूं कि प्रधान मंत्री आदर्श योजना में राशि भी आती है, लेकिन खर्च नहीं होता है। यदि हम बात करें कि प्रधानमंत्री जी कोरोना के परिप्रेक्ष्य में यहां 5 किलो प्रति यूनिट चावल भेज रहे हैं। यह लोग 5 किलो प्रति यूनिट नहीं देकर 3 किलो प्रति यूनिट चावल दे रहे हैं। इसको हम क्या कहें? इसको भ्रष्टचार कहें या अत्याचार कहें? यह सोचने का विषय है। मैं छोटी-छोटी बात करूंगा। उन्होंने सिंगल बत्ती की बिजली बिल माफ करने की बात कही। सिंगल बत्ती की बिजली है, वह भी माफ नहीं हुई। आखिर सरकार क्या करना चाहती हैं? वह बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। हम छोटे-मोटे गांव की बात कर लेते हैं। गांव में रोड़ बनना, गली बनना, सड़क बनना, लेकिन यह सड़क के लिए पैसा नहीं। दो साल के लिए बजट में पैसा है। दो साल में पैसा निकल गया। गजट बन गया। कई रोड है, जिसमें गड्ढे हैं, वह बेकार पड़े हैं। जनता आपको क्या आशीर्वाद दे रही है या प्रेम दे रही है, यह सोचने का विषय है। बिजली की कटौती हो रही है। अब जब सरप्लस राज है। पिछले समय हमारी सरकार थी। अब जब सरप्लस बिजली है तो रोज चार-पांच घंटे बिजली कटौती करने की क्या जरूरत है? यदि मैं आगे कहूं कि माननीय मुख्यमंत्री जी मुंगेली गये थे। मुंगेली में हमारे मुख्यमंत्री जी, हमारे नगरीय प्रशासन मंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया भैया, तत्कालीन स्वास्थ्य एवं पंचायत मंत्री थे। उन्होंने घोषणा की कि मुंगेली में जिला चिकित्सालय में सिटी स्केन मशीन लगेगा। तीन साल से ज्यादा हो गये हैं, लेकिन मुंगेली में जिला चिकित्सालय में सिटी स्केन मशीन नहीं लगे हैं। उस समय घोषणा कसम खाकर किये, यह हम नहीं जानते। उन्होंने हमारे सामने जो घोषणा किया थे, वह भी पूरा नहीं हुआ। यदि हम बिलासपुर से राजनांदगांव रेलवे लाईन की बात करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आप यह कसम तो नहीं खाये थे कि 25-10 लाख लोगों को रोजगार देंते। कहां रोजागर मिला है? 15 हजार नहीं मिला, इसमें लोगों को रोजगार मिलता। वह 40 प्रतिशत देते तो लोगों का आवागमन सुविधा बढ़ता। आज लोग रेल नहीं देखे हैं। लोग रेल नहीं देखते तो लोगों को रोजगार मिलता।

सभापति महोदय, मैं आगे कहना शुरू करूं कि गिरौदपुरी बाबा गुरू घासीदास जी का जन्मस्थल है। गिरौदपुरी में माननीय मुख्यमंत्री जी गये थे। वहां पर हम लोग भी थे। उन्होंने सतनाम भवन का उद्घाटन किया। हमने माननीय मुख्यमंत्री जी से मांग किया तो गुरू घासीदास गुरूकुल संस्थान बना। माननीय मुख्यमंत्री जी ने घोषणा कर दिया, लेकिन आज वह पता ही नहीं है। उस समय वह तत्कालीन मुख्यमंत्री थे तो वह माननीय राहुल गांधी जी को लेकर गये, वहां पर उन्होंने आशीर्वाद मांगा, लेकिन उस आशीर्वाद स्थल की क्या स्थिति है? उस समय के तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी आये थे। उन्होंने 2 करोड़, 25 लाख रूपये का शिलान्यास किया। वह शिलान्यास अपूर्ण पड़ा है, वह जैसे का तैसा पड़ा हुआ है। सरकार को लगभग साढ़े तीन वर्ष से चार वर्ष होने की स्थिति में है। यदि मैं अनुसूचित जनताति के मामले में कहूं। माननीय मुख्यमंत्री जी वहां गये थे, वह बोलें कि हम 27 प्रतिशत आरक्षण देंगे। वह बड़ा तांव किये और तांव करके 27 प्रतिशत आरक्षण देंगे कह कर घोषणा किये। वह अनुसूचित जनजाति को 13 प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा किये। आप देखें होंगे कि उन्होंने अध्यादेश लागू किये, अध्यादेश 6 महीने में आया नहीं और 6 महीने के बाद अध्यादेश टाय-टाय फीस हो गया। जब कोर्ट में गये, वह भी जीरो हो गये। इधर आये हीरो और बन गये जीरो। हम उसको क्या कहेंगे? इस प्रकार हम अविश्वास प्रस्ताव की बात कहें। यदि हम दूसरी बात कहें कि विशेष भर्ती अभियान में हमारे सभी अनुसूचित जाति के भाईयों को जो प्रथम व चतुर्थ श्रेणी के शासकीय नौकरी में कई हजार रिक्त पद हैं, उनको भर्ती नहीं किये। अगर मैं पाटन क्षेत्र की बात करूं तो पाटन क्षेत्र के पटेना में एक ही परिवार के 3 लोगों को जलाकर मार दिया जाता है, भूंज दिया जाता है, रख कर दिया जाता है। मैंने माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध किया था और उस समय अपने विधानसभा क्षेत्र में जाकर देखते लेकिन मुख्यमंत्री जी उनको देखने भी नहीं गये। किसानों की आत्महत्या के मामले में उनको मुआवजा भी नहीं देते हैं। जब माननीय मुख्यमंत्री जी उत्तरप्रदेश जाते हैं तो 50 लाख रूपये के मुआवजे की बात करते हैं और यहां 9 लाख, 42 किसानों ने आत्महत्या की लेकिन इन्होंने किसानों को एक रूपये भी नहीं दिया। यह कैसा सौतेला व्यवहार है और यह कैसी परिस्थिति है ? इसी कारण से हम इन पर अविश्वास की बात करते हैं। यह हमारे सोचने और समझने का विषय है। हमारी सरकार ने अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए नर्सिंग ट्रेनिंग की व्यवस्था थी और उन बच्चों को पायलट बनने की व्यवस्था थी लेकिन इन्होंने उस योजन को बंद दिया। पादुका दिया था लेकिन उसे भी बंद कर दिया गया। यहां तक कि हमारे गरीब, असहाय, बीमार और निराश्रित लोग तीर्थयात्रा पर जाते थे। वह लोग फोकट में तीर्थयात्रा पर जाते थे और सरकार को आशीर्वाद देते थे लेकिन इन्होंने उस योजना को भी बंद कर दिये।

माननीय सभापति महोदय, मैं इस जल मिशन योजना के विषय में सोचता हूं कि जल मिशन होता है कमिशन और उस जल मिशन योजना में 10 करोड़ रूपये की निविदा की गई और निविदा भी कैन्सिल हो गया और वह भी मंत्रिमण्डल के द्वारा कैन्सिल किया गया तो हम इसको क्या कहें ? इसी कारण से हम लोग अविश्वास प्रस्ताव की बात करते हैं। आदिवासियों की हत्या, बलात्कार में यह सरकार बारहवें नंबर पर है। पूरे प्रदेश में खातू की कमी है तो हम गांव की भाषा में इस सरकार को खातू सरकार, खातू सरकार कहें। खाद नहीं है और पिछले समय बीज नहीं था। खाद नहीं है और न ही पोटाश है और न ही है यूरिया तो सरकार हो गई जनता से दूरिहा। यह हमारे सोचने की बात है।

सभापति महोदय :- चलिये। माननीय मोहले जी, समाप्त कीजिए।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- किसानों को नहीं मिलता है पोटाश, इसी कारण तो हम लाये हैं अविश्वास। किसानों के मामले में भी हमको सोचने की आवश्यकता है। यूरिया की क्या जरूरत थी कि दिल्ली से 91 प्रतिशत यूरिया आया है लेकिन यूरिया ब्लैक में बिक रहा है। सीमेंट ब्लैक में बिक रहा है। छड़ ब्लैक में बिक रहा है। सरकार कालाबाजारी को रोकने में अक्षम है। अगर हम पेट्रोल-डीजल के वैट टैक्स की बात करें तो केवल 1 रूपये, 2 रूपये टैक्स कम किये हैं। अगर वह वैट टैक्स में 10 रूपये, 20 रूपये कम करते तो डीजल का कीमत होता और लोग खुशियाली मनाते और आपको आशीर्वाद देते। ऐसी सरकार से हम क्या अपेक्षा करे ? इस कारण से हम इस सरकार से अपेक्षा नहीं करते हैं। ब्लैक मार्केट में बिक रहा है। 50,000 से अधिक किसानों को पंप कनेक्शन देंगे। हमको लग रहा है टेंशन और यह नहीं दे रहे हैं कनेक्शन। आप किसानों को पंप कनेक्शन क्यों नहीं दे रहे हैं ? आप मूछ पर ताव से बात किये और इधर माननीय मुख्यमंत्री जी जब किसी की जांच होती है तो बाहर भाषण में कहते हैं और मैं उनके बारे में नहीं बताना चाहूंगा। वह कहते हैं कि हम मां का दूध पिये हैं हम देख लेंगे और वह मैदान में आ जाये। तो हम क्या कहें ? क्या हम अपने बाप का दूध पिये हैं ?

समय :
3:02 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरण दास महंत) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय :- चलिये। महोदय, आप समाप्त कीजिए।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- यह सोचने का विषय है। कौन मां का दूध नहीं पिता है। हम तो बकरी का दूध नहीं पिये हैं। अब कौन पीता है, कौन जाने ? कौन मां का दूध पीया है और कौन जंग से यहां आ रहा है। अभी तो जंगल गुजरात की तरफ चला गया है। गुजरात की हो रही बात और जंगल से शेर कहां पहुंच गये गुजरात। यह सोचने का विषय है।

अध्यक्ष महोदय :- अभी अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है। आप थोड़ा ठीक से चर्चा कीजिए न। आप मजाक मत कीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चर्चा तो रही है। यहां शेर नहीं दिख रहे हैं। शेर का पता ही नहीं है। उद्योग बने गये हैं इस कारण से हम अविश्वास की बात करना चाहते हैं। यह अविश्वास प्रस्ताव की बात है और हमको इस पर सोचने की आवश्यकता है।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ बातें और कहना चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- अभी आपकी तरफ से बहुत से लोग बोलेंगे। आप शांति से अपनी बात कहिये। हो गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत सीनियर सदस्य हैं। यह 10 बार के सांसद और विधायक हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे मालूम है। यह सर्वाधिक सीनियर सदस्य हैं और बुजुर्ग हो गये हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह सदन में बहुत कम बोलते हैं। आप उनको बोलने का पूरा अवसर दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- तो बाकी लोग भी हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कैसा मॉडल है छत्तीसगढ़ जहां 12 से अधिक बेटियों का होता है बलात्कार। यह कैसा छत्तीसगढ़ है यहां 12 लोगों के साथ बलात्कार होता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह बोल रहे हैं कि इस सदन में ऐसा कौन है जिसने अपने बाप का दूध पीया है वह बताये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- हमने देश के अन्य राज्यों को पीछे छोड़ दिया। यह कैसा छत्तीसगढ़ है ? यह कैसा मॉडल है कि 16 लाख गरीबों के घर नहीं बनते। गरीबों को घर के लिए पैसे नहीं मिलते और 80 लाख लोग बेघर हो रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- वाह-वाह। चलिये।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- यह कैसा छत्तीसगढ़ है और यह कैसा मॉडल है जहां यू.पी. के किसान को 50 लाख रूपये का मुआवजा दिया है और सिलगेड़ के 3 आदिवासियों को मौत के घाट उतारने पर भी प्रदर्शन करने पर कुछ नहीं दिया जाता है। यह कैसा छत्तीसगढ़ है जहां ओपिलियन रेणुका यादव के सुझावों को भी सरकार नहीं कर पाती है। यह कैसा छत्तीसगढ़ मॉडल है जहां कर्ज की दर 55,000 रूपये कर दिया जाता है। यह कैसा छत्तीसगढ़ है ? यह कैसा छत्तीसगढ़ मॉडल है जो रेडी टू ईट सरकार की योजना है फीट सरकार बन गई ढीट।

अध्यक्ष महोदय :- वाह-वाह। चलिये, आप समाप्त कीजिए।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- यह सोचने की बात है। यह सरकार दुगुने कीमत पर और पांच गुने कीमत पर देती है गोबर तो क्या हम सरकार को गोबरगढ़ कहें या छत्तीसगढ़ कहें ? यह कैसा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

छत्तीसगढ़ मॉडल है ? छत्तीसगढ़ दिल्ली का ए.टी.एम. बन गया है। हम इसको छत्तीसगढ़ कैसे कहे ? यह कैसा छत्तीसगढ़ मॉडल है जिसमें पण्डो जाति के 23 से अधिक लोग कुपोषण से मर जाते हैं ? यह कैसा छत्तीसगढ़ मॉडल है जहां पी.डी.एस. सिस्टम में दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट में हमारे सरकार की, रमन सिंह की तारीफ होती थी । पर यह मॉडल तीन साल में कैसा है छत्तीसगढ़, जो गलत हो गया । यह कैसा मॉडल बन गया छत्तीसगढ़, जो पुलिस, शिक्षक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, स्वसहायता समूह, स्वास्थ्यकर्ता, कर्मचारी, जवान, आदिवासी, युवा हड़ताल में है । यह कैसा छत्तीसगढ़ है, भूपेश जी को कैसा आशीर्वाद दिए थे, वह मुख्यमंत्री बने । हम उन्हें सचेत करना चाहते हैं । कर्मचारी रो रहे हैं, तड़प रहे हैं, सोच रहे हैं कि हमारा वेतन कैसे बढ़े, वेतन विसंगति दूर हो । निराश्रित कैसे हैं, क्या वे आपको आशीर्वाद देंगे ? वे आपको क्या कहेंगे, आप सोच सकते हैं । हमें आपको कहने की आवश्यकता नहीं है । आपने जो वादा किया था, उसे निभाना पड़ेगा । कहते हैं कि जो वादा किया, वो निभाना पड़ेगा । यह समझदारी है । डमडम डिगा डिगा, नहीं तो फिर हो जाएगा मौसम भीगा-भीगा । खाद-बीज के मामले में पीछे है, धान के उत्पादन में छत्तीसगढ़ 19वें स्थान पर है, फिर भी कैसा है मॉडल छत्तीसगढ़ । जिसने स्व सहायता समूह की महिलाओं को, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को उनके अधिकार को खतम कर दिया है । यह कैसा छत्तीसगढ़ है, यह कैसा निर्णय है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप बार-बार टोक रहे हैं तो मैं एक ही बात कहना चाहता हूं, मुझे बोलना तो बहुत है, पर यह बता दूं कि आपने छत्तीसगढ़ को बरबाद कर दिया, डूबा दिया । छत्तीसगढ़ अपराध, शराब, गांजा, हत्या, बलात्कार, चाकूबाजी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, वन माफिया, रेत माफिया का गढ़ बन गया है । यह है छत्तीसगढ़। धन्यवाद, जयहिन्द, जय छत्तीसगढ़ । (मेजों की थपथपाहट)

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष जी, प्रतिपक्ष के द्वारा माननीय भूपेश जी के नेतृत्व की सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। अध्यक्ष जी, अविश्वास प्रस्ताव के लगभग 85 बिन्दु हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- 151 ।

श्री रविन्द्र चौबे :- उसके उपबिन्दु सहित आपने प्रस्तुत किया है । बृजमोहन जी ने चर्चा की शुरूआत की और उनकी चर्चा में केवल दो बिन्दु थे, जिसमें से एक माननीय सिंहदेव जी की चिट्ठी और दूसरा, कांग्रेस का घोषणा-पत्र । आदरणीय बृजमोहन जी, जब आप बोल रहे थे तो पीछे शिवरतन जी और अजय जी खड़े होकर घोषणा-पत्र के कुछ बिन्दुओं का उल्लेख भी कर रहे थे । कभी आप पीछे मुड़कर देखते हैं कि दिल्ली में सरकार बनाने के लिए आपने क्या घोषणा-पत्र बनाया था ? मध्यप्रदेश में तीन बार आपने सरकार बनाई तो आपके घोषणा-पत्र, संकल्प पत्र को कभी पलटकर देखा ? आप हमारी घोषणा-पत्र में चर्चा करते हैं, इसका मतलब यह है कि आदरणीय भूपेश जी के नेतृत्व में हमने जो

सरकार बनाई है, हालांकि घोषणा-पत्र के कुछ वायदे शेष होंगे, लेकिन हर चर्चा में आप केवल हमारी घोषणा-पत्र की चर्चा करते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, जब आदरणीय मोहन मरकाम जी अपनी घोषणा-पत्र में बात कर रहे थे तो मैंने कहा कि हम आपकी घोषणा-पत्र में सदन में कोई चर्चा नहीं करेंगे । मैं आपको आमंत्रित कर देता हूं कि आपकी घोषणा-पत्र के 36 बिन्दु में जब, जहां कहें, जिस जगह कहें, हम चर्चा के लिए तैयार हैं या गांधी जी और संविधान दिवस के लिए जो विशेष सत्र हुआ था, वैसा एक विशेष सत्र आप अपनी घोषणा-पत्र के संबंध में करवा लें । चूंकि आपने अपनी घोषणा-पत्र को आत्मसात कर लिया है । राज्यपाल के अभिभाषण में आ चुका है तो चलिए, एक दिन में उसमें जनता के सामने खुली बहस हो जाये । आपने अपने घोषणा-पत्र का कार्य पूरा किया है, इतना कांफीडेंस है तो इस कांफीडेंस को दिखाईए और मदद के लिए जितने ब्यूरोक्रेट रखने हैं, वह रख लीजिए ।

श्री कवासी लखमा :- आप लोगों को अध्यक्ष जी को धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने अविश्वास प्रस्ताव को चर्चा में लिया है । बहुमत नहीं होने के बाद भी आप लोगों ने अध्यक्ष जी को बार-बार चिट्ठी लिखी, अध्यक्ष जी ने इसके लिए अनुमति दी । इसमें कुछ होने वाला है क्या ?

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, हमें उससे इंकार भी नहीं है । आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हमने जो वायदे करके आये थे, उसी पर छत्तीसगढ़ की जनता को भरोसा है । (मेजों की थपथपाह) हमारे पास 71 सदस्यों की बहुमत है और सरकार जो काम कर रही है, सुन लेना, फिर से गलतफहमी दूर कर लेना, इस बार 71 अगली बार 75, कांग्रेस की सरकार बनेगी (मेजों की थपथपाहट)

श्री ननकीराम कंवर :- इतना बड़ा स्वप्न मत देखो महाराज। 2023 में मालूम हो जायेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- मिश्री भईया, क्या है कि ..।

अध्यक्ष महोदय :- आप इनको लगातार सुन रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है कि सबको मुंगेरी लाल के सपने देखने का अधिकार है। काठ की हांडी चूल्हे पर एक बार चढ़ती है, बार-बार नहीं चढ़ती है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, हम कोशिश करेंगे कि हम लोग बार-बार चढ़े। आप अपना भाषण जारी रखें। अनावश्यक समय खराब मत करिये। अपना समय दूसरो को मत दीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, मैं तो अपनी बात ही कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, आप शुरू करिये न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, आपकी तरफ से तो ऐसा कमेन्ट्स नहीं आना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- क्यों ? कौन सा गलत कहा ? मैं कह रहा हूं कि आप अपना समय मत दीजिये, समय बहुत कम है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मैं आदरणीय बृजमोहन जी के भाषण की जिक्र कर रहा था। मैंने केवल इतना कहा कि आप कभी अपने घोषणा-पत्र को पढ़े हैं ? आप किसानों के बारे में बात करते हैं। दिल्ली के घोषणा-पत्र में कहा गया था कि किसानों को एम.एस.पी. डेढ़ गुना बढ़ाकर दिया जायेगा, लागत मूल्य दोगुना किया जायेगा, स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट लागू की जायेगी, महंगाई कम किया जायेगा, 2 करोड़ लोगों को रोजगार दिया जायेगा। आपने कभी दोबारा पढ़ा ? आप महंगाई की एक शब्द भी बात करते हैं ? आप एक भी शब्द रोजगार की बात करते हैं। मैं दिल्ली की बात पर नहीं जाऊंगा। आपने छत्तीसगढ़ में भी कहा था, आपने 270 रूपया किसानों के लिए बोनस की घोषणा की थी और जब हम सदन में पूछते थे तो आप पैसे का रोना रोते थे। अभी बृजमोहन जी ने कहा कि हमारे कार्यकाल का 300 रूपया बोनस कौन देगा ? घोषणा आप करेंगे, वायदा आप करेंगे और प्रश्न हमसे करेंगे कि आपने जो वादा किया था उसको कौन पूरा करेगा ? इसका कौन उत्तर देगा ? आपने 2100 रूपये का भी तो वादा किया था। आप अपने घोषणा-पत्र को नहीं पढ़ते। केवल हमारे घोषणा-पत्र को देखकर आरोप लगा देने से कुछ नहीं होने वाला है। हमने जनता का विश्वास जीता है, इसलिए आपको यह दिखाई दे रहा है। मैंने जो कहा, हम उस सीमा को छूयेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय साथियों मैं जानता हूं कि यह अविश्वास प्रस्ताव नहीं आने वाला था। लेकिन आदरणीया दिल्ली से आई, दिल्ली से दो-दो, तीन-तीन आदरणीय आये, एकात्म परिसर से लेकर कुशाभाऊ ठाकरे परिसर तक लगातर मीटिंग्स होती रहीं और कहा जाता रहा कि आप प्रतिपक्ष की भूमिका भी नहीं निभा पा रहे हैं, इसलिए यह अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। आपने किन बातों का जिक्र किया ? अध्यक्ष जी ने आसंदी से पढ़कर सुना दिया था कि आपने जितनी बातें कही, इस सदन में चर्चा हो चुकी है। अलग-अलग विषयों पर चर्चा हो चुकी है। कभी ध्यानाकर्षण, कभी स्थगन, कभी प्रश्नकाल के माध्यम से चर्चा हो चुकी है। आपने केवल अविश्वास प्रस्ताव के नाम से रिकार्ड बजा दिया और दिल्ली को संतुष्ट करने की कोशिश की है।

अध्यक्ष महोदय, आप अंतरविरोधों की बात करते हैं। लोकतन्त्र में अंतरविरोध चलता है। हर राजनीतिक पार्टियों में होता है। महाराज साहब, अगर किसी बात की तकलीफ है तो उन्होंने मुख्यमंत्री जी को चिट्ठी लिखा। आज कार्यवाही हुई, कल कार्यवाही होगी, आप उसकी क्यों चिंता करते हैं। लेकिन लोकतन्त्र में हर पार्टियों में अंतरविरोध होता है। हमने एकात्म परिसर में देखा है। बृजमोहन जी, आप भी गवाह हैं। पितृपुरूष को किस हालत में भागना पड़ा था, मैं बाकी चीजों का जिक्र नहीं करता। लेकिन आदरणीय साथी, यह प्रजातन्त्र है, मतभेद होते हैं। महाराज साहब की तकलीफ थी, महाराज साहब ने चिट्ठी लिख दिया, हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री जी हैं, उसमें क्या कुछ करेंगे, क्या कुछ हो सकता है, आज भी उत्तर में आयेगा और आने वाले समय में भी दिख जायेगा। लेकिन लोकतन्त्र में यह अंतरविरोध, जीवित लोकतन्त्र का सबसे बड़ा सबूत है। यह कार्रवाई नहीं दिख रही है ? हम तो यह

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समझते थे कि आज जो अविश्वास प्रस्ताव आयेगा, आदरणीय अजय चन्द्राकर जी 3 दिन से हमें कह रहे थे, हमारे इधर से कोई साथी खड़े होकर कोई बात कहते थे, अजय भईया कहते थे अविश्वास प्रस्ताव के दिन, भईया क्या धमकी देते थे। अजय जी, जितना अधिकार आपको वहां बैठकर बोलने का है, उतना ही अधिकार इनको है, और उतना ही अधिकार इनको है । हम अपनी बात कहते थे, आज हमने महसूस किया कि जिस तरीके से अविश्वास प्रस्ताव के मुद्दे लाये हैं, ऐसा कोई मुद्दा नहीं रहा है, जिसको लेकर आदरणीय मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, हम पर तो बड़े आरोप लगा देते हैं कि आवास का पैसा नहीं दिये, योजनाओं का क्रियान्वयन नहीं हुआ, आप दिल्ली से डरते क्यों हैं ? दिल्ली की सरकार छत्तीसगढ़ के साथ दोहरा व्यवहार क्यों करती है, छत्तीसगढ़ की जनता के साथ सौतेलापन क्यों ? यहां के किसानों के लिए अगर हम कुछ काम करना चाहते हैं, हर बार अडंगा क्यों ? लगातार हम आपसे कहते रहे हैं, इस सदन में भी और सदन के बाहर भी, एक चिट्ठी तो लिख दीजिए, एक बार दिल्ली से अनुरोध तो कर दीजिए, आखिर छत्तीसगढ़ की जनता से इतनी दुश्मनी क्यों है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- कल का एक संकल्प सर्वसम्मत किये हैं । आपको ध्यान है कि नहीं है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- आप कह रहे हैं ना कि सर्वसम्मति किये हैं तो इधर से बताया जा रहा है कि वेतन वाला किये हैं । (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- एक अशासकीय संकल्प श्री धर्मजीत सिंह जी का किये हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- संसदीय कार्य मंत्री जी, यदि आप समझते हैं कि विधेयक जो है वह संकल्प है, उसको अपने भाषण में लाते हैं..।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैंने नहीं कहा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने उल्लेख किया । मुख्यमंत्री जी भी उसमें मस्त हंसे । वैसे बड़ी बात हो गई ।

श्री संतराम नेताम :- वेतन लेने के लिए कौन नहीं हंसेगा ?

श्री रामकुमार यादव :- हमन ला पुछिस तव प्रस्ताव तुमन के रहिसे कहि देन ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं, नहीं । अशासकीय संकल्प में कल जो बात आई, आपको धन्यवाद दूंगा । छत्तीसगढ़ के हितों के लिये चाहे वह सदन में हो, चाहे वह सदन के बाहर हो, आप हमारी मदद करेंगे, हम आपकी मदद करेंगे । आदरणीय धर्मजीत भईया का भी संकल्प था, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है, लेकिन मैं तो आपसे प्रश्न कर रहा हूँ, जब किसानों को 25 सौ रूपये देने की बात आई तो दिल्ली की सरकार का क्या कहना था ? माननीय सभापति महोदय, खाद्य मंत्री के साथ मैं भी दिल्ली की बैठक में गया हुआ था, माननीय मुख्यमंत्री जी साथ में थे, केन्द्रीय नेतृत्व क्या बोलता है कि एम.एस.पी. से एक रूपया भी ज्यादा छत्तीसगढ़ के किसानों को नहीं मिलना चाहिये । क्या आप इससे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सहमत हैं ? हमारे आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि 25 सौ रूपये से एक रूपया कम नहीं मिलना चाहिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, सरकारों को छोड़ दीजिए, अपने भाषण में उल्लेख करिये कि आज सर्वोच्च न्यायालय ने क्या कहा है, विषय के बारे में बता देता हूँ कि रेवड़ी बांटने के बारे में ।

श्री रविन्द्र चौबे :- इसका मतलब ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप चाहे जो निकाल लो ।

श्री रविन्द्र चौबे :- पूरा प्रदेश सुन रही है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- सुनने दो ।

श्री रविन्द्र चौबे :- छत्तीसगढ़ के किसान देख रहे हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- सब होने दो ।

श्री रविन्द्र चौबे :- छत्तीसगढ़ के किसानों को देने वाली राशि को अगर आप रेवड़ी बोल रहे हैं तो आप समझ लीजिए कि आने वाला परिणाम क्या होने वाला है? (मेजों की थपथपाहट) अजय भाई, ये सोच यही आपका दुर्भाग्य है । जिस समय देने की बात आई, नारा तो आप भी लगाये ना, क्यों नहीं दे पाये ? अगर यह दे रहे हैं तो एतराज क्यों है ? हम दिल्ली से कोई पैसा मांगकर नहीं दे रहे हैं, हम अपने बजट से पैसा निकाल कर दे रहे हैं । (मेजों की थपथपाहट) छत्तीसगढ़ के किसानों को देने वाले पैसे को आप यदि रेवड़ी कह रहे हैं तो छत्तीसगढ़ के किसान आने वाले समय में आपको देख रहे हैं । आदरणीय साथी, मैं आपसे कह रहा था, हमारे साथ जब सौतेलापन होता है, दिल्ली का व्यवहार इस तरीके से होता है, आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने तो कहा था, एक चिट्ठी तो लिख दीजिए । इतना डर क्यों ? दिल्ली से इतना डरते क्यों हैं ? किसानों की बात आती है तो एक चिट्ठी नहीं लिख सकते ? हमने जब 25 सौ रूपये देने की बात कही तो दिल्ली ने कहा कि एम.एम.पी. से ज्यादा एक रूपये नहीं दीजिए । राजीव गांधी किसान न्याय योजना, इसी की उत्पत्ति है । इस साल किसानों को 2640 रूपया मिलेगा । इसी अनुपात में अगर एम.एस.पी. बढ़ते रहा तो आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी, छत्तीसगढ़ के किसान आने वाले समय में 2800 रुपये प्रति क्विंटल धान की कीमत पायेंगे। (मेजों की थपथपाहट) इस देश में किसानों के लिए कोई इतना पैसा नहीं दे सकता। दिल्ली में, उत्तरप्रदेश में आपकी सरकार है। माननीय देश के यशस्वी प्रधानमंत्री, वह हमारे भी प्रधानमंत्री हैं इसलिए मैं उनका नाम सम्मान से ले रहा हूं। वह बनारस (यू.पी.) से चुनकर जाते हैं। उत्तरप्रदेश में धान की कीमत किसानों को क्या मिलती है, आप किसी से पूछ लेना। 1 हजार रुपये क्विंटल नहीं मिलती। छत्तीसगढ़ में इस साल किसानों को 2640 रुपये क्विंटल मिलेगा। आपके सोच और आदरणीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की सोच में अंतर कितना है, 1640 रुपये का अंतर है। यह प्रदेश के किसान समझते हैं, यहां की जनता समझती है। यह

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

रेवड़ी नहीं है। अगर हमने 10 हजार करोड़ रुपये का कर्ज माफ किया तो किसानों को स्वावलंबी बनाने के लिए किया। एक बार किसान अपने पैरो में खड़ा हो जाये। अभी आदरणीय बृजमोहन अग्रवाल जी अपने भाषण में कह रहे थे कि आपने केवल शार्ट टर्म लोन का माफ किया। आपका आशय यही था न कि मीडियम टर्म और लांग टर्म लोन का भी माफ करना था। कर्ज माफी को आप क्या मानते हैं? उसको रेवड़ी नहीं मानते। आज आपने सुप्रीम कोर्ट का बड़ा जिक्र कर दिया। आदरणीय 10 हजार करोड़ रुपये की कर्ज माफी और 2500 रुपये की कीमत यह दो ऐसे सरकार के सबसे बड़े कदम हैं। अजय जी आपके हाथ हिलाने से क्या होगा? आपकी 15 साल हुकूमत रही है। वर्ष 2017-18 तक आपकी सरकार रही है। छत्तीसगढ़ में किसानों की क्या हालत थी ? खरीफ के धान का उत्पादन का टोटल आपके पास आंकड़े हैं। आप कृषि मंत्री रहे हैं। 70-72 लाख मीट्रिक टन उत्पादन होता था, आपने कभी 72 लाख मीट्रिक टन खरीदी नहीं किया। 60-62 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वर्ष 2018 में 70 लाख मीट्रिक टन खरीदा गया है।

श्री रविन्द्र चौबे :- 2018 में तो हम आ गये थे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप 2018 में नहीं, 2019 में आये हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- 2019 में नहीं, 2018 में। 2018 से ही 2500 रुपये धान का समर्थन मूल्य देना शुरू किये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आदरणीय, साल भर में 70 लाख मीट्रिक टन खरीदा है। मेरे पास आंकड़े हैं। मैं आपको बता देता हूं।

श्री अमरजीत भगत :- अगर 05 साल का एवरेज निकालेंगे तो लगभग 60 लाख मीट्रिक टन आयेगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- चलिये, कोई बात नहीं। इस साल 98 लाख मीट्रिक टन, आने वाले साल में 110 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का लक्ष्य है। छत्तीसगढ़ में धान का उत्पादन आपके वर्ष 2017 से अजय जी केवल साढ़े 03 साल हुए हैं, लगभग उत्पादन लक्ष्य दोगुना हुआ है। यह आपने आप 80 लाख मीट्रिक टन हो गया। शिवरतन शर्मा जी आप तो धान के व्यापार से भी जुड़े हुए हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं किसान हूं, व्यापार नहीं करता।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप ज्ञानवान हैं, चलिये, मैं और कुछ नहीं बोल रहा हूं। आप किसान हैं, यह भी मैं कह रहा हूं। लेकिन आप 80 लाख मीट्रिक टन कह रहे हैं, अभी बृजमोहन जी के पास आंकड़े हैं, आप देख लेना। यह सच्चाई नहीं है। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि उत्पादन का जो हमारा लक्ष्य है, इनकी सरकार के बाद वह केवल साढ़े 03 साल में दोगुना किया गया है। यह अपने आप कैसे हो सकता है ? शार्ट टर्म लोन आप साल भर में कितना देते थे ? मुश्किल से 3200 करोड़ रुपये देते थे। छत्तीसगढ़ ने इस साल 5800 करोड़ रुपये किसानों को शार्ट टर्म लोन दिया है। आप टोटल धान

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की खरीदी कितने किसानों का करते थे ? 17 लाख किसानों का करते थे। इस साल 23 लाख किसानों से धान खरीदी किये हैं। पंजीयन अभी शुरू हुआ है, इस साल किसानों की संख्या उससे भी ज्यादा बढ़ने वाली है । यह इजाफा अपने आप हो गया? यह सरकार ने मेहनत किया इसलिये हुआ। आप लगातार फर्टिलाइजर के बारे में बात करते हैं। आज के अविश्वास प्रस्ताव में भी यह मुद्दा है कि आप खाद की आपूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। आपकी सरकार का आखिरी साल, वर्ष 2017 में, मैं वर्ष 2018 को पूरा नहीं जोड़ रहा हूं। आपने किसानों को टोटल फर्टिलाइजर कितना दिया था? आपने टोटल खरीफ का लगभग 7,72,537 मेट्रिक टन दिया था। माननीय बृजमोहन जी, आपकी हुकूमत के आखिरी साल में, यह पूरे खरीफ का आखिरी आकड़ा है 7,72,537 मैट्रिक टन, जो आपने दिया। उसमें आज आप लगातार प्रश्न भी किये और आज भी कह रहे थे और आपने अपने भाषण में उल्लेख किया था कि आप निजी क्षेत्र में ज्यादा दे रहे हैं। यह आंकड़ा आपके शासन के समय का है कि आपने 7 लाख में सहकारी क्षेत्र में 2,88,687 मेट्रिक टन और निजी क्षेत्र में 3,77,022 मेट्रिक टन फर्टिलाइजर दिया। आपने 37 प्रतिशत सहकारी क्षेत्र में और 49 प्रतिशत निजी क्षेत्र में फर्टिलाइजर दिया। आप हम पर आरोप लगाते हैं। हमारा लक्ष्य इस साल आपसे दुगुना होगा। उत्पादन में भी दुगुना, किसान में भी दुगुना।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप सिंचाई में भी कमजोर है।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय मंत्री जी, हमारे शासन में जो भी रेसियो था लेकिन किसानों को खाद के लिये भटकना नहीं पड़ा था। हमारे शासन में किसानों को 266 रूपये का यूरिया 500 रूपये में और डी.ए.पी. देढ़ और दुगुनी कीमतों में खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी।

श्री कुंवरसिंह निषाद :- उस समय केंद्र में हमारी सरकार थी लेकिन हमने कोई भेदभाव नहीं किया।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या वर्ष 2017-18 में आपकी सरकार थी?

श्री कुंवरसिंह निषाद :- उससे पहले के कार्यकाल में हमारी सरकार थी। हमने भेदभाव नहीं किया।

श्री शिवरतन शर्मा :- अभी वर्ष 2017-18 की बात हो रही है।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय मंत्री जी, आपको सब पता है। सिर्फ यूरिया कंट्रोल में है। बाकी सब का टेण्डर होता है। आप कृपापूर्वक बता दें कि मार्कफेड ने इस साल डी.ए.पी. और एस.एस.पी. के लिये किस महीने में टेण्डर किया है और कितनी मात्रा में और उसका क्या शेड्यूल है?

श्री रविन्द्र चौबे :- सौरभ भैया, मैं तो आपको बहुत बुद्धिमान समझता हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- समझने की बात नहीं है, वह बुद्धिमान है।

श्री रविन्द्र चौबे :- देश की क्या परिस्थिति है? 20-20 दिन तक डी.ए.पी. को रेट नहीं मिला। रेलगाड़ी कौन देगा?

श्री कवासी लखमा :- रेलगाड़ी बंद करके रखे थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- आप यात्रियों के लिये ट्रेन तक नहीं चला पा रहे हो। हमसे पूछते हो कि टेण्डर किस टाइम प्लेस हुआ। दिल्ली का फर्टिलाइजर कंट्रोल एक्ट का आवंटन कौन करता है? एलॉटमेंट कौन करता है? हम रिक्वायरमेंट देते हैं पूर्ति..।

श्री सौरभ सिंह :- आपका टेण्डर मई में हुआ है। यदि आपका टेण्डर मई में होगा तो रिक्वायरमेंट तो First come first serve basis पर होगा। आप सब चीजों को जान रहे हैं। आपका टेण्डर मई में हुआ है और जब आपका टेण्डर मई में होगा, जब कंपनी मई में पार्टिसिपेट करेगी, वह उस हिसाब से सप्लाई का शेड्यूल करेगी। आपको सब पता है। आपको यह भी पता है कि यूरिया सेंट्रल गवर्नमेंट के कंट्रोल में है। आपने यह भी बताया है कि यूरिया पर्याप्त मात्रा में आ गया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- टेण्डर लेट क्यों हुआ यह भी बता दीजिये?

श्री रविन्द्र चौबे :- समय आयेगा तो वह भी बता देंगे।

श्री अजय चंद्राकर :- अभी तो समय है। महान किसान।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, मैं पूछ रहा था कि यदि ये सारी परिस्थितियां होती है तो आप एक बार केंद्र सरकार से क्यों अनुरोध नहीं करते हैं? देश की सरकार, जो हमारी भी सरकार है, वह छत्तीसगढ़ के साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार क्यों करती है? मैं अभी ही आपसे कह रहा हूं कि यदि हमारा 2500 रूपये का वायदा है तो केंद्र सरकार उसको फ्री करें। आप पंजाब का पूरा गेहूं ले सकते हैं, मध्यप्रदेश की खरीदी हुई तो आप पूरे गेहूं की खरीदी कर सकते हैं और आप छत्तीसगढ़ को चिट्ठी लिखते हैं कि हम आपका एम.एस.पी. से ज्यादा पैसा देंगे।

श्री सौरभ सिंह :- अध्यक्ष महोदय, सेंट्रल गवर्नमेंट ने इस साल 52 लाख मेट्रिक टन चावल खरीदा है। आपको सेंट्रल गवर्नमेंट को धन्यवाद देना चाहिये कि कहीं पर चावल नहीं है, कहीं पर धान नहीं है, सारा धान चला गया। सेंट्रल गवर्नमेंट ने आपका पूरा चावल खरीद लिया है।

श्री रविन्द्र चौबे :- हम बिल्कुल केंद्र सरकार को धन्यवाद देंगे। मैंने इसीलिये पहली लाइन में कहा कि दिल्ली की सरकार हमारी सरकार है। क्या? अभी क्रम जारी है और चावल की सप्लाई हो रही है। आप समझ पा रहे है। मैं इस सदन में बोलना नहीं चाह रहा था लेकिन आपने बोलने के लिये मजबूर कर दिया। हम जब कस्टम मिलिंग में 40 रूपया देते थे तो हमको एफ.सी.आई. से एक-एक टन के लिए लड़ना पड़ता था और अभी जब 140 रूपया हो गया है तो हमको एफ.सी.आई. को आग्रह करने की जरूरत नहीं पड़ती। आप मेरा ईशारा समझ रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, 140 रूपये में क्या होता है?

श्री सौरभ सिंह :- आप 140 रूपये में क्या होता है, इसको मत बोलिए। (व्यवधान) कितना जमा हो रहा है, उसमें कितना जा रहा है? सेन्ट्रल गवर्नमेंट अभी एफ.सी.आई. को चावल न देकर, क्यों नान को चावल दिया जा रहा है, उसमें क्या हो रहा है?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सौरभ भईया, आप ला सुरता हे कि कुनकुनी में का होए रिहिस हे?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय चौबे जी, एफ.सी.आई. में चावल जमा करने के परमिटों को निरस्त करकर नान और मार्कफेड में जमा करने के लिए सवा सौ रूपये पर क्विंटल लिया जा रहा है। यह आर जी टेक से अलग है। शायद यह माननीय मुख्यमंत्री जी की जानकारी में नहीं होगा, 125 रूपये लेकर, एफ.सी.आई. में चावल जमा कराने के परमिटों को निरस्त करकर, नान और मार्कफेड के परमिट दिये जा रहे हैं। यहां कितने लोगों के परमिट निरस्त हुए, इसको आप देख लीजिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका आशय हम यह जो चावल जमा कर रहे हैं। वह केवल एफ.सी.आई. के लिए है। नान और एफ.सी.आई. को जोड़कर, अभी सौरभ जी कह रहे हैं कि 52 लाख मेट्रिक टन, वह दोनों को जोड़कर है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मनीराम बागड़ी।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप उनका नाम सम्मान से लीजिए। आप स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का नाम ले रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा कहने का आशय यह था कि इस सरकार का, किसानों का पूरा भरोसा आदरणीय मुख्यमंत्री जी के ऊपर है। यह अविश्वास प्रस्ताव का क्या हश्र होने वाला है और भविष्य में इनका क्या हश्र होने वाला है, यह आप समझ रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां बड़े जनसमर्थन की बात होती है...।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा हश्र जो होगा, कभी मैं उसमें बात करूंगा। लेकिन आपको बता दूं कि आपके तथाकथित कल्याणकारी कार्यक्रमों के बाद आपकी सरकार के गठन होने के 6 महीने के अंदर, आज तक का सबसे ज्यादा वोट प्रतिशत भारतीय जनता पार्टी को मिला है ..।

श्री रविन्द्र चौबे :- और उसके बाद जब सरकार ने काम शुरू किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी फिर एक-डेढ़ साल में आ जाता है।फिर शुरू होगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब सरकार ने काम शुरू किया। हम चित्रकूट भी जीते, हम दंतेवाड़ा भी जीते, हम मरवाही भी जीते, हम खैरागढ़ भी जीते।

श्री अजय चन्द्राकर :- यदि आपको जीत का इतना आत्मविश्वास है तो कल का विधेयक क्या था ? आपको जीत का इतना आत्मविश्वास है। आप मण्डी चुनाव और सोसायटी चुनाव करवा लीजिए। आप ही जीतेंगे। आप चुनाव करवा लीजिए।

संसदीय सचिव, स्कूल शिक्षा मंत्री से संबंद्ध (श्री द्वारिकाधीश यादव) :- आप लोगों ने भी 10 सालों तक मण्डी चुनाव नहीं करवाया था।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आप अभी चुनाव जीत लें, लेकिन आप लोग चुनाव करवा लीजिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पूछना तो नहीं चाहता।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप ही का एक मात्र आदमी हो, जिससे प्रश्न होगा। दूसरे के लिए प्रश्न होगा। जब आप इतने आत्मविश्वास से बोल रहे हैं तो वह वापस लीजिए और दोनों का चुनाव करवाईये। आप ही चुनाव जीतेंगे। आपका आत्मविश्वास बोल रहा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल के तथाकथित मंत्रि-मण्डल में यह 4, 5, 6 लोग थे। आपने उन 15 सालों में मण्डी चुनाव क्यों नहीं करवाया ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सोसायटी का हर बार बार चुनाव हुआ है।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैंने पूछा कि आपने मण्डी का चुनाव क्यों नहीं करवाया ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं कह रहा हूँ कि आप चुनाव करवा लीजिए । आपका आत्मविश्वास है। हमने चुनाव नहीं करवाया। हमने गलत किया। हमने स्वीकार लिया। ठीक है। अब इतनी स्वीकारोक्ति के बाद, आप चुनौती स्वीकार कर लीजिए। आपका तो सब चलता है। अभी तो आप सबसे पॉवरफुल हो, बस एक सीट बस दूर है। आपका वामन भगवान के जैसे कद बढ़ रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- एक सीट खाली, बीच की यह दूर है। इनको यही आना है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न था कि अगर हमसे दिल्ली सरकार सौतेला व्यवहार करती है। हमसे से आशय छत्तीसगढ़ की जनता से है। हमसे का आशय हमारी सरकार या कांग्रेस से नहीं है। तो आप डरते क्यों है ? आप छत्तीसगढ़ को प्रश्न करते। हम आवास के लिए पैसा नहीं दे पाय। 60:40 का रेश्यो था । हमारे समय भी इंदिरा आवास योजना काम करती थी। उस समय केन्द्र की सरकार पैसा देती थी उस समय 80:20 का रेश्यो था।

श्री शिवरतन शर्मा :- उस समय 10 हजार था न ?

श्री रविन्द्र चौबे :- 80:20 ।

श्री अजय चंद्राकर :- उस समय वित्त आयोग का गठन नहीं होता था।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- 500 रूपये मुश्किल से आता था। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तै तोर समय बोलबे, बहुत जवान आदमी अस। थोड़ा बोलन तो दे।

श्री अजय चंद्राकर :- आपको जो वित्त आयोग का पैसा मिलता है, आप उसको भी बताईए। जिस समय राज्यों का उल्लेख कर रहे थे, उस समय केन्द्र में वित्त आयोग नहीं होता था।

श्री शिवरतन शर्मा :- उसमें राशि बढ़ी न । नीति आयोग ने 35 से 42 की।

श्री रविन्द्र चौबे :- मेरा प्रश्न यही तो है। आखिर दिल्ली की सरकार पैसा क्यों नहीं देना चाहती ? क्यों पैसा नहीं देना चाहती। तब 80:20 प्रतिशत था। अब आपने धीरे-धीरे 60:40 प्रतिशत कर दिया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उसके बाद भी हमारी सरकार सक्षम है। लेकिन मैं फिर से आपसे पूछना चाहता हूं, दिल्ली से इतना डर क्यो ?

श्री शिवरतन शर्मा :- मिश्री भैया क्या है, अब आप मिश्री से जलेबी बनते जा रहे हो। घूमाकर बात मत करिए न। 80:20 प्रतिशत की बात कर रहे हैं तो लागत क्या होती थी ?

अध्यक्ष महोदय :- आप हर एक बात पर इन लोगों को क्यों अवसर दे रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं अवसर नहीं दे रहा हूं। इनको बैठने बोल दीजिए न।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपनी बात रखते जाईए। आप उन लोगों को ज्यादा देर सुन रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, एक ही तो मंत्री हैं, जिनसे हम बात कर सकते हैं तो आप बात करने दीजिए न।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है। अध्यक्ष जी, मैं पूछ रहा था कि आखिर आप दिल्ली से इतना भय क्यों खाते हो ? जब छत्तीसगढ़ के हितों की बात होती है तो आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप केवल यहीं भाषण दे सकते हैं। आपके पदाधिकारी आते हैं, उनको एक शब्द भी नहीं बोल सकते। छत्तीसगढ़ के साथ यह सौतेला व्यवहार क्यों ? हमारी कितनी राशि रोकी जा रही है ? आज की तारीख में दिल्ली सरकार से हमें लगभग 30 हजार करोड़ रूपए लेना है, 30 हजार करोड़ रूपए। आप हमसे पूछते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- हमको उस तीस हजार करोड़ रूपये को लिखित में दे देंगे। हम उसमें भी बात करेंगे। हम बात करेंगे, किस-किस मद में देना है।

श्री रविन्द्र चौबे :- चलिए, मैं अभी पढ़ भी देता हूं।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप हमको दे दीजिए न। आप पढ़िए मत। हम दिल्ली से बात करेंगे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उसमें ऑडिट रिपोर्ट हुआ है या नहीं। जब तक आडिट रिपोर्ट नहीं होता, पैसा नहीं मिलता।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप उसको लिखकर दे दीजिए।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- दूसरा, हमारे समय में भी हम लोगों ने माननीय प्रधानमंत्री जी से मुलाकात की। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्नकाल की तरह चल रहा है। मंत्री जी को बार-बार टोक रहे हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- यह ऐसा नहीं है कि आपके ही समय में हुआ है। इकोनामिक्स कॉस्ट बढ़ता है, आडिट रिपोर्ट होता है। आडिट रिपोर्ट जाने के बाद उसका पैसा मिलता है। (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तोर आडिट हो के खाता बंद हो गे हे। अब तै बईठ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आपको क्या मालूम है, क्या होता है ? मैं उस समय खाद्य मंत्री था, इसलिए बता रहा हूं। आप तो हमर बात में खड़े हो जाते हो। हम भी खड़े हो सकते हैं।

श्री रामकुमार यादव :- बबा, तोर मती छरिया गेहे बईठ तो।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ को जी.एस.टी. में कितना पैसा लेना है ? हम उत्पादक राज्य हैं, हमारी क्षतिपूर्ति भी केन्द्र सरकार को करना चाहिए। हमें अभी चावल का भी पैसा नहीं मिला है। हमें 4,120 करोड़ रूपए, कोयला खदानों की पेनाल्टी भी नहीं मिली है। माईनिंग का सेस भी बचा है। रायल्टी भी बचा है। मैं आपको टोटल हिसाब दे दूंगा। आप कह रहे थे, पहले भी ऐसा होता था। आपके सौभाग्य से माननीय डॉ. रमन सिंह जी की जब 15 साल हुकूमत थी, साढ़े 10, 11 साल दिल्ली में मनमोहन सिंह जी की सरकार थी। साढ़े 4 साल, अभी जो सरकार बैठ गयी, उनकी सरकार थी। तब यह कोई कठिनाई नहीं आई। आज की तारीख में दो साल कोरोना, राजस्व की प्राप्तियां भी कम, दिल्ली से आवक भी कम है। हम दिल्ली से एक रूपया भी नहीं मांग रहे हैं। लेकिन हमारा पैसा दिल्ली को देना चाहिए न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मंत्री जी, हम चाहते हैं कि आपका जो पैसा बाकी है, वह हम दिलवायेंगे। आप सदन के पटल पर ऑफिसियल रख दीजिए कि दिल्ली से इतना पैसा इस-इस मद का लेना है। हमारी फार्मेल्टी कम्प्लीट होने के बाद और बाकी है। यह आप सदन के पटल पर रख दीजिए। हम वहां से पूरी जानकारी लेकर बताएंगे, आपको क्यों पैसा नहीं मिल रहा है, आपकी क्या गलतियां हैं, आपने क्या दुरूपयोग किया है, हम यह बता देंगे।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, यह तो और दुर्भाग्य हो गया। बृजमोहन जी कह रहे हैं कि हम पटल में रखेंगे तो हमारी गलतियां निकालेंगे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- हम गलतियां नहीं निकालेंगे, हम आपके साथ हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- साहब, आप ज्ञाता आदमी हैं । पटल पर रखते हैं, उस प्रक्रिया का तो आप स्वयं ही पालन नहीं करते हैं न । मैंने तो एक पत्र पटल में रखा है उसमें आपकी सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- अब यह कहां से पटल आ गया ?

श्री अजय चंद्राकर :- पटल की मांग हुई, मैं इसलिये कह रहा हूं । आप पटल पर रखिये उसमें कोई कमी नहीं निकाली जायेगी । जो भी दस्तावेज होगा, वह पूरे प्रदेश को मालूम होगा ।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज माननीय मुख्यमंत्री जी ने पटल पर एक कागज रखा है । जिसमें यह लिखा है कि अप्रेल 2021 से मार्च, 2022 की अवधि में केंद्रीय करों के हिस्से में लगभग 28 करोड़ रूपये प्राप्त हुए हैं जो कि गत् वर्ष की इस अवधि में प्राप्त राशि की तुलना में 40 परसेंट अधिक है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- आप बोल दीजिये कि यह टंकण त्रुटि है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं-नहीं, मैं यह नहीं बोल रहा हूं । डॉ. रमन सिंह जी की सरकार में 10,000 करोड़ की टंकण त्रुटि हुई, मैं वैसा नहीं बोल रहा हूं । हुई थी, आप जब इधर बैठते थे तब 10,000 करोड़ रूपये की टंकण त्रुटि हुई थी । मैं उसको नहीं कह रहा हूं ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

श्री रविन्द्र चौबे :- ममा तें हा बईठ न । आज तें हा अब्बड़ टोकत हस । एकदम टोक रहे हैं भई ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं इसलिये बोल रहा हूं क्योंकि आपका और हमारा प्रेम है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आप भाषण दे लीजिये, उनको टोकना मत ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं, ऐसा नहीं है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बस एक मिनट । मैं इस कारण बोल रहा हूं कि आप दिल्ली की बात करते हैं । मैं यहीं की बात कर रहा हूं, मैं अपनी ही बात कर रहा हूं । हम अगर किसी मुख्यमंत्री जी को फोन करना चाहें तो फोन उठाते नहीं हैं, हम बात करना चाहते हैं तो बात नहीं करते और जो बात करते हैं, काम नहीं करते, पत्र का जवाब नहीं देते । मंत्री लोग जवाब नहीं देते, मंत्री लोग हमसे दुर्व्यवहारपूर्वक बात करते हैं, आपके और भी पदाधिकारी हैं तो इस तरह से हम लोगों से व्यवहार करते हैं और आप दिल्ली की बात करते हैं । (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- पिछली बार हम लोग आपके पास भी गये थे । (व्यवधान)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आपके अधिकारी लोग चिट्ठी का जवाब नहीं देते । (व्यवधान) उन पर कार्यवाही नहीं होती तो या तो यहां दुर्व्यवहार को सुधारिए तो हम आपके साथ जाने के लिये तैयार हैं । कोई नहीं जायेगा तो मैं जाउंगा ।

श्री संतराम नेताम :- पिछली बार आपके बंगले में भी गये थे, आप भी बंगले से नहीं निकले थे ।

श्री अजय चंद्राकर :- ममा-भांचा जाना ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे कहने का आशय यह था कि दिल्ली के द्वारा छत्तीसगढ़ की जो उपेक्षा हो रही है । आप जितने भी मुद्दे उठा रहे हैं, आवासहीनों को आवास देने के लिये, प्रदेश का विकास करने के लिये, हमने कृषि में जो कमिटमेंट किया है उसको पूरा करने के लिये यह, बेरोजगारों को रोजगार देने के लिये, गरीबों की मदद करने के लिये और वनवासियों का सहयोग करने के लिये यह सरकार सक्षम है लेकिन जो उपेक्षा हो रही है, मैंने केवल उसी की बात कही कि अगर भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली में कोई सुनवाई होती है तो थोड़ा उस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के ऊपर विश्वास का दूसरा सबसे बड़ा कारण पहला मैंने कहा कि किसानों के साथ हमारी सरकार खड़ी है । मैंने कर्जमाफी से लेकर धान की कीमत तक, दूसरा सबसे बड़ा अविश्वास का अगर कोई कारण है छत्तीसगढ़ में आदरणीय भूपेश जी और इस सरकार के ऊपर तो छत्तीसगढ़ की अस्मिता को जितना सम्मान माननीय भूपेश बघेल जी ने दिया है उतना 15 सालों में आप नहीं दे पाये । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, बासी तक का सम्मान हो गया । पहले लोग उपेक्षा से देखते थे कि ये बासी खाने वाला है । हम छत्तीसगढ़ी में कहीं बात कर देते, थाना और तहसील में हमें घुसने नहीं दिया जाता था । आज बड़े-बड़े आई.ए.एस. भी छत्तीसगढ़ी सीखने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं । मैं समझ रहा हूं कि आप मुझे ईशारा कर रहे हैं कि चम्मच से बासी खा रहे थे । चाहे कोई चुकिया में खाये, चाहे परई में खाये, चाहे बटुका में खाये लेकिन बासी खाये तो सही न । (मेजों की थपथपाहट) उसमें क्या बात है ?

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- उस बासी की कीमत छत्तीसगढ़ की जनता की खून-पसीने की कमाई का 50 करोड़ रूपये गंवानी पड़ी है । एक बासी इतनी महंगी है, 50 करोड़ रूपये की है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा, ये बता गा । का ओखर पहिली कोनो बासी नइ खावत रिहिस हे का ?

श्री रविन्द्र चौबे :- खावत रिहिस हे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- भूपेश बघेल जी के मुख्यमंत्री बने के पहिली कोनो गेड़ी नइ चढ़त रिहिस हे, हरेली तिहार नइ बनावत रिहिस हे ?

श्री रामकुमार यादव :- अइसे लागथे कि तुमन पनीर साग में बासी ला खाथओ ।

श्री अमरजीत भगत :- तें गेड़ी चढ़थस ? गेड़ी कभू चढ़े हस ?

श्री शिवरतन शर्मा :- तोर संग अऊ मुख्यमंत्री जी के संग गेड़ी चढ़े के मुकाबला करे बर तैयार हंओं ।

श्री अमरजीत भगत :- चल हो जाये । कल आ जा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- चलना कौन मेर ?

श्री अमरजीत भगत :- कल आ जा, संग में चढ़बो आ जा ।

श्री रामकुमार यादव :- मैं देखे रहेओं दोनों ला कइसे धर के चढ़त रहेओ तेला।

श्री अरूण वोरा :- शर्मा जी, अब चुनौती देने की आपकी उम्र नहीं है ।

श्री रामकुमार यादव :- गेड़ी में तुमन कोको-मोरो ओरमे रहेओ ।

श्री अमरजीत भगत :- अगर तोर में दम हे ता अमितेश भैया के साथ चढ़ के दिखाबे । (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- अगर तोर में दम हे तो अमितेश भैया के साथ चढ़कर दिखाबे। (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- अमितेश ला बुला लेबे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अमितेश भैया के झांकी निकाल देते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं-नहीं, ये अमितेश को गेड़ी षड्यंत्र के तहत् चढ़ा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं, उनकी झांकी निकाल देते हैं, मंत्री ऐसा होता है करके।

श्री सौरभ सिंह :- ओखर बाद ओ बांस ले कभी गेड़ी नहीं बने।

श्री धर्मजीत सिंह :- वे जैसे ही बांस वाले गेड़ी में चढ़ेंगे, भद्द से नीचे आ जायेगा। (हंसी) आप बैठकर वहां पर अमितेश के खिलाफ षड्यंत्र मत किया करिए न।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, अच्छा लगा। आदरणीय शिवरतन शर्मा जी ने खड़े होकर कहा कि गेड़ी में अमरजीत जी के साथ मुकाबला करेंगे। आपको भी गेड़ी की याद तो आयी न। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हमारी छत्तीसगढ़ की विरासत, हमारी छत्तीसगढ़ की परंपरा, हमारी छत्तीसगढ़ की कला और संस्कृति, हमारे छत्तीसगढ़ का खान-पान, हमारे छत्तीसगढ़ की तीज-त्यौहार ने अगर सम्मान पाया तो आदरणीय मुख्यमंत्री जी को मैं बधाई देता हूं कि यह आपके नेतृत्व में पाया।

श्री अजय चन्द्राकर :- चलिए, अभी इसमें बात करेंगे। आप तो बधाई देंगे ही।

श्री रविन्द्र चौबे :- बधाई तो आपको भी देना चाहिए।

श्री कवासी लखमा :- क्यों नहीं देंगे।

श्री रविन्द्र चौबे :- 15 साल आपकी हुकूमत थी। आपको याद नहीं आया कि छत्तीसगढ़ में बहुसंख्यक आदिवासी समाज निवास करता है। विश्व आदिवासी दिवस के दिन की छुट्टी देने का काम किसने किया ? आदरणीय भूपेश बघेल जी ने किया। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- एक मिनट। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसमें कुछ कहना चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं। आप लोगों ने अविश्वास प्रस्ताव दिया है। न इधर से बोल रहे हैं, न उधर से बोल रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आदरणीय विद्वान मंत्री महोदय, आप कम से कम प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के स्तर को मत छूएं।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग अविश्वास प्रस्ताव में बोलिए न। हर जगह बोलेंगे तो कैसे चलेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- विश्व आदिवासी दिवस के संबंध में आप चार्टर को पढ़ लीजिए, उसमें लिखा है जिनकी संस्कृति और विरासत खतरे में है, उसकी रक्षा की जाये और वह उन देशों में मनाया जाता है। भारत के आदिवासियों की कोई विरासत, कोई संस्कृति पूरे देश में कहीं पर खतरे में नहीं है। वह भारत के प्रस्ताव की छुट्टी नहीं है। वह राजनीतिक छुट्टी है। छत्तीसगढ़ में एक से एक लोग हैं। अभी माननीया मुर्मू जी, राष्ट्रपति बनी हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष महोदय, हम लोग तो मांग कर रहे थे। आप लोगों ने क्यों नहीं दिया?

श्री अमरजीत भगत :- आप मध्यप्रदेश और दूसरी जगह छुट्टी दे रहे हैं, उसका क्या?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- भारतीय जनता पार्टी की सरकार से मांग किये तो क्यों नहीं दिये?

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, विश्व आदिवासी दिवस के बारे में अजय जी ने बड़ी बौद्धिक बात कही, लेकिन छुट्टी देने का काम तो हमने किया न।

श्री अजय चन्द्राकर :- छुट्टी देने का कोई अर्थ ही नहीं है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपके लिए नहीं है।

श्री कवासी लखमा :- क्यों नहीं देगा?

श्री अजय चन्द्राकर :- बिल्कुल अर्थ नहीं है। मैं सबके सामने बोल रहा हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपके लिए नहीं है।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे आदिवासियों को ऐसा बोलकर आप आदिवासियों की भावना के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। हमारे यहां आदिवासियों का सम्मान होता है। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आप ऐसा करके आदिवासियों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। आप आदिवासी समाज का विरोध कर रहे हो। (व्यवधान)

श्री गुलाब कमरो :- अध्यक्ष महोदय, पूरे भारत के अलवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- आपने राष्ट्रपति चुनाव में तो आदिवासी महिला को खड़ा किया है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष जी, ये हमेशा आदिवासियों का विरोध करते हैं। ये आदिवासियों से माफी मांगे। हमारी भूपेश सरकार ने आदिवासियों को छुट्टी दिया है। क्या आदिवासियों को छुट्टी नहीं देना है। उन्हें जंगल में रहने का अधिकार नहीं है? (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- अगर संस्कृति को इतना दर्जा दिया है..। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- ये हमारे आदिवासियों का विरोध कर रहे हैं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आदिवासियों का अपमान करना बंद करो। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- ये हमेशा आदिवासियों का विरोध करते हैं। आदिवासियों को अगर छुट्टी दिये हैं तो क्यों नहीं देंगे। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- इसलिए वोट पाने के लिए राष्ट्रपति बनाये हैं। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री कवासी लखमा :- आदिवासियों को छुट्टी मिलता है तो तुमको क्या होता है? हमेशा आदिवासियों का अपमान करते हैं। हमेशा आदिवासियों का विरोध करते हैं। आदिवासी दिवस को छुट्टी क्यों नहीं देंगे? (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वोट पाने के लिए राष्ट्रपति बनाये हैं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- पूरे विश्व के आदिवासी उस दिन उत्सव मनाते हैं। माननीय भूपेश बघेल जी ने विश्व आदिवासी दिवस पर उन्हें छुट्टी देकर सम्मान दिया है। उनके सम्मान को बढ़ाया है। (व्यवधान)

श्री गुलाब कमरो :- यह आदिवासियों का अपमान है। पहली बार इस भूपेश सरकार ने आदिवासियों के मान-सम्मान को बढ़ाया है। इन्होंने लगातार उपेक्षा किया था। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- आदिवासी क्षेत्र से आये हैं तो क्या हो गया ? (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- ये मांफी मांगे। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- ये आदिवासियों से माफी मांगे। छत्तीसगढ़ आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है। 90 में से 29 विधायक आदिवासी क्षेत्र से चुनकर आते हैं। इनका अपमान करने का अधिकार इन्हें कौन दिया? आदिवासियों से वोट नहीं लेते क्या? हमेशा आदिवासियों का विरोध करते हैं। सदन के अंदर भी सदन के बाहर भी। इन्हें माफी मांगनी चाहिए, नहीं तो सदन नहीं चलेगा। (व्यवधान)

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ के अलावा पूरे अंतर्राष्ट्रीय विश्व आदिवासी दिवस के दिन हमारा त्यौहार होता है। आदिवासियों के त्यौहार के बारे में अगर ये कह रहे हैं तो यह गलत है। यह घोर आपत्तिजनक है कि हमारे आदिवासी समाज के लिए ऐसे शब्द का उपयोग करना। ये आदिवासियों से माफी मांगे। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- अजय चन्द्राकर जी ने ऐसा बोलकर आदिवासी समाज का उपहास किया है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- ये हमेशा विरोध करते हैं। यह आदिवासियों के लिए बहुत आपत्तिजनक है। यह हमेशा आदिवासियों का अपमान करते हैं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- यह आदिवासियों का अपमान है, इनको माफी मांगनी चाहिए । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- अजय चन्द्राकर जी ने ऐसा कहकर आदिवासियों का उपहास उड़ाया है, इनको दंडित किया जाना चाहिए । (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- हमेशा ऐसा ही करते है, आदिवासी जंगल में निवास करता है, आप उन्हें कुछ भी कह दोगे । अगर उन्हें कुछ दे नहीं सकते तो आपको कुछ बोलने का भी अधिकार नहीं है । 15 साल तक कुछ दिया नहीं है और आपमान करते हैं । कांग्रेस पार्टी आश्रम खोलती है, स्कूल खोलती

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है । (व्यवधान) जब तक अजय चन्द्राकर जी माफी नहीं मांगेंगे, हम इनका भाषण नहीं सुनेंगे । हमेशा आदिवासियों का विरोध करते हैं । हम आदिवासियों ने क्या किया है आपका ? (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आदिवासियों का सबसे बड़ा त्यौहार 9 अगस्त, उसका इन्होंने उपहास उड़ाया है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आदिवासियों का संरक्षण अगर किसी ने किया है तो वह कांग्रेस पार्टी ने किया है ।

श्री गुलाब कमरो :- अध्यक्ष महोदय, हम आपके माध्यम से चाहते हैं कि माननीय सदस्य माफी मांगे । हमारे त्यौहार पर छत्तीसगढ़ सरकार छुट्टी दे रही है तो (व्यवधान) ।

श्री कवासी लखमा :- छुट्टी देने से तुम्हारा क्या हो गया ? जब तक अजय चंद्राकर जी माफी नहीं मांगते तब तक कार्यवाही रोक देना चाहिए । हमेशा आदिवासियों का विरोध करते हैं । हम आदिवासियों ने तुम्हारा क्या किया है । तुम्हारा अधिकार छीन लिया क्या ? (व्यवधान)

श्री गुलाब कमरो :- पूरे भारत के अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर त्यौहार के रूप में मनाया जाता है । यह घोर आपत्ति जनक है । इसके लिए इन्हें माफी मांगनी चाहिए । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- ज़रा भी नैतिकता है तो आप माफी मांग लीजिए अन्यथा अध्यक्ष जी इनको दंडित कीजिए । (व्यवधान)

(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये)

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, जब भी भैंस पूंछ उठाएगी तो क्या करेगी ? इनसे बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती । आदिवासी समाज का इस तरह से उपहास । 9 अगस्त को पूरे विश्व के आदिवासी मिलकर त्यौहार मनाते हैं । (व्यवधान) ये जब भी बोलते हैं तो इसी प्रकार की बात बोलते हैं ।

श्री कवासी लखमा :- ये हमेशा आदिवासियों के बारे में बोलते रहते हैं ।

श्री गुलाब कमरो :- अध्यक्ष महोदय, इन्होंने 15 साल आदिवासियों की उपेक्षा की है । छत्तीसगढ़ की सरकार ने आदिवासियों का मान सम्मान बढ़ाया है । उसके बाद माननीय सीनियर सदस्य ऐसे शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं । हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं कि सदन में माफी मांगें ।

श्री कवासी लखमा :- ये लोग खाना खाते हैं, हम लोग खाना नहीं खाते हैं क्या। हमेशा आदिवासियों की उपेक्षा करते हैं । यह छत्तीसगढ़ आदिवासियों का क्षेत्र है । जंगल में रहने वाले आदिवासियों को कुछ भी कह दोगे । कभी भी कुछ भी बोल दोगे । विधान सभा के अंदर इस पवित्र सदन में विश्व आदिवासी दिवस का अपमान करोगे ।

श्री अमरजीत भगत :- कभी आदिवासियों के 9 अगस्त का उपहास उड़ा देंगे, कभी हमारे आदिवासी सीनियर मंत्री को (xx) बोल देंगे । इनके मन में आदिवासियों के प्रति क्या है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अजय चन्द्राकर जी ने ऐसा कोई शब्द नहीं बोला जिससे कि समाज का अपमान हो । छत्तीसगढ़ में महान् आदिवासी नेता हुए हैं ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- बोला है, विश्व आदिवासी दिवस ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- शहीद वीर नारायण सिंह, बिरसा मुंडा । उन्होंने कहा यह विदेशी दिवस है । आपने भी सुना है, उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही है ।

श्री अमरजीत भगत :- इनके मन में आदिवासियों के लिए जो भावना है, वह उजागर हो गई ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हमारे मंत्री को (xx) बोला है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही है । छत्तीसगढ़ के शहीद वीर नारायण सिंह हैं, छत्तीसगढ़ के बिरसा मुंडा जी हैं, उनका हम सम्मान करते हैं, उनका दिवस मनाइए ना । यह विदेशी दिवस है (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- पूरे विश्व में आदिवासी हैं ।

श्री कवासी लखमा :- ये विदेश दिवस बोल रहे हैं, अग्रवाल जी यह मत भूलो कि तुम राजस्थान से आए हो । हम लोग यहां पैदा हुए हैं, हम लोगों ने क्या किया है यह बताओ । तुम्हारे पास पैसा है, तुम बड़े हो तो आदिवासी को कुछ भी बोलोगे ।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, यह सर्वथा निंदनीय है और इन्हें दंडित किया जाना चाहिए ।

श्री कवासी लखमा :- ये जब तक माफी नहीं मांगेंगे विधान सभा नहीं चलेगी।

श्री अमरजीत भगत :- 15 साल तक आंदोलन करते रहे, मांग करते रहे, कभी इनकी मांग पूरी नहीं की गई । अगर माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने 9 अगस्त को छुट्टी दी तो इस प्रकार से उपहास ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग 15 साल से रोज छुट्टी की मांग करे थे। जब हमारे मुख्यमंत्री जी ने छुट्टी दिया तो इनके पेट में दर्द हो गया। इनके पेद में क्यों दर्द हो रहा है? हम आदिवासी यदि कुछ नहीं कह सकते हैं तो इनको विरोध नहीं करना चाहिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनको प्रताड़ित करिये।

अध्यक्ष महोदय :- सुनिये। जो भी ..।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा आपसे अनुरोध है। हमको ठेस पहुंचाया है। हम सुदूर अंचल से आते हैं। वह भी दो रोटी खाता है, हम भी दो रोटी खाते हैं। हम भी चुनाव जीतकर आये हैं, सिर्फ वही चुनाव जीतकर नहीं आये हैं। यहां अकबर चुनने के लिए बैठे हैं क्या? वह कभी मेरे बारे में, कभी किसी के बारे में, कभी आदिवासी समाज के बारे में बोलेते हैं। मैं समाज को क्या मुंह दिखाऊंगा? आज हमारे समाज की चुनौती क्या है? हिंदुस्तान में सबसे ज्यादा आदिवासी लोग हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे विनम्र आग्रह है कि पूरे कार्यवाही को दिखवा लीजिये, यदि कोई गलत बात कही गई हो तो आप उसमें व्यवस्था दे दीजिये।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, वह व्यवव्था दे दें।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष जी, अजय चंद्राकर जी ने आपने लखमा जी को आयटम गर्ल बोला। यह कितना आपत्तिजनक बात है। चंद्राकर जी, आपने लखमा जी को आयटम गर्ल बोला है। उसको हमने एक बार नजरअंदाज किये। आज आपने फिर आदिवासी समाज का अपमान किया है।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, वह कुछ भी बोल देंगे। आपके पेट में क्या तकलीफ है?

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, आप लो भी निर्णय लेंगे, आप संभालिये। आप देख लीजिये।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, लखमा जी हमारे सम्मानीय मंत्री हैं। आदिवासी समाज उन पर नाज करते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, आप पूरी कार्यवाही निकलवा कर देख लीजिये। (व्यवधान) हम बोल तो रहे हैं।

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष महोदय, वह हमारे मंत्री जी को आयटम गर्ल बाले। मंत्री जी को जनता ने पांच बार चुनकर भेजा है। वह उनको आयटम गर्ल बोलें, यह उचित नहीं है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह अपमानजनक है। हमारा समाज दु:खी है। इसका पूरा प्रदेश में पुतला जला है। पूरा प्रदेश में पुतला जलाया गया है। इसके बाद भी हमारा अपमान किया है। उसके खिलाफ में हमने आवाज भी उठाया है। वह सदन में बैठे हैं, उसके बाद भी वह हमेशा आदिवासियों के खिलाफ में बोलते हैं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- एक बार कते तो कोई बात नहीं होती, लेकिन उन्होंने लगातार वह शब्द बोला है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सारे विधायक इस प्रकार की बात से बहुत लल्लित हैं, चिंचित हैं। आप कृपया न्याय कीजिये।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, हमारा नेता चुनाव जीतकर आया है। उनको कोई आयटम गर्ल बोले, यह तो गलत बात है। उनहोंने पूरा आदिवासी समाज का उपहास उड़ाया है।

श्री कवासी लखमा :- आदिवासियों के लिए उनके पेट में दर्द होता है। यह हमको कुछ दे रहे हैं क्या?

अध्यक्ष महोदय :- शैलेश जी, आपको कुछ कहना है क्या? यहां जो चल रहा है, उसमें अलग से कहना है या अपना भाषण जारी रखेंगे।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष जी, बिना माफी के बात नहीं बनेगा। उनको माफी मांगना होगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- जो गलत शब्दों का उपयोग हुआ है, उन सबको मैं देख लूंगा। मैं उन सब को यहां से समाप्त कर दूंगा। उसकी चिंता नहीं है। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष जी, आपका आदेश सर्वमान्य है, लेकिन जिनका अपमान किया गया है, उनसे उनको मांफी मंगाया जाय, उनसे खेद व्यक्त कराया जाय। वह पूरा समाज का मजाक उड़ाते हैं। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, हमको छुट्टी दिया गया तो उनको क्या तकलीफ है? जब तक वह माफी नहीं मांगेंगे, उनको बोलने का अधिकार नहीं है।

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष जी, हमारे मंत्री जी को छुट्टी दिये हैं तो उनको क्या तकलीफ है? (व्यवधान)

श्री गुलाब कमरो :- उनको जब भी मौका मिलता है, तो वह आदिसमाज का मजाक उड़ाते हैं। जिस दिन उनके लिए त्यौहार मनाया जाता है, उनका वह मजाक उड़ाते हैं। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय, हम लोग भी (व्यवधान) भी नागरिक हैं। हम लोगों को भी अपने त्यौहार, सम्मान की जरूरत है।

श्री कवासी लखमा :- हम आदिवासी लोग चुनाव जीतकर आये हैं। वह इनके ऊपर ऐसा कर रहे हैं। वह सदन के अंदर भी और सदन के बाहर भी ऐसा करते हैं।

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष जी, हमारे मंत्री जी को छुट्टी दिये हैं तो उनको क्या तकलीफ है?

श्री अमरजीत भगत :- आपने 15 साल तक छुट्टी नहीं दिया। जब हमारी सरकार आई, हमारे मुख्यमंत्री जी ने छुट्टी दिया तो आपको क्या तकलीफ हो गई? (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, हमारे संसदीय कार्य मंत्री जी ने कहा है कि तुम लोगों ने 15 साल छुट्टी नहीं दिया। हमारी सरकार ने छुट्टी दिया, हमारे नेता भूपेश बघेल जी ने छुट्टी दिया। इतने में इनका पेट में दर्द हो गया। हमारे वरिष्ठ मंत्री जी इसमें भाषण दे रहे थे। उन्होंने इतना कुछ किया। हमारा गेड़ी त्यौहार का छुट्टी दिया, छत्तीसगढ़ की परंपरा का छुट्टी दिया, हमारे आदिवासियों को भी छुट्टी दिया।

श्री संतराम नेताम :- अध्यक्ष महोदय, हमारे मंत्री जी को आयटम गर्ल कहना हमारे आदिवासियों का अपमान हो गया है। पहले वह इसका जवाब दे दें।

श्री शिशुपाल सोरी :- माननीय अध्यक्ष जी, अभी अग्रवाल जी ने कहा है, वह भी गलत कहा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, जहां तक आदिवासियों की बात है, जब मैं विधानसभा अध्यक्ष था, उस समय 32 प्रतिशत आरक्षण के लिए पारित किया गया। यदि हमारा आदिवासियों के प्रति सम्मान नहीं होता तो हम क्यों उसको पारित करते। उन्होंने छुट्टी लिया तो हमें उनकी छुट्टी पर कोई आपत्ति थोड़ी है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री कवासी लखमा :- संविधान में नियम है। संविधान में आरक्षण देने का निमय है। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- नेता जी, वह आरक्षण हमारा अधिकार है। हमको भीख में नहीं दिया गया है। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- यह हमारा आदिवासियों का अपमान है। हम आदिवासी जंगल में रहते हैं, मतलब वह कुछ भी बोलेंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- 32 प्रतिशत आरक्षण हमको भीख में नहीं मिला है, वह हमारा अधिकार है। वह हमारा अधिकार है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे दो विषयों में बात करता हूं। बहन जी, एक मिनट।

श्री कवासी लखमा :- आप कुछ भी बोलना।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहली बात यह है कि मैंने विश्व आदिवासी दिवस में जिस परिप्रेक्ष्य में बात की, उसको मूल निवासी दिवस के रूप में मनाया जाता है। चलिये, अभी मैं उस विषय में नहीं जाता लेकिन यदि वह तथ्य गलत है और यदि वह इनको गलत लगता है क्योंकि मैंने किसी का व्यक्तिगत नाम तो लिया नहीं है या किसी समुदाय का नाम नहीं लिया। मैंने यह कहा है कि यहां के सब आदिवासी सम्मानजनक ढंग से है और सब सम्मानजनक ढंग से रहते हैं। आप कार्यवाही को निकलवा कर देख लीजिए। यदि उसके बाद भी मेरी कोई बात गलत है तो आप जो भी फैसला करेंगे उसको मैं मानूंगा। दूसरी बात यह है कि मैंने प्रेस वार्ता में जो बात कही थी, उसमें मैंने आदिवासी समाज का नाम नहीं लिया था मैंने मंत्रिमण्डल कहा था। यदि आप इन दो बातों से आहत है तो आप जो भी व्यवस्था देंगे, मैं उसको मानूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- क्या अभी आपने ऐसा कुछ कहा है ?

श्री अजय चंद्राकर :- अभी मैंने कुछ नहीं कहा है।

श्री कवासी लखमा :- जब यह मंत्री को ऐसा कहेंगे तो...।

श्री संतराम नेताम :- वह कौन से समाज से आते हैं ?

एक माननीय सदस्य :- आदिवासी समाज पर बोले हो न...। छुट्टी के दिन दिया जाए करके, ऐसा बोले हों।

श्री अजय चंद्राकर :- मैंने कुछ नहीं कहा है। आप रिकॉर्ड देख लीजिए न।

श्री अमरजीत भगत :- इनको बिना जाने नहीं बोलना चाहिए।

श्री कवासी लखमा :- अग्रवाल जी ने भी दिया है। यह अक्सर भड़काने का काम करते हैं। आदिवासी को... का करते हैं।

श्री संतराम नेताम :- पूरे सदन में आप पहले आदमी हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- यह विधानसभा की प्रक्रिया है आप रिकॉर्ड में देख लीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- इनको बिना कहे माफी मांगना चाहिए। एक बार नहीं, दो बार नहीं, बार-बार एक ही गलती को करना...।

श्री अजय चंद्राकर :- आप रिकॉर्ड में दिखवा लीजिए। मैंने तो कह दिया कि मैं आपकी सब बातें मानूंगा। प्रक्रिया तो यही है। आप जो भी व्यवस्था देंगे, मैं उसको मानूंगा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- एक मिनट-एक मिनट।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय रविन्द्र चौबे जी ने अपने भाषण के दौरान छत्तीसगढ़ की संस्कृति को बढ़ावा देने की बात कही। बोरे बासी से लेकर गेड़ी, भावरा तक की बात आई और उसके बाद आदिवासियों के हितों की रक्षा करने और उनका सम्मान बढ़ाने के लिए विश्व आदिवासी दिवस की बात हुई और उस पर माननीय अजय चंद्राकर जी का कमेन्ट आया। दरअसल, बात यही तक की नहीं है। बात यह है कि जब भी अजय जी को अवसर मिलता है तो इस प्रकार की टिप्पणी करते हैं और इसी कारण से यह स्थिति निर्मित हुई। यह किसी एक घटना की बात नहीं है। हमारे माननीय उद्योग मंत्री के बारे में आइटम गर्ल कहा। आइटम गर्ल कौन होता है ? किसी पिक्चर में जो नृत्य होता है यदि कोई उसमें आ जाए तो उसको आइटम गर्ल कहा जाता है। अभी जब से सत्र चल रहा है तो एक शब्द और आया है जिस शब्द को माननीय सदस्यों द्वारा हमारे मंत्रियों के बारे में कहा जाता है कि ये सब चियर्स लीडर हैं। चियर्स लीडर कौन होता है ? जब स्टेडियम में चौंका-छक्का पड़ता है तो जो नृत्य करते हैं उनको चियर्स लीडर कहा जाता है तो क्या हमारे सदस्य नृत्य करने वाले लोग हैं ? तो इस प्रकार से लगातार जो बातें कही जा रही हैं और अजय जी ही इसकी शुरूआत करते हैं और ये सारी बातें इकट्ठा होकर यह बात आईं और इस कारण से यह स्थिति निर्मित हुई है। मैं नहीं समझता है कि इस प्रकार से किसी का उपहास करना चाहिए। यह उचित नहीं है।

श्री रविन्द्र चौबे :- हमेशा करते हैं। अब हो गया न। यह कोई खेद व्यक्त नहीं कर रहे हैं। आप खेद व्यक्त कर दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि माननीय मुख्यमंत्री जी ने मेरे नाम का उल्लेख किया है और मैंने आपके कार्यकाल में चार बार आपसे निवेदन किया कि संसदीय शब्द और असंसदीय शब्द कौन से हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- दिल्ली सरकार इस लिस्ट को कर दी है। पार्लियामेंट।

श्री अजय चंद्राकर :- आप इसको फिर से परिभाषित कर दीजिए क्योंकि मैं अभी फिर से भाषण दूंगा और यह बात फिर से होगी और यदि आपके अनुसार मेरी एक भी बात और शब्द अपमानजनक है तो आप जो भी व्यवस्था, मैं उसको मानूंगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- यदि ऐसा है तो आप खेद व्यक्त कर दीजिए न।

अध्यक्ष महोदय :- आप क्षमा भर नहीं मांगेंगे। आप खेद व्यक्त नहीं करेंगे ?

श्री अजय चंद्राकर :- आप व्यवस्था दे दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- अगर आपके सदस्यों को इससे बुरा लगा है तो आप उसपर खेद व्यक्त नहीं करेंगे ?

श्री अजय चंद्राकर :- आप जो कहेंगे, मैं उसको मानूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- क्या आप अपनी ओर से खेद व्यक्त नहीं करेंगे ? आप मेरे निर्देश पर खेद व्यक्त करेंगे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप निर्देश दे दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- सदन चल रहा है और आप आसंदी में मौजूद हैं तो हमेशा फैसला रिकॉर्ड देखकर हुआ है और आपके निर्देश से हुआ है।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- उन्होंने माननीय संसदीय सचिव को भी कहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप रिकॉर्ड देख लीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये नेता जी।

श्री धरमलाल कौशिक :- नहीं। माननीय चौबे जी, कई बार ऐसा अवसर आया है। अजय जी को बोलने का अवसर नहीं मिला। उन्होंने कई बार हाऊस के अंदर कहा है।

अध्यक्ष महोदय :- नेता जी, मेरी बात तो सुन लीजिए। मैं यह कह रहा हूं कि पहली बार तो आप लोगों अविश्वास प्रस्ताव दिया है और लोग उसको बढ़िया ध्यान से सुन रहे हैं और हम लोग भी आपको सुनना चाहते हैं लेकिन आप उस पर जा ही नहीं रहे हों।

श्री धरमलाल कौशिक :- नहीं। हम उस विषय में जा रहे हैं। हम उस पर चर्चा भी कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप समय को क्यों बर्बाद कर रहे हैं ? यह गलत बात है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप मुझे यह बताइये कि मुझे क्या करना है ?

अध्यक्ष महोदय :- आप अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा कीजिए। फिर आप कहेंगे कि 6 बज गया, 8 बज गया और फिर 12 बजेगा।

श्री धरम लाल कौशिक :- वह तो घड़ी का कांटा घूमेगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग समय का उपयोग नहीं कर रहे हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, आप जो निर्देश देंगे, बिना रिकार्ड देखे जो निर्देश देंगे, वह मैं मानूंगा और इससे ज्यादा मैं नहीं बोल सकता । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं कह रहा हूं कि इतने सालों बाद अविश्वास प्रस्ताव आया है, उस पर चर्चा करिए । (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- आदिवासियों का अपमान कर रहे हैं । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, सदन शांतिपूर्वक चले, उसके लिए इनको खेद व्यक्त करना चाहिए । (व्यवधान)

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसे कई अवसर आये हैं कि हंसी-मजाक करते हुए बात को रखते हैं और बुरा भी नहीं मानते ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज जो कहेंगे, उसके लिए मैं तैयार हूं ।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- वह हमारे समाज के गौरव हैं, उनके लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करना शोभा नहीं देता ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, आप बोल दीजिए, मैं मानूंगा, मैं आपका पूरा सम्मान करता हूं । मैं आपकी पूरी बात मानूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं क्यों बोलूं ? आप अपनी ओर से बोलिए ।

श्री कवासी लखमा :- इसको खुद से माफी मांगनी चाहिए । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, सदन चल रहा है और जब मेरी असहमति है, पर मैंने ऐसा कुछ नहीं बोला है, पर यदि लगता है तो मैंने बोला है तो आप बिना रिकार्ड देखें जो निर्देश देंगे, मैं मानूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं बिल्कुल निर्देश नहीं दूंगा । आप स्वयं विचार करिए ।

श्री कवासी लखमा :- कुछ भी बोलते हैं, आदिवासी समाज पर टिप्पणी करते हैं, यह ठीक नहीं है । (व्यवधान)

श्री ननकीराम कंवर :- इनको थोड़ा निर्णय करना है, निर्णय आपको करना है, निर्देश आपको देना है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- इतने सारे विधायक खड़े होकर बात कर रहे हैं, यह उचित नहीं है । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- ये लगातार रोज टिप्पणी कर रहे हैं और यह इनकी आदत में शुमार हो गया है । इनको रोकना बहुत जरूरी है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, यदि आप बिना परम्परा को, जो स्थापित परम्परा है, उससे बाहर जाकर भी यदि आप मुझे आदेश कर रहे हैं कि मैं कहूंगा, तब मानेंगे तो मैं मानता हूं और मैं बिना गलती के आपके निर्देश पर अपने आजतक की समस्त बात, जो आपको बुरी लगी हो, मेरे संसदीय कार्यकाल के जिन-जिन शब्दों में इनको बुरी लगी हो और खासकर माननीय भूपेश बघेल जी जैसे विद्वान आदमी संसदीय ज्ञाता के समय में मुझे क्या बयान देना है, उन सबके लिए माफी मांगता हूं। आज के लिए विशेष तौर पर माफी मांगता हूं । (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- माफी मांगने का स्टाईल अलग है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- आदिवासी समाज से माफी मांगो । (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी से नहीं, आदिवासी समाज से माफी मांगनी चाहिए, उसने अपमान किया है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप क्या चाहते हैं ?

श्री अमरजीत भगत :- आदिवासी समाज से माफी मांगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब आप चाकू मार लो ।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- आदिवासी समाज के लिए माफी मांगो ।

अध्यक्ष महोदय :- संसदीय कार्यमंत्री जी क्या चाहते हैं, बताईए ।

श्री अमरजीत भगत :- आदिवासी समाज से माफी मांगनी चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- चौबे जी, आप अपना भाषण जारी रखेंगे या नहीं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- जारी रखूंगा ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, जब तक आदिवासी समाज से माफी नहीं मांगेगे।

अध्यक्ष महोदय :- वे सभी चीज के लिए तो माफी मांग रहे हैं ।

श्री कवासी लखमा :- कहां सभी चीज के लिए माफी मांग रहे हैं । वे आदिवासी समाज के लिए माफी मांगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, आपके निर्देश पर माननीय सदस्य ने माफी मांग ली ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी ने निर्देश नहीं दिया था । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- उन्होंने सब चीज के लिए माफी मांग लिया ।

श्री अमरजीत भगत :- आदिवासी समाज के लिए तो माफी नहीं मांगे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय सदस्य ने खेद व्यक्त कर दिया है, अब बात खतम करिए । काहे को इतना चिल्ला रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- उन्होंने आदिवासी समाज का तो नाम ही नहीं लिया, जिसका उन्होंने विरोध किया । उन्होंने आदिवासी दिवस में छुट्टी और क्या-क्या बोल दिया, उस समाज को धक्का लगा है । एक लाईन बोलने में क्या दिक्कत है कि मैं आदिवासी समाज से माफी मांगता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- उन्होंने कह दिया कि जो कुछ कहा है, अगर वे गलत है तो उसके लिए खेद व्यक्त करते हैं, माफी मांगते हैं । और क्या कहेंगे ?

श्री अमरजीत भगत :- चलिए, ठीक है ।

अध्यक्ष महोदय :- अगर आप लोगों को अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा नहीं करनी है तो अलग बात है । जिस चीज पर चर्चा करना है, उसमें करते रहिए । मगर मैं यह पहली बार देख रहा हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप किसको कह रहे हैं । हमने अविश्वास प्रस्ताव दिया है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं पक्ष और विपक्ष, दोनों को कह रहा हूं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम चर्चा करने को तैयार हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं पक्ष और विपक्ष, दोनों को कह रहा हूं । एक जरूरत से ज्यादा समय मांग रहे हैं, एक समय से ज्यादा उपयोग नहीं कर रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, पर सत्ता पक्ष जो है, अगर वह इस सदन में सदस्यों के बारे में अगर कोई असंसदीय बात बोलें तो समझ में आता है, संसदीय बात बोलने पर भी यह सदन समाज में नहीं बंटा है, यह सदन सर्वसम्मत सदन है । इस सदन में बोली हुई बातों के ऊपर में बाहर चर्चा भी नहीं होती है इसलिए कम से कम इस सदन में आपकी तरफ से हमारा इस बात का आग्रह है, अविश्वास प्रस्ताव लाना हमारा अधिकार है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं दोनों पक्षों से बहुत दुखी हूं । अगर मेरे बारे में कहना चाहते हैं तो मैं दुखी हूं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम आपके बारे में नहीं कहना चाहते । हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं कि हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है ।

अध्यक्ष महोदय :- अविश्वास प्रस्ताव पर जो चर्चा होनी चाहिए, वह चर्चा नहीं हो रही है । अगर करना है तो करिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम तो चर्चा करने के लिए तैयार हैं । आप शुरूआत से देख रहे हैं कि इसमें कौन हस्तक्षेप कर रहा है, कौन डिस्टबेंस कर रहा है ।

श्री संतराम नेताम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी हमारे मंत्री जी बोल रहे थे तो सभी सदस्य एक-एक बार नहीं बीस-बीस बार खड़े हो रहे थे, टोका-टाकी कर रहे हैं। उसके बाद समय बर्बाद हो रहा है। जब जवाब दे रहे हैं तो चुपचाप सुनना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- इसी में ही 4 बजकर 10 मिनट हो गए हैं और आप समय बढ़ाने की बात करेंगे।

श्री संतराम नेताम :- अभी आप रिकार्ड में देख लीजिये, एक-एक सदस्य कितनी बार खड़े हुए ? ऐसा थोड़ा टोका-टाकी होता है ? यह प्रश्नकाल थोड़े ही है।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठ जाईये। चलिये, माननीय।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, आप थोड़ा रिलेक्स हो जाईये न।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित।

(4:11 से 4:37 तक कार्यवाही स्थगित रही)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

4:37 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए)**

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- प्रणाम, महाराज जी।

सभापति महोदय :- माननीय चौबे जी।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपके प्रणाम को सुने नहीं, एक बार बोल दीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- महाराज जी, प्रणाम।

सभापति महोदय :- प्रणाम, प्रणाम भईया।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप आसंदी से अपना आशीर्वाद दे दीजिये।

सभापति महोदय :- खूब आशीर्वाद है, चलिये। लेकिन आप जैसा चाहते हैं, वैसा आशीर्वाद नहीं है।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- सभापति जी, मैं अपनी सरकार के और आदरणीय मुख्यमंत्री भूपेश जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी संस्कृति और छत्तीसगढ़ी अस्मिता का जो सम्मान बढ़ा है, उसका जिक्र कर रहा था। मैंने अपनी बातों में आगे कहा कि छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ की कला, छत्तीसगढ़ के खान-पान, छत्तीसगढ़ के तीज त्यौहार, छत्तीसगढ़ की संस्कृति, छत्तीसगढ़ का पहनावा, छत्तीसगढ़ के लोक उत्सव, अगर इन सबको महत्व मिला तो आदरणीय मुख्यमत्री भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में मिला है। माननीय सभापति महोदय, मैंने जिक्र किया कि हमारा छत्तीसगढ़ आदिवासी संस्कृति का बाहुल्य है। विश्व आदिवासी दिवस के दिन अन्तराष्ट्रीय आदिवासी महोत्सव होता है, मैं अपने संस्कृति मंत्री को भी बधाई दूंगा, हिन्दुस्तान के सभी राज्यों के कलाकार के अलावा विदेश के भी 8 देशों के कलाकार छत्तीसगढ़ में आकर छत्तीसगढ़ की संस्कृति से अपने आपको जोड़ने का प्रयास किया। आपने क्यों नहीं किया ? आपको क्या आपत्ति है ? आपको तकलीफ भी क्या है ? आप 15 साल किसमें व्यस्त रहे ? नॉन, धान, खदान, चिटफण्ड, पता नहीं किस प्रकार से कई बार उधर से बैठकर हम लोगों ने अपनी बात कही है। जिस तरीके से लगातार आपकी हुकुमत चल रही थी ? धरती बेचने का काम, पानी बेचने का काम, पहाड़ बेचने का काम, खनिज बेचने का काम, जंगल तक को बेचने का काम किया है। यह छत्तीसगढ़ किसलिए बनाया गया है ? जब छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ, हमारा सौभाग्य है तब आदरणीय बृजमोहन जी थे, भाई धर्मजीत भईया थे, माननीय मुख्यमंत्री जी भी उस सदन में थे, जब हम लोग मध्यप्रदेश की विधानसभा में अपनी बात कहते थे, तब भी हमने कहा था कि हमारा छत्तीसगढ़ हिन्दुस्तान का सबसे समृद्ध, खूबसूरत राज्य बनेगा। हमारी संस्कृति, हमारी अस्मिता, हम अपने छत्तीसगढ़ के निर्माण के लिए मध्यप्रदेश की विधानसभा में यह बात किया करते थे, तो दुर्भाग्य है कि आप लोग ये सब 15 साल यह भूल चुके थे। हमने उसी को तो आगे बढ़ाया है। मैं उसी को कह रहा था। यह धरती आदिवासी संस्कृति का पोषक है। यहां भक्त माता कर्मा की जयंती में भी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सबसे बड़ा समुदाय हमारा होता है और भक्त माता कर्मा जी की जयंती में अगर छुट्टी देने का भी काम किसी ने किया है तो आदरणीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने किया है, तब भी आपको फुर्सत नहीं थी ? रानी अवंतिबाई को हम लोग स्मरण करते हैं, हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई लड़ने वाले रानी अवंति बाई की स्मृति में हमने पुरूस्कार और सम्मान घोषित किया है । यह काम भी अगर किया तो किसने किया ? आदरणीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने किया । (मेंजो की थपथपाहट) आदरणीय साथियों, जब तक छत्तीसगढ़ की अस्मिता से अपने आपको नहीं जोडेंगे, गेड़ी की बात होती है, लगातार बयान दे देते हैं, भौंरा चलाते हैं, गेड़ी चलाते हैं, आपको आपत्ति किस बात की है, सारी संस्कृति खत्म हो गयी थी । मैं वह हीरो-हिरोईन का नाम नहीं जानता, राज्य उत्सव में आप...।

श्री रामकुमार यादव :- करीना कपूर और चिरहा पेंट वाला सलमान खान ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, राज्य उत्सव में कौन आते थे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी कौशल्या माता का उत्सव हुआ । आदिवासी उत्सव हुआ । आपको मालूम है कि एक-एक कलाकारों को दो-दो करोड़ रूपये दिये गये हैं ? जो इवेंट एजेंसी थी, वह कौन थी, वह आपके केन्द्र के सांसद के लड़की की इवेंट एजेंसी थी । उसको 20 करोड़ रूपया दिया गया है । (शेम-शेम) बिना टेण्डर के दिया गया है । कोशल्या माता के उद्घाटन पर माननीय मुख्यमंत्री जी गये थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बृजमोहन जी, इसमें और जोड़ दीजिए । मैं भाषण में नाम को बताऊंगा । रामायण मंडली भी उन्होंने ही पकड़ कर लाई थी । रामायण महोत्सव भी उन्होंने करवाया था ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- 20 करोड़ रूपया खाली इवेंट एजेंसी को दिया गया है। 6.50 करोड़ का टेण्डर किया गया और 20 करोड़ रूपया दिया गया । आदिवासी महोत्सव भी उन्होंने ही करवाया है । क्या छत्तीसगढ़ का पैसा बाहर के एजेंसियों के खाने के लिये है ? प्रभु राम की जो प्रतिमा बनी है, आप उसको जाकर देख लें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- पहले भाषण में यही हुआ था, छत्तीसगढ़ी प्रदर्शनी में बाहर के लोग नहीं आयेंगे । तोर हाथ पांव जोड़थंव भईया, मोर आगु में मत खड़ा होय कर । तोर हाथ पांव जोड़थंव ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और छत्तीसगढ़ी संस्कृति की बात करते हैं, 20 करोड़ रूपये से ज्यादा दिल्ली की एजेंसी, सांसद की बेटी, मेरे पास कागज है, मैं आरोप नहीं लगा रहा हूँ । (शेम-शेम) मैं उसका नाम भी बोल दूंगा ।

श्री ननकीराम कंवर :- ये लोग कितने कमाये ? उसको तो देख लीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- किदवई । मैं नाम ले देता हूँ । यास्मीन किदवई ।

श्री नारायण चंदेल :- रामायण मंडली दिल्ली से आ रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यास्मीन किदवई भी रामायण मंडली की इवेंट को करवाई है । (शेम-शेम) अभी बहुत संस्कृति की बात चल रही है । अभी बहुत से संस्कृति आयेगी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ की संस्कृति, छत्तीसगढ़ के हितों की बात ...(व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लोग टोका-टाकी न करें । आप लोगों का भाषण में नाम है । जवाब में बोलियेगा । मेहरबानी करके बैठिये । माननीय चौबे जी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- रंजीत रंजन, राजीव शुक्ला यह सब क्या है ।

सभापति महोदय :- पहले तो जब मैं किसानों की बात कर रहा था, किसानों को जब हम 2500 और 2640 और 2800 देने की बात कर रहे थे, आपने रेवड़ी कह दिया ? यह आपको शोभा देगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने आज का पेपर पढ़ा है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- किसानों को हम पैसा दे रहे हैं तो आपने रेवड़ी कह दिया ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके कांन्टेंट को जोड़े हैं, भाषण खत्म कर दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- एक को आपने रेवड़ी कह दिया, समूचे आदिवासी समाज के बारे में आपके मन में क्या मानसिकता है, दूसरा प्रदर्शित हो गया और तीसरा दुर्भाग्य कि जिस राम को आप वोट का सहारा मानते थे, जिस राम को केवल और केवल कसम राम की खाते हैं, नारा लगाते थे...।

श्री शिवरतन शर्मा :- मंदिर वहीं बनायेंगे । वहीं बन रहा है ।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये)

सभापति महोदय :- बांधी जी, बैठिये, बैठिये, यह ठीक नहीं है । यह कतई उचित नहीं है । बैठिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मंत्री जी आपके गुरूदेव पीठाधीश्वर स्वामी स्वरूपानंद जी मंडली बनाये थे। आप उसके सदस्य हैं। आप उसके समर्थन में थे। हम आपके गुरूदेव के आशीर्वाद से जीते हैं, उसमें आप भी शामिल हैं।

श्री अरूण वोरा :- आप भगवान श्रीराम की बहुत बात करते हैं, राम वन गमन पथ क्यों नहीं बनाये? आप जो अधोध्या की बात कर रहे हैं, वहां राजीव गांधी जी ने भूमिपूजन किया था। भगवान राम सबके हैं, केवल आपके नहीं हैं।

सभापति महोदय :- अरूण वोरा जी बैठिये। माननीय चौबे जी।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति जी, अगर माननीय भूपेश बघेल जी ने राम वनगमन पर्यटन परिपथ बनाने का निर्णय किया तो आपको क्या तकलीफ है ? अगर माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने माता कौशल्या के गोद में राम वाला चंदखुरी का मंदिर बनाने का, जीर्णोद्धार करने का निर्णय लिया तो आपको क्या तकलीफ है ? अगर माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने छत्तीसगढ़ की सभी मानस मंडलियों को सम्मान देने का, प्रतियोगिता करने का और सहयोग देने का अगर काम किया तो आपको क्या तकलीफ है ? आप राम मंदिर की बात करने लग गये, मानस मंडली की बात करने लग

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गये। इससे आपकी तकलीफ प्रदर्शित होती है। आपको समझ में आ गया है कि राम भी आपके हाथ से गया, सब कुछ आपके हाथ से गया।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राम सबके हैं, पूरे देश के, विश्व के हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जैसे सनातनी के भी हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपके भी हैं, हमारे भी हैं। यह किसी के हाथ से राम कभी नहीं जायेंगे। आप राम को छोड़ेंगे तो भी राम आपको पकड़ लेंगे।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष जी, राम हम सबका है, लेकिन राम के बारे में सोच थोड़ी भिन्न है। वोट के लिए, चोट के लिए, चंदाखोरी और नोट के लिए राम हमारा नही है। यह राम आपका हो सकता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपका राम तो काल्पनिक राम है।

सभापति महोदय :- शिवरतन शर्मा जी, बैठिये। मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं टोकाटाकी न करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अयोध्या में प्रभु राम भगवान का मंदिर बनना चाहिए या नहीं बनना चाहिए ? आप बताईये।

श्री अमितेश शुक्ल :- वह तो यू.पी. में है। यहां तो राम वनगमन पथ बना रहे हैं जिसको आप लोग बना सकते थे। वह तो छत्तीसगढ़ में हमारे मुख्यमंत्री जी बना रहे हैं। उत्तरप्रदेश में तो मंदिर है, यहां थोड़ी राम भगवान का मंदिर है जो बनायें, नहीं तो वह भी बनाकर बता देते।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति जी, राम बहस का मुद्दा नहीं हो सकता। राम जितने आपके हैं, उतने ही हमारे हैं। हमारी छत्तीसगढ़ की धरती तो माता कौशल्या की धरती है। राम का ननिहाल है। यहां कण-कण में राम हैं। आपके कहने और आपके प्रमाण पत्र की हमें जरूरत नहीं है। (मेजों की थपथपाहट) लेकिन मैं पूछ रहा हूं कि आपको किसने रोका था ? आप 15 साल हुकुमत में थे, तब राम आपको याद नहीं आये ? तब चंदखुरी का माता कौशल्या का मंदिर याद नहीं आया ? तब छत्तीसगढ़ की राम मंडली याद नहीं आई ? तब यहां की मानस मंडली की तरफ आपका ध्यान नहीं गया। तब राम वनगमन परिपथ की तरफ आपकी नजर भी नहीं गई। तब राम कहां थे, खाली वोट के लिए थे ? हम उस राम की पूजा करते हैं जो शबरी के, केवट के, वनवासी के, माता कौशल्या के राम हैं जिनको दीनबंधु कहा जाता है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री सौरभ सिंह :- राम वनगमन पथ में पर्यटन विभाग ने एक ठेका निकाला है। छत्तीसगढ़ की कोई कंपनी नहीं मिली, दिल्ली की कंपनी है।

सभापति महोदय :- सौरभ सिंह जी आपका नाम बोलने वालों मे है। आप बोल लीजियेगा। मेहरबानी करके आप बैठिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सौरभ सिंह :- टेलीकम्यूनिकेशन कंसलटेंट वालों को काम दिया है।.. (व्यवधान)

सभापति महोदय :- यह उचित नहीं है, आप बैठिये। आपका नंबर आयेगा, बोलने वालों की लिस्ट में आपका नाम है, आप बोल लीजियेगा। माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि वह टोकाटाकी न करें।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- अयोध्या के जमीन ला बेच दिहा। प्रधानमंत्री जी से बोलिहा।

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री जी।

संसदीय सचिव (श्री यू.डी. मिंज) :- गोवा भेजो, गोवा।

श्री रविन्द्र चौबे :- सभापति महोदय, मैंने कहा कि राम न तो विवाद का और न ही किसी बहस का मुद्दा है। मैं उसमें नहीं जाना चाहता कि आप राम को किस नजरिये से देखते हैं लेकिन मैंने केवल इतना पूछा कि आदरणीय मुख्यमंत्री जी ने जो काम केवल 3.5 साल में करके दिखाया। मैंने यह कहा कि आपने 15 सालों में उस काम को सोचा भी नहीं था।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप सही बोल रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं सही ही बोल रहा हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम लोग वैसा काम करने का सोच भी नहीं सकते हैं।

श्री भूपेश बघेल :- आप लोग सोच भी नहीं सकते हैं। आप लोग सिर्फ राम के नाम पर वोट भर ले सकते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- सभापति महोदय, यह चौथी बात हो गयी। मैं तीसरी बात तक, केवल राम तक सीमित था। अब उन्होंने कहा कि हम सोच भी नहीं सकते केवल वोट ले सकते हैं (शेम-शेम की आवाज)। मतलब आप क्या कहना चाहते हैं?

श्री शिवरतन शर्मा :- आप जो बोल रहे हैं कि भगवान राम की कथा काल्पनिक है, हम लोग यह सोच भी नहीं सकते है। यह सोच सिर्फ आपकी और आपके पार्टी के लोगों की ही हो सकती है। हम लोगों की नहीं हो सकती।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन के देख के न बालि अऊ राम भगवान हा घलोक कव्वा गये होही।

श्री रविन्द्र चौबे :- सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में एक मुद्दा भी है और सदन में बहुत चर्चा भी हुई। छत्तीसगढ़ की सरकार की एक योजना गोधन न्याय योजना है। अभी आदरणीय बृजमोहन जी ने और मानीनय पुन्नूलाल जी ने अपने भाषण में इसका उल्लेख किया। अभी 28 जुलाई को हरेली का त्यौहार आ रहा है।

श्री कवासी लखमा :- कल ही है।

श्री रविन्द्र चौबे :- दूसरा साल ही पूरा होगा केवल दूसरा साल। हमने छत्तीसगढ़ में 11,000 गौठान बनाने का निर्णय लिया और हमारे 8,500 गौठान बन गये हैं। हमने छत्तीसगढ़ के गरीबों को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गोबर का 150 करोड़ रूपये से अधिक की राशि अदा की है। आप पूछते हैं। मैं जब मुंगेली बैठक लेने गया था, मेरे आदरणीय भैया धर्मजीत सिंह जी बैठक में उपस्थित थे, मेरे सम्माननीय मामा जी श्री पुन्नूलाल मोहले भी बैठक में उपस्थित थे। उस बैठक में बताया गया कि आप ही की पार्टी का एक कार्यकर्ता, कोई मिस्टर आर्या है, उसने 25 लाख रूपये का गोबर बिक्री किया है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री कवासी लखमा :- आर्या मिंज।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप कभी उनसे भी पूछ लेते कि इसका क्या लाभ है। मैं यह कतई नहीं कह रहा हूं कि कहीं-कहीं व्यवस्थाओं में कमी नहीं हो सकती। हमारी व्यवस्था है। हमने गौठान समितियों का गठन किया है। जहां हमारी समितियां बहुत अच्छा काम कर रही है, वहां गौठान बहुत अच्छे ढंग से संचालित हो रहे हैं। यह हो सकता है कि वह हमारे स्थानीय जनप्रतिनिधि है, गौठान में कहीं कमियां होंगी, वह अच्छा काम कर पा रहे हैं या नहीं कर पा रहे हैं। लेकिन एक बात समझ लेना कि हम 19 लाख क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट, किसानों के खेतों में पहुंचा चुके हैं। इससे किसानों को कितना लाभ है, वह साल भर बाद पता चलेगा।

मैं सरपंच भी था, मैं जनपद अध्यक्ष भी था, मैं जिला पंचायत का भी सभापति रहा हूं। ग्राम पंचायतों में पहले भी गोबर की नीलामी हुआ करती थी, किसान गोबर का खाद खरीद कर अपने खेतों में डाला करता था। हम यदि वर्मी कम्पोस्ट दे रहे हैं तो बड़ी आपत्ति है। इधर से चिल्लाते हैं कि खरसी दे रहे हैं, उधर से चिल्लाते हैं कि बोरी में कम हो रहा है, कम हो रहा होगा। किसी गौठान में यह समस्या हो सकती है लेकिन आप बताईये, हम उसको दूर करेंगे। लेकिन इसका क्या लाभ है? सारे गांवों में Enclosement हैं। हम और लगभग सारे गांवों जनप्रतिनिधि इस बात को जानते हैं कि अतिक्रमण हटाना कितना कठिन काम है। हमने इस योजना से लगभग 1.5 लाख एकड़ जमीन गौठान के रूप में सुरक्षित किया है। यह छोटा-मोटा काम है? दूसरा लाभ, छत्तीसगढ़ में प्रतिदिन 350 गायों को सड़कों में एक्सीडेंट से नुकसान होता था। हम हर कलेक्ट्रेट से जानकारी मंगाते थे कि आज कौन से सड़क में, कौन से हाईवे में गैय्या का एक्सीडेंट हुआ है। बिलासपुर से अंबिकापुर, रायपुर से जगदलपुर, रायपुर से नागपुर, रायपुर से सरायपाली, रायपुर से बिलासपुर, रोज 8-10 गैय्या का एक्सीडेंट होता था। आप समझ लेना कि इस योजना के आने के बाद उसमें 95 प्रतिशत की कमी आयी है। आप कहीं भी सड़क में देख लीजिये।

तीसरा लाभ खेतों में वर्मी कम्पोस्ट गया। हमारे छत्तीसगढ़ के इन गौठानों में लगभग 60 हजार महिलाओं का समूह काम कर रहा है। सेल्फ हेल्फ ग्रुप की 60 हजार महिलाओं का समूह है, उनको हमने रोजगार से जोड़ा हुआ है। यह क्या छत्तीसगढ़ में कम है? हमारे इन गौठानों से यह सब लाभ हो रहा है। आखिरी आपसे कहना चाहता हूँ कि हम छत्तीसगढ़ के बजट में भी इस साल हर गौठान को जीवन्त बनाने के लिए वहां रूलर इंडस्ट्रीयल पार्क बनाने जा रहे हैं। हर गौठान में रोजगार की व्यवस्था

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

होगी। हमारी गौठान समिति की महिलाएं कहीं दाल मिल, आटा मिल लगा रही हैं, कहीं मशरूम पैदा कर रही हैं, कहीं बकरी पालन, मछली पालन कर रही हैं, वे सब्जी भाजी का काम भी कर रही हैं। उनको सीधे लाभ हो रहा है। माननीय अजय भाई, आपको सुनकर खुशी होगी कि हमने गोबर का 150 करोड़ रूपये दिया है। हमारी सेल्फ हेल्फ ग्रुप की महिलाएं कर रही हैं, हम गौठान समिति को जो लाभ दे रहे हैं...।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप लोगों ने 15 करोड़ रूपये का विज्ञापन दिया है, उसको कम कर लीजिए।

श्री नारायण चंदेल :- कई जगह आलू की फैक्ट्री भी लगा रही है। आपके एक नेता ने कहा कि कई जगह आलू की फैक्ट्री भी लगा रही है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप लोगों ने 15 करोड़ रूपये का विज्ञापन दिया है।

श्री रविन्द्र चौबे :- अब विज्ञापन के बारे में चर्चा करेंगे तो आखिरी साल जिसकी हुकूमत थी यहां 15 साल बैठे हुए थे उस समय बजट में भी पैसा नहीं था। केवल 450 करोड़ रूपये विज्ञापन में खर्च किया था। हमें पैसा देना पड़ा। (शेम-शेम की आवाज)

श्री कवासी लखमा :- माननीय सभापति महोदय, हमने उस राशि को पटाया।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप लोग उसको क्रॉस कर चुके हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, मैंने एक ही साल का बताया है। तब आपको पूछने का साहस नहीं था। तब भी आप प्रश्न पूछ लेते थे।

श्री ननकीराम कंवर :- हम इसलिए तो इधर बैठे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय ननकीराम कंवर जी, आप इस सदन के सबसे वरिष्ठतम् सदस्य हैं। अभी माननीय बृजमोहन जी ने कहा। आपके राजनीतिक अनुभव के बराबर कुछ माननीय विधायकों की उम्र भी नहीं हुई है। हम आपका सम्मान करते हैं और इधर बैठकर माननीय डॉ. रमन सिंह जी ईशारा किया करते थे कि आप दो लाईन में सिमट जाएंगे। ईश्वर अच्छा करेगा तो एक लाईन में आधे दिख रहे हो, वह भी इधर सिमटने वाले हो, आप समझ लेना। यह वक्त आने वाला है।

श्री शिवरतन शर्मा :- यह मुंगेरी लाल के सपने हैं। माननीय जोगी जी की पहली सरकार बनी थी तब भी आप बताया करते थे और आपने इधर तीन बार रहकर, उसका दुष्परिणाम झेला था। आप इस बात को याद रखेंगे। आपका यही डायलॉग हुआ करता था कि मान्यता प्राप्त विपक्ष के लायक भी नहीं रहोगे। आपने तीन बार उसका परिणाम क्या भोगा, यह आपको याद रखना चाहिए और दिल्ली में क्या स्थिति है, इसको भी याद रखना चाहिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, दिल्ली की हर बात क्यों होती है ? जब दिल्ली की बात होती ही है तो दिल्ली से आप क्यों नहीं पूछते हैं। आप नारा लगा दिया करते थे "बहुत हो गई महंगाई की मार, कहां गई आपकी मोदी सरकार"। आपने कभी पूछा है।

श्री कवासी लखमा :- उस समय डीजल और पेट्रोल का रेट बढ़ने से आप लोग विधान सभा सायकल में आये थे। यह छत्तीसगढ़ की जनता नहीं भूली है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, यह छत्तीसगढ़ की सबसे महत्वाकांक्षी योजना है। हमने सुराजी गांव योजना प्रारंभ की है। पहले जब नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी योजना की बात करते थे तो यह हंसी में उड़ाया करते थे। हमने जब गोबर खरीदी की बात कही तो माननीय अजय चन्द्राकर जी ने उसको राजकीय चिन्ह बनाने के संदर्भ में टिप्पणी की, लेकिन आज मध्यप्रदेश सरकार यह काम कर रही है। वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। उत्तरप्रदेश सरकार यह काम करने जा रही है। वहां भी वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। गुजरात की सरकार यह काम करने जा रही है वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। झारखण्ड और राजस्थान में हमारी सरकार है। छत्तीसगढ़ की इस योजना को ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- झारखण्ड में आपकी सरकार है ?

श्री कवासी लखमा :- हमारा गठबंधन नहीं है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- वहां कृषि मंत्री तो हमारी पार्टी का है।

माननीय सभापति महोदय, हमने एक बड़ी योजना और प्रारंभ की है। खेतीहर मजदूर, आपने कभी कल्पना नहीं की थी। आप प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि कितना देते हैं ? किसानों के पंजीयन के नाम से घूमना पड़ता है। पहली बार छत्तीसगढ़ के 31 लाख किसान पंजीकृत थे, उनको पैसा मिला। हर बार नियमों में संशोधन करते हैं ।

समय :

5:00 बजे

माननीय सभापति महोदय, हर साल किसानों की आय में कटौती करते हैं और राशि कितना देते हैं, 6 हजार रूपया प्रतिवर्ष देते हैं ? माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस बार सोचा कि हम अपने किसानों को पैसा देते हैं, हम गौ-पालकों को पैसा दे रहे हैं, अब छत्तीसगढ़ का वह गरीब जो लैण्ड लैस है, जिनके पास एक एकड़ जमीन नहीं है, जो खेती नहीं कर सकता, जो केवल कृषि में श्रमिक है, मजदूरी करता है, उनको भी राजीव गांधी खेतिहर मजदूर न्याय योजना के अंतर्गत प्रधानमंत्री जी जितनी राशि देते हैं, उनसे ज्यादा 7 हजार रूपया प्रतिवर्ष हमने देने का निर्णय लिया है। (मेजों की थपथपाहट) अभी तक पौने 4 लाख लोग पंजीकृत हो गए हैं और यह पंजीयन लगातार चल रहा है। यह योजना आपको अच्छी नहीं लगती। यह अच्छी योजना है, जो गरीबों की मदद करे। आपके समय में और हमारे समय में अंतर केवल यही है। माननीय सभापति महोदय, तब पैसे का खर्च स्काईवॉक में किया जाता था, फ्लाईओवर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में किया जाता था, आपने राजधानी में 4 फ्लाईओवर बनाया, चारों फ्लाईओवर भसक गया है। माननीय लोक निर्माण मंत्री जी मरम्मत कर रहे हैं। इधर मरम्मत करते हैं तो दूसरी तरफ भसक जाता है। उधर मरम्मत करते हैं तो इधर टूट जाता है। आपने कभी क्वालिटी देखी है। राशि कैसे खर्च होता था। बजट की राशि किस दिशा में जाता था ? इसीलिए आदरणीय डॉ. रमन सिंह जी को अपने कार्यकर्ताओं को रायगढ़ में बोलना पड़ा था कि यह आखिरी साल है, कमीशन खाना बंद कर दीजिए। हमारी हर योजना, व्यक्तिगत क्षमता में लोगों को मदद करने का होता है। चाहे वह किसान हो, मजदूर हो, वनवासी हो, श्रमिक हो, महिलाएं हो, चाहे कोई भी हो, हमारी सारी योजनाएं व्यक्ति को मजबूत करने की होती है। आपने कभी कल्पना की थी, देश में आपकी सरकार, उत्तरप्रदेश में आपकी सरकार है। उत्तरप्रदेश में गन्ने की कीमत क्या दिया जाता है, अभी 25 रूपया बढ़ाने के बाद 325 रूपये हुआ है। धर्मजीत भैया, आपके ईलाके में गन्ना होता है। जिस दिन से आदरणीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की सरकार बनी है, हर साल हम 355 रूपए प्रति क्विंटल गन्ने की कीमत दे रहे हैं। सारे देश में सबसे ज्यादा है। (मेजों की थपथपाहट)

<u>सदन को सूचना</u>

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री जी, एक मिनट। माननीय सदस्यों के लिए स्वलपाहार की व्यवस्था लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। कृपया सुविधानुसार स्वलपाहार ग्रहण करें। माननीय मंत्री जी।

<u>मंत्रिमण्डल के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव (क्रमश:)</u>

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, यह सरकार है। छत्तीसगढ़ की सरकार किसानों को जितनी राशि दे रही है, इस देश में कोई सरकार नहीं दे पा रही है। चाहे वह गन्ने की कीमत हो, चाहे वह धान की कीमत हो। हमने कहा न, हम विस्तार कर रहे हैं, व्यवस्था कर रहे हैं। चाहे वह बैंक ऋण का हो, चाहे बीज का हो, चाहे फर्टिलाईजर का हो, इसीलिए आप हर साल देंखेंगे। पहले माईग्रेशन गांव से शहर की ओर होता था, केवल पढ़े-लिखे लड़के भले मजदूरी करना पड़े, शहर में आते थे, माननीय मुख्यमंत्री जी ने जिस तारीख से किसानों का कर्ज माफ किया, हमने धान की कीमत देने का काम शुरू किया, उस तारीख से पढ़े-लिखे लड़के भी शहरों से गांवों की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। हर साल खेती में रकबा भी बढ़ रहा है। पंजीयन भी बढ़ रहा है, किसानों की संख्या भी बढ़ रही है। इसमें आपको आपत्ति हो सकती है आदरणीय सभापति महोदय, यह कांग्रेस की सरकार माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के नेतृत्व में कृषि के विकास में सारी बातें जो किसानों के मदद के लिए हो सकती है, हम करने का प्रयास कर रहे हैं।

सभापति महोदय, पंचायती राज के बारे में बहुत सारी बातें हुई। आवास के बारे में बहुत सारी बातें हुई। हर भाषण में कह दिया जाता है, 18 लाख लोगों के सिर पर छत होना चाहिए। किसने मना किया है ? जब योजना शुरू हुई तो कितना आवास स्वीकृत हुआ था, आप कितने लोगों को दे पाए थे, हम स्टेट शेयर कितने को दे पाए थे ? केवल एक साल का रूक पाया था और इस साल के बजट में साढ़े 6 सौ करोड़ रूपये से अधिक की व्यवस्था उस आवास के लिए की गयी है। मैं आज आपके बीच में कहना चाहता हूं, महराज साहब की चिट्ठी का आशय क्या हो सकता है, वह महराज साहब जिस दिन आयेंगे, सदन में बोलेंगे। लेकिन आप विश्वास करिएगा, जितने आवास अधूरे हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी ने बजट में प्रावधान किया है, हर अधूरे आवास को पूरा करने की हमारी जवाबदारी है। (मेजों की थपथपाहट) हम उसके लिए पैसे की व्यवस्था करेंगे। आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। हमारे जनप्रतिनिधियों की सम्मान की बात करते हैं। पंचायती राज में उनका मानदेय हमने कितना बढ़ाया ? उनका अधिकार हमने...।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने अभी कहा कि पंचायत का सरपंच, जनपद अध्यक्ष और जिला पंचायत अध्यक्ष था । क्या मानदेय बढ़ाना अधिकार संपन्न करना होता है? आप मुझे बताईयेगा कि मानदेय बढ़ाना ही पंचायती राज है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- रविन्द्र भैया, आप अजय भैया को विधायक का जो बढ़ाया है न वह बता दीजिये ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति जी, मैं समझ रहा हूं । पूरे प्रदेश के पंचायती राज प्रतिनिधियों का मानदेय बढ़ाने में भी आपको तकलीफ । आप क्या प्रश्न कर रहे हैं ? अभी अमितेश जी ने ठीक कहा ।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आपको थोड़ा सा विद्वान समझता हूं और ह्रदय से समझता हूं इसलिए मुझे आपत्ति है कि नहीं है, मैं जब बोलूंगा तो बता दूंगा । आप मुझे यह बताईये कि क्या मानदेय बढ़ाना ही पंचायती राज को अधिकार संपन्न करना है ? आप भाषण में बताईयेगा, मैं सुनूंगा । मैं कम से कम आपका दृष्टिकोण तो जानूं क्योंकि आप पंचायती राज संभाल रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति जी, मैं तो शुरूआती बोल रहा था कि मानदेय भी बढ़ाया । उन्होंने पंचायती राज के सम्मेलन में...।

श्री अजय चंद्राकर :- महाराज, अब आप शब्दों में मत उलझो, विषय में आईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- कल आपके सामने एक ध्यानाकर्षण में चर्चा हुई ।

सभापति महोदय :- आप बैठेंगे तो उनको बोलने का मौका मिलेगा ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, ग्राम सभा को जो अधिकार प्राप्त है वह तो आप कर नहीं रहे हैं । आप मौन बैठकर माननीय अकबर साहब का जवाब सुनते रहे । मैं बार-बार आपको बोलते रहा कि ग्राम-सभाओं को कितना अधिकार दे रहे हैं, ग्राम पंचायतों को कितना अधिकार संपन्न कर रहे हैं यह पूरा प्रदेश देख रहा है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- श्रीमान, आपने 15 सालों में उसको कितना अधिकार संपन्न रखा था । थोड़े दिन माननीय भाटो श्री आप भी इधर मंत्री हुआ करते थे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- 10 साल ।

श्री रविन्द्र चौबे :- 10 साल रहे । अब आप कमेंट कर रहे हैं । उस समय ग्राम-सभाओं को क्या अधिकार था ? पुष्प स्टील से लेकर...।

श्री अजय चंद्राकर :- आप एक काम करिये, आप टिकट का पैसा मुझसे लीजिये और मणिशंकर अय्यर जी पूछिए कि मैंने क्या किया है । यू.पी.ए. के लिये पंचायती राज में आपकी सरकार के लिये भी क्या किया है और उसको मणिशंकर जी से जाकर पूछिए । यदि आपको समझ में नहीं आ रहा है, यदि आप मुझे राजनीतिक तौर पर उलझाना चाहते हैं तो इसमें भी आपत्ति है, इसमें भी आपको आपत्ति है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- वे मणिशंकर अय्यर जी से पूछने नहीं जायेंगे, वे कभी-कभी चुनाव के पहले अच्छा बढ़िया बयान देते हैं । वे कब बयान देंगे, उसका इंतजार कर लीजिये ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अजय जी, आप पंचायत मंत्री थे । आपने कहा न कि मैंने क्या-क्या किया । अगर किया होगा तो दिल्ली में पूछने का क्या काम ?

श्री अजय चंद्राकर :- आप चल देना न ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप ही बता देना न । पंचायती राज के जनप्रतिनिधियों को मालूम है कि आपने क्या किया था और किस तरीके से काम होता था । यह चर्चा का विषय नहीं है लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि हमने मान भी बढ़ाया, सम्मान भी बढ़ाया, अधिकार भी दिया । अभी जो अधिकार शेष हैं ।

माननीय सभापति महोदय, हमारे विभाग में धान खरीदी की चर्चा हुई, इस साल कितना स्मूथली धान खरीदी हुई । हमने धान खरीदी के केंद्र भी बढ़ाये । किसानों को कोई तकलीफ नहीं हुई फिर से एक छोटी सी बात कि पिछले साल जब धान खरीदी हो रही थी तो हमें जितना गौठान बारदाना मिलना था । केंद्र सरकार ने हाथ खड़े कर दिये, आपको मालूम है न कि किसानों के पुराने बारदाने में भी हमने धान खरीदी की है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- बारदाने का पेमेंट नहीं हुआ है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- एक बारदाने का पेमेंट शेष नहीं है । कृषि के क्षेत्र में जिन किसानों ने बारदाना दिया, पेमेंट के साथ उसका पैसा गया हुआ है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- चलिये, मैं आपको चुनौती देता हूं और आपको 10 सोसायटियों के उदाहरण बताउंगा जहां पेमेंट नहीं हुए हैं । आप असत्य कथन कर रहे हैं ।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन पेपर में एक बताए रहेओ, जिंदा ला मुर्दा बना दे रहेओ । हमन तुंहर गोठ ला कोन मेर ले विश्वास करबोन ?

श्री रविन्द्र चौबे :- अगर किसी सोसायटी में शेष है तो आप जागरूक जनप्रतिनिधि हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- मिश्री भैया, आप तुरंत पलट गये ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप जागरूक जनप्रतिनिधि हैं, आप बतायेंगे लेकिन मैंने कहा न कि मेरी जानकारी में कहीं शेष नहीं है । माननीय सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में जितने हम लोगों के विभागों के बिंदु थे। लगभग सभी को मैंने आपके सामने विस्तार से बताया। सरकार की और भी योजनाएं हैं। आत्मानंद स्कूल के बारे में बहुत सारी बातें हो रही थीं। स्वामी आत्मानंद जी का नाम सम्मान से लेना चाहिए। हमने उनके सम्मान से, उनके नाम से अगर छत्तीसगढ़ में लगभग 330 स्वामी आत्मानंद स्कूल एक्सीलेंस ऑफ इंग्लिश स्कूल शुरू किया तो आपको बधाई देना चाहिए। कल ही माननीय कवासी जी ने अपने भाषण में उल्लेख किया था कि केवल 2, 4, 5 साल रूक जाइएगा, बस्तर और सरगुजा के वनांचल और आदिवासी क्षेत्र से आने वाले भी हमारे बच्चे अंग्रेजी में बात करेंगे। आप बताइए। आपको 15 साल किसने रोका था? आप एक भी इस तरह से स्कूल प्रारंभ नहीं कर पाये। एक भी शिक्षा का केन्द्र नहीं बना पाये। एक भी नया अस्पताल नहीं बना पाये। गरीबों के लिए क्या कर रहे थे? और अगर यह सरकार कर रही है तो हर बार आपको आपत्ति है। माननीय सभापति महोदय, इस अविश्वास प्रस्ताव में जितने भी मुद्दे धरमलाल कौशिक जी ने लाया है, प्रतिपक्ष के द्वारा लाया गया है, मैं समझता हूं सारे मुद्दे घिसे-पिटे मुद्दे हैं, पुराने मुद्दे हैं। सब पर चर्चा हो चुकी है। सरकार का सब पर जवाब आ चुका है और छत्तीसगढ़ की जनता का पूरा भरोसा, पूरा विश्वास माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी के ऊपर है। इसीलिए समूचे छत्तीसगढ़ में लोग नारा लगाते हैं। भूपेश है तो भरोसा है। भूपेश है तो भरोसा है। (मेजों की थपथपाहट) और यह भरोसा समझ लीजिए कि आज के इस अविश्वासमत का अंत क्या होने वाला है? किस तरीके से ध्वस्त होने वाला है, हम लोग जानते हैं। उसके बावजूद भी कोई रचनात्मक और छत्तीसगढ़ के विकास के संदर्भ में आपके कोई सुझाव आयेंगे तो निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ के विकास के लिए हम उन सुझावों पर अमल करेंगे। माननीय सभापति जी, आपने मुझे समय दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- माननीय रंजना जी।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- माननीय सभापति महोदय जी, धन्यवाद। माननीय सभापति महोदय जी, आज हमने छत्तीसगढ़ प्रदेश की सरकार और सरकार के मंत्रिमंडल के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया है। लोकतंत्र की खूबसूरती इसमें भी है कि हम आज विपक्ष में हैं, संख्या बल में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

भले ही कम हैं, लेकिन आज हम इस बात को सिद्ध कर देंगे कि लोकतंत्र की महत्वपूर्ण शक्ति का परिचय आज हम सत्ता पक्ष को देने वाले हैं। विश्वास और प्रेम दो ऐसे शब्द हैं, जिसे न तो जबर्दस्ती किया जा सकता है, न तो पकड़-पकड़कर मार-पीट कर किया जा सकता है। आज जो प्रदेश की जनता जो सरकार पर अविश्वास जता रही है और आज माध्यम हम बने हुए हैं, साढ़े 3 साल से सरकार ने एक भी ऐसा बड़ा काम नहीं किया, जिससे प्रदेश की जनता उस पर विश्वास कर सके और इसीलिए इस विश्वास के शब्द में आगे अ लगा है, जिसे अविश्वास कहा जाता है। माननीय सभापति महोदय जी, हमारे कबीर साहेब जी ने बहुत अच्छी बात कही जो शायद विपक्ष पर पूरी तरह लागू होता है।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, और मुझसे बुरा न कोय।।

माननीय सभापति महोदय जी, ये बाहर बुराई ढूंढने जा रहे हैं। ये दिल्ली जा रहे हैं तो कभी मोदी सरकार के पास जा रहे हैं। कभी केन्द्र सरकार को कोस रहे हैं। इनकी खुद की क्षमता कुछ नहीं है। इनकी खुद की बखत कुछ नहीं है। अपने घोषणा-पत्र में किये हुए एक वादे भी इन्होंने पूरे नहीं किये और ये दूसरों की खामियां और दोष ढूंढने गये हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- 30 वादे पूरे हुए हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- दूसरों की खामी निकालने से पहले वे अपने अंदर झांक लें कि उन्होंने कौन-कौन से वादे किये और कौन-कौन से वादे पूरे करने में वे सफल रहें। माननीय सभापति महोदय जी, जब ये बाहर बुराइयां ढूंढ नहीं पाये तो जब खुद के अंदर झांककर देखा तो इन्हें पूरी बुराइयां ही बुराइयां मिलीं और इसीलिए कबीरदास जी ने इस बात को लिखा है। मैं कबीरदास जी की यह दूसरी पंक्ति कहना चाहती हूं।

जो उग्या सो अन्तबै, फूल्या सो कुमलाहीं।
जो चिनया सो ढही पड़े, जो आया सो जाहीं।।

माननीय सभापति महोदय जी, कबीरदास जी ने बहुत सत्यता और प्रमाणिकता के साथ इस बात को कहा है। ये संसार का नियम है। जो उदय होता है, वह अस्त होता है। जो विकसित होता है, वह मुरझायेगा। जो चिना गया है, वह गिर पड़ेगा और जो आया है, वह जरूर जायेगा। इस सरकार को किस बात का घमंड है? इस सरकार ने किया क्या है?

श्री संतराम नेताम :- किसानों का 11 हजार करोड़ का कर्ज माफ किया है

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- 30 योजनाओं को देखो । (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप पहले अपने आप को देखो ।

सुश्री शकुन्तला साहू :- पहले अपने क्षेत्र में जाकर पूछो, जनता से पूछो क्या किया है ।

सभापति महोदय :- संतराम जी बैठिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- जो उदय हुआ है उसका अंत होगा ।

सभापति महोदय :- यह तो सभी के लिए लागू है ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- जी सभापति महोदय, आज छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को ऐतिहासिक बहुमत प्राप्त हुआ है ।

सुश्री शकुंतला साहू :- ये दिल्ली में घलो लागू हो ही नई ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति जी, सरकार किस बात पर इतना इतरा रही है, सरकार को किस बात पर इतना घमंड है ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- इतरा नहीं रहे हैं, सरकार का काम धरातल पर जाकर देखो।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- विश्वास है, विश्वास । विश्वास है घमंड नहीं है ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, यूनाइटेड किंगडम के एक लेखक हैं शेक्सपीयर, उन्होंने बहुत अच्छी बात चार लाईनल में कही है, मैं यहां रखना चाहती हूं - शेक्सपीयर ने कहा कि मैं बहुत रोता हूं जब मेरे पास जूते नहीं है, यह देखकर, पर यह देखकर मैं चुप हो जाता हूं कि सामने वाले के पास तो पैर ही नहीं है। यह सरकार क्या करना चाहती है ? एक ऐतिहासिक बहुमत मिलने के बाद माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में कहते हैं और बड़ी बड़ी सभाओं में कहते हैं कि छत्तीसगढ़ प्रदेश सरकार में पैसे की कमी नहीं है । माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में इस बात को भी कहते हैं कि यदि हमको और कर्जा लेना पड़े तो हम लें । सभापति महोदय, मैं सरकार से कहना चाहती हूं कि यदि आपको कर्ज लेना है तो लीजिए, किसने आपको और कर्ज लेने से मना किया है । आप वैसे भी कर्ज में डूबे हुए हैं ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- कर्जा छोड़कर गए थे ना, 41 हजार करोड़ ।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- मनमोहन सिंह जी को पता नहीं था कि बाद की सरकार ऐसा भेदभाव करने वाली आएगी । मनमोहन सिंह जी बहुत उदारता से देते गए, उन्हें मालूम नहीं था कि बाद में केन्द्र में भेदभाव करने वाली सरकार आएगी ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, सरकार बात-बात पर केन्द्र पर आती है । जब कुछ कहा जाता है तो उधर के मंत्री कूद-कूदकर कहते हैं कि केन्द्र ने यह नहीं किया, फिर कूद-कूदकर कहते हैं कि यह नहीं किया । मैं आपको यह बताना चाहती हूं कि केन्द्र ऊपर से पैसे भेजता है तभी आपकी रोजी रोटी चल रही है । तभी यह प्रदेश चल रहा है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- देखिए, रंजना जी । जो महंगाई बढ़ी है, उससे महिलाएं प्रभावित हैं । (व्यवधान)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मंत्री लोग नहीं कूदते हैं, अजय भइया कूदते हैं उधर से ।

(डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी, सदस्य के खड़े होने पर)

सभापति महोदय :- बांधी जी, बैठिये । आप कहां महिलाओं के चक्कर में पड़े हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- मोदी जी ने कहा था दो करोड़ को रोजगार मिलेगा । दो करोड़ को रोजगार कब मिलेगा ? 14 लाख रूपए का क्या हुआ ?

सभापति महोदय :- रंजना जी बैठिये । बांधी जी आप कहां महिलाओं के बीच में पड़े हैं ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, कोरोना जैसी वैश्विक महामारी आई और इस महामारी के चलते केन्द्र की सरकार ने घोषणा की कि हम 80 करोड़ परिवारों को खाद्यान्न योजना के तहत् प्रति माह जो अंत्योदय परिवार हैं, उन्हें 5 किलो अनाज मुफ्त में किया जाएगा । (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हमारी सरकार ने 35 किलो दिया, 35 किलो मिल रहा है। (व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- ताली बजाओ, थाली बजाओ कह दिया ।(व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मोदी जी ने कहा था थाली बजाओ, थाली । उन्होंने केवल थाली बजाने का काम किया है और कुछ नहीं ।

सभापति महोदय :- संगीता जी बैठिये ।

श्री नारायण चंदेल :- कृषि मंत्री जी, आपका जबरदस्त प्रबोधन कार्यक्रम चला है ।

सभापति महोदय :- अरे, आप काहे बीच में फंस रहे हो भाई ?

श्री रविन्द्र चौबे :- ये लोग कुछ नहीं बोल रहे हैं । रंजना जी ने कोरोना को याद किया तो हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने पहले दिन कहा थाल बजाओ तो शायद इनको याद आ गया, बस इतना ही है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हमने उस वक्त मनरेगा में काम दिया है ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- संसदीय कार्यमंत्री जी, छोटा मुंह और बड़ी बात, मैं आपसे क्षमा चाहती हूं उन्होंने थाली और ताली कोरोना वारियर्स के सम्मान में बजवाया था, कोरोना भगाने के लिए नहीं बजवाया था । (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- कोरोना भगाने के लिए बजवाया था। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- झूठ, झूठ, झूठ, झूठ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, इस सरकार ने गरीबों के अनाज को भी नहीं छोड़ा। उनको मुफ्त में जो 5 किलो प्रतिमाह अनाज देने थे, उसमें भी इस सरकार ने भ्रष्टाचारी की, उसमें भी इस सरकार ने कमीशनखोरी की और एक भी पैसा, एक भी अनाज हमारे किसानों को नहीं मिल पाया। (व्यवधान)

सुश्री शकुन्तला साहू :- आप सदन में झूठ बोल रही हो।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, कोरोना जैसी इस वैशिवक महामारी में जब पूरा विश्व परेशान था, पूरा विश्व ऐसी परिस्थिति से गुजर रहा था..।

श्री शिवरतन शर्मा :- रंजना जी, एक मिनट।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- शिवरतन जी, आप कहां महिलाओं के रस्सा-कसी में कूद रहे हैं? (हंसी) यह महिलाओं की बात है, बैठ जाईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति जी, मैं सभी महिलाओं को प्रणाम करता हूं।

सभापति महोदय :- हाँ, प्रणाम कर लीजिये और बैठ जाईये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी को उनके फ्लोर मैनेजमेंट के लिए बधाई देता हूं। मैं सब महिलाओं को प्रणाम कर रहा हूं। संसदीय कार्य मंत्री जी, मैं आपको आपके फ्लोर मैनेजमेंट के लिए बधाई दे रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- शिवरतन बहन जी, आप बैठ जाईये। (हंसी)

सभापति महोदय :- भगत जी, बैठिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, जब इस कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में किसी देश ने टीका का निर्माण नहीं किया था। सिर्फ भारत ही सबसे पहला देश था, जिसने दो प्रकार के कोरोना टीका का निर्माण किया। छत्तीसगढ़ में टीके का पहली खेप पहुंची। तत्काल लोगों का टीकाकरण करना था।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- केन्द्र सरकार ने तो पहले छत्तीसगढ़ को टीका नहीं दूंगा बोला था। पहले नहीं दूंगा बोला। (व्यवधान)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, ऐसा गंभीर मसला जब प्रदेश में आया, जब समय पर टीकाकरण होना था, उस समय हमारे प्रदेश में 2 करोड़ टीके का पहली खेप पहुंच चुकी थी। उस समय माननीय स्वास्थय मंत्री जी ने बयान दिया कि हम टीके का प्रयोग करके देखेंगे। आपने कौन से टीके का प्रयोग करके देखा? जिस समय पूरा देश में टीकाकरण चल रहा था, उस समय सबसे अधिक टीका खराब करने की जिम्मेदारी यदि किसी को गई तो वह छत्तीसगढ़ प्रदेश की सरकार को गई।

(विपक्ष के सदस्यों द्वारा शेम-शेम की आवाज)

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- नहीं, शराब नहीं हुआ। कोई भी टीका खराब नहीं हुआ, उसकी एक्सपाईरी लिमिट खत्म के बगैर यूज हो गये। सभापति जी, बिना जांच के कैसे करायेंगे।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति जी, जब समय में लोगां का टीकारण हो जाना था, जब इस पूरा विश्व इस महामारी से गुजर रहा था, उस समय लोगों की कोरोना टीके की आवश्यकता थी। लोग पैसे में टीके को खरीदने को तैयार थे, उस समय माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी का ऐसा बयान आना और प्रदेश की सरकार का इस तरह से चुप बैठना, यह किस ओर इंगित करता है? यह क्या चाहते थे? यह तो यह भी आरोप लगाते थे कि यह मोदी टीका है। यह लगाना नहीं चाहते थे, लेकिन इनको मोदी टीका भी लगा है।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सुश्री शकुन्तला साहू :- हमारी सरकार को टीका लगाने के लिए मोदी जी ने रोकी थी। (व्यवधान) केवल हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ में फ्री में वैक्सीन लगाई है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- सभापति जी, मोदी जी विधायक निधि से सहायता दी? विधायक निधि से छत्तीसगढ़ सरकार को मदद की क्या?

सभापति महोदय :- रंजना जी, समाप्त करिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र शर्मा :- माननीय सभापति जी, उन्होंने प्रदेश को क्या समझकर रखा है?

सभापति महोदय :- 12 मिनट से ज्यादा हो गया।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति जी, वह एक सेकंड बोल नहीं पातीं, उधर हल्ला होना शुरू हो जाता है और आप उनको समाप्त करने को कहते हैं। उन लोगों को शांत रहना चाहिये।

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति महोदय, किसी के भाषण में इतना इंट्रप्ट नहीं हुआ होगा, जितना इनके भाषण में हो रहा है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वह गलत बोल रही है, बोलना तो पड़ेगा ना।

श्री नारायण चंदेल :- आपकी क्षमता तो अद्भूत है।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- हेलल कीलर की बयान को शेक्सपीयर का बयान बता देना गलत बात है। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- समय को भी तो देखिये।

श्री अमरजीत भगत :- चंद्राकर जी, आपकी आदत ठीक नहीं है। आप महिलाओं के बीच में खड़े हो रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- रंजना जी की जो क्षमता है। उनका प्रभाव दिख रहा है। सब लोग खड़े होकर उनका विरोध कर रहे हैं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय सभापति जी।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- धरम भैया, आपको अच्छा लग रहा है या नहीं लग रहा है? अच्छा लग रहा है?

सभापति महोदय :- आप कहाँ महिलाओं में कुद रहे हैं, बैठ जाईये।

श्री अमरजीत भगत :- बांधी जी, बहनों को बोलने दो, नहीं तो आपको उनकी श्रेणी में गिनती किया जायेगा।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- हाँ, तो एक बहन को बोलने दीजिये। सभी बहने बारी-बारी से बोलेंगे।

श्री संतराम नेताम :- अभी तो हमारे कृषि मंत्री जी बोल रहे थे तो आप लोग चांव-चांव कर रहे थे।

सभापति महोदय :- नेताम जी, बैठिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हम अच्छी बोले, गलत बात बोलेंगे तो वह आराम से बैठकर सुनेंगे।

सभापति महोदय :- बैठिये। रंजना जी, संक्षिप्त में अपनी बात कहें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, प्रदेश को क्या समझ कर रखा है? क्या उन्होंने हिंसा का गढ़ समझा है? अग्निवीर जैसी कैन्द्र की इतनी महत्वपूर्ण योजनाएँ और इनके विधायक वार्वजनिक जगहों पर जाकर भाषण देते हैं कि आपकी प्रदेश में हिंसा करिये। यह इनके संस्कार हैं। यह क्या करना चाहते हैं? यह छत्तीसगढ़ प्रदेश को (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- मात्र 4 साल के लिए नौकरी के लिए नौकरी देने....।

सभापति महोदय :- मेरा माननीय सदस्यों से निवेदन है कि टोका-टोकी न करें। माननीय सदस्या को बोलने दें। टोका-टाका मत करिये।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, महिला मंत्री जी बोल रही हैं।
आप महिला मंत्री जी को खड़े करा दीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- बहनों को बोलने दीजिए। बहनों को बोलने दीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- वह अकेली बच गई। वह अकेली महिला हैं जो पूरी महिलाओं को बोल रही हैं।

सभापति महोदय :- मोहले जी, बैठिये। हो गया। मैंने कहा कि टोका-टाकी न करें।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- एखर बर ज्यादा महिला मन ला टिकट दें।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय सभापति महोदय, जो लोग टोका-टाकी कर रहे हैं आप उनको नहीं बोल रहे हैं।

सभापति महोदय :- मैंने कह दिया। ननकीराम जी, मैंने उनको भी कहा है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय सभापति महोदय, यदि वह गलत चीज बोलेंगे तो बोलना पड़ेगा न। गलत चीज बोल रही हैं हमारी सरकार...।

सभापति महोदय :- बैठिये-बैठिये।

सुश्री शकुंतला साहू :- देखिये, हम लोग अजय भैय्या से तो छक नहीं सकते हैं इसलिए रंजना जी की चर्चा में टोका-टाकी कर रहे हैं।

सभापति महोदय :- रंजना जी, आप संक्षिप्त में अपनी बात कहिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- जी सभापति महोदय। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके संरक्षण में ही बोल रही हूं।

श्री नाराण चंदेल :- माननीय सभापति महोदय, आप तो महिलाओं का बहुत सम्मान करते हैं।

सभापति महोदय :- मुझसे ज्यादा सम्मान तो चंद्राकर जी करते हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, हैल्थ की बहुत महत्वपूर्ण योजना आयुष्मान भारत योजना आई और आयुष्मान भारत योजना हमारे ऐसे गरीब परिवार के भाई-बहन हैं जो बहुत बाहर जाकर तो इलाज नहीं करा पाते लेकिन इस योजना के तहत उनको में 5 लाख रूपये तक..।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति महोदय, रंजना जी अविश्वास प्रस्ताव पर एक भी बात नहीं कर रही हैं। आप अविश्वास प्रस्ताव पर बोलें। रंजना जी, आप अविश्वास प्रस्ताव पर बोलिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- हम उस पर भी बालेंगे। मैं उस पर भी बोलूंगी। यह उसी से संबंधित है।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- एहार अंते-तंते ज्यादा...।

सुश्री शकुंतला साहू :- जब हम लोग केरल गये थे तो वहां पर भी महिलाएं ऐसे ही बात कर रही थी। मोदी भाई, नरेन्दर भाई। फिर यहां वैसी ही चल रहा है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, आयुष्मान भारत योजना केन्द्र सरकार की बहुत महत्वपूर्ण योजना है और जब वह योजना छत्तीसगढ़ प्रदेश में आई तो इस योजना को तोड़-मरोड़ कर रखा गया। आपने 150 प्रकार की बीमारियों को बंद कर दिया। यह क्या हो रहा है ? गरीब परिवार के लोग इलाज कराने के लिए कहां जाएंगे ? जो कॉमन सी बीमारियां हैं जब आपने उन 150 प्रकार की बीमारियों का इलाज बंद कर दिया और बीमारी का इलाज बंद करने के बाद इसी सदन में माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी ने दोनों हाथ फैलाकर कहा कि हम यूनिवर्सल हैल्थ स्कीम लेकर आंएगे और एक बार नहीं जब-जब भी सदन की बैठक हुई तो उन्होंने दोनों हाथ फैलाकर कहा कि यह आयुष्मान योजना कोई योजना नहीं है हम यूनिवर्सल हैल्थ स्कीम लेकर आंएगे। स्वास्थ्य मंत्री जी ने कई ऐसा कहा। मैं पूछना चाहती हूं कि जब गरीब आदमी अपने जन प्रतिनिधि के पास आता है कि मुझे इलाज कराना है तो आप उसको लिखकर दे दीजिए कि आयुष्मान भारत योजना से इलाज कराना है या कोई ऐसी गंभीर बीमारी है जिसका इलाज कराना है...।

सुश्री शकुंतला साहू :- रंजना जी, छत्तीसगढ़ में पूरा इलाज हो रहा है...।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- स्मार्ट कार्ड बना है। सबके इलाज के लिए स्मार्ट कार्ड बना है।

सुश्री शकुंतला साहू :- हमारी सरकार बीमारियों का इलाज करवा रही है....।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, गुणवत्ता युक्त इलाज आदमी का भी अधिकार है वह केवल पैसे वालों का अधिकार नहीं है कि वह गुणवत्ता युक्त इलाज कराए। यह आम आदमी, एक गरीब आदमी और भारत देश के हर नागरिक का अधिकार है कि वह गुणवत्ता युक्त इलाज कराए लेकिन जब आपने आयुष्मान योजना को तोड़-मरोड़ कर रख दिया तो यह गरीब भाई-बहन कहां जाएंगे और आपकी यूनिवर्सल हैल्थ स्कीम धरी की धरी रह गई। आपने क्या किया ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सुश्री शकुंतला साहू :- रंजना जी, लोग हमारी सरकार के पास जाते हैं और इलाज करवाते हैं। आप इस सदन में झूठ मत बोलिये। सब खुश हैं। सब गरीब लोग खुश हैं। सबका अच्छे से इलाज हो रहा है। आप झूठ क्यों बोल रही हैं ?

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, यह बोल रहे थे कि आप अविश्वास प्रस्ताव के विषयों पर आ जाइये तो निश्चित रूप से मैं अविश्वास प्रस्ताव के विषयों पर ही आ रही हूं। आप यह न भूलें। ये जो मेरी बहनें खड़ी हो- होकर मुझे सहारा दे रही हैं मैं इन बहनों से ही कहना चाहती हूं कि यह शराबबंदी के पक्ष में है या नहीं है ?

सभापति महोदय :- एक सेकण्ड।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- आज गुजरात में मैथोनाल पीकर 43 लोग मर गये और अभी 53 लोग भर्ती है। गुजरात में जहां शराबबंदी है वहां अभी 53 लोग भर्ती हैं।

सदन को सूचना

सभापति महोदय :- आज की कार्य सूची पद क्रमांक 3 का कार्य पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाए। मैं समझता हूं कि सभा इससे सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

मंत्रिमण्डल के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव (क्रमश:)

श्रीमती अनिला भेंडिया :- रंजना जी, आप कौन-सी हैल्थ केयर की बात कर रही हैं ? अखड़वा काण्ड या नशबंदी काण्ड या कौन-से काण्ड की बात कर रही हैं ?

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- तोर विधानसभा में सब झन ला पीये बर मना कर दे तो अपने आप सब दुकान बंद हो जाही।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, शराब जैसे महत्वपूर्ण विषय पर हमने एक बार नहीं बल्कि कई बार सरकार का ध्यानाकर्षण किया और सरकार की एक कमेटी भी बनी लेकिन कमेटी में अभी तक न कोई बैठक हुई और न ही कमेटी ने किसी प्रकार की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

सुश्री शकुंतला साहू :- भाजपा ने तो आज तक सदस्य के लिए नाम नहीं दिया है।

सुश्री शकुंतला साहू :- शराब के ठेकेदारी को पूरा सरकारी कर दिये हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, आज सरकार की स्थिति यह है कि ठेकेदार ही नहीं बल्कि कई नये राज्य को परमिशन दी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- ठेकेदारी प्रथा से सरकार कौन लाया ?

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आज स्थिति यह है कि यह देशी शराब बेच रहे हैं और यह विदेशी शराब बेच रहे हैं और अब इन्होंने एक नई दुकान डाल दी कम्पोसिट दुकान और *Premiere Liquor Shop* । उस दुकान को गली से उठाकर आपने नेशनल हाईवे पर ले आये। आप क्या करना चाह रहे हैं ? शराब को अधिक से अधिक मात्रा में कैसे बेच सकें, यह सरकार का विजन है । सरकार का उद्देश्य शराब बंदी नहीं, बल्कि अधिक मात्रा में कैसे इनके शराब बिकें, यह सरकार का उद्देश्य है ।

माननीय सभापति जी, यदि आप रोज समाचार-पत्र उठाकर पढ़ें तो ऐसी रोज 3 से 4 घटनाएं मिलेंगी, जिसमें यह लिखा जाता है कि शराबी पुत्र ने पिता की टंगिया से की हत्या । फिर एक समाचार आता है कि शराब के नशे में पति ने पत्नी को मौत के घाट उतारा । ऐसी कई घटनाएं रोज होती है । यदि सरकार ने वादा किया है और हम बहनों से वादा किया है तो हम बहिनों से किया गया वादा तो इस सरकार को पूरा करना पड़ेगा । सरकार किसे गुमराह कर रही है, क्या करना चाहती है ? शराबबंदी जैसे महत्वपूर्ण विषय पर जो कमेटी बनी और कमेटी के अध्यक्ष का यह बयान आता है कि हमने बैठक की है, लेकिन रिपोर्ट हम चुनाव के समीप देंगे । यह उनका स्टेटमेंट आता है । मतलब आप क्या करना चाह रहे हैं ?

सभापति महोदय :- ऐसा कुछ नहीं है ।

श्री अमरजीत भगत :- रंजना जी, सभापति महोदय जी उसके अध्यक्ष हैं, आपको मालूम है ?

सभापति महोदय :- रंजना जी, ऐसा कोई स्टेटमेंट नहीं है ।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- भाजपा के लोग मीटिंग में नहीं जाते हैं ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सभापति जी, भाजपा से रंजना का भी नाम समिति में शामिल कर लीजिए । ये प्रताड़ित है, शायद शराब से बहुत परेशान है।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- अध्यक्ष महोदय के निर्णय से तकलीफ हो रही है तो आप तो कभी मीटिंग में नहीं जाती हैं । मीटिंग में क्यों नहीं जाती हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति जी, वह समिति के अध्यक्ष के लिए आरोप है, आपके लिए नहीं है ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति जी, वह स्टेटमेंट समाचार-पत्रों में आया कि सभापति ने यह स्टेटमेंट दिया है कि समिति की बैठक हुई है, लेकिन रिपोर्ट हम चुनाव के करीब देंगे ।

सभापति महोदय :- ऐसा कोई स्टेटमेंट नहीं है । आप स्टेटमेंट पटल पर रख दीजिए ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सभापति जी, बैठक हुई है, लेकिन उसमें आपका एक भी सदस्य शामिल नहीं है । माननीय सदस्या को शामिल कीजिए, बैठक हो जाएगी ।

सभापति महोदय :- आप स्टेटमेंट पटल पर रख दीजिए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- जी । सभापति जी, बिल्कुल । भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने भारत माता वाहिनी की टीम बनाई, उसमें 10 से 15 ऐसी महिलाएं हैं, जो शराबबंदी का काम करती थीं, स्वच्छता का काम करती थीं और जो असामाजिक तत्व हैं, जो गांव का वातावरण या वहां का माहौल खराब करते हैं, उनके लिए महिलाएं, महिला कमाण्डों के रूप में काम करती थी, पर आज उनका वर्चस्व खत्म हो गया है । उन महिलाओं की कोई पूछ परख नहीं है और कभी भी उन महिलाओं को बुलाकर जो उनकी जिम्मेदारी थी, उनकी जिम्मेदारी की वजह से बात नहीं की गई ।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- महिलाएं काम नहीं करना चाहेंगी इसलिए उनका वर्चस्व नहीं हैं । यदि काम करना चाहती हैं तो जारी रख सकती हैं, वह बंद क्यों कर दी ?

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सभापति जी, जब वह सामाजिक संस्था थी तो जारी रखना चाहिए था, वह बंद क्यों हो गया ? वे भाजपा के कार्यकर्ता थे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- वे पूरा भाजपा के कार्यकर्ता थे, उसमें बहुत सारे लोग कार्य कर रहे थे ।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- वे आर.एस.एस. के भी सदस्य थे ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- नये सिरे से आप लोगों के कार्यकर्ता बना लीजिए न ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- हम लोग नहीं बनाएंगे, जरूरत नहीं है ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, यह सरकार इतनी शराब बेचने लगी है, एक प्रश्न के उत्तर में जानकारी दी गई है कि केवल एक ब्राण्ड की शराब है, जो 90 प्रतिशत तक बिकी है । यानि मांग के आधार पर पूर्ति नहीं हो रही है, पूर्ति के आधार पर मांग हो रही है । यह हो क्या रहा है, सरकार ज्यादा से ज्यादा शराब बेचना चाहती है । और क्यों 90 प्रतिशत एक ही कम्पनी की शराब की बिक्री हुई है ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- रंजना, हम लोग शराब के बारे में कुछ नहीं जानते हैं ।

सभापति महोदय :- रंजना जी, समाप्त करिए ।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- रंजना जी, शराब के बारे में बहुत जानकारी है क्या ?

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- सरकार तोर क्षेत्र में कते पईसा से काम कराही ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, इस सदन में हमारे पक्ष की एक महिला है और जो इस सदन के उत्साह को बढ़ा रही हैं और अच्छा बोल रही हैं तो मुझे लगता है कि उनको बोलने का पूरा समय दीजिए ।

सभापति महोदय :- इधर एक और उधर दस ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और इधर क्या हो रहा है, मैं बोलना नहीं चाहता ।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- हम लोगों के लिए भी समय बचाना है ।

सभापति महोदय :- इनको बोलते हुए 20 मिनट हो गए हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सभापति जी, अगर वे गलत बोलेंगी तो हम विरोध करेंगे ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, दो मिनट बोलने तो दीजिए ।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- हम लोगों का भी नाम है, हम लोगों को भी बोलना है ।

सभापति महोदय :- आप प्वाइंटेड बात करिए ।

श्री नारायण चंदेल :- सभापति जी, दिक्कत यह है कि आप महिलाओं को दबा नहीं पा रहे हैं, जबकि आप क्षमता वाले व्यक्ति हैं ।

सभापति महोदय :- आप संक्षेप में बोलकर अपना भाषण समाप्त कर दें।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, उनकी सफलता की गारंटी यही है कि इधर से सारे लोग खड़े होकर उसके विरोध में बोल रहे हैं । मतलब एक अकेली भारी है सबके ऊपर । एक अकेली सबके ऊपर भारी है । यह उनके भाषण की सफलता है।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- वह सक्षम हैं, आप महिला की ताकत को कम क्यों कर रहे हैं ?

श्री नारायण चंदेल :- धर्मजीत जी, सत्तू भैया महिलाओं को नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं । यह तो दिक्कत वाली बात है ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- यह तो प्रबोधन सत्र का कमाल है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, आपका अनुभव भी काम नहीं आ रहा है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, वह तो आपके बारे में भी बोली थीं कि आप कमेटी के अध्यक्ष हैं और कोई फैसला नहीं कर पा रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, कई बार अपने कान को भी अच्छा लगना चाहिए और वैसा वह बोल रही हैं तो कम से कम उनको आप बोलने दीजिए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, एक बहुत सरल सा पैमाना है कि हमारे विपक्षी दल की एक महिला खड़े होकर बोलीं, उधर से सारी महिलाएं उनका मुकाबला कर रही हैं मतलब रंजना जी जीत गईं मतलब बढ़िया भाषण दे रही हैं। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- ज्यादा लोग जीते या कम लोग जीते ?

श्री अमरजीत भगत :- धरम भईया, मैं आपके सपोर्ट में बोल रहा हूं। Today is big day. our sister, our women's leader growing. speak very attractive. (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अब तो सरकार ने भी तारीफ कर दिया, आप उनको बोलने दीजिये।

श्री अमरजीत भगत :- मैं महिला लीडरशीप की बहुत तारीफ किया हूं। बहुत अच्छा है, बढ़ा अच्छा करेगी।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय जी, मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान फेल और भ्रष्टाचार का बड़ा केन्द्र बना है। इस सरकार ने तय किया कि वर्ष 2019 से 15 जून, 2022

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कुपोषण मुक्ति के लिए सरकार 6 प्रकार की योजनाओं से मदद मिलेगी। जिसके माध्यम से लगभग 19 अरब 35 करोड़ 62 लाख 29 हजार 413 रूपये व्यय करने हेतु प्रावधान किया गया था। इसमें केन्द्र सरकार ने 2 हजार करोड़ रूपये, डी.एम.एफ. फण्ड से 5 सौ करोड़ रूपये और राज्य सरकार ने 15 करोड़ रूपये खर्च किए। जिसमें केन्द्र सरकार ने भी पैसे भेजे, आपने डी.एम.एफ. फण्ड का भी उपयोग किया, इतने पैसे खर्च करने के बाद भी आप खुलकर कहते हैं कि आपकी भा.ज.पा. सरकार ने ऐसा किया। आप तो डी.एम.एफ. फण्ड का ये उपयोग कर रहे हैं, जिसमें पूरा भ्रष्टाचार हो रहा है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- 7.3 प्रतिशत कुपोषण कम हो रहा है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, राज्य सरकार का 15 सौ करोड़ रूपये, यानि 3 प्रकार की योजनाओं को मिलाकर मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान के लिए एक अभियान चलाया गया। आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि इतने पैसे खर्च करने के बाद, इतना अभियान और इतना समय देने के बाद भी हमारा छत्तीसगढ़ प्रदेश 30वें स्थान पर है। माननीय सभापति महोदय, यह हम लोगों के लिए बहुत शर्म की बात है। सरकार ने भी इस बात को भी स्वीकारा है कि मार्च, 2021 में कुपोषण की दर 15 प्रतिशत थी और जुलाई, 2021 में 5 प्रतिशत बढ़कर 19.86 प्रतिशत कुपोषण दर हो गया है। यह आपके प्रश्न के जवाब में आया है। माननीय सभापति महोदय, यह सरकार कर क्या रही है ? यह केवल अपना समय खराब कर रही है। कुपोषण में बहुत भ्रष्टाचार है। जिन बच्चों को सुपोषित करना था, जिन बच्चों को खाना और भोजन दिए जाना था, इसमें भी सरकार फेल निकली और मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान में पूरी तरह का भ्रष्टाचार हुआ है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- इसीलिए तो रेडी टू इट में चेंज किया गया है।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय जी, इतना अभियान चलने के बाद हमारे बस्तर के सुकमा, कोण्डागांव, बेमेतरा आज भी ये ऐसे जिले हैं, जहां पर कुपोषण की दर बढ़ी है। माननीय कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जी, जो यहां पर भाषण दे रहे थे, वह सुपोषण अभियान की बात कर रहे थे। मैं उनकी भी जानकारी में लाना चाहता हूं कि पूरे प्रदेश में सबसे अधिक उनके जिले में 10,248 ऐसे कुपोषित बच्चें हैं, जिनके पीछे अभी तक कोई काम नहीं हुआ है। इन बच्चों की संख्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। क्योंकि इन बच्चों के पीछे कोई काम नहीं किया गया है सरकार ने इनके पैसों में भ्रष्टचार करके सरकार अपने लिए अपना पेट भर रही है। माननीय सभापति महोदय, आज छत्तीसगढ कुपोषण की दर इसलिए भी पहले स्थान पर है। क्योंकि इस सरकार ने 31.3 प्रतिशत अपना क्रायटेरिया फिक्स किया हुआ है। महिला सशक्तिकरण की बात करने वाली सरकार, आपको सुनकर आश्चर्य होगा, एक प्रश्न के उत्तर में जवाब आया, मेरे पास कोई भी अलग से ऐसी कोई जानकारी नहीं है, केवल विभाग के प्रश्नों के उत्तर से ही यह जानकारी मिली है कि एनिमिया से पीड़ित महिलाओं की संख्या पहले 47 प्रतिशत थी, जो महज कुछ माहों में बढ़कर 61 प्रतिशत हो गई है। मुख्यमंत्री जी बार-बार कहते हैं कि

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिस प्रदेश में 47 प्रतिशत एनिमिया है, उसका भगवान मालिक है। वास्तव में इस प्रदेश का भगवान ही मालिक है, क्योंकि महिलाओं में एनिमिया की दर 47 प्रतिशत से बढ़कर 61 प्रतिशत हो गया है। महिलाएं कहां पर सुरक्षित है ? महिलाओं, बच्चों और इनके स्वास्थ्य की बात करने वाली सरकार महिला समूह से ...।

सभापति महोदय :- रंजना जी, कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- महिलाओं की बात कर रही हैं।

सभापति महोदय :- बात सुन लिया। सब बातें आ गई है, भाई।

श्री धर्मजीत सिंह :- साहब एक-एक पर्दाफाश कर रही है। बोलने दीजिये न।

सभापति महोदय :- सब बातें हो गई है, रिपीटेशन हो रहा है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- वैसे भी उनको बोलते हुए बहुत समय हो गया है।

सभापति महोदय :- सब बातों का रिपीटेशन हो रहा है, पुनरावृत्ति हो रही है, और कुछ नहीं है।

डॉ. रश्मि आशीष सिह :- ऐसे चर्चा में तो महीना भी बदल जायेगा, जुलाई खत्म होकर अगस्त आ जायेगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- एक-एक पर्दाफाश कर रही है । बोलने दीजिए ना ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- एक ही झन को मत दीजिए ना ।

सभापति महोदय :- सब बातें वही है, रिपिटेशन हो रहा है ।

डॉ.लक्ष्मी ध्रुव :- टाईम इनका बहुत हो रहा है । बाकी भी बोलेंगे ।

श्रीमती शकुंतला साहू :- ऐसे में चर्चा में तो महीना भी बदल जायेगा । जुलाई खत्म होकर अगस्त आ जायेगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- बहुत बढ़िया बोल रही है । आप इधर से भी महिलाओं को बोलने के लिए मौका दे दीजिए । कौन मना किया है ? कितना बोलेंगे, यह पता चल जायेगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, पूरे सदन में एक ही आवाज तो कर्णप्रिय है और जिनका कर्णप्रिय होता है, उसको कभी रोकना नहीं चाहिये, इसलिए रंजना जी को आप बोलने दीजिए ।

श्री अमरजीत भगत :- बृजमोहन भईया, ऐसा कहकर आप बाकी लोगों को...(व्यवधान)

सभापति महोदय :- सभी को समय का ख्याल रखना चाहिये । (व्यवधान)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, हमारे यहां 29,775 मिनि और ऐसे दो आंगनबाड़ियों की संख्या है । माननीय सभापति महोदय जी, 889 ऐसे आंगनबाड़ी है, जो किराये के भवन में संचालित है । दो वर्ष कोरोना का चला, दो वर्ष बाद जब आंगनबाड़ी खुली तो सारे भवनों की स्थिति जर्जर थी...। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ.लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोग तो टूटा-फूटा छोड़कर चले गये थे ।

सुश्री शकुंतला साहू :- आपकी सरकार 15 साल से चल रही थी । यह जर्जर भवन आपके भारतीय जनता पार्टी की सरकार के समय का है ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, मजे की बात यह है कि 6,45,000 रूपये के हिसाब से एक-एक आंगनबाड़ी भवन बनने थे । मंत्री जी ने अपने उत्तर में दिया कि बहुत से आंगनबाड़ी भवन किराये से संचालित है । इन्होंने निर्देशित किया कि नये आंगनबाड़ी भवन बनाये जाये, लेकिन इनके विभाग की कमजोरी के कारण 6,45,000 में जो भवन बनने थे, आज भी ऐसे बहुत से भवन है, जिनके कार्य शुरू भी नहीं हुये, क्योंकि इन्होंने मनरेगा से कन्वरशियेंस किया है । मनरेगा के पैसे इनको नहीं मिल रहे हैं । सिर्फ 1 लाख रूपया ....(व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- लेकिन 6,45,000 रूपये में तो बन रह है । आप लोग तो टूटा-फुटा छोड़कर चले गये थे । (व्यवधान)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- उनको बनाना शुरू नहीं किया ।

डॉ.लक्ष्मी ध्रुव :- न केवल आंगनबाड़ी, बल्कि स्कूलों को भी टूटा-फुटा छोड़कर गये थे ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- आपकी लापरवाही के कारण छोटे-छोटे बच्चे आज मंच पर बैठने को मजबूर है ।

सुश्री शकुंतला साहू :- आपकी सरकार ने बच्चों के लिए कुछ नहीं किया । इसीलिए बच्चे लोग जमीन में बैठ रहे हैं । आप सदन को गुमराह मत कीजिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, संसदीय सचिव जी को खड़े होकर बोलने का अधिकार नहीं है । यह विधान सभा का निर्णय है ।

सुश्री शकुंतला साहू :- सब को अधिकार है । सब को बोलने का अधिकार है । पहले टोकना था भईया, बीच में क्यों टोक रहे हो । हम लोग पहले जो शुरूआत किये थे तो आप लोग बोलते कि बोलने का अधिकार नहीं है ।

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री जी बोल सकती है तो वह क्यों नहीं बोल सकती । बोलने का अधिकार है । चलिये, सदस्य के नाते बोलेंगी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप बिल्कुल यह गलत व्यवस्था दे रहे हैं । बोल ही नहीं सकते ?

सभापति महोदय :- सदस्य के नाते बोल सकते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- इसी सदन में तय हुआ है । आप कैसे बोल देंगे ?

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- इतना टाईम हम लोगों को बोलने के लिए दीजिएगा ।

श्री अमरजीत भगत :- धर्म भईया, यूअर वर्जन इस रांग । एव्हरी पर्सन इज स्पीक इन फ्रेंडली ।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें । बहुत समय हो गया है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय जी, स्पष्ट तौर पर कहा था कि महिला स्व-सहायता समूह का कर्जा माफ । प्रदेश में 81,955 महिला स्व-सहायता समूह जो बिहान समूह के रूप में काम करती है । सरकार ने इस वादे के साथ आज भी जिनकी स्थिति यह है कि 5841 समूहों का कर्ज 11 करोड़, 1 लाख 19 हजार 982 रूपये माफ इन्होंने किया है । माननीय सभापति महोदय जी, मजे की बात यह है कि यह 11 करोड़ का कर्ज माफ कर रहे हैं और 10 करोड़ रूपये इन्होंने एडवजटाईज में खर्च किये हैं । माननीय सभापति महोदय जी, सरकार को हो क्या गया है, सभी विधवा बहनों को पेंशन की बात सरकार ने कही थी । सर्ववृद्धा पेंशन की बात सरकार ने कही थी । प्रदेश में जितनी ऐसी विधवा बहने हैं, ऐसी परित्यक्ता बहने हैं, जिन्हें पेंशन की पात्रता होनी चाहिये, लेकिन आज स्थिति यह है कि ...(व्यवधान)

सुश्री शकुंतला साहू :- हमारी सरकार ने तो 13 हजार करोड़ रूपये का कर्ज माफ किया है । आपकी सरकार ने तो कुछ नहीं किया है, जो घोषणा पत्र में कहा था, वह पूरा किया है ।

डॉ.लक्ष्मी ध्रुव :- क्या 15 साल में एडवरटाईज नहीं किया गया । बड़े-बड़े पोस्टर नहीं लगाये गये । मड़ई नहीं मनाया गया ।

सुश्री शकुंतला साहू :- इन लोग बिजली तिहार मनाते थे, बोनस तिहार मनाते थे...व्यवधान आज 13 हजार करोड़ रूपये का कर्ज माफ हुआ है तो इन लोगों को मिर्ची लग रही है । 15 साल में कभी भी महिलाओं का कर्ज माफ नहीं हुआ ?

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- जिन बहनों को पेंशन की पात्रता है, जिन बुजुर्गों को पेंशन की पात्रता है, छैः से सात महीने उनको हो जाते हैं, लेकिन उनको समय पर पेंशन नहीं मिलता है । यह विभाग की लापरवाही के कारण । पर कहीं पर भी ऐसे गंभीर विषयों पर पंचायत मंत्री का ध्यानाकर्षण नहीं हुआ है।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशीष सिंह :- हम लोग उनको बताते हैं कि केन्द्र सरकार जनगणना नहीं करा रही है। नई जनगणना नहीं हुई है इसलिए नये नाम नहीं जुड़ पा रहे हैं। यह हम लोग बताते हैं।

सभापति महोदय :- रंजना जी, 32 सदस्यों को और बोलना है। आपको बोलते हुए आधा घंटा हो गया है। कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, सरकार की बहुत महत्वपूर्ण योजना चली जिसे हम स्किल डेवलपमेंट कहते हैं। यह कौशल विकास उन्नयन योजना है। इन्होंने अपने प्रश्न के जवाब में कहा, यह योजना 02 साल बंद पड़ी रही क्योंकि कोरोना की वैश्विक महामारी थी। हमने भी स्वीकार किया कोरोना वैश्विक महामारी थी जहां पर social desting का पालन करना था तो हो सकता है कि इसलिए इस योजना को नहीं चलाया गया। लेकिन जब 2022 में इस योजना को चलाया गया तो केवल 1199 लोगों को प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें 129 प्रकार की विधाये में केवल 1122 लोगों का

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रशिक्षण दिया गया। एक भी ऐसे लोग नहीं हैं जिन्हें रोजगार दिया गया हो या कोई भी ऐसी प्लेसमेंट कंपनी हमारे यहां नहीं आई जो हमारे युवाओं के स्किल को निखारकर उन्हें तकनीकी शिक्षा देकर उन्हें बाहर प्लेसमेंट दिया जा सके। यह सरकार की नाकामी है। आपने 129 प्रकार की विधाओं में 1100, 1200 युवाओं को भी नौकरी नहीं दिला पाये।

माननीय सभापति जी, अभी माननीय लोक निर्माण मंत्री जी बैठे थे। सुगम सड़क योजना इतनी महत्वपूर्ण योजना है, यह भी लोगों के रोजगार से जुड़ी है। नवयुवाओं को रोजगार दिलाने के लिए सरकार ने कहा कि हमने सुगम सड़क योजना की शुरूआत की है। पहले साल इन्होंने इसकी शुरूआत की। पहले साल तैयारी की, दूसरे साल शुरूआत की। अब 03 साल हो गये, सुगम सड़क योजना के एक भी पैसे विभाग में अभी तक नहीं आये हैं।

सुश्री शकुंतला साहू :- पैसे आ गये हैं, आप गलत बोल रही हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- पैसे आ गये हैं, यह गलत जानकारी है। ..(व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आ गये हैं।

सुश्री शकुंतला साहू :- आप गलत बोल रही हैं, हमारे बलौदाबाजार में पैसा भी आया है।

सभापति महोदय :- शकुंतला जी, आप बैठिये।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, आज भी अधिकारी टेंडर लगाने से डरते हैं। उस योजना में युवाओं का पैसा फंसा है। आप उनको कहां से पैसा वापिस करेंगे।

सुश्री शकुंतला साहू :- सब युवा टेंडर लगा रहे हैं, आप गलत बोल रही हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- टेंडर में भाजपा के लोगों को ही काम मिल रहा है।

सभापति महोदय :- शकुंतला जी, आप बैठिये।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- शकुंतला तैं मंत्री बन जाबे ओ, बहुत जल्दी बन और अच्छा जवाब देबे। अभी सुन।

श्री धर्मजीत सिंह :- रंजना साहू जी बहुत बढ़िया भाषण दे रही हैं, वह तो रि-एक्शन इधर से समझ में आ रहा है।

सुश्री शकुंतला साहू :- भैया, हर चीज गलत बोल रही हैं, इसलिए हम लोग बोल रहे हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, सुगम सड़क योजना में सरकार की मंशा गलत नहीं थी, लोगों को रोजगार देने के लिए शुरूआत की गई थी।

सभापति महोदय :- रंजना जी, सक्षिप्त में बोलिये, अब हो गया। अभी 32 सदस्य बोलने शेष हैं।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी ने सरकार ने जल जीवन मिशन जो केन्द्र सरकार की महती योजना है और इस योजना को 2023-2024 में पूर्ण करना था। राज्य ने तो अपना राज्यांश नहीं दिया। केन्द्र के पैसे में भी इस सरकार ने भ्रष्टाचार किया और हर जिले में 3 प्रतिशत

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

sectioned amount लिया जा रहा है। मैं आपको एक छोटी सी घटना बताना चाहती हूं। पूरे सदन के सामने इस विषय को इसलिए भी रखना चाहती हूं एक महिला से sectioned amount मांगा गया। वह महिला रोते बिलखते हुए जब हमारे पास आई तो इस बात का खुलासा हुआ। पी.एच.ई. विभाग के अधिकारी ने उससे कहा कि हम आपको काम देंगे। उसने पहले कहा कि आप पहले 3 प्रतिशत sectioned amount जमा करवाईये। मैंने इनके अधिकारियों को फोन किया। कौन सा sectioned amount किसे कहते हैं और वह कहां का 3 प्रतिशत पैसा जमा करेगी? उन्होंने कहा कि मेडम हमें तो इस बात का पता नहीं है। मैंने उन्हें कहा कि यदि आपकी हिम्मत है तो एक रुपया आप इस महिला से निकलवाकर दिखा दें। माननीय सभापति महोदय जी, यह हो क्या रहा है? हर बात में कमीशन, भ्रष्टाचार हो रहा है। यह सरकार खेल खेलती है क्या?

सुश्री शकुंतला साहू :- रंजना जी, बी.जे.पी. के समय का कमीशन चालू है इसलिए अभी तक बंद नहीं हो रहा है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- उस क्षेत्र के विधायक को भी जाता होगा।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- यह किससे कमीशन ले रही है। एक महिला जो काम करना चाहती है, एक महिला जो उनके विभाग में पहुंची कि मुझे काम करना है, उस महिला से 3 प्रतिशत का कमीशन मांगा जाता है। यहां पर मेरी बहनें बैठी हैं, महिलायें बैठी हैं। महिलायें आगे बढ़ना चाहती हैं, आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं, मजबूत और सक्षम बनना चाहती हैं, ऐसी महिलाओं से 03 प्रतिशत का कमीशन मांगा जाता है।

सभापति महोदय :- माननीय रंजना जी समाप्त करिये। माननीय धनेन्द्र साहू जी।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, हमारी बहनों से आंगनबाड़ी की बहनों से, मितानिनों से सरकार वादा करती है कि हम आपकी कलेक्टर दर पर नियुक्ति करेंगे। लेकिन आज भी हमारी ऐसी बहनें जो रोज हड़ताल पर बैठती हैं, पूरा विभाग का काम ठप्प है। बहनें आये दिन हड़ताल पर रहती हैं। चाहे वह मितानिन हों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हो, चाहे वह आंगनबाड़ी की सहायिका हो। उनसे कहा जाता है कि हमारी सरकार आयेगी और हम आपको कलेक्टर दर पर रखेंगे। हम आपको वह पैसा देंगे जो कलेक्टर दर पर दिया जाता है। लेकिन आज भी इन बहनों से किये हुए वायदे पूरे नहीं हुए।

संसदीय सचिव (सुश्री शकुंतला साहू) :- यह आपके समय में होता था। आपने जाकर घोषणा कर दी और उसके बाद उसको वापस ले लिये थे। समय में (व्यवधान) उसके बाद भी वापस ले लिये थे।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, सरकार ने (व्यवधान) मेडिकल कॉलेज को महंत स्पेशिलिटी हॉस्पिटल के रूप में बदला जायेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- रंजना जी समाप्त करें। कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, जी। यह बस मेरा आखिरी विषय है।

माननीय सभापति महोदय, हमारा इन महत्वपूर्ण विषयों को रखने का तात्पर्य यही है कि हम 3.5 साल से सरकार का ध्यानाकर्षण करते आये हैं। लेकिन इस ओर जब सरकार का ध्यानाकृष्ट नहीं हुआ तो आज हम इस स्थिति पर है और जनता के दम पर और जनता के बल पर आज हमने सरकार के प्रति अविश्वास प्रस्ताव लाया है। यदि सरकार की हिम्मत है, यदि वास्तव में सरकार सच को जानना चाहती है तो सरकार सामने आये, अपनी बातों को रखें, चर्चा में शामिल हो। अब मैं यदि एक अकेली खड़ी हूं और आप सब खड़े हैं। क्या आप नहीं जानते कि आपके यहां कितना भ्रष्टाचार है? आप नहीं जानते कि जल जीवन मिशन में क्या काम हो रहा है? आप नहीं जानते कि मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान में क्या काम हो रहा है? हर ओर भ्रष्टाचारी है। आप चाहे जनपद पंचायत ले लें, चाहे जिला पंचायत ले लें, आप जहां पर भी जाये वहां भ्रष्टाचारी है। लेकिन आप क्यों चुप बैठे हैं?

सभापति महोदय :- आपकी सारी बातें आ गयी। माननीय धनेन्द्र साहू जी।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, जब ऐसी स्थिति, परिस्थिति बनी है तो इसके कारण हमें जो अविश्वास प्रस्ताव लाना पड़ा है तो सरकार को निश्चित रूप से तुरंत अपनी कुर्सी छोड़ देनी चाहिये। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिये धन्यवाद्। (मेजों की थपथपाहट)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- अभी यह सरकार 12 साल और चलेगी।

श्री शिवरतन शर्मा :- धनेन्द्र भैया, आप वरिष्ठ सदस्य हो। अंतर आत्मा की आवाज पर बोलना। आप जो लॉबी में, जो बाहर बोलते हो, उसको प्रकट करना। प्रदेश की जनता के हित में अपनी पीड़ा को प्रकट करना।

श्री धनेन्द्र साहू:- आवाज अंतर आत्मा से नहीं निकलती है। वह चाहे मेरी हो या आपकी हो।

श्री अमरजीत भगत :- आज सदन में महिला सशक्तिकरण की झलक देखने को मिली है।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- अंतर आत्मा की आवाज में राष्ट्रपति के चुनाव में दो लोग वोट डाल दिये थे (हंसी)। उनकी खोजबीन चल रही है। इधर खोजे कि उधर खोजे, यह चल रहा है। दो लोगों ने राष्ट्रपति चुनाव में वोट डाला है। अब वह कौन है, वह तो मैं देख के समझ रहा हूं कि कौन-कौन है।

श्री अमरजीत भगत :- डॉ. बांधी What you saying? Repeat again.

श्री धनेन्द्र साहू (अभनपुर) :- माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार को इस प्रदेश में शासन करते हुए लगभग पौने चार साल हो गये हैं। विपक्ष के द्वारा यह पहला अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। हम लोग समझते थे कि इस अविश्वास प्रस्ताव में काफी आक्रामक ढंग से काफी तथ्यात्मक और ठोस बातें आयेंगी। विपक्ष का संख्या बल तो है ही नहीं, इन्हें सिर्फ चर्चा करनी है। लेकिन इसके बावजूद भी अभी तक जितने भी वक्ताओं ने अपनी बात रखी है इसे देखकर यह लगता है कि विपक्ष पूरी तरह से

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मुद्दाविहीन हो गयी है। यहां विधान सभा सदन में सारे बिन्दुओं पर कभी न कभी, किसी न किसी रूप में चर्चाएं हो चुकी है। विपक्ष के द्वारा कोई ऐसे नए आरोप, कोई ऐसे तथ्य प्रस्तुत नहीं किया जा सका।

माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहूंगा कि हमारी सरकार पर, हमारे मुख्यमंत्री पर, हमारी सरकार के मंत्रिमण्डल पर लोगों का विश्वास है। उसी का सबसे प्रमाण तो जनता देती है। जनता ने हमें, सारे उप चुनावों में कांग्रेस को जिताया, यह सबसे बड़ा प्रमाण है। हमारे नगरीय निकाय चुनावों में, नगर पालिकाओं में, नगर पंचायत में, हमारे निगमों के चुनाव में, इन लोगों का सफाया हो गया। ग्राम पंचायतों में भी, चाहे वह ब्लॉक पंचायत हो, जनपद पंचायत हो, जिला पंचायत हो, इसमें भी कांग्रेस के लोग जीतकर आते हैं। यह जनता का विश्वास है। यह हमारी सरकार के ऊपर जनता का सीधा व्यक्त किया गया विश्वास है।

माननीय सभापति महोदय, आज पूरे देश में छत्तीसगढ़ मॉडल की चर्चा होती है, चाहे हमारे यहां के गोधन न्याय योजना की बातें हो। राजस्थान से, मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री और पशुधन मंत्री आकर हमारे बनचरौदा के गौठान को देखते हैं। आज यदि महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश में यह बात होती है और मध्यप्रदेश में भी गोबर खरीदी की बात होती है तो यह हमारी सफलता है। यदि आज देश में लोग हमारे धान खरीदी के सिस्टम की तारीफ करते हैं, तो यह हमारी सफलता है। यह हम पर जनता का विश्वास है। हमारा यही सबसे बड़ा प्रमाण है। माननीय सभापति महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि मैं छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के हर संघर्ष में जुड़ा रहा। मुझे इस बात का सौभाग्य है। जब भी हम लोग मध्यप्रदेश की विधान सभा में छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण की बात करते थे, चर्चा करते थे तो हमेशा हम लोग उन महान पुरूषों का उल्लेख जरूर करते थे। जो छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के स्वप्न दृष्टा थे डॉ. खूबचंद बघेल जी, पं. सुन्दरलाल शर्मा जी, बैरिस्टर छेदीलाल जी, ठाकुर प्यारे लाल जी। हम उनको स्मरण करते थे। उन्होंने इस छत्तीसगढ़ राज्य का सपना देखा और हम लोग ऐसे छत्तीसगढ़ राज्य की परिकल्पना पर चर्चा करते थे। जब से यहां "अमीर धरती के गरीब लोग" की कहावत बनी हुई थी।

माननीय सभापति महोदय, वर्ष 2000 में हमारा छत्तीसगढ़ राज्य बन गया, लेकिन वर्ष 2000 के बाद पहली बार आज छत्तीसगढ़ के किसानों को यह महसूस हो रहा है कि वर्ष 2000 के बाद, हमारी वर्ष 2018 की जो सरकार बनी है, वह किसानों की सरकार बनी है। (मेजों की थपथपाहट) किसान इस बात पर अपने विचार, विश्वास व्यक्त कर रहे हैं। पहली बार लोगों को यह लग रहा है कि पहली बार सरकार में हमारे एक किसान बैठे हैं एक सही छत्तीसगढ़िया बैठे हैं। हम लोग एक विकास के प्रति उपेक्षा, असमानता, भेदभाव दो कारणों से छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण की बात करते थे। इसलिए अलग राज्य की बात करते थे। दूसरी बात, सांस्कृतिक शोषण की करते थे जो हमारी सांस्कृतिक अस्मिता है, जिसकी बात अभी आदरणीय चौबे जी ने कही। उसकी बात करते थे। इस छत्तीसगढ़ में ऐसा लगता था कि आम आदमी को छत्तीसगढ़िया कहलाने में भी तकलीफ महसूस होती थी। हम अपने तीज, त्यौहार,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

परब, खान-पान, अपनी वेशभूषा, बोली इन सब को जितना सम्मान देना चाहिए। यहां यह वातावरण निर्मित था कि हम लोग सम्मान नहीं दे पा रहे थे। आज यदि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी, मुख्यमंत्री निवास में हरेली, तीजा का तिहार मना रहे हैं कभी किसी ने कल्पना की थी। यह हमारी संस्कृति संवाहक के रूप में है, यह हमारी परम्पराएं हैं ऐसा नहीं, स्वयं उस पर कर रहे हैं। वह गेड़ी खेल रहे हैं तो हमारी युवा पीढ़ी को संदेश दे रहे हैं यदि वह भंवरा चला रहे हैं तो हमारे बच्चों को यह संदेश दे रहे हैं कि यह हमारे छत्तीसगढ़ का लोक, खेलकूद है। हमारी यहां की सारी परम्पराएं हैं। राजगीत के बारे में बताना चाहूंगा । मैं आचार्य नरेन्द्र द्विवेदी जी को प्रमाण करते हुए कहूंगा कि उन्होंने राजगीत कब से लिखा था, लेकिन किसी ने यह आवश्यकता महसूस नहीं की कि उस गीत को राजगीत के रूप में सम्मान दे सकें। आज हम लोगों को बड़ी प्रसन्नता होती है। हम जब स्कूलों में जाते हैं वहां पर छोटे-छोटे बच्चे राजगीत अरपा पैरी के धार को गाते हैं। यह हमारी पहचान, हमारी अस्मिता है। हमारा राजिम जिसको आपने कुम्भ नाम दे दिया था। आज फिर से हमारा राजिम माघी पुन्नी के नाम से स्थापित हो चुका है। हमारी वह तमाम् परम्पराएं स्थापित हुईं हैं। हमारा हरेली तिहार किसानों का सम्मान है। गांव का सम्मान है। हम लोग हर साल अक्ती का तिहार मनाते हैं, लेकिन सरकारी तौर पर हर ग्राम पंचायत के माध्यम से मनाया जाता है। यह सम्मान किसानों का सम्मान है। उसी दिन से हमारी नई खेती किसानी की शुरूआत होती है। यदि यह सोच है तभी यह संभव है। जब हमारी सरकार छत्तीसगढ़ के एक-एक किसान और एक-एक जनता के बारे में सोचती है। तब जाकर यह संभव है। सिर्फ यह कहने की बातें नहीं हैं। यह सिर्फ दिखावे की बातें नहीं है। हमारी सरकार ने किसानों को सम्मान दिया है, खेती किसानी को भी सम्मान दिया।

माननीय सभापति महोदय, मैं घोषणा पत्र के संबंध में कहना चाहूंगा। घोषणा पत्र बनाते समय आप भी थे और सब कांग्रेस की शीर्षस्थ नेता थे। हम लोगों ने देखा कि पिछले 15 सालों तक भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। किसान कर्ज में डूबे जा रहे थे, उनका खेत बिक रहा था खेती का रकबा घट रहा था, धान का रकबा घट रहा था। किसान अपना जमीन बेचकर मजदूर बन गये थे।

समय :
6:00 बजे

श्री कवासी लखमा :- सभापति महोदय, विपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। कोई नहीं है।

श्री धनेन्द्र साहू :- सभापति महोदय, लोग खेती किसानी से....।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- कवासी जी, हम लोग धनेन्द्र भैया की पीड़ा को आपसे ज्यादा समझते हैं। वे [XX][5] मजबूरी में बोल रहे हैं, बोलने की इच्छा नहीं है, मजबूरी में बोल रहे हैं। हम इधर की पीड़ा भी समझते हैं और उधर की पीड़ा भी समझते हैं। हम लोग दोनों पीड़ा से वाकिफ हैं।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, मैं कहना चाहूंगा...।

सभापति महोदय :- कोई सदस्य [XX] नहीं है। माननीय धनेन्द्र साहू, बड़े सम्मानित साथी हैं। मैं [XX] शब्द को विलोपित करता हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने [XX] नहीं कहा है। हमारे वरिष्ठ सदस्य हैं। मैंने उनकी पीड़ा कहा है।

सभापति महोदय :- कार्यवाही में [XX] है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- यह अपने इतने साल का अनुभव बता रहे हैं।

सभापति महोदय :- आपने कहा है, मैंने उनको विलोपित कर दिया।

श्री अरूण वोरा :- शर्मा जी, आप अंतर्यामी हैं क्या, जो उनकी पीड़ा को समझ रहे हैं। (हंसी) इनकी कोई पीड़ा नहीं है। सरकार की तरफ से कितना खुलकर बोल रहे हैं, आप देखिए।

श्री धनेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, इनकी 15 साल की कुशासन से लोग खेती किसानी से उन्मुख हो रहे थे। कर्ज में डूब रहे थे, ऐसा कोई दिन नहीं जाता था, जब किसानों की आत्महत्या की बात, अखबारों में या मीडिया में नहीं छपते रहे होंगे। हम लोगों ने देखा है। मैं अनेक घरों में स्वयं गया हूं। हमारे नेता भी गये हैं। हम लोगों ने जाकर देखा है, हम लोगों ने उन किसानों की पीड़ा जानने की कोशिश भी की है। आखिर वे क्यों आत्महत्या कर रहे हैं। उनकी किसानी आज क्यों घाटे का कारोबार हो गया है। मैं इस बात को इसलिए कहना चाह रहा हूं, यदि हमारे घोषणा पत्र में कर्ज माफी की बातें हुई, यदि धान की कीमत 2500 रूपये क्विंटल देने की बात हुई, यदि सिंचाई कर माफी करने की बातें हुई। हमारे कांग्रेस के नेताओं को उसी गरीब किसान की झोपड़ी से विचार आया। उसके बाद वह घोषणा पत्र का हिस्सा बना। यदि हमारी सरकार बनती है, यदि इस प्रदेश के किसान हमें जनादेश देते हैं तो सबसे पहले हम लोग किसानों के लिए काम करेंगे। जो आज फांसी में झूल रहे हैं, लोग जहर खाकर आत्महत्या कर रहे हैं, उनको आत्महत्या न करना पड़े। आज खेती घाटे का कारोबार बन गया है, आज खेती की जमीन बिक रही है। वह न बिके। खेती लाभ का व्यवसाय बन सके, फायदे का काम बन सके। इसलिए इसको जन घोषणा पत्र में प्रमुख रूप से सम्मिलित किया गया। हमारे राहुल गांधी जी के निर्देश पर तत्काल उसी दिन सारे किसानों का कर्ज माफ किया गया, वादा तो 10 दिन का था। धान की कीमत 2500 रूपया, बिजली बिल आधा, सिंचाई कर माफी की घोषणा हुई, किसानों के लिए ऐसे अनेक बड़े-बड़े कार्य किए गए। आज हम लोग केवल कर्ज माफी या धान की कीमत 2500 रूपये क्विंटल देने की बात नहीं करते हैं। आज राजीव गांधी किसान न्याय योजना बनानी पड़ी, क्यों बनानी पड़ी ? केन्द्र

---

5 [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सरकार को बर्दाश्त नहीं हुआ, उन्होंने रोक लगा दी। यदि आप समर्थन मूल्य से एक रूपया भी ज्यादा देते हैं तो हम आपकी धान नहीं खरीदेंगे। यह इस तरह से तुगलकी फर्मान आता है। उसके बाद हमारी सरकार ने, माननीय मुख्यमंत्री जी ने राजीव गांधी किसान न्याय योजना बनाकर प्रति एकड़ 9 हजार रूपए देकर अपने उस वादे को 2500 रूपये क्विंटल देने का निर्णय किया। आज कृषि के क्षेत्र में बहुत सारी कृषि समितियां बनाई गयी। धान खरीदी की सुविधा को और बेहतर किया गया। आज किसानों को समय पर धान खरीदी का भुगतान हुआ। उचित दाम मिला। आज हमारे शासन द्वारा सभी तरह से सारी व्यवस्था किसानों के पक्ष में किया गया। माननीय सभापति महोदय, आज किसानों के हक में गोधन न्याय योजना, गौठान योजना बनाई गयी है। हमारी सबसे बड़ी समस्या फसल चराई की होती थी, नियंत्रण नहीं होता था। हम कितना भी तार, फेंसिंग कर लें । लेकिन आज एक गौठन की योजना ने हमारी फसल चराई की व्यवस्था को बेहतर ढंग से हल किया है। आज गोधन न्याय योजना पशु पालकों के लिए लाभ का व्यवसाय बन गया है। उसमें अवश्य ही बहुत सारे सुधार की आवश्यकता हो सकती है। बहुत सारी कमियां हो सकती है। लेकिन सरकार की नीयत में, सरकार की मंशा में कहीं कोई कमी नहीं है। यह सब खेती-किसानी को मजबूत बनाने की दिशा में काम हुआ। माननीय सभापति महोदय, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने एक बड़ा ऐतिहासिक फैसला लिया । वह है राजीव गांधी भूमिहीन कृषक श्रमिक न्याय योजना। आज हमारे ऐसे बहुत से किसान हैं जो गांव में रहते हैं, खेती-किसानी करते हैं । उनके पास जमीन नहीं है, उनके परिवार के पास जमीन नहीं है । वे दूसरे के खेत को अधिया-रघिया लेते हैं । दूसरे के खेतों में मजदूरी करने जाते हैं, आखिर वे भी किसान हैं, अन्नदाता हैं । हमारी सरकार ने उनको पहचाना और उनको इस भूमिहीन कृषक श्रमिक न्याय योजना के अंतर्गत आज 7,000 रूपये जो सालाना देने का फैसला किया यह भी कृषि के क्षेत्र में और कृषकों का बहुत बड़ा सम्मान है, बहुत बड़ी न्याय योजना है ।

माननीय सभापति महोदय, आज कृषि के क्षेत्र में जो हमारी रीढ़ होती है । यदि आज हम गांव में तरक्की देखना चाहें, प्रदेश की तरक्की देखना चाहें तो यदि किसान तरक्की कर रहा है, यदि किसान फायदे में है तो आज निश्चित तौर पर प्रदेश समृद्ध और खुशहाल है । हम लोगों ने इसका असर देखा है । अभी मैंने कुछ दिन पहले अखबारों में पढ़ा था कि इसका असर, कर्जामाफी का असर, सिंचाई कर माफी का असर, धान की कीमत 2500 रूपये देने का असर । मैंने अखबार में पढ़ा कि इस साल छत्तीसगढ़ में 75,000 ट्रैक्टर की बिक्री हुई है । आज जहां दूसरे राज्य मंदी के दौर से गुजर रहे हैं वहीं हमारे इस प्रदेश में आज ज्यादा से ज्यादा लोग मोटर-पंप लगा रहे हैं, ज्यादा से ज्यादा किसान लोग बाईक खरीद रहे हैं, कार खरीद रहे हैं, जेवर-गहने खरीद रहे हैं । मेरे क्षेत्र में भी बड़े-बड़े सराफा-बाजार हैं । हम वहां देखते हैं, आज इस समय भी वहां पर इतनी भीड़ लगी रहती है और यही परिणाम है जब गरीबों की जेब में और किसानों की जेब में पैसा जाता है फिर वही मनी फ्लो पूरे बाजार में यानी सभी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

तरफ उसका वितरण होता है । हम लोगों ने अभी देखा है कि उसका असर, उसका फायदा पूरे प्रदेश को होता है ।

मानननीय सभापति महोदय, कोरोनाकाल में स्वास्थ्य के प्रति भी माननीय मुख्यमंत्री जी ने जगह-जगह जो व्यवस्था करायी, ईलाज की व्यवस्था करायी, ऑक्सीजन-सिलेण्डर की व्यवस्था करायी और जहां तक हम लोगों को अनुमान है, हम लोग भी समाचार-पत्रों या मीडिया में जानते हैं । आज हमें कोरोना के संकट के समय छत्तीसगढ़ में जो सबसे बेहतर व्यवस्था जो स्वास्थ्य की सुविधा मिली है, हम लोग कल्पना नहीं करते थे कि आज हर ब्लॉक में जो ऑक्सीजन प्लांट है वह लगाये जायेंगे । आज लगभग सारे ब्लॉकों में कोरोना प्लांट लगाये गये हैं और उस पीरियड में भी गरीबों के लिये जो मनरेगा के अंतर्गत काम खोले गये वह भी बहुत सराहनीय है । आज पूरे देश में मनरेगा में सबसे ज्यादा काम छत्तीसगढ़ में हमारे मजदूरों को वहां पर मिला ।

माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी का जो नारा है कि गढ़बो नया छत्तीसगढ़ और उसी के अनुरूप आज हमारी सरकार के इन कामों से खेती का रकबा बढ़ा है । खेती में निवेश बढ़ा है, खेती में लोगों का रोजगार बढ़ा है । आज धान का रकबा, धान का पंजीयन और धान की खरीदी इस साल रिकॉर्ड 97 लाख मीट्रिक टन धान की जो खरीदी हुई है, यह अपने आपमें हमारी सरकार की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है । आज हम लोगों को शिक्षा के क्षेत्र में गर्व होता है, पहले कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि कोई गरीब का बच्चा, साधारण आदमी का बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ सकता है । आज शुरूआती दौर है, मैं मानता हूं कि वहां कुछ कमियां हो सकती हैं लेकिन मुख्यमंत्री जी की सोच कि आज आम आदमी के भी जो बेटा-बेटी हैं वह आज अंग्रेजी स्कूल में अध्ययन करे । आज वह सपना पूरा हो रहा है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं इससे अधिक कुछ नहीं कहना चाहता । मैं पुन: यह कहूंगा कि विपक्ष ने केवल औपचारिकता निभाने के लिये यह अविश्वास प्रस्ताव लाया है । इनके पास कहीं कोई मुद्दा नहीं है । यह अविश्वास प्रस्ताव मुद्दाविहीन है। माननीय सभापति महोदय, मैं इसका विरोध करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं । आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- माननीय शिवरतन शर्मा जी।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय सभापति जी, मैं अविश्वास प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं और इस सरकार के लोगों को मेरा कहना है :-

कब तक धरते दोष रहोगे किसी और के माथे पर।
जब तुम्हारी कुर्सी लटकी, चोर-डकैतों के कांधे पर।।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय सभापति जी, यह सरकार झूठ की बुनियाद पर बनी सरकार है। धोखे की सरकार है। ढाई-ढाई साल के लिए बनी। अब बेईमानी में चल रही सरकार है। जो सरकार अपनों की नहीं हो सकी, वह जनता की क्या हो सकती है? कोयले के कालिख से पुती हुई सरकार है। भ्रष्टाचार में डूबी हुई सरकार है।

श्री शैलेश पाण्डे :- आज आप अकेले बैठे हो।

श्री शिवरतन शर्मा :- अपराधियों को संरक्षण देने वाली सरकार है।

श्री शैलेश पाण्डे :- आज आप अकेले पड़ गये हो।

श्री शिवरतन शर्मा :- किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर करने वाली सरकार है।

सभापति महोदय :- यह तो आप लिखित में दे चुके हैं।

श्री शैलेश पाण्डे :- साथ देने के लिए कोई खड़ा ही नहीं है।

श्री गुलाब कमरो :- शिवरतन भैया, नान घोटाला सुने हैं। नान घोटाला।

श्री शैलेश पाण्डे :- सभापति महोदय, अकेले बैठे हैं। आप इधर आ जाओ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, इन्होंने छत्तीसगढ़ की 4 चिन्हारी का नारा दिया। नरवा, घुरवा, गरूवा, बारी, छत्तीसगढ़ के 4 चिन्हारी।

श्री शैलेश पाण्डे :- आप हम लोगों के पास आ जाइए।

श्री शिवरतन शर्मा :- बह गे नरवा, खुला गरूवा, पट गे घुरवा, नहीं हे बाड़ी, अउ एखर नाम पर कतेक भ्रष्टाचार करबे संगवारी। माननीय सभापति जी, सत्ता पक्ष की ओर से प्रमुख वक्ता के रूप में पी.सी.सी. चीफ आदरणीय मोहन मरकाम जी का पहले भाषण हुआ और मोहन मरकाम जी ने आर.एस.एस. के संस्थापक डॉ. हेडगेवार, वीर सावरकर, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और डॉ. अंबेडकर तक का उल्लेख किया है। मैंने आपत्ति दर्ज की थी और अब मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मैं सारी बातें कह रहा हूं। मेरी बातें सुनने के बाद ही कोई निर्णय करेंगे। मैंने कहा कि यह सरकार भ्रष्टाचार से डूबी हुई सरकार है और मैं इसे भ्रष्टाचार से डूबी हुई सरकार इसलिए कहता हूं..।

श्री संतराम नेताम :- शर्मा जी, एक भी भ्रष्टाचार आप प्रमाणित कर दो।

श्री शिवरतन शर्मा :- भ्रष्टाचार और कांग्रेस एक-दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं। जहां कांग्रेस रहेगी, वहां भ्रष्टाचार रहेगा।

सभापति महोदय :- कांग्रेस का उल्लेख मत करिए। देखिए शर्मा जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, सभापति जी, मैं उदाहरण दे सकता हूं। जहां कांग्रेस रहेगी, वहां भ्रष्टाचार रहेगा। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- यह घोर आपत्तिजनक बात है। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- शर्मा जी, ऐसी कोई विवादास्पद बात मत करिए। किसी राष्ट्रीय दल का नाम मत लीजिए। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- ये बोलने का तरीका नहीं हुआ। (व्यवधान)

श्री धनेन्द्र साहू :- आप अविश्वास प्रस्ताव में बोलिए न। आप सरकार को बोलिए। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- अविश्वास प्रस्ताव में बोलिए न। आप किसकी बात कर रहे हैं? घोर आपत्तिजनक है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- जब माननीय मोहन मरकाम जी, डॉ. हेडगेवार, वीर सावरकर, डॉ. अंबेडकर और डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का नाम ले रहे थे तो मैंने आपत्ति दर्ज करायी है। उस समय इसका अहसास नहीं हुआ और आज मैं भ्रष्टाचार और कांग्रेस को एक-दूसरे का पर्याय बता रहा हूं, मैं प्रमाणित करूंगा कि भ्रष्टाचार और कांग्रेस एक-दूसरे के पर्याय कैसे हैं।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- शिवरतन भैया, राजनांदगांव के सांसद गांधी का भी बता तो। सवाल पूछने के लिए 10 हजार।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, देश में लोकतंत्र है और भारत की लोकसभा में भ्रष्टाचार का पहला आरोप अगर किसी राजनेता पर लगा था तो उस राजनेता का नाम था, पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों के ऊपर आरोप लगा।

श्री अमरजीत भगत :- शिवरतन भाई।

सभापति महोदय :- शिवरतन जी, प्रताप सिंह कैरों अभी इस दुनिया में नहीं हैं, आप उनके नाम का उल्लेख क्यों कर रहे हैं? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति जी..। (व्यवधान)

श्री संतराम नेताम :- यह गलत बात है। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- शर्मा जी, प्रताप कैरों जी इस दुनिया में नहीं हैं, उनके नाम का उल्लेख मत करिए। प्रताप सिंह कैरों इस दुनिया में नहीं है, उनके नाम का उल्लेख करने से फायदा क्या है? आप उल्लेख मत करिए। मैं आपसे निवेदन करता हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- मेरा हाथ जोड़कर आपसे निवेदन है। क्या डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी इस दुनिया में हैं? डॉ. अंबेडकर दुनिया में हैं? वीर सावरकर दुनिया में हैं?

श्री लालजीत सिंह राठिया :- हमारे पास अंबेडकर जी का कानून है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उनके नाम का उल्लेख हो सकता है तो प्रताप सिंह कैरों और पं. जवाहर लाल नेहरू के नाम का उल्लेख क्यों नहीं हो सकता? यह दोहरा मापदण्ड कैसे है? आप दोहरे मापदण्ड से सदन को नहीं चला सकते। (व्यवधान)

श्री लालजीत सिंह राठिया :- उनका संविधान है। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- आप दोहरे मापदण्ड से सदन को नहीं चला सकते। आपको मेरी बातें सुननी पड़ेंगी। जब वे उल्लेख कर सकते हैं तो मैं उल्लेख क्यों नहीं कर सकता। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- यह बहुत आपत्तिजनक बात है। आप किस प्रकार की बात करते हैं। (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- आप विधान सभा में बोल रहे हैं तो आपको यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि गोडसे के वंशज हैं या गांधी के। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- माननीय चौबे जी। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- अब चौबे जी क्यों खड़े हो रहे हैं?

श्री अमरजीत भगत :- आपके राष्ट्रीय अध्यक्ष। (व्यवधान) आप किस प्रकार की बात करते हैं? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- जब ये सारी बातें हुईं तब चौबे जी भी सुन रहे थे । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- एकदम आपत्तिजनक बात है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, भारतीय जनता पार्टी के पास अविश्वास प्रस्ताव पर कोई मुद्दे नहीं हैं । इसलिए ऊल-जलूल अनाप-शनाप बातें करके सदन को गुमराह कर रहे हैं, शर्मा जी चाहते ही हैं कि सदन का वक्त ज़ाया हो।

सभापति महोदय :- मैं निवेदन करूंगा कि अविश्वास प्रस्ताव की सीमा में रहकर बात करिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति जी, सदन के संचालन में कभी भी दोहरा मापदंड नहीं होता । मैंने आपके सामने चार उदाहरण दिये कि पी.सी.सी. चीफ मोहन मरकाम ने वीर सावरकर का, डॉ हेडगेवार का, डॉ. अम्बेडकर का, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम का उल्लेख किया तो मैं प्रताप सिंह कैरो का और पंडित जवाहर लाल नेहरू के नाम का उल्लेख क्यों नहीं कर सकता ?

श्री अमरजीत भगत :- इन्होंने कसम खा ली है, नहीं सुधरेंगे ।

श्री देवेन्द्र यादव :- गोडसे के नाम का उल्लेख किया, उस पर भी अपने विचार रख दो ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इंदिरा गांधी के समय नागरवाला कांड हुआ था ।

श्री अमरजीत भगत :- पैसा खुदा तो नहीं लेकिन खुदा से कम भी नहीं, यह किसने कहा था ।

श्री देवेन्द्र यादव :- गोडसे का उल्लेख हुआ, यह बता दें कि गांधी को मानते हैं या गोडसे को मानते हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- नागरवाला कांड में कौन-कौन बंद हुए । (व्यवधान) पूरा देश जानता है । सभापति जी, बोफोर्स कांड तो ताज़ा है और यू.पी.ए. की सरकार में।

श्री रविन्द्र चौबे :- यह घोर आपत्तिजनक है, इस पर चर्चा नहीं होती ।

श्री कवासी लखमा :- बंगारू लक्ष्मण के बारे में भी बोलो ना ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- पवन हंस में दलाली हुई है । पवन हंस विमान दलाली से खरीदा गया है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- कांग्रेस और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पर्याय हैं, इस बात को आपको स्वीकार करना पड़ेगा ।

श्री अमरजीत भगत : - सभापति जी, यह गलत बात है ।

श्री देवेन्द्र यादव :- ये लोग गोडसे वाले हैं, गांधी जी का नाम ले लेकर केवल खा रहे हैं । ये गोडसे के बारे में अपना विचार बता दें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- वह भी बोलूंगा ।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप गांधी को मानते हो या गांधी को मारने वाले को मानते हो ।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- आपको आजादी अच्छी नहीं लग रही है तो फिर से विदेशियों को वापस ला रहे हैं । हर चीज बाजार में बिक रही है, विदेशी वापस आ रहे हैं ।

सभापति महोदय :- चौबे जी, आप कुछ कह रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- सभापति जी, प्रतिपक्ष ने अविश्वास प्रस्ताव पर सदन में जो मुद्दे उठाए हैं उसमें श्रृंगार करके बोलने का अधिकार देता है । लेकिन आप बोफोर्स पर चर्चा करना चाहते हैं । पैसा ख़ुदा तो नहीं, ख़ुदा से कम भी नहीं, पर चर्चा करना चाहते हैं । ये क्या कर रहे हैं आप ? (श्री ननकीराम कंवर के खड़े होने पर) मेरी बात हो जाए । आप वरिष्ठ हैं आपका पूरा सम्मान है । लेकिन यह आचरण बिल्कुल उचित नहीं है कि मुझे बोलने के लिए कहा गया, उसमें आप आपत्ति करेंगे । मैं बैठ जाउं तो आप बोल लेना, आप ही को बोलना है । प्रतिपक्ष को ही बोलना है लेकिन मैं माननीय शिवरतन जी आपको विद्वान भी समझता हूं, अनुभवी भी समझता हूं । कुछ मुद्दे पर आ जाओ । छत्तीसगढ़ के हितों पर कुछ बात हो जाए । अगर मुद्दे नहीं हैं तो अन्य को अवसर दे दें लेकिन आप कहां की बात कहां तक ले आए । पंजाब की बात से शुरू करके कहां पहुंच गए थे । आपने आज कितने बिंदुओं पर प्रस्ताव दिया है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी मुझे शिक्षा दे रहे हैं कि मैं बिंदु पर आ जाऊं। जब उनकी पार्टी के अध्यक्ष बोल रहे थे तब उन्होंने यह नहीं कहा कि वे बिंदु पर आ जाएं । उस समय जब वे हमारे नेताओं पर आरोप लगा रहे थे तो आपको बड़ी हंसी आ रही थी । आपके मन में प्रसन्नता का भाव था । जब हमारे आरोप लग रहा था तो आपके मन में प्रसन्नता का भाव था, तो अपने नेताओं पर आरोप आपको सुनना पड़ेगा । यह आपकी बाध्यता है ।

सभापति महोदय :- कोई बाध्यता नहीं है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- हमारी कोई बाध्यता नहीं है । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- शुरूआत उधर से हुई है, शुरूआत पक्ष से हुई है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अरे, है बाध्यता । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- बोलने का सलीका है, बोलने के लिए विषय है । आपने अविश्वास प्रस्ताव दिया है तो विषय वस्तु पर बोलिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- बोलिए न छत्तीसगढ़ की बात ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- रोकाछेका नहीं किया तो आज यह स्थिति आ गई । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, इन प्रजातंत्र की बात करते हैं। यह लोग चुनी हुई सरकार को मध्यप्रदेश में खा गये, महाराष्ट्र में खा गये। यह लोग कहां की प्रजातंत्र की बात करते हैं?

श्री कवासी लखमा :- आप मध्यप्रदेश की बात करिये। मध्यप्रदेश में क्या हुआ, बताईये?

श्री अमरजीत भगत :- प्रजातंत्र की बात तो आप लोगों के मुंह से सौभाग्य से निकला है। चुनी हुई सरकार को आपने मध्यप्रदेश में खा गये। आप लोग चुनी हुई सरकार को खा गये।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- आप मध्यप्रदेश के विधायकों को अखबारों में देख सकते हैं।

सभापति महोदय :- शिवरतन जी, सीमा में रहकर बात करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, मैंने आपसे यही आग्रह किया कि ...।

सभापति महोदय :- आप लोग सदन की कार्यवाही चलाने में सहयोग करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, मैंने तो आपसे यही आग्रह किया था कि अविश्वास प्रस्ताव की सीमा में रहकर हमारे आरोपों का जवाब पी.सी.सी. चीफ दें। आपने हमारी आपत्ति को अनसुना किया। जब आपने पी.सी.सी. चीफ को बोलने की अनुमति दिया तो आप हमको अनुमति से नहीं रोक सकते हैं।

श्री कवासी लखमा :- यह आसंदी पर आरोप है। आप आसंदी पर उंगली नहीं कर सकते हैं।

सभापति महोदय :- मैंने अनसुना हनीं कहा। कार्यवाही देख कर विलोपित कर दी जायेगी, यह मैंने कहा था ।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय सभापति जी, नेहरू जी और सावरकर जी के ऊपर चर्चा हो जाय। नेहरू जी कितने दिन जेल में रहे और इनके नेता कितने दिन आंदोलन में रहे, वह कितने दिन जेल गये। इनको चर्चा करने का बहुत शौक है, तो वे चर्चा करें। वह लोग वही-वही बोत को क्यों कर रहे हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, हम विपक्ष में हैं। हम क्या बोलें और क्या नहीं बोलें, इसमें हमको बाध्यता नहीं है। हमको सदन में बोलने की स्वतंत्रता है। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मेरा निवेदन सुनिये। मैंने कहा था कि कार्यवाही देख ली जायेगी। यदि गलत शब्द लगा तो विलोपित कर दिया जायेगा। उसके बाद वह मामला खत्म हो जायेगी। मैंने कहा कि

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कार्यवाही देख ली जायेगी। माननीय अध्यक्ष जी, उसको विलोपित कर देंगे। इसके बाद कहां आपत्ति है? इसलिए मैं कह रहा हूं कि आप अविश्वास की सीमा में रह कर बात करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री कवासी लखमा :- नाथू राम गोडसे के बारे में भी चर्चा हो।

सभापति महोदय :- कृपया सदन चलाने में सहयोग करें। सदन के संचालन में सहयोग करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, मैं आपसे हाथ जोड़ कर निवेदन करता हूँ कि आप सदन के एक वरिष्ठ सदस्य हैं। सदन नियम एवं परंपराओं से चलता है। मैं जिस आरोप को लगा रहा हूँ, उस आरोप को परंपरा के रूप में इस सदन में स्वीकार करने के अनुमति आसंदी ने दी। इसलिए मैं यह आपरोप परंपरा के अनुसार लगा रहा हूँ।

श्री कवासी लखमा :- आप आरोप लगा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, आपने जिस परंपरा के तहत अनुमति दी, मैं उस परंपरा को आगे बढ़ा रहा हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- आप आसंदी के ऊपर आरोप लगा रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, बोफोर्स घोटाला का बात आगे आ जाये तो हर्षद मेहता कांड (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- हर्षद कांड के बाद भी सरकार चुनाव में गई थी। 1 करोड़ में सरकार चली गई थी। हर्षद मेहता कांड में केवल एक ही करोड़ की सरकार चली गई थी। आज अडाणी को बिना पैसे का लाईसेंस दिया जा रहा है। आज अडानी, अंबानी को बिना पैसे का लाईसेंस दिया जा रहा है।

श्री शैलेश पाण्डेय :- माननीय सभापति महोदय, यह क्या हो रहा है? (व्यवधान)

सभापति महोदय :- शर्मा जी, उसी वक्त मैंने निवेदन किया था कि कार्यवाही देख लेंगे, उसके बाद माननीय अध्यक्ष जी विलोपित कर देंगे। उसके बाद में मामला खत्म हो गया। अब अविश्वास की सीमा में रहकर बात करेंगे तो ज्यादा ठीक रहेगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, इन लोग राजनीतिक चर्चा कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री कवासी लखमा :- [6][xx]

सभापति महोदय :- व्यवस्था आ चुकी है, इसलिए मैं कह रहा हूं कि आप लोग शिवरतन का जवाब नहीं देंगे। कृपया यह भी ना कहें, यह दोहरा मापदण्ड है। मैं इसे विलोपित करता हूँ।

श्री अमरजीत भगत :- शिवरतन शर्मा is talking about wrong.

श्री शिवरतन शर्मा :- किसको विलोपित कर रहे हैं?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- लखमा जी ने कहा, उस बात को विलोपित किये हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, पी.सी.सी. चीफ ने ई.डी. की चर्चा की।

---

[6] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री कवासी लखमा :- क्यों नहीं कर सकते हैं? मोदी जी को बोलो कि ई.डी. को बंद करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- अब ई.डी. के लिए माननीय राहुल जी और माननीया सोनिया जी को बुलाया गया। छत्तीसगढ़ के 300 स्थानों पर (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- सभापति जी, यह अक्षमनीय है। जिस तरीके से आदिवासियों नेताओं का अपमान किया जा रहा है। यह गलत परंपरा दी जा रही है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, यह अविश्वास पर चर्चा हो रही है या ई.डी. पर चर्चा हो रही है।

सभापति महोदय :- शर्मा जी, उस मामले में व्यवस्था आ चुकी है, इसलिए ऐसी कोई बात नहीं है। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- सभापति जी, आप रोका-छेका करिये।

श्री अमरजीत भगत :- यह सरासर गलत बात है। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- सदन की कार्यवाही 5 मिनट के लिए स्थगित करता हूँ।

(6:26 से 6:36 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :
6:36 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुए)**

सभापति महोदय :- माननीय शिवरतन शर्मा जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं भ्रष्टाचार के विषय में बात कर रहा था। दिल्ली में हमारे प्रदेश को शर्मसार करने वाली एक घटना एक घटना घटित हुई और इस घटना को घटित करने के पीछे यदि कोई बड़ा कारण था और यदि कोई व्यक्ति इसके लिए जिम्मेदार था तो वह प्रदेश के मुख्यमंत्री आदरणीय भूपेश बघेल जी थे। एक सामान्य प्रक्रिया के तहत कांग्रेस के दो प्रमुख नेताओं को ई.डी. ने पूछताछ के लिए तलब किया और जब ई.डी. ने उनको पूछताछ के लिए तलब तो संवैधानिक दृष्टिकोण से वह हमारे प्रदेश के मुखिया हैं और वह उसका विरोध करने जाते हैं और फिर उनकी गिरफ्तारी होती है...। (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, सम्मानित सदस्य घूम-फिर कर विषय से भटक रहे हैं। इनकी लाइनें खत्म हो चुकी हैं। प्रदेश का कोई भी विषय इस प्रकार का नहीं है जनता के लिए...। (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में ई.डी. की चर्चा कैसे हो रही है ?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- माननीय शर्मा जी, मैंने आपसे निवेदन किया है कि आप ऐसे विषय का उल्लेख न करें। कृपया आप अविश्वास प्रस्ताव की सीमा में रहें।

श्री अमरजीत भगत :- क्या यह इनके अविश्वास प्रस्ताव का हिस्सा है ? (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, यह दिल्ली के विषय में कहते हैं यह अपनी बात क्यों नहीं कहते हैं ?

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, सम्मानित सदस्य केवल और केवल राजनीतिक भावना से ऐसा बोल रहे हैं...। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- यह आपत्तिजनक है। केवल राजनीतिक बात कर रहे हैं। आप अपनी बात को विषय-वस्तु पर ही सीमित कीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या देश के किसी व्यक्ति को पूछताछ के लिए बुलाने का अधिकार नहीं है ? इन व्यक्तियों को पूछताछ के लिए बुलाया गया था।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, इनके पास कोई मुद्दा नहीं है।

श्री गुरूदयाल सिंह बंजारे :- माननीय सभापति महोदय, इनके पास कोई मुद्दा नहीं है। आप अविश्वास प्रस्ताव पर बोलिये।

श्री मोहन मरकाम :- इनके पास कोई मुद्दा नहीं है इसलिए...। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- ई.डी. की...। (व्यवधान)

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मुद्दाविहीन विपक्ष है।

श्री मोहन मरकाम :- विपक्ष मुद्दाविहीन है।

श्री शैलेश पाण्डे :- यह लोग मुद्दे से भटक गये हैं। (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- इनका अविश्वास प्रस्ताव पर विश्वास नहीं रहा है।

एक माननीय सदस्य :- यह भी उस विषय पर बात हो रही है।

श्री मोहन मरकाम :- विपक्ष मुद्दाविहीन हो गया है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- यह प्रदेश को शर्मसार करने का काम कर रहे हैं। माननीय सभापति महोदय, मैं व्यवस्था देने की बात कर रहा था।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, यह झूठ बोल रहे हैं। इनके पास कोई मुद्दा नहीं है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- इस सरकार ने भ्रष्टाचार किया। माननीय रविन्द्र चौबे जी का भाषण हुआ और रविन्द्र चौबे जी ने अपने भाषण में कहा कि मैं इतना धान खरीदा और इतने धान की मिलिंग हो गई और हमने इसके लिए रेट बढ़ा दिया है। आपने राईस मिलर्स का कस्टम मिलिंग का रेट बढ़ा दिया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अरूण वोरा :- माननीय सभापति महोदय, ऐसा लग रहा है कि भारतीय जनता पार्टी बिना स्टेरिंग के चल रही है। स्टेरिंग ही नहीं है। यह गाड़ी बिना स्टेरिंग के चल रही है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, यह बिना स्टेरिंग की गाड़ी चला रहे हैं। इनके पास न कोई मुद्दा है। यह मुद्दाविहीन विपक्ष है। अभी 3-4 ही बचे हैं और ये 3-4 भी नहीं बचेंगे...। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- बैठिये।

श्री अरूण वोरा :- यह छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहला विपक्ष है जिसने अविश्वास प्रस्ताव तो दिया लेकिन इनके पास मुद्दा नहीं है। यह केन्द्र की बात करती है और कांग्रेस की बात करती है।

श्री शिवरतन शर्मा :- पूरा प्रदेश जानता है कि कस्टम मिलिंग का रेट 37 से बढ़ाकर 120 किया गया...। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- कृपया टोका-टोकी न करें। आप बैठिये।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, इनके पास कोई मुद्दा नहीं है यह लोग मुद्दे से भटक गये हैं और इनके पास कोई मुद्दा नहीं है। (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- इनकी बिना ब्रेक और बिना स्टेरिंग की गाड़ी है।

सभापति महोदय :- अरूण जी, आप बैठिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- पूरा प्रदेश इस बात को जानता है कि इस 120 रूपये में 30 रूपये प्रति क्विंटल के हिसाब से कहां चला जाता है। स्वामी आत्मानंद जी के नाम से स्कूल खोली गई। स्वामी आत्मानंद जी छत्तीसगढ़ के गौरव हैं। छत्तीसगढ के प्रत्येक व्यक्ति के मन में उनके प्रति श्रद्धा का भाव है और जिस महान व्यक्ति के नाम पर स्कूल खोली गई, उस स्कूल में संविदा भर्ती हुई तो क्या हुआ ? संविदा भर्ती में कोई मापदण्ड नहीं, कहीं कोई मेरिट का ख्याल नहीं । जो पैसा देगा, उसकी भर्ती होगी ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सभापति जी, यह गलत बात है । (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- यह बहुत ही गलत बात है । ये सरासर झूठा आरोप है । आप गलत आरोप लगा रहे हैं । (व्यवधान)

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- आपने अपने समय में तो शिक्षा विभाग को बेच दिया था, आप तो शिक्षा विभाग को ठेका में दे दिए थे । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- भ्रष्टाचार हुआ है, इसीलिए शिक्षा मंत्री के चार ओ.एस.डी. बदले गए थे (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- आपने तो शिक्षा विभाग को ठेका में दे दिए थे । (व्यवधान)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- आपके जमाने में शिक्षा भर्ती में क्या हुआ था।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री संतराम नेताम :- आपके जमाने में आऊट सोर्सिंग से भर्ती होती थी। (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- छत्तीसगढ़ में पूरे प्रदेश में स्वामी आत्मानंद स्कूल खुल रहे हैं तो इनको परेशानी हो रही है (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, छत्तीसगढ़ की विधान सभा में ये क्या है, बार-बार व्यवधान करना ठीक नहीं है, उसको बंद करवाई । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मैं बोल तो रहा हूं, आप लोग बैठिए । (व्यवधान)

श्री लखेश्वर बघेल :- गलत बात करेंगे तो कैसे होगा । जो भी बोलें, सब सच बोलें । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप लोग बैठिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, मैं अविश्वास प्रस्ताव के विषय पर बोल रहा हूं । हमने सरकार पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है । मैं भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बोल रहा हूं । हमारे अविश्वास प्रस्ताव में इन बातों का उल्लेख है ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- मरकाम जी, आपके ऊपर आरोप थोड़ी लगा रहे हैं । आप क्यों नाराज हो रहे हैं ? लेने वाले ने लिया होगा । (व्यवधान)

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम :- आप विषय से क्यों भटकते हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में आरोप-पत्र देना एक औपचारिकता है । जरूरी नहीं है कि हम उसी पर केन्द्रित रहें । यदि भ्रष्टाचार एक विषय है तो हम भ्रष्टाचार के किसी भी विषय पर बोल सकते हैं।

सभापति महोदय :- लेकिन कोई प्रमाण आपके पास है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति जी, आप अनुमति देंगे तो हम पटल पर रख देंगे। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, हमारे पास प्रमाण हैं । आप अनुमति दीजिए, हम आरोप सदन के पटल पर रख देंगे । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- आप प्रमाण सिद्ध करिए न, लिखित में दीजिए न ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति जी, हम प्रमाण देंगे । यदि आप अनुमति देंगे हम लिखित में देंगे और सदन के पटल पर रख देंगे । (व्यवधान)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- आप आरोपों का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करो ।

श्री मोहन मरकाम :- आप जानकारी हैं तो प्रक्रिया के तहत सूचना दीजिए न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, मेरे पास शिक्षा विभाग के 200 करोड़ रूपए के घोटाले की पूरी डायरी है । आप अनुमति दें, मैं पटल पर रख देता हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति जी, यदि आप अनुमति दें तो मैं 366 करोड़ के घोटाले के दस्तावेज पटल पर रख देता हूं । आप अनुमति देंगे क्या ? (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम :- डायरी आप लोगों के समय की थी । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- वह डायरी फर्जी थी । (व्यवधान)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- आपके समय की डायरी थी, आपके जमाने का पन्ना पलटो । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम सदन के पटल पर रख देंगे ।

सभापति महोदय :- उसमें अपराधी पकड़े गए थे, वह डायरी फर्जी थी ।

श्री अमरजीत भगत :- अविश्वास प्रस्ताव में जो बिन्दु इन्होंने इंगित किया है, चर्चा उसी में सीमित होना चाहिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, आप तो बिल्कुल न्यायाधीश की तरह व्यवस्था दे रहे हैं । डायरी फर्जी थी, पकड़े गए कहकर बोल रहे हैं । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, मैं अविश्वास प्रस्ताव के मुद्दे पर प्वाइंटेड बात कर रहा हूं ।

श्री मोहन मरकाम :- कहां प्वाइंटेड बात कर रहे हैं, रास्ते से भटक गए हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, आत्मानंद स्कूल के नाम पर सिर्फ और सिर्फ खरीदी हुई है ।

सभापति महोदय :- देखिए, अविश्वास प्रस्ताव पर बोलने वाले वक्ताओं की सूची लंबी है इसलिए बहुत ज्यादा टोका-टाकी न करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, उस खरीदी में 30 से 40 प्रतिशत तक कमीशन खाया गया है और इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यह है कि शिक्षा विभाग के लिए कांग्रेस के वरिष्ठ विधायक ने आरोप लगाया कि वहां भ्रष्टाचार हो रहा है, हमारी बात नहीं सुनी जा रही है । यह चार विधायकों का आरोप था । शिक्षा मंत्री के चार ओ.एस.डी. बदले गए । वह क्यों बदले गए ? अगर ट्रांसफर में लेन-देन नहीं हो रहा था, खरीदी में लेन-देन नहीं हो रही थी तो किसलिए ओ.एस.डी. बदले जा रहे थे ।

सभापति महोदय, कल जिला खनिज न्यास निधि के संबंध में ध्यानाकर्षण था। उसमें चर्चा हुई । मैं चुनौतीपूर्वक बोलता हूं, माननीय मुख्यमंत्री जी के पास खनिज विभाग है । जिला खनिज न्यास निधि में अगर सबसे ज्यादा कोई काम हो रहा है तो सिर्फ और सिर्फ खरीदी का काम हो रहा है । खरीदी मतलब उसमें सीधा-सीधा 40 प्रतिशत का भ्रष्टाचार है । आप विधान सभा में मुद्दा उठा लो, लिखित शिकायत कर लो, कोई कार्रवाई नहीं होती । कार्रवाई क्यों नहीं होती ? क्योंकि ऊपर से नीचे तक उस भ्रष्टाचार का हिस्सा आता है । जिला खनिज न्यास निधि जिस कार्य के लिए बनाई गई है, उस उद्देश्य

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

को पूरा न करके सिर्फ राजनीतिक हितों को पूरा करने के लिए, [XX][7] कलेक्शन करना है, सिर्फ इसके लिए खनिज न्यास निधि का उपयोग किया जा रहा है।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सभापति जी, आजीविका आंगन क्यों बना था ?

सभापति महोदय :- [XX] कलेक्शन किया जा रहा है, मैं इसको विलोपित करता हूं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, आप किस बात के लिए विलोपित करेंगे ।

सभापति महोदय :- आपके पास प्रमाण है क्या ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, यह हमारा आरोप है, आप विलोपित करके गलत कर रहे हैं । आप किसी भी चीज को विलोपित कर देंगे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, यह हमारा आरोप है, आप विलोपित नहीं कर सकते ।

सभापति महोदय :- आपके आरोप-पत्र में [XX] का कहां उल्लेख है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- [XX] का उल्लेख है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आरोप पत्र में [XX] का उल्लेख है । ऐसा नहीं चलेगा। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- आप नीचे आ जाईए, दूसरे को भेज दीजिए । (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- आप सभापति जी से इस टोन में बात नहीं कर सकते। (व्यवधान)

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाए गए)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, ऐसा नहीं चलेगा । (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- [XX] बंद करो

अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, क्या सदन के अंदर [XX] हो रहा है ? ये क्या हो रहा है ? (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो कुछ ज्यादा ही फेवर ले रहे हो।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या सदन में [XX] होती है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, सभापति जी, अभी नारे लगाये हैं कि [XX] बंद करो। हम लोग [XX] हैं क्या ? आप उनसे कहे कि वह माफी मांगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप इसमें विलोपित नहीं करेंगे, आप विलोपित करिये न। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- हम [XX] हैं क्या ? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम [XX] हैं क्या ? वह इसके लिए माफी मांगे। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, आप एकतरफा मत करिये न। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- विलोपित करने से काम नहीं चलेगा। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मैं [XX] शब्द को विलोपित करता हूं।

[7] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

(सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये)

श्री धर्मजीत सिंह :- आप इनको तो कन्ट्रोल नहीं कर सकते। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- बैठिये, कृपया आप लोग बैठिये, कृपया बैठिये।

(सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये)

श्री धर्मजीत सिंह :- आप उनका फेवर करना कम करिये। सभी पक्ष और विपक्ष आपके साथ हैं। आप एकतरफा ...।

सभापति महोदय :- मैं शब्द विलोपित करता हूं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप यह क्या देख रहे हो ?

श्री देवेन्द्र यादव :- जिस आचरण के संग निभा रहे हैं (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, आप क्या देख रहे हैं। [XX] बोल रहे हैं, जबकि हम लोग चुपचाप बैठे हैं।

सभापति महोदय :- मैंने उस शब्द को विलोपित कर दिया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप आसंदी में बैठे हो, [XX] [8] बोल रहे हैं और आप चुप बैठे हैं।

सभापति महोदय :- चलिये, शिवरतन जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, उन्होंने सिर्फ हमको [XX] नहीं कहा, आपको भी [XX] कहा है। यह पूरे सदन को गुण्डा कहा है।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह आपको कहा है या नहीं कहा, हम लोगों को कहा है और यह गलत है।

सभापति महोदय :- सदन में नारेबाजी नहीं होनी चाहिए।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय सभापति महोदय, जो इनका आचरण और व्यवहार है, (व्यवधान)

सभापति महोदय :- यह संसदीय गरिमा के प्रतिकूल है। मैं [XX] शब्द को विलोपित करता हूं। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह माफी मांगे।

सभापति महोदय :- किसी एक व्यक्ति ने कहा हो तो मैं बात कहूं।

श्री देवेन्द्र यादव :- और ये आचरण नहीं होना चाहिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जिन्होंने [XX] कहा है, वह माफी मांगे।

श्री देवेन्द्र यादव :- इनको माफी मांगनी चाहिए।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय सभापति महोदय, टेबल पटककर विरोध प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, सवाल यह है कि विपक्ष में बैठे हुए विधायक गुण्डे नहीं हैं।

---

[8] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- आपको माफी मांगनी होगी।

श्री धर्मजीत सिंह :- इनको [XX] [9] चढ़ गई है, विधायक बोलेंगे और आप चुपचाप मौन स्वीकृति देंगे, यह बिलकुल गलत है। आप आसंदी में बैठकर इस तरह से फेवर नहीं कर सकते हैं। आप आसंदी में बैठकर इस तरीके का पक्षपात नही कर सकते हैं। हम दोनों को.. (व्यवधान) one sided नहीं चलेगा।

सभापति महोदय :- सभा की कार्यवाही 5 मिनट के लिए स्थगित।

(6:48 से 6:58 तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :

6:58 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ.चरणदास महंत) पीठासीन हुये)**

अध्यक्षीय दीर्घा में अतिथि

श्री प्रेमप्रकाश पाण्डेय, पूर्व विधान सभा अध्यक्ष

अध्यक्ष महोदय :- अध्यक्षीय दीर्घा में श्री प्रेमप्रकाश पाण्डेय विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष उपस्थित हैं, सदन उनका अभिनन्दन करता है । उनके सम्मान का ध्यान रखते हुये आप सबसे निवेदन है कि आप लोगों ने जो अविश्वास प्रस्ताव का विषय दिया है, उसी पर सीमित रहें, उससे आगे बढ़े । इसमें 84 विषय है । मैं दोनों पक्ष से निवेदन करता हूँ कि थोड़ा जल्दी समाप्त हो जाये, ऐसी कोशिश करें । जो बातें आ चुकी है, उन बातों को न दोहराये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, अभी आपके आसंदी में आने के पहले कांग्रेस के विधायकों ने हम लोगों के लिये नारे लगाये कि [XX] बंद करें ।

अध्यक्ष महोदय :- क्या गिरी ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- [XX] हम इस सदन में विधायक के रूप में आते हैं, [XX] के रूप में नहीं आते ।

अध्यक्ष महोदय :- सब को मैं विलोपित कर दिया है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, विलोपित नहीं । अभी सुबह एक घटना हुई थी, जिसमें आपने अजय चन्द्राकर जी के विवेक पर छोड़ था, हम चाहते हैं कि सदन के सदस्य देवेन्द्र यादव जी ने यह नारा लगाया । उनको खड़े होकर क्षमा मांगना चाहिये।

---

[9] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- श्री देवेन्द्र यादव जी, आपको मैं आदेश देता हूँ, आप खेद व्यक्त करें । सिर्फ खेद व्यक्त करें, बाकी कुछ भाषण नहीं ।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे छत्तीसगढ़ के ..।

अध्यक्ष महोदय :- आप खेद व्यक्त करें । पुराने अध्यक्ष भी बैठे हैं, मैं भी बैठा हूँ, एक और अध्यक्ष बैठे हैं । तीन-तीन अध्यक्ष बैठे हैं ।

श्री देवेन्द्र यादव (भिलाई नगर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके आदेश का पूर्ण पालन करूंगा। हमारे छत्तीसगढ़ के गांवों में बैठका की परंपरा होती है। उस परंपरा में सब जानते हैं, यहां पर ग्रामीण अंचल के विधायक भी हैं। अगर कोई जमीन पर भी हाथ पटकता है तो पहले सभा उसको दंडित करती है। चूंकि पिछले समय में जो घटा, सम्मानित सदस्य ने बहुत तेजी से ऊंगली दिखाते हुए मेंज पर हाथ पटकी। उसके बाद यह शब्द के नारे हमने लगाये और डर के लगाये। ठीक है, इनको अगर इससे आपत्ति है तो मैं आपके आदेशानुसार खेद व्यक्त करता हूं। लेकिन मैं आपसे यह भी अनुरोध करूंगा कि जब हमारे छत्तीसगढ़ की परंपरा यह कहती है कि बैठका में भी हाथ पटकने वाले को सभा दंडित करती है क्या माननीय अजय चन्द्राकर जी भी खेद प्रकट करेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- आपने अपना खेद प्रकट कर दिया। मैंने पहले ही बड़े विनम्रता से कहा था कि आप लोग शिष्ट भाषा में शिष्टाचार का उपयोग करते हुए दोस्ताना अंदाज में बात करें। आरोप लगायें, किसी को कोई आपत्ति नहीं है। मैं निवेदन करता हूं कि इस बात का ख्याल रखें। शर्मा जी जो इस सदन में नहीं हैं, जो इस सभा में नहीं है और जो इस लोक में भी नहीं है, उसकी बात यहां करना उचित नहीं है।

श्री धर्मजीत सिंह :- मोहन मरकाम जी, इस सदन में जो नहीं हैं, उन्हीं के ऊपर पूरा भाषण दिये हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी सारी व्यवस्था बहुत शालीनता से आ रही है। इस परंपरा की बुनियाद आज की सभा में कांग्रेस के अध्यक्ष मोहन मरकाम जी ने डाली। हमने उस समय आसंदी में विराजमान सभापति से बार-बार आग्रह किया कि ऐसा नहीं होना चाहिए। उन्होंने उनको रोका नहीं। और वही सभापति जब फिर से बैठे तो टोकने लगे, जो आप मना रहे हैं, वैसा उपयोग मत करें। कृपा करके जो व्यवस्था आये, सभापति तालिका में चाहे कोई भी बैठे। आज मैंने संसदीय कार्य मंत्री जी को भी यही बताया कि डबल व्यवस्था आ रही है, उसके कारण कई बार विधान सभा में बड़ी घटना घटी है। दूसरी बात मैंने आपके निर्देश पर कुछ नहीं कहा था, आप रिकार्ड देख लीजियेगा, लेकिन मैं उस बात को भूल गया। मैंने कहा कि मैं साढे 03 साल सबके लिए क्षमा मांगता हूं। आपके निर्देश के बावजूद क्षमा नहीं मांगी गई। आप देख लीजिए, अब आगे कैसे चलेगी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा दिया कि उनके भी भाषण में या किसी के भी भाषण में जो विलोपित करने योग्य आये होंगे, बातें होंगी, मैं उन सबको विलोपित कर दूंगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मोहन मरकाम जी के भाषण की शुरूआत..।

अध्यक्ष महोदय :- अब हो गया न। मैंने विलोपित कर दिया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- ई.डी. का मसला वही उठाये, वह मलेशिया तक चले गये, हिन्दू-मुसलमान तक ले आये। तो जब दुनिया भर की चीजों को वह बोले, अगर उसी के रिफ्रेन्स में कोई बात हो रही है तो बुरा नहीं लगना चाहिए। गुण्डा बोला जा रहा है। गुण्डे मवाली न इधर हैं, न उधर हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के अंदर बोला गया है, उसमें आप भी शामिल हैं, पूरी सभा शामिल है।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कह दिया, उन्होंने खेद व्यक्त कर दिया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आपसे आग्रह है कि आपकी अनुपस्थिति में सभापति तालिका का भी रोटेशन चेंज होते रहना चाहिए। एक ही व्यक्ति को सभापति तालिका में बिल्कुल नही बैठाया जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- क्या आपका भाषण हो चुका?

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- आप जल्दी करिये, मैं आपको बैठाऊंगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- मेरा अभी थोड़ी है। मैं छोटे दल का छोटा सा विधायक हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भ्रष्टाचार की बात कर रहा था कि कांग्रेस की सरकार पूरी तरह से भ्रष्टाचार में लिप्त है। कोई भी काम ऐसा नहीं है जिसमें भ्रष्टाचार न हो। माननीय अकबर साहब बैठे हैं। कैंपा मद के लिए पैसा केन्द्र सरकार से आता है। अभी एक नया शब्द "लेण्टाना" दो-तीन सत्रों से विधान सभा में चर्चा में आ रहा है। लेण्टाना के बारे में हमको पूछना पड़ा कि आखिर लेण्टाना क्या होता है? खरपतवार के नाम पर कितना खर्च हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं उसको पूछ चुका हूं। मैंने लेण्टाना शब्द पर आपत्ति की थी। मैंने मंत्री जी को निवेदन किया था कि अधिकारियों को मेरे कक्ष में भेज दें। अधिकारी मुझे आकर समझा गये, लेण्टाना अच्छा शब्द है।

श्री नारायण चंदेल :- आप उसको फरिया दीजिए न।

अध्यक्ष महोदय :- फरिया नहीं सकता न। मैं देख लिया हूं। अब लेण्टाना को छोड़िये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, इनका भी भाषण लेण्टाना के ही समान है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- माननीय भगत जी, आज आप टोपी पहनकर कैसे आये हैं, क्या उसके बारे में बतायेंगे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह लेण्टाना के नाम पर खरपतवार साफ करने के नाम पर कितना भ्रष्टाचार होता है, यह बताने की आश्यकता नहीं है। महीने, दो महीने का पीरियड निकल जाये तो आप इसकी कोई शिकायत भी कर लो तो उसका कोई मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। एक भ्रष्टाचार की नई कहानी शुरू हो गई। इसी सदन में माननीय धर्मजीत सिंह जी का एक प्रश्न था, उस प्रश्न में बहुत से वन विभाग के अधिकारियों को निलंबित करने की घोषणा माननीय वन मंत्री जी के द्वारा की गई। छोटे कर्मचारी तो निलंबित हो गये।

श्री अमरजीत भगत :- आपने उसमें धन्यवाद दिया था।

श्री शिवरतन शर्मा :- लेकिन जो आई.एफ.एस. अधिकारी थे, वह आज भी सस्पेंड नहीं हुए। सदन में कोई घोषणा हो और सदन की घोषणा होने के बाद तीन महीने तक कार्रवाई न हो, उसका सस्पेंशन रोक दिया जाये तो यह सरकार भ्रष्टाचार में लिप्त है। यह कहा जाएगा या नहीं कहा जाएगा?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी बताएंगे कि कौन अधिकारी निलंबित नहीं हुआ है।

श्री नारायण चंदेल :- सी.ओ।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य की जानकारी अधूरी है। मैंने घोषणा नहीं की थी। उस समय पंचायत मंत्री जी ने घोषणा की थी। मेरे द्वारा घोषणा नहीं की गयी थी।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- क्या सामूहिक जिम्मेदारी से करते? संसदीय कार्यमंत्री जी कहां हैं? यदि संसदीय कार्यमंत्री होंगे तो वह सामूहिक जिम्मेदारी है या नहीं हैं कि ऐसा नहीं किया जाना चाहिये? यदि माननीय मंत्री जी का बयान ऐसा है तो आप इसमें व्यवस्था दे दीजिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने आपसे कहा था कि आप शायद कॉकटेल नहीं पिये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- संसदीय कार्यमंत्री जी को आ जाने दीजिये।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, इस सरकार में फिर तो यह वैधानिक संकट है कि सामूहिक जिम्मेदारी खत्म हो गयी है। छोड़ के चले गयी है सरकार।

श्री धमर्जीत सिंह (लोरमी) :- अध्यक्ष महोदय, आप कॉकटेल नहीं पिये हैं, मैं पिया हूं। यहां इस सदन में तीन दिन से सिर्फ कॉकटेल चल रहा है। कभी टी.एस. बाबा पंचायत मंत्री है, उनको विभाग चले गया। उसका जवाब माननीय अकबर जी दे रहे हैं। आखिर कौन किया, कौन नहीं किया, यह किससे पूछताछ करें? इस सदन में कुल मिलाकर आप भी उपस्थित थे और हम भी उपस्थित थे। माननीय टी.एस. बाबा ने मेरे भी प्रश्न में नहीं, यहां पीछे एक विधायक भरतपुर के बैठे हैं, उनके प्रश्न में उन्होंने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सी.ओ. को निलंबित करने की घोषणा की और आज तक वह निलंबन ही नहीं हुआ है और आपने न ही सदन में बताया है। सदन का सम्मान कितना है, वह उसके बारे में बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, संसदीय कार्यमंत्री जी को आने दीयिजे । मैं पूछ लूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मोहम्मद अकबर जी वरिष्ठ मंत्री हैं।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया।

श्री अजय चंद्राकर :- वह मेरे रहबर है, वह मेरे मुर्शीद है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह सबसे जानकार है और वह सरकार के संकट के समय में जवाब देते हैं। मैंने पहले भी आपको बताया कि..।

अध्यक्ष महोदय :- अभी सरकार में संकट नहीं है इसलिये वह जवाब नहीं दे रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- अभी वैधानिक संकट है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- अध्यक्ष महोदय, यह मंत्रिमण्डल की सामूहिक जिम्मेदारी है। माननीय मंत्री जी यहां पर उपस्थित है। आप उनको बता दें कि वह 10 मिनट में जानकारी लेकर यहां पर उपस्थित कर दें। क्योंकि इससे आपका भी और हमारा भी सम्मान बढ़ेगा, सामूहिक सदन का सम्मान बढ़ेगा।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने संसदीय कार्यमंत्री जी को बुलावा भेजा है। वह आ रहे हैं उसके बाद इसका निराकरण करेंगे। अब आप आगे बढ़िये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक विषय आ गया, कोरोना महामारी। इस सरकार में बैठे लोगों को आपदा में भ्रष्टाचार का अवसर मिला, मैं आपको इसका एक उदाहरण बताता हूं कि रायपुर में कोरोना सेंटर खोला गया। शायद वह इंडोर स्टेडियम में खुला था। उसमें इंटरकॉम का किराया 20 लाख रूपये (शेम-शेम की आवाज)।

अध्यक्ष महोदय :- इंटरकॉम का?

श्री शिवरतन शर्मा :- सी.सी.टी.व्ही. कैमरे हेतु 17 लाख रूपये का किराया, सी.एफ.एल. बल्ब का किराया 5 लाख रूपये, एक ए.सी. का किराया 2.5 लाख रूपये था।

श्री अजय चंद्राकर :- यह लोग कोरोना पर्व मना रहे थे।

श्री शिवरतन शर्मा :- अब यह कोरोना के उपचार के लिये सेंटर खोला गया था।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये यह क्यों नहीं बता देते कि केंद्र की सरकार ने भी कोरोना के समय में 30 लाख करोड़ रूपये कमाये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठिये रहिये। प्लीज।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, अभी मैं बाकी हूं। मैं फिर केंद्र में जाऊंगा तो आप मना करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- वह बात नहीं करेंगे। मैं उनको मना कर रहा हूं। अरूण वोरा जी, छोड़िये, आप बैठिये प्लीज।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं केंद्र सरकार की बात कर रहा हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने जो कोरोना का विषय रखा। यह ...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां पर इतना खर्चा किया गया, उस सेंटर में 200 सीटें थी और वहां पर 100 लोगों की मृत्यु हो गयी।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, अभी तो मंकी पॉक्स भी आ गया है।

श्री अजय चंद्राकर :- एक केस आ गया है।

श्री अजय चंद्राकर :- अब उसमें भी कमायेंगे।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, वह कोरोना सेंटर था कि मृत्यु सेंटर? यह उसमें भी कमायेंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- उसके बारे में क्या करने वाले है? उसके बारे में भी पूछ लीजियेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कोल माफिया। माननीय बृजमोहन जी सुबह अपने भाषण में रेत से तेल निकालने का जिक्र कर रहे थे। यह सरकार सिर्फ रेत से तेल नहीं निकाल रही है।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा था कि जो बात कर चुके हैं, उसे फिर मत करिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- कायेला से भी तेल निकाल रही है।

अध्यक्ष महोदय :- किससे?

श्री शिवरतन शर्मा :- कोयले से। देश के इतिहास में पहली बार..।

अध्यक्ष महोदय :- हम लोगों ने तो अभी तक नहीं सुना है कि कोयले से तेल निकलता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- देश के इतिहास में पहली बार, यदि कोई गाड़ी परिवहन के लिये आयेगी तो 25+2=27 प्रतिशत, 27 रूपये प्रति टन कोयले का [XX][10] देना पड़ेगा तब तो कोयले की गाड़ी बाहर निकलेगी (शेम-शेम की आवाज)। यह सरकार कोयले के नाम पर एक गाड़ी में सीधा-सीधा 540 रूपये की वसूली कर रही है। यह बात इससे प्रमाणित होती है जब यह..(व्यवधान)।

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, यह बहुत आपत्तिजनक बात कही है।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत आपत्तिजनक है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय,यह आरोप बिल्कुल असत्य है। (व्यवधान)

---

[10] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप कुछ भी आरोप लगायेंगे। आप प्रमाण के साथ कहिए। (व्यवधान)

संसदीय सचिव, महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध (डॉ. रश्मि आशीष सिंह) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बिना प्रमाण के नाम लेकर बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- आपको आरोप लगना है तो आप आरोप लगाईये।(व्यवधान)

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कांव-कांव, चांव-चांव हो रहा है। आप इनको मना करिये ।(व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोग प्रमाण प्रस्तुत करिये।

श्रीमती अनिता योगेन्द्र शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह नाम का संबोधन कर रहे हैं।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनको मना करिये।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मुख्यमंत्री के ऊपर इस तरह का आरोप नहीं लगा सकते। यह [11] [XX] बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आपने [XX] बोला है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय,बिना प्रमाण के इस प्रकार से किसी के ऊपर आरोप लगाना, यह गलत है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी के ऊपर कीचड़ उछालने से पहले प्रमाण प्रस्तुत करिये।

अध्यक्ष महोदय :- मैं उसको विलोपित करता हूँ। आप शांति से बैठिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ठीक है। वह विलोपित हो गया तो उसको आर.जी. टैक्स बोल देते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- आप कुछ भी टैक्स बोलिए, लेकिन नाम लेकर मत कहिए। मैंने उसे विलोपित कर दिया है। अब बात न करें।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उभरते हुए कोयला के कारोबारी हैं उनके ऊपर इंकम टैक्स की रेड पड़ी..।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह विलोपित तो हो ही नहीं सकता। आई.टी. ने प्रेस विज्ञप्ति जारी की है, उनकी जो एजेंसी है, उन्होंने प्रेस विज्ञप्ति जारी की है, प्रेस विज्ञप्ति जारी करके, बकायदा बताया गया तो वह विलोपित कैसे होगा?

अध्यक्ष महोदय :- उसमें क्या लिखा है?

---

[11] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उसमें जो रेड हुआ और रेड होने के बाद में उनके द्वारा प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई है जो प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई है, उसमें बताया गया है कि कितना चुनाव में कहां के लिए दिया है ? उसमें कितना अधिकारी को गया है, उसमें जो कागजात जप्त हुए हैं, वह सारी बातें आयीं हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय,माननीय नेता जी का भाषण चालू हो गया क्या ? जो 56 मिनट का टाईम था, वह खत्म हो गया है।

अध्यक्ष महोदय :- शासकीय विज्ञप्ति में ऐसी बातें नहीं आईं हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ऐसी बातें आईं हैं। आपको वह दस्तावेज दे देंगे। हम पटल पर रखवा देंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी सदन के सदस्य हैं और इस सदन के मुखिया हैं। हमने अविश्वास प्रस्ताव ही सरकार के खिलाफ लाया है।

अध्यक्ष महोदय :- तो आप सरकार के खिलाफ बोलिए, आप नाम मत लीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तो हम किसी के...।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने नाम कहां लिया है ? उसमें नाम नहीं आया है।

अध्यक्ष महोदय :- उनने नाम लिया है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने सरकार के लिए बोला है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने नाम लिया है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आपने अभी तो नाम लिया है। (व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह :- उभरते हुए कोयला के कारोबारी हैं।(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप आगे तो बैठे हैं, लेकिन आपको पीछे का सुनाई नहीं दे रहा है। (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आपने अभी तो नाम लिया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के मुखिया कौन है ? हम मुखिया, मंत्रियों के ऊपर आरोप नहीं लगायेंगे तो किसके ऊपर आरोप लगायेंगे ?

श्री कवासी लखमा :- आप कुछ भी आरोप लगायेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने सरकार के खिलाफ आरोप लगाया है। वह सरकार के मुखिया हैं। आप पहले का अविश्वास प्रस्ताव देख लें।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय,माननीय नेता जी का जल्दी बोलवाईये, जो 56 मिनट का टाईम था, वह खत्म हो गया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप इतना घबरा क्यों रहे हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- आपने सरकार के खिलाफ आरोप लगाया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, घबराने की बात नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तो उन्होंने शुरूआत की है।

अध्यक्ष महोदय :- आप आरोप लगाईये, किसी को मना नहीं किया है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप बहुत अच्छा बोल रहे हैं, आप बोलिए। आपका उसमें नाम है।

अध्यक्ष महोदय :- आप तो अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा कर रहे हैं। आरोप लगायेंगे ही, मगर थोड़ा संभल कर करिये। आप नाम मत लीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा : - माननीय अध्यक्ष महोदय, इंकम टैक्स की रेड हुई और इंकम टैक्स की रेड के बाद जो प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई और हमें जो जानकारी मिली है, उसमें जो दस्तावेज जप्त हुए हैं। उस दस्तावेज में 45 करोड़ में कोल वाशरी खरीदने का उल्लेख है। साढ़े 9 करोड़ रूपये कैश मिला है। साढ़े 4 करोड़ रूपये की ज्वेलरी मिली है। माननीय सभापति महोदय, उसमें ढाई सौ करोड़ रूपये का हिसाब-किताब है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आसंदी पर बैठे हैं। आप कैसे गड़बड़ा रहे हो ?

श्री शिवरतन शर्मा : - माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सरकार छत्तीसगढ़ियों की बात करती है। हम भी छत्तीसगढ़ियां हैं। छत्तीसगढ़ के लोगों का विकास होगा तो हमें भी प्रसन्नता होगी। पर छत्तीसगढ़ के लोगों को धोखा कैसे देती है ?आपके सामने उसका एक उदाहरण रखना चाहता हूँ। इनके जन घोषणा पत्र में आरक्षण की बात थी कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने अनुसूचित जाति का आरक्षण 12 प्रतिशत किया है। हम उसको बढ़कार, 16 प्रतिशत करेंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोगों ने तो आरक्षण का प्रतिशत काट दिया था।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय,यह बिल्कुल गलत बोल रहे हैं। कहीं 16 प्रतिशत आरक्षण की बात नहीं हुई है। यह अनुसूचित जाति के आरक्षण को काटने के लिए दोषी हैं। जो अनुसूचित जाति का आरक्षण 16 प्रतिशत है, उसको कम करके 12 प्रतिशत करने के लिए यह दोषी हैं। यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार में ही हुआ था।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय शर्मा जी, आपको 45 मिनट हो गये।

श्री शिवरतन शर्मा : - माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार ने घोषणा की कि पिछड़ा वर्ग के लिए यह सरकार 27 प्रतिशत आरक्षण लेकर आएगी। कांग्रेस का एक पदाधिकारी हाईकोर्ट में गया। 27 प्रतिशत आरक्षण के खिलाफ स्टे लेकर आया और जिस दिन वह स्टे लेकर आया, उसके एक सप्ताह के

अंदर उसको पुरूस्कृत किया गया। पं. सुंदर लाल शर्मा विश्वविद्यालय में उसको कबीर शोध विद्यापीठ में नियुक्ति दे दी गई। यह सरकार आरक्षण के नाम पर छत्तीसगढ़ की जनता को धोखा दे रही है। केन्द्र सरकार ने आर्थिक आधार पर सामान्य वर्ग के लिए आरक्षण की व्यवस्था की। 3 सालों से ऊपर हो चुका है, पर अभी तक किसी प्रकार का आरक्षण सामान्य वर्ग को नहीं मिला।

अध्यक्ष महोदय :- अब आप समाप्त करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ 10 मिनट में समाप्त कर रहा हूं, सिर्फ 10 मिनट।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, 5 मिनट में समाप्त करिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, यह सरकार बार-बार किसानों की सरकार बोलती है। बड़े जोर से बोलते हैं कि हमने 2500 रूपये धान की कीमत दी है। मैं इस सदन में चुनौती देता हूं, वर्ष 2019-20 और वर्ष 2020-21 में इस सरकार ने किसानों को 2500 रूपये धान की कीमत नहीं दी। इस सरकार ने छत्तीसगढ़ के पूरे किसानों को धोखा दिया है। माननीय अध्यक्ष जी, वर्ष 2019-20 में धान का समर्थन मूल्य 1815 रूपये था, बारिक धान का समर्थन मूल्य 1835 रूपये था। इन्होंने 600 रूपये प्रति क्विंटल राजीव गांधी किसान न्याय योजना के अंतर्गत दिया है। एक एकड़ में 9 हजार रूपये दिया है। माने एकड़ में कितना पड़ा, आप हिसाब करिए, वर्ष 2019-20 में किसानों को जो कीमत पड़ी है, वह 2415 रूपये पड़ी है।

श्री अमरजीत भगत :- पूरे हिन्दुस्तान में अगर सबसे ज्यादा धान की कीमत मिल रहा है तो छत्तीसगढ़ में मिल रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- वर्ष 2020-21 में 2468 रूपये पड़ा है। माने, आप पूरे प्रदेश के किसानों को धोखा देने का काम कर रहे हैं। जब आप 2500 रूपये कीमत दे रहे हैं, चार किश्तों में दे रहे हैं, किसान समझ नहीं पा रहे हैं, इसलिए धोखा दे रहे हैं। मैं आपको चुनौती दे रहा हूं, आप सिद्ध करिए की, आपने 2500 रूपये कीमत दी है क्या ? माननीय अध्यक्ष जी, एक विषय बार-बार आता है। हमने किसानों का कर्ज माफ कर दिया। 95 हजार किसान ऐसे हैं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- 2500 रूपये नहीं, छत्तीसगढ़ में उससे भी ज्यादा मिल रहा है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभी लोगों का कर्ज माफ हुआ है, आपको भी 2500 रूपये मिल रहा है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- बैठिए-बैठिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- जिनका अल्पकालीन ऋण भी माफ सरकार ने नहीं किया। इनके तो घोषणा पत्र में था, किसानों का पूरा कर्ज माफ करेंगे। तो मध्यमकालीन और दीर्घकालीन ऋण क्यों माफ नहीं हुआ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महोदय जी, आपका कितना ऋण माफ हुआ बताएंगे।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन 15 साल में किसान मन के ऐको बेर ठुठी बीड़ी भी माफ करे हो तो बतावव। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- एक पैसा भी माफ हुआ है तो बताईए। माननीय अध्यक्ष जी, माननीय धनेन्द्र साहू और माननीय कृषि मंत्री जी का भाषण हो रहा था।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, समाप्त करिए। अब हो गया।

श्री शिवरतन शर्मा :- 10 मिनट लूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं-नहीं।

श्री शिवरतन शर्मा :- सर, भाषण ही कहां दे पाया हूं। भाषण में खाली हुल्लड़ ही होता रहा है।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आपके कार्यकाल में तो किसानों को डंडा मिला है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, वही-वही बातें रिपीट हो रही है। यह प्रश्नकाल में आ चुका है। कोई नया विषय हो तो लाएं।   छत्तीसगढ़ में किसानों को पूरे हिन्दुस्तान में धान की सबसे ज्यादा कीमत मिल रही है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय कृषि मंत्री जी का भाषण हुआ कि हमने किसानों को इतनी कीमत दी है कि छत्तीसगढ़ में मजदूरों का पलायन रूक गया। कोविडकाल में जब मैं और माननीय अजय चंद्राकर जी, मुख्यमंत्री जी के पास मिलने गये। मैं अपने विधान सभा क्षेत्र के 5 हजार मजदूरों की सूची लेकर गया था, मैंने मुख्यमंत्री जी को दिया। जब मैंने मुख्यमंत्री जी से कहा कि छत्तीसगढ़ के 12 से 15 लाख मजदूर बाहर हैं। बड़े अच्छे वातावरण में बात हो रही थी, मुख्यमंत्री जी ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। माननीय श्रम मंत्री जी ने उस समय डिबेट में कहा कि 3 से 4 लाख लोग बाहर हैं। जो वापसी का रिकार्ड है, वह देख लीजिए। 16 लाख मजदूर वापस आए। आपके पास पलायन करने वाले मजदूरों को रिकार्ड नहीं था।

श्री शैलेश पाण्डे :- आपने 15 साल में डाटा ही इकट्ठा नहीं किया। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- पाण्डे जी, प्लीज।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप कहते हैं न कि हमने किसानों को पैसा दिया है। उसके चलते पलायन रूक गया। माननीय अध्यक्ष जी, यह सीधा-सीधा किसानों को धोखा देने की बात करते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद। धन्यवाद।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं सिंचाई की बात करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, मैं सिर्फ तीन विषय लूंगा। आपसे निवेदन है।

अध्यक्ष महोदय :- आपने परसों सिंचाई की बात की थी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी को बार-बार सभापति बोलना यह गलत आदत है।

अध्यक्ष महोदय :- बोलने दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, इनके जन घोषण पत्र में इस बात का उल्लेख था कि हम 5 साल में सिंचाई का रकबा डबल करेंगे। दो योजना को पांच साल में चालू करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- बैठ जाईये, थोड़ा बोलने दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान मुख्यमंत्री जी ने सदन में एक दूसरे को चुनौती देने की बातचीत हुई थी। माननीय अध्यक्ष जी, ऑन रिकार्ड साढ़े तीन साल में सिंचाई का रकबा कितना बढ़ा है ? 2 प्रतिशत बढ़ा है।

अध्यक्ष महोदय :- बढ़ा है न।

श्री शिवरतन शर्मा :- यह डबल करने की बात कर रहे थे। यह मैं रिकार्ड में बोल रहा हूं। माननीय अध्यक्ष जी, वास्तव में यह रकबा नहीं बढ़ा है। मैं युवाओं की बात करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- युवा की बात तो हो गयी।

श्री शिवरतन शर्मा :- अध्यक्ष जी, युवाओं की बात इसलिए कर रहा हूं। पूरे प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री जी का बड़ी-बड़ी फोटों के साथ फ्लैक्स लगा है। हमने पांच लाख लोगों को रोजगार दिया।

श्री अमरजीत भगत :- तो किसका लगेगा ?

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, बीच में कमेंट्स न करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी का बिलासपुर के एक सभा में भाषण हुआ। हमने 2 लाख 80 हजार लोगों को सरकारी नौकरी दे दी। जब विधान सभा में मेरा और माननीय नेता प्रतिपक्ष जी का प्रश्न आया तो माननीय मुख्यमंत्री जी का जवाब आया कि साढ़े तीन साल में हम 20,293 लोगों को नौकरी दे पाए हैं । ये सदन में कुछ बोलते हैं, बाहर कुछ बोलते हैं यानी गोबल्स को भी मात देने में यह सरकार लगी हुई है । माननीय अध्यक्ष महोदय, आज माननीय मोहन मरकाम जी का भाषण हो रहा था ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, मूड मत बनाईये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनके भाषण में क्या था ? वे बोले कि छत्तीसगढ़ में सबसे कम बेरोजगारी है । उन्होंने बोला कि छत्तीसगढ़ में बेरोजगारी का जो औसत है वह पाईंट 6 (.6) परसेंट है । विधानसभा में माननीय उमेश पटेल जी ने स्वीकार किया है कि 18 लाख 46,000 बेरोजगार पंजीकृत हैं । अगर 18 लाख 46,000 बेरोजगार पंजीकृत हैं तो माननीय मोहन मरकाम जी इसका कितना परसेंट होगा वह निकालकर बता देना, आप तो शिक्षक रहे हैं, आपको तो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

प्रतिशत निकालना आ जायेगा । आपने तो बीमा एजेंसी में भी काम किया है । यह सरकार छत्तीसगढ़ के युवाओं को धोखा देने का काम कर रही है ।

अध्यक्ष महोदय :- अब आपका हो गया । प्लीज ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक अंतिम बात कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं । माननीय मुख्यमंत्री जी का लोगों को रोजगार देने के लिये सदन में भाषण हुआ कि हम गौठान के माध्यम से प्रत्येक गांव में 10 लोगों को रोजगार देंगे । अभी माननीय मुख्यमंत्री जी का बाहर भाषण हुआ, वे बोले कि हमारे गौठान की योजना इतनी सफल हो गयी है कि गांव का चरवाहा भी 30 से 35,000 रूपये महीना कमा रहा है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से दो बार बात कर चुका हूं, मैंने उनसे सार्वजनिक रूप से निवेदन किया है कि आप लॉट निकालकर के 5 गौठान सारे सदस्यों को घूमाकर दिखा दीजिये कि आपकी गौठान योजना कितनी सफल है ? यह सरकार गौठान के नाम पर अरबों रूपये की बर्बादी कर रही है । यह सरकार गोबर खरीदी के नाम पर पूरे देश के किसानों को धोखा देने का काम कर रही है । 154 करोड़ की गोबर खरीदी और 115 करोड़ का विज्ञापन । गोबर खरीदी के लिये 115 करोड़ रूपये का विज्ञापन किया गया ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बॉयोडीजल योजना की जरूरत नहीं है न ।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्लीज बैठिए ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बॉयोडीजल लंदन से न खाड़ी से डीजल मिलेगा शर्मा जी के बाड़ी से ।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया । वह बहुत पुरानी बात है । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- क्या शर्मा जी की बाड़ी से या डॉ. रमन सिंह जी की बाड़ी से मिल रही है ? (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- जर्सी गाय कहां गयी ? (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- क्या डीजल मिल रहा है उसके बारे में कुछ बतायेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- मरकाम जी, बैठिए । धर्मजीत जी आप शुरू करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ शांति का टापू था। छत्तीसगढ़ में सौहार्द का वातावरण था । (व्यवधान)

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने बोलने के लिये आखिरी समय मांगा था, अब इनका समाप्त करवाईये । (व्यवधान)

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- शांति का टापू है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज छत्तीसगढ़ अपराध का गढ़ बन गया है ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हो गया, पर्याप्त है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- हो गया । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय बृजमोहन जी ने कुछ बात की । मैं आपके सामने...।

अध्यक्ष महोदय :- अब आपका हो गया न । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके सामने कुछ आंकड़े रखना चाहता हूं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- यहां रख दीजिये । पटल पर रख दीजिये । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये और कितना बोलेंगे ?

श्री अमरजीत भगत :- यह कबीर की भूमि है । शांति का टापू है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बच्चियों के साथ में दुराचार में द्वितीय स्थान छत्तीसगढ़, बच्चों के विरूद्ध अपराध में तृतीय स्थान छत्तीसगढ़, हत्या के मामले में तृतीय स्थान छत्तीसगढ़, अनुसूचित जाति वर्ग की नाबालिग बच्चियों से दुराचार के मामले में पांचवां स्थान छत्तीसगढ़, बालात्कार में छठवां स्थान छत्तीसगढ़, अपहरण में सातवां स्थान छत्तीसगढ़, जनजातीय वर्ग पर अत्याचार में सातवां स्थान छत्तीसगढ़ और महिलाओं के विरूद्ध अपराध में बारहवां स्थान छत्तीसगढ़ । (व्यवधान) इसके अतिरिक्त नवमां स्थान छत्तीसगढ ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये हो गया, प्लीज ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, शांति का टापू छत्तीसगढ़ । इस सरकार की करनी के कारण अपराध का गढ़ बन गया । (व्यवधान) दुनिया में ऐसा कोई अपराध नहीं है जो घटित होता हो वह छत्तीसगढ़ में घटित न होता हो और ये जो अपराध घटित हो रहे हैं उसके पीछे बड़ा कारण है नशा । इस सरकार ने अपने घोषणा-पत्र में कहा था कि हम शराबबंदी करेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, अब हो गया न । आप 55 मिनट बोल चुके हैं । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- बांधी साहब, कुछ सलाह दे रहे हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं । इस सरकार को इस पद में रहने का नैतिक अधिकार नहीं है । अगर थोड़ी भी नैतिकता बाकी हो तो इस्तीफा देकर बाहर आना चाहिए । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत सिंह जी । क्या आपने भी अविश्वास प्रस्ताव दिया है ? आप लोगों ने इतना बड़ा अविश्वास प्रस्ताव दिया है इसको लेकर कोई बात नहीं कर रहा है, कम से कम आप इस पर बात करेंगे । इसमें आपके ही बहुत सारे पाईंट हैं । आप अपनी बात कहिए । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, समय-सीमा का ध्यान रखा जाये ।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष जी, ये बोल रहे हैं कि उसमें ये सब समाहित है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, समय-सीमा का ध्यान रखा जाये।

श्री कवासी लखमा :- ठाकुर साहब को भी इनका भूत चढ़ा है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय जी, मैं इस आरोप पत्र के नंबर 11 में बोलने जा रहा हूं। आप भी थोड़ा गौर करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- जी, 38 वें नंबर पर बोलेंगे?

श्री धर्मजीत सिंह :- 11वें नंबर पर। जो ये आरोप-पत्र है, उसके 11 नंबर पर।

अध्यक्ष महोदय :- 11 के बाद 38।

श्री धर्मजीत सिंह :- फिर मैं बताउंगा। आपको नंबर बता-बताकर बोलूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- आप भूल रहे हैं तो मैं बता रहा हूं न उसके बाद 38 होगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- 16 है।

अध्यक्ष महोदय :- 38

श्री धर्मजीत सिंह :- 16 है।

अध्यक्ष महोदय :- 16 के बाद 38 हो जायेगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- फिर 17।

अध्यक्ष महोदय :- इतना लंबा नहीं हो।

श्री धर्मजीत सिंह :- फिर 20।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं-नहीं। 38 ज्यादा महत्वपूर्ण है।

श्री धर्मजीत सिंह :- 20-25 ठोक रखा हूं। आप जितना बोलेंगे, मैं उतना बोलूंगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, आप बोल रहे हैं कि जो अविश्वास प्रस्ताव दिया है, उस पर नहीं बोल रहे हैं। वे आपको नंबर बता रहे हैं, उसे क्रमश: बढ़ने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, मैं उसी को तो बता रहा हूं।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैंने बोला कि क्रमश: बढ़ने दीजिए न। जितना भाषण हुआ है अभी चाहे बृजमोहन जी का हो, चाहे शिवरतन का, सभी का। हमने जो दिया है, उसी के ऊपर भाषण है। हम मलेशिया तक नहीं गये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, उस क्रम में नहीं हो रहा है।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- अध्यक्ष महोदय, श्री भूपेश बघेल जी के खिलाफ रखे गये अविश्वास प्रस्ताव का मैं समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। सन् 2018 में प्रदेश की जनता ने बहुत बड़ा जनादेश दिया। उस जनादेश में आप, हम और ये सब यहां चुनाव जीतकर आये। बहुमत का आंकड़ा 68 के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आसपास 67 था। आपने सरकार बनाया। आपको जनादेश मिला। हमने आपको बधाई दी कि जनता की आकांक्षाओं पर आप खरे उतरेंगे और त्वरित निर्णय करेंगे। अध्यक्ष महोदय, पहले दिन से ही शपथ ग्रहण के दिन से ही ये ढाई साल वाली समस्या इस प्रदेश में जो विद्यमान हुई है, वह आज तक इस प्रदेश के अंदर और प्रदेश के सदन के बाहर भी वह समस्या जैसे के तैसे यहां पर उपस्थित है। अध्यक्ष महोदय, मैंने आपसे कहा था कि मैं 11 नंबर में बोलूंगा, मंत्रिमंडल में अंतर्कलह है। माननीय मुख्यमंत्री और माननीय स्वास्थ्य मंत्री, पहले पंचायत मंत्री भी थे, अब नहीं हैं, उनके बीच मतभेद जगजाहिर है और वह मतभेद इतना ज्यादा बढ़ गया था कि यहां बैठे हुए एक माननीय विधायक जो अभी नहीं हैं, बृहस्पत सिंह जी ने इस सदन के बाहर एक आरोप लगाया..।

श्री कवासी लखमा :- क्या लगाया?

श्री धर्मजीत सिंह :- मुझे बोलने दीजिए न। मैं तो आपके बोलने में कभी नहीं बोला। उनकी हत्या की कोशिश श्री टी.एस. सिंहदेव ने की और उसमें बड़ा बवाल मचा। अध्यक्ष महोदय, हमने कहा या तो बृहस्पत सिंह जी ठीक बोल रहे हैं कि उनकी हत्या की कोशिश हुई है तो टी.एस. बाबा के ऊपर कार्रवाई होनी चाहिए। अगर टी.एस. बाबा सही हैं तो बृहस्पत सिंह के ऊपर कार्रवाई होनी चाहिए, पर इनके आंतरिक मतभेद और राजनीतिक विचारों की मत-भिन्नता के कारण सदन को भी इसमें जबर्दस्ती शामिल होना पड़ा, जो कि सदन का विषय नहीं था। सदन में 3 दिन तक वे मंत्री नहीं आयें। बाहर में कोई मान-मनोवल हुआ। कोई इनके एक नेता जैकेट पहने हुए, टोपी पहने हुए एयरपोर्ट पहुंच गये थे, उन्हें वापस वहां से बुलाया गया। फिर यहां पर उनकी बैठक हुई। बैठक के बाद यहां पर फिर एक बयान आया। गृहमंत्री जी बयान देने लगे कि इस दरगानी रात को बृहस्पत सिंह जी यहां आ रहे थे, जैसा कि पुलिस मंत्री का बयान होता है। हमने उनसे कहा कि ये बयान मत दीजिए। आप तो ये बयान दो कि टी.एस. बाबा हत्यारा है या हत्या की कोशिश कर रहा है या नहीं कर रहा है। बात ले-देकर खत्म हुई। अब एक पत्र उन्होंने दिया। अब पत्र दिया तो पत्र में उन्होंने 2-3 आरोप लगाये कि सरकार की असफलता के कारण या असहयोग के कारण गरीबों का मकान मैं नहीं बनवा पा रहा हूं। उनके ऊपर चीफ सेक्रेटरी को बैठा दिया गया है। उनको निर्णय लेने के लिए रोक दिया गया है। मजबूरी में उन्हें वह विभाग छोड़ना पड़ा। वह इधर से घूमता है, उधर जाता है, इधर जाता है, वह उनका आंतरिक मामला है, उसमें मुझे कुछ नहीं कहना है। यह सरकार अंतर्द्वंद में है और उसके कारण ये जो 71 विधायक हैं, माने मंत्रियों को छोड़कर जो बाकी विधायक हैं, उनको भी चारों को दस्तखत करना पड़ता है। कहीं उसे मोटर में बैठाकर दिल्ली ले जाते हैं। कभी वहां दिल्ली भ्रमण कराते हैं। कभी इस नेता के यहां ले जाते हैं। कभी उस नेता के यहां ले जाते हैं। ये नुमाइश की चीज बनकर रह गये हैं। ये अंतर्कलह इस सदन में मैं 11 नंबर के माध्यम से आपके माध्यम से बोलना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- अब 16 में आ जाइए, हो गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अब आगे बढ़ रहा हूं ।

श्री नारायण चंदल :- अध्यक्ष जी, ये लोग भी सब हक खा गए हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, अभी कुछ दिनों पहले मैंने टेलीविज़न पर एक बयान देखा । एक बहुत सुदर्शन व्यक्तित्व के नेता हैं, कौन सी पार्टी के हैं यह मुझे नहीं मालूम । उन्होंने एक बयान दिया ।

अध्यक्ष महोदय :- अपने छत्तीसगढ़ के ?

श्री धर्मजीत सिंह :- जी हां, छत्तीसगढ़ के । शायद आपने भी देखा होगा । आपको बता भी दूंगा, ये सब जानते हैं, हम लोग भी जानते हैं । उन्होंने एक बयान दिया कि इंकम टैक्स के अधिकारियों ने उनके साथ मारपीट की, उन्होंने बयान दिया कि उन्हें छत्तीसगढ़ का एकनाथ शिंदे बनने के लिए बोला गया । यह बहुत गंभीर आरोप है । इस सदन में कौन होगा, नहीं होगा । कौन विधायक किस पार्टी के होंगे, किस पार्टी के नहीं होंगे, यह फैसला जनता करती है । कौन वे लोग थे जिन्होंने उन्हें एकनाथ शिंदे बनने के लिए कहा, कौन वे लोग थे जिन्होंने उनके साथ मारपीट की, कौन वे लोग थे जिन्होंने उन्हें लोभ दिया, कौन वे लोग थे जिन्होंने उन्हें प्रताड़ित किया ? मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, आपकी सरकार तो नहीं गिरने वाली है क्योंकि आपके पास बहुमत है । लेकिन आप एस.आई.टी. बनाकर, चाहे वह किसी भी विभाग का कोई भी अधिकारी हो, कोई भी नेता हो, कोई भी धन्ना सेठ हो उसके खिलाफ जांच कराइए कि कौन ऐसा आदमी है जो चुनी हुई सरकार को अस्थिर करने के लिए एकनाथ शिंदे की खोज कर रहा है और उस व्यक्ति से भी पूछा जाना चाहिए कि..।

श्री अजय चन्द्राकर :- इससे छत्तीसगढ़ का विकास प्रभावित हो रहा है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- हां, छत्तीसगढ़ का विकास प्रभावित हो रहा है । एकनाथ शिंदे बनने का दावा जिन्होंने किया, यह बहुत गंभीर बात है ।

श्री अमरजीत भगत :- धर्मजीत भइया, भाषण देते समय दाहिनी ओर झांक लिया करें ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, बिंदु क्रमांक 17 पर आइए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- दाहिनी तरफ तो देख रहा हूं भइया, बांयी तरफ तो आप लोग..।

अध्यक्ष महोदय :- आप मेरी तरफ देखिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं तो आपको ही देख रहा हूं साहब । सबसे सुंदर भी आप ही दिख रहे हो । अध्यक्ष महोदय, आप ग्रीन कलर में बहुत चीयरफुल मूड में दिख रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- आज बुधवार का दिन है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- हां सर, बहुत अच्छा है । राजगीत अरपा पैरी के धार..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नारायण चंदेल जी को प्रताड़ित कीजिए । वे बोल रहे हैं कि दुल्हा डौका बरोबर दिख रहे हैं (हंसी)।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- वह तो संसदीय है, प्योर संसदीय है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- पूरे प्रदेश की नदियों में रेत ठेकेदारों ने अपना शिकंजा ।

श्री अजय चंद्राकर :- संसदीय और प्योर संसदीय में क्या अंतर है अध्यक्ष महोदय ?

अध्यक्ष महोदय :- प्योर संसदीय मतलब अभी तक किसी ने आरोप नहीं लगाया है ।

श्री धर्मजीत सिंह:- यानी शुद्ध देशी गाय वाला । अध्यक्ष महोदय, अरपा जहां से निकलती है और जहां जाकर शिवरीनारायण की तरफ मिलती है, उस पूरे अरपा को छलनी कर दिया गया है । रेत माफिया वहां खुले आम [XX] [12] मचाए हुए हैं और रेत का धड़ल्ले से दोहन, शोषण और तस्करी कर रहे हैं । वहां के किसी भी अधिकारी में इतनी हिम्मत नहीं है कि वह रेत ठेकेदार की गाड़ी को रोक सके । क्योंकि सब रसूखदार लोग हैं । सब बहुत पहुंच वाले लोग हैं, सब सत्ता के इर्द-गिर्द नजदीक बैठने वाले लोग हैं । अध्यक्ष महोदय, जिस अरपा की पूजा करने के लिए मुख्यमंत्री जाते हैं, जिस अरपा की पूजा आप और हम करते हैं, आज उसकी बर्बादी को हम चुपचाप देख रह हैं क्योंकि उन रेत के ठेकेदारों के आगे न हम कुछ बोल सकते और न ही अधिकारी कुछ कर सकते । वह तो पहली मैंने सुना की कोई कलेक्टर रेत के घाट में गया, पहली बार गया उस कलेक्टर को मैं साधुवाद देता हूं कि वह हिम्मत करके गया तो । लेकिन दुबारा जा पाएगा या नहीं जा पाएगा, यह मैं नहीं जानता । अध्यक्ष महोदय, यह तो टी.एस.बाबा और सी.एम. साहब का झगड़ा तो बिल्कुल ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल की सरकार है, डरने की जरूरत नहीं है । यहां हरियाणा जैसा नहीं होगा जहां आई.एफ.एस. को दबा दिया गया, ऐसा नहीं होगा ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- कवासी जी, अगर हिम्मत है तो रेत के अवैध खनन को रोककर दिखा दो ।

श्री धर्मजीत सिंह :- बिलासपुर में पुल गिरने वाला है । पुल के घोड़े को खोद दिया गया है, किसी भी दिन पुल गिरने वाला है । अध्यक्ष महोदय, आपने बिग बॉस का शो तो आपने देखा होगा ।

अध्यक्ष महोदय:- आता तो है लेकिन कौन सा एपीसोड ?

श्री धर्मजीत सिंह :- अरे वह सलमान खान वाला बिग बॉस शो चलता है । उस शो में रूठना, मनाना, निकलना यही यहां टी.एस.बाबा और सी.एम.साहब का चल रहा है । अरे भाई, झगड़ा खत्म करो । आप लोगों के झगड़े में पूरे प्रदेश को तबाह क्यों कर रहे हो ? ये बाकी लोग बेचारे परेशान है, इधर देखते हैं तो वो नाराज मत होजाए, उधर देखते हैं तो ये नाराज मत हो जाए । इन लोगों का स्वास्थ्य आप अलग खराब कर रहे हैं ।

श्री अमरजीत भगत :- धर्मजीत भइया, आपने वो वाला गाना सुना है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

---

[12] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया.

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो खुले आम बाबा विरोधी हो, मैं जानता हूं । आपको सर्टीफिकेट देने की जरूरत नहीं है ।

श्री अमरजीत भगत :- आपने वो वाला गाना सुना है । रूठे रूठे पिया को मनाऊं कैसे ?

श्री धर्मजीत सिंह :- यहां गाना, मनाऊं कैसे नहीं । तुम रूठी रहो, मनाता रहूं, इन अदाओं पे और मज़ा आता है, यह चल रहा है । अभी दो दिन बाद आपको दिल्ली जाना पड़ेगा

श्री अजय चंद्राकर :- आपकी टी.एस. बाबा के बात के संबंध में दम इसलिए नहीं है कि आपको मंत्री जनसेवा के लिए नहीं बनाया गया है। आपको [13][xx] के लिए बनाया गया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- [xx] करके बनाया गया है।

श्री नारायण चंदेल :- धर्मजीत जी, इन लोग बेचारे डरे हुए हैं, सहमे हुए हैं, अब तो 29 को जाना है। कई लोग बीमार पड़ते जा रहे हैं।

श्री अमरजीत भगत :- अजय चंद्राकर जी, बहुत गलत बात बोल रहे हैं। यह इस पाठशाला के अपसेंटिड छात्र हो सकते हैं, मैं कंफ्यूजन में हूं।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, मंत्री जी को समझाईये। मंत्री जी, अभी आप पावर में हैं, बैठ जाईये। अध्यक्ष जी, बहुत अनिर्णय की स्थिति चल रही है।

अध्यक्ष महोदय :- मंत्री जी टोपी पहनकर आये हैं, आप उनकी प्रशंसा नहीं कर रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- साहब, मैंने तारीफ किया है। वह अरूण गौली टाईप का दिख रहे हैं। मैंने तारीफ कर दिया है। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- हाँ, ठीक है। अब वह नहीं उठेंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- साहब, देखिये मंत्री जी मेरा दोस्त हैं। आप उसको अन्यथा मत लीजियेगा। यदि उसको बुरा लगेगा तो मैं उनसे माफी मांग लूंगा।

श्री अमरजीत भगत :- हम आपकी बात को कभी बुरा नहीं मानते हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं, मैं इसकी बात को बुरा नहीं मानता।

श्री अरमजीत भगत :- हमारा पड़ोसी अजय चंद्राकर और चंदेल जी आपके बारे में छोड़खानी कर रहे थे। मैं आपकी तारीफ में थोड़ा बोलता हूं, मैं कसीदे पढ़ता हूं।

एक माननीय सदस्य :- इंग्लिश में बोलिये।

श्री अमरजीत भगत :- हाँ, इंग्लिश में बोलता हूं। Your smile face is every what is like and happy.

श्री धर्मजीत सिंह :- Thank you।

श्री अमरजीत भगत :- ठाकुर जी, सुनिये। This is clear. (हंसी)

---

[13] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, जब नारायण चंदेल जी प्योर दारू और मिलावटी दारू के बारे में बोल रहे थे तो मैंने कहा कि जब प्योर दारू मिलता है तो आदमी अंग्रेजी बोलता है और दारू जब प्योर नहीं रहता है तो वह ठण्डे बस्ते में रहता है। अध्यक्ष महोदय, मैं इसको आपके विवेक पर छोड़ता हूं।

श्री नारायण चंदेल :- वह तो उस दिन नकली दारू वाला बात कर रहे थे कि पिकअप नहीं ले रहा है। वह पहले से मेरे पास आकर शिकायत किये कि पिकअप नहीं ले रहा है।

श्री धर्मजीत सिंह :- हाँ, वह पिकअप नहीं ले रहा है। असली वाले दारू में अंग्रेजी बोलता है। जो छत्तीसगढ़ी वाले में बात करने वाला है वह सीधा अंग्रेजी में बात करेगा। इस राजनीतिक जीवन में ऐसा हम सबको रात को 9 बजे फोन आता है।

श्री अमरजीत भगत :- एमा कहां बोलत हस कि अंग्रेजी में नई बोल सकस। अपन मातृभूमि में बोल सकथस, अंग्रेजी में बोल सकथस, हिंदी में भी बोल सकथस।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं-नहीं, बोल सकते हैं, लेकिन रात को 9 बजे दारू पीकर फोन करते हैं। सर, मैं आगे बढ़ना चाहता हूं। इस प्रदेश में शराब बंद करने के लिए शराबंदी की कमेटी बनी। यहां हमारे जो सभापति बैठते हैं, वह विलोपित करते आ रहे हैं। वह इस कमेटी के अध्यक्ष हैं। आप कहां-कहां गये हैं? आप कौन-कौन से प्रदेश का अध्ययन करके आये हैं? आप कब तक शराब बंद करेंगे या नहीं करेंगे? अध्यक्ष जी, यहां तो कुछ नहीं हो रहा है और यहां के विशेषज्ञ लोग झारखण्ड में दारू बेचने के लिए उनको सलाह देने के लिए पहुंच गये। यहां पर बड़े-बड़े लोग जो दारू बेचने के धंधे में लिप्त हैं, रात को जिनके यहां पर सब हिसाब-किताब होता है, वहां कई एजेंसियों को बिजनेस देने के लिए छत्तीसगढ़ की सरकार की दारू विभाग का वहां उपयोग कर लिये। आप बोलते हैं कि हमारा छत्तीसगढ़ के नगरनार स्टील प्लांट को नहीं बेचने देंगे। आप बिल्कुछ ठीक कहते हैं। छत्तीसगढ़ की नगरनार को दिल्ली की सरकार हो या किसी भी राज्य की सरकार हो, उसको नहीं बेच सकता।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, आप लोग थे, आप लोग विधानसभा में पास करके दिये कि अनुमति दो। तो दिये तो उनको पूछो ना।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं अपनी बात कह रहा हूं, मेरी बात सुनो। मैं तो आपके साथ हूं। मैं तो वहां नगरनार के गेट में गिरफ्तारी दिया था कि नगरनार प्लांट का बिक्री नहीं होना चाहिये। आप 30 हजार करोड़, 20 हजार करोड़ में बेचेंगे कहते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि सी.एस.आई.डी.सी. ने अपने 33 करोड़ के जमीन को एन.एम.डी.सी. को 33 करोड़ लेकर क्यों बेचा? यदि यह जमीन वहां पर रहती। मेरे पास विधानसभा के प्रश्न का उत्तर भी है।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्वाइंट टू प्वाइंट ठीक जा रहे हैं, आगे बढ़ते जाईये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री कवासी लखमा :- आपको कोई गलत बताया होगा। एन.एम.डी.सी. को दिया हुआ होगा। एन.एम.डी.सी. की कंपनी है।

श्री धर्मजीत सिंह :- 33 करोड़ रूपये में आपने जमीन बेच दिया। अब वह विनिवेश करेंगे तो आप रोक नहीं सकते हैं। यदि किसी घर में मेरा 25 प्रतिशत, 10 प्रतिशत हिस्सा होगा तो उस घर को मेरी सहमति के बिना कोई नहीं बेच सकता। लेकिन एन.एम.डी.सी. वाले उसको बेचना चाह रहे हैं, उद्योगपति को तस्करी में रखकर देना चाहते हैं, तो इसको रोकने के लिए काम आता। यह जमीन क्यों बेची गई?

श्री कवासी लखमा :- वह बिक गयी है।

श्री धर्मजीत सिंह :- जब यह आपके जवाब में आएगा तो आप इसके बारे में बताते रहना।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये। आप आगे चलिये।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप परेशान क्यों हो रहे हैं ? आपके जांजगीर जिले की एक बेबी सारथी है।

अध्यक्ष महोदय :- क्या ?

श्री धर्मजीत सिंह :- बेबी सारथी नाम की एक लड़की है। दिनांक 28.06.2022 को वह बच्ची शिवरीनारायण के पास से गायब हो गई और दिनांक 14.07.2022 को उसकी लाश मिली और यह उसकी लाश की फोटो है। उसका कंकाल मिला। आपमें से कोई वहां पर क्यों नहीं गया ? गृहमंत्री जी, क्या आपको वहां जाने की फुर्सत नहीं थी? एक बच्ची, चाहे वह जिन कारणों से भी मरी। चाहे उसकी हत्या हुई, उसका बलात्कार हुआ, यह जांच का विषय है। झाड़ी में उसका कंकाल मिला। यह उसकी फोटो है। आपको वहां पर जाना चाहिए था या नहीं जाना चाहिए था ?

अध्यक्ष महोदय :- कौन-सी 14 तारीख को मिली ?

श्री धर्मजीत सिंह :- जी माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- यह घटना 14 तारीख को हुई न ?

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह इसी महीने की 14 तारीख की और पिछले महीने की 29 तारीख की घटना है और मेरे ध्यानाकर्षण के बाद ही उसकी जांच हुई है।

अध्यक्ष महोदय :- क्या आप वहां पर गयी थी ? आपने उसमें प्रश्न क्यों किया था ?

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 14 तारीख को उसकी लाश मिली। मैं यह बोल रहा हूं कि जब आप लखीमपुर जा सकते हैं और जब आप दुनिया भर के और दूसरी जगहों में जा सकते हैं तो आपकी बेटी, आपकी बच्ची, हमारी बच्ची और इस प्रदेश की बच्ची की दर्दनाक मौत हुई है तो आपको वहां पर जाना चाहिए और इस सरकार को उसे आर्थिक मदद भी देनी चाहिए थी। लेकिन आप वहां पर नहीं गये।

अशोधित/अप्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती इंदू बंजारे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उसकी जांच के लिए पत्रों के माध्यम से यह जानकारी भी मिली कि कोई बड़ा नेता जांच न करिये कहकर पुलिस प्रशासन के ऊपर दबाव बना रहा था। (शेम-शेम की आवाज) वह क्षेत्र शिवरीनारायण थाना में आता है लेकिन उस दबाव के कारण उसे दूसरे थाने में ले जाकर पूछताछ किया गया।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह है। वह गवर्नर को चिट्ठी लिखी है। वह सभी बड़े-बड़े नेताओं को चिट्ठी लिखी है। शायद वह गृहमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी को भी चिट्ठी लिखी है तो उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए क्योंकि वह बच्ची है। उसका हाल-बेहाल हो चुका है। उसके घर वालों को यह तो जानने का अधिकार है कि वह क्यों मरी। है न ? उसको न्याय पाने का अधिकार है न ? वह इस प्रदेश की बेटी है, इस प्रदेश के मुख्यमंत्री की बेटी है। इस सरकार को वहां पर जाना चाहिए। मैं यह आरोप नहीं लगा रहा हूं। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि इस सरकार से न्याय मांगने का और इस इस सरकार से मदद मांगने का उसको हक है। आप लोग नोटिस में इसको लेते नहीं हैं। आपको उसकी चिंता बहुत है कि झारखण्ड में क्या हुआ और उत्तरप्रदेश में क्या हुआ ? आप यहां की भी थोड़ी चिंता कर लीजिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एन.सी.आर.बी. की रिपोर्ट वर्ष 2020 में इंडिया में मॉइस्ट द्वारा टोटल 74 मर्डर हुए हैं। उसमें से 62 मर्डर छत्तीसगढ़ में हुए हैं। पूरे इंडिया में लूट के टोटल 41 केस हुए और उसमें से 39 केस छत्तीसगढ़ में हुए हैं। इंडिया में अगेन्स्ट मॉइस्ट के टोटल 533 केस हुए और उसमें से 296 केस छत्तीसगढ़ में हुए। यह भी रिपोर्ट है। हत्या के 3.3 प्रतिशत मामले छत्तीसगढ़ में हैं। बिहार में यह मामला 2.6 प्रतिशत है। जो बिहार हत्या और बलात्कार का शिरोमणि था और जो बिहार अपराध का गढ़ था और जो बिहार अपराधियों का स्वर्ग स्थल था, वह हमारे छत्तीसगढ़ से पीछे हो गया और छत्तीसगढ़ में हम अपराध के मामले में उससे आगे हो गये। हम आगे भी हुए हैं तो वह भी बिहार से आगे हुए हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार ने फूड पार्क के बारे में भी कहा था। श्री राहुल गांधी जी ने किसी जगह भाषण दिया था कि आप छत्तीसगढ़ जाइये। आप जिस भी जगह जाएंगे तो आपको वहां पर फूड पार्क दिखेगा। फूड पार्क कहां है ? 2-4 जगह फूड पार्क का निर्माण हुआ होगा। 3 साल में 200 जगहों पर फूड पार्क खोलना है। आप फूड पार्क के बारे में बताइये न। हम भी चाहते हैं कि हमारे टमाटर के किसानों को केचप मिले।

श्री अजय चंद्राकर :- जगह चिन्हित हो गये हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- जगह चिन्हित करने से वहां पर टमाटर से केचप नहीं बनेगा और कुछ-कुछ जो भी बनना है उसको भी आप बनवा दीजिए और उसको करवा दीजिए, पर वह नहीं हुआ है। अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों का छात्रवृत्ति भी बहुत लफड़े में है। उनको बहुत परेशानी हो रही है। स्काई लैब का भी यही है। जैसे सत्यनारायण जी उसी कमेटी के सभापति हैं। शायद आप दारू और स्काई लैब

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दोनों कमेटियों के सभापति हैं ? प्रभु, आप दारू का तो फैसला नहीं कर पाये, स्काई लैब का ही फैसला कर दों।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- यह कह तो रहे हैं लेकिन यह नाम नहीं देते हैं। आप भी नाम नहीं देते हैं। आप नाम दीजिए न जिससे उस पर चर्चा हो। इस बात को हम भी मानते हैं कि यह सामाजिक बुराई है। आज गुजरात में क्या हुआ ? 39 लोग जहरीली शराब पीकर मर गये। आप नाम दीजिए। आपको किसने रोका है ? आप भी दीजिए और आप भी नाम दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- सामाजिक बुराई है तो घोषणा-पत्र बनाते समय ध्यान नहीं आया ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं तो सिर्फ ध्यानाकृष्ट कर रहा हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- बाद में पता चला कि सामाजिक बुराई है ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- सामाजिक बुराई है तो उसको रोकने का सामूहिक प्रयास करें न । आप लोग उस ओर ध्यान नहीं देते ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैं तो सिर्फ ध्यानाकृष्ट कर रहा हूं कि स्काई लैब को रखना है, स्काई लैब को तोड़ना है, स्काई लैब का उपयोग करना है या स्काई लैब को जमींदोज करना है, यह तो सरकार के ऊपर है । सरकार उसमें निर्णय करे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बजट में प्रावधान होता है, पर 2 साल बजट में रहने के बाद उसकी प्रशासकीय स्वीकृति नहीं होती । उसमें भी आप चीह्न-चीह्न के, छॉट-छॉट के देते हैं । इस प्रकार से काम करने का मतलब क्या है ? अभी रायल्टी के बारे में ठेकेदार के ऊपर सुप्रीम कोर्ट का आदेश हुआ है कि अगर वे रायल्टी पर्ची नहीं रखते हैं तो जितने की रायल्टी पर्ची होती है, उतना उनको पेनॉल्टी करो, लेकिन यहां उनको चार-चार गुना रायल्टी पर्ची दे रहे हैं, पूरे प्रदेश का काम प्रभावित हो रहा है । दुर्ग, राजनांदगांव और उस तरफ के लोगों को चार गुना रायल्टी नहीं लग रही है, बाकी पूरे प्रदेश में रायल्टी लग रही है । इस पर भी जरा विचार करिए । सुपेबेड़ा में भी हालात ठीक करने की कोशिश होनी चाहिए, पर वह नहीं हुआ ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, लोरमी में एक नल-जल योजना लागू हुई है । मैं बहुत खुश था कि हमारी सरकार ने बहुत जबरदस्त काम किया, 13 करोड़ रूपए की नल-जल योजना लाई । मैं बहुत खुश हुआ, सबको बोला, यहां भी सबके हाथ-पैर जोड़े, बहुत बढ़िया किये भैया, लेकिन वह योजना अचानक कैंसिल हो गई । क्यों हो गया ? यह कोई बताने वाला नहीं है । हमारी क्या गलती है, कोई बताने वाला नहीं है । ऐसा काम करना ठीक नहीं है । जंगल, वन सम्पदा, आग लगने की घटना सबसे ज्यादा, जानवर की मृत्यु होने की घटना सबसे ज्यादा, अप्राकृतिक और प्राकृतिक मौत होने की घटना सबसे ज्यादा हो रही है और कोई भी डॉक्टर नहीं है, कोई ट्रेंड डॉक्टर नहीं है, कोई यहां लैब नहीं है, सब चीज बाहर में है । शेर मर रहे हैं, भालू मर रहा है, बाईसन मर रहा है, चीतल मर रहा है, सांभर मर रहा है,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हाथी मर रहा है, सब मर रहे हैं तो यह सब होना चाहिए । मैं उस सी.ई.ओ. के बारे में बोल ही चुका हूं ।

मानननीय अध्यक्ष महोदय, बिलासपुर की स्मार्ट सिटी का बहुत बुरा हाल है । बिलासपुर को भाजपा सरकार के समय में खोदापुर कहा जाता था, जैसे अभी रायपुर को चाकूपुर, डाकूपुर जो भी बोलना है, बोल लो । बिलासपुर खोदापुर हो गया था और वह खोदापुर इसलिए हो गया था कि वहां हर गली, हर मोड़ पर गड्डे थे, लेकिन अभी वह महाखोदापुर हो गया है । जिधर देखो, उधर तुम ही तुम हो । जिधर देखो, उधर गड्डा ही गड्डा है, गड्डा ही गड्डा है । मतलब इतना बुरा हाल सीवरेज के कारण, अमृत मिशन के कारण, स्मार्ट सिटी के कारण है और रहा-सहा कारण यह भी है कि आपने जो नगर निगम की सीमा बढ़ा दी है, उसमें सकरी, तिफरा और कोनी, सबको भी मिला दिए हैं । पहले लोग भूटान के राजा थे । पहले सकरी का नगर पालिका अध्यक्ष होता था तो एक प्रकार से भूटान का राजा था । उसको आपने प्रजा बना दिए । प्रजा बना दिए तो वह न नाली खोदवा पा रहा है, न नल लगवा पा रहा है, न सी.सी. रोड़ बनवा पा रहा है । मैं एक उदाहरण दे रहा हूं, मैं कोई सकरी की बात नहीं कह रहा हूं। ग्रामीण अंचल में लोग परेशान हो रहे हैं ।

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष जी, आपने कहा था कि समय में निपटाऊंगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- निपटा रहे हैं । इनके बाद आप को ही पहले निपटाऊंगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मैंने मरकाम जी का एक भाषण पढ़ा था कि जोगी कांग्रेस वाले सभी महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- मरकाम जी को छोड़ दीजिए, वे पदाधिकारी हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मरकाम जी, जोगी यूनिवर्सिटी के सभी छात्र तो अभी सरकार के महत्वपूर्ण-महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हैं । आप उसको क्या करोगे ? इसलिए मरकाम जी, उसमें मत जाईए । शिव डहरिया जी, मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को सिर्फ यह कहता हूं कि-

जुल्म इतना बुरा नहीं, जुल्म इतना बुरा नहीं
जितनी बुरी तुम्हारी खामोशी है ।
बोलना सीखो, नहीं तो आने वाली पीढ़िया गूंगी हो जाएंगी ।
वक्त हर जुल्म तुम्हारा तुम्हें लौटा देगा ।
वक्त हर जुल्म तुम्हारा तुम्हें लौटा देगा ।
वक्त के पास रहमोकरम नहीं होता ।
सियासत की रंगत में ना डूबो इतना कि प्रदेश की दुर्दशा भी नजर ना आये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- क्या आप ही का लिखा हुआ है ?

श्री धर्मजीत सिंह :- यहां तो सब चोरी का पढ़ते हैं, मैं भी चोरी का पढ़ रहा हूं। अब आप कहीं कविराज हो, आप लिखते हो तो मुझे नहीं मालूम।

श्री अजय चन्द्राकर :- सिर्फ इनको (श्री शिवरतन शर्मा, सदस्य) छोड़कर।

श्री धर्मजीत सिंह :- उस आशुकवि को छोड़कर। अभी मेरा छोड़ो, मेरा क्या होगा, मुझे खुद ही मालूम नहीं है। आप परेशान मत रहो।

"सियासत की रंगत में ना डूबो इतना कि प्रदेश की दुर्दशा भी नजर ना आये।

जरा सा याद कर लो अपने वायदे जुबान को, गर तुम्हें अपने जुबा का कहा याद आये।"

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत बहुत धन्यवाद। डॉ. शिवकुमार जी डहरिया।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं जल्दी निपटा दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- किसका उठ जाता है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- किसको निपटाओगे ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हमन ला तो तुम्ही मन ला निपटाना हे, दूसर ला थोड़ी निपटाना हे।

अध्यक्ष महोदय :- चल शुरू हो जा।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष जी, ये मन अविश्वास प्रस्ताव लाय हे, ये मन अविश्वास प्रस्ताव लाय के अधिकार ही नइ हे, जेन मामला में ले के आय हावय। भारतीय जनता पार्टी के सरकार 15 साल सिर्फ भ्रष्टाचार, कमीशनखोरी के आलवा दूसरा काम नइ करे रहिस हे। पूरा दलाल मन के सरकार रहिस हे। इनखर मन के सब विभाग के अलग-अलग दलाल बने रहिस हे। अजय चन्द्राकर कहां गै ? ओ आही तो ओखर बारे में बोलहूं। बहुत अकन बात करत रहिस हे। ओखर [XX][14] बिना कोनो काम नइ होत रहिस हे। हर जिला में अलग-अलग दलाल रहिस हे। जब तक पैसा नइ मिलत रहिस हे तब तक ओखर राज मा स्वीकृति जारी नइ होवत रहिस हे, [XX] नोट गिने के मशीन भी वहीं पाय गय रहिस हे। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये मन तो पूरा छत्तीसगढ़ ला बेच डाले रहिस हावय। छत्तीसगढ़ के कोई चीज ला बचाय नइ रहिस हे। पूरा जल बेच दिस, जंगल बेच दिस, हमर इहां समोदा डायवर्सन बने हावय, जेमा नहर बने हवय, किसान मन ला पानी दे के व्यवस्था करे गय रहिस हे। लेकिन ये मन आइस अउ पानी तको ला काय एक थन अडानी हावय, तेखर कम्पनी ला बेच दिस। अब किसान मन ला पानी नइ मिलय, अडानी ला पानी मिलही। तो ये आदिवासी मन के कुछ नइ बचाइस, सब बेच दिस। जल, जंगल, जमीन, जांजगीर जैसन जिला मा सबो जमीन ला बिना अनुमति के आदिवासी मन के जमीन ला अधिग्रहण कर लिस अउ व्यापारी मन ला बेच देत रहिस हे। जे अधिग्रहण

[14] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नइ कर सकय तेला सरकार अधिग्रहण कर लेवय अउ आदिवासी मन जमीन तको ला अधिग्रहण करके व्यापारी मन ला बेचे के काम करय। ये मन पूरा छत्तीसगढ़ ला बेचे के काम करे हे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कालि ठगी के मामला लाय रहिस हे। पूरा छत्तीसगढ़ ला येही मन ठगे हावय। इही मन पूरा 15 साल चिटफण्ड कम्पनी चलाय हावय। ऐकर मंत्री चिटफण्ड कम्पनी के उद्घाटन करे बर जाय, एखर मुख्यमंत्री जी के परिवार वाला मन जाय, मुख्यमंत्री मन जाय, चिटफण्ड कम्पनी के उद्घाटन करय, इधर से लाओ पैसा, इधर से लाओ पैसा, इधर से लाओ पैसा अउ सब छत्तीसगढ़ के पैसा गबन। आज पहली बार भूपेश बघेल के नेतृत्व मा जो चिटफण्ड कम्पनी वाला मन पैसा ले गय रहिन हे, ओला थोड़ा वसूल के जनता ला देय जात हे, ये पूरा देश मा पहला मामला हे। ये मन सब्बो घोटाला तो करत रहिस हे। ये मन टेपकाण्ड के तको घोटाला करे रहिन हे। अन्तागढ़ टेपकाण्ड घोटाला, तुंहर राज मा का-का नइ करे हव। अभी [XX] [15] आ गय। मैं अभी ओखर बारे में बताय हव।

श्री रामकुमार यादव :- ओ हा अभी अंगना उठे रहिस हे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सोत रहिस हे। मुख्यमंत्री समग्र के बात करत रहिस हे कि दू साल हो गय हे, स्वीकृत नइ होवत हे। एखर समय मा हर साल स्वीकृत होवत रहिस हे, जेतका बजट हे, ओखर ले ज्यादा स्वीकृत होवत रहिस हे। लेकिन कतका मा होत रहिस हे, [XX] स्वीकृत नइ होवय बाबू, अजय चन्द्राकर के अइसने हाल रहिस हे। दूसर ऊपर आरोप लगाथे, अपन तरफ पहली देख ले। काण्ड तो बहुत अकन हावय, बोलत रहू तो बहुत टाइम लागही।

समय :
8:00 बजे

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है और भूपेश बघेल सरकार के खिलाफ लाया है। अगर हमने जो आरोप आपको दिये हैं और भ्रष्टाचार, माफिया राज के कारण अविश्वास व्यक्त किया है। परंतु अगर सत्तापक्ष के सदस्यों को हमारे किसी सदस्य पर आरोप लगाना है तो लिखित में देना चाहिए।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप आरोप लगाओ तो ठीक है, हम लोग आरोप लगायेंगे तो लिखकर देंगे।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने उसको विलोपित कर दिया।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल के बहुत आरोप लगाये हैं, हम उसमें कुछ बोले भी नहीं हैं।

---

15 [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमारी सरकार के जमाने के आरोप लगाये हैं तो हमने कुछ नहीं कहा। 15 साल में ऐसा हुआ, वैसा हुआ, इस विभाग में ऐसा हुआ, हमने कुछ नहीं कहा। क्योंकि हमारे पद के मामले को लेकर उन्होंने कहा तो हमें कोई आपत्ति नहीं है। परंतु किसी व्यक्ति का नाम लेकर, क्योंकि आरोप पत्र हमने दिया है, अविश्वास प्रस्ताव हमने दिया है। .. (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- उनने उनका नाम लिया, मैंने उसको विलोपित कर दिया है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, आप बैठ जाईये, बड़ी मुश्किल से शांति हो रही है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत गंभीर बात है, किसी मुख्यमंत्री के ऊपर ऐसा आरोप नहीं लगाया जाता।

अध्यक्ष महोदय :- आप बाद में आये हैं न। उस समय तो मैंने वैसे ही विलोपित कर दिया।

श्री अरूण वोरा :- मैं था। मैंने शिवरतन शर्मा जी का विरोध किया था।

अध्यक्ष महोदय :- अब छोड़िये न। कोई किसी के खिलाफ व्यक्तिगत आरोप नहीं लगायेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, बार-बार मेरे नाम का उल्लेख हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- इसलिए आप उसमें सफाई देंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- भारतीय जनता पार्टी विधायक दल ने भूपेश बघेल सरकार के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। उनके नाम का उल्लेख हम क्यों नहीं ले सकते ?

अध्यक्ष महोदय :- भूपेश बघेल सरकार के खिलाफ किया है न ?

श्री शिवरतन शर्मा :- हमारा अविश्वास प्रस्ताव ही भूपेश बघेल सरकार के खिलाफ है, इसलिए हम नाम ले रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- भूपेश बघेल सरकार के खिलाफ है, भूपेश बघेल व्यक्तिगत के खिलाफ नहीं है न ?

श्री शिवरतन शर्मा :- सरकार के खिलाफ है, मुख्यमंत्री के खिलाफ है।

अध्यक्ष महोदय :- सरकार के खिलाफ है। वही मैं कह रहा हूं आप भूपेश बघेल सरकार को बोलिये, आप भूपेश बघेल को व्यक्तिगत नहीं बोल सकते।

श्री धरमलाल कौशिक :- हमारा अविश्वास प्रस्ताव सरकार के खिलाफ है और यह भी बोलेंगे की भ्रष्टाचारियों को बचा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- हॉ बोलिये, उसमें कोई आपत्ति नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- हम यह नहीं बोलेंगे तो हमारा अविश्वास प्रस्ताव किस बात के लिए है ?

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, भूपेश बघेल जी की सरकार पर आप आरोप लगाईये।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा जो अविश्वास प्रस्ताव है, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की सरकार के खिलाफ है।

अध्यक्ष महोदय :- व्यक्तिगत नहीं है न ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- व्यक्तिगत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- बात खत्म हो गई।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और हम व्यक्तिगत आरोप लगायेंगे भी नहीं। हम सरकार में जो गड़बड़ियां हुई हैं, वह आरोप लगायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- अभी कोई किसी के नाम से किसी पक्ष से व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाये जायेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हॉ, ठीक है। व्यक्तिगत आरोप नहीं, परंतु पद पर रहते हुए कोई गलत काम हुआ है तो हम उस पद के खिलाफ में आरोप लगायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- लगाईये। वह तो आपके इसमें लिखा है, 84 आरोप हैं, एक भी कहीं पर आरोप नहीं दिख रहा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, देखिये आप पढ़ लीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- सरकार के खिलाफ आरोप लगाया है।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे तो नहीं दिख रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, यह अविश्वास प्रस्ताव किसके खिलाफ है ? मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की सरकार के खिलाफ है।

अध्यक्ष महोदय :- मगर इसमें कोई व्यक्तिगत आरोप नहीं दिख रहा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने सरकार के खिलाफ आरोप लगाया है।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोगों ने इसमें भी आरोप नहीं लगाया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, हमने विभागों के नाम लिखे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं समझ गया न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमने भ्रष्टाचार के नाम लिखे हैं। उस विभाग का जो प्रमुख है तो उसके खिलाफ तो हम आरोप लगायेगे ही कि उसके विभाग के नेतृत्व में हुआ है।

अध्यक्ष महोदय :- जिस शालीनता का परिचय आप लोगों ने दिया है, इसमें नाम नहीं लिखा है। मैं इसको कहा रहा हूं कि इस शालीनता का परिचय भाषण में भी दीजिए, मैं और कुछ नहीं कह रहा हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मंत्री जी ने कोई आरोप पत्र तो नहीं दिया है। उन्होंने जो माननीय अजय चन्द्राकर जी के खिलाफ आरोप लगाये, उसको वापिस करें।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, आरोप पत्र एक औपचारिता मात्र होता है। आप उसको बार-बार आधार बना रहे हैं। मैं आपको सिखा नहीं सकता। सिर्फ एक लाईन लिखना काफी है कि हम अविश्वास व्यक्त करते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- और हम फ्री-हेण्ड चर्चा कर सकते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम फ्री-हेण्ड चर्चा कर सकते हैं। लेकिन मैं आपसे अशिष्टता कर रहा हूं यदि ऐसा लग रहा है तो मैं कुछ नहीं बोलना चाहता, लेकिन नियम-प्रकियाओं में आरोप पत्र देना औपचारिकता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप नियम प्रक्रिया देख लें।

अध्यक्ष महोदय :- मैं देख लिया हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नियम-प्रकियाओं में अविश्वास प्रस्ताव अगर हम दो लाईन का देते तो भी हमें बोलने से आप नहीं रोक सकते।

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपको कहां रोक रहा हूं। क्या आपको बोलने से कोई रोक रहा है?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह तो हमने एक औपचारिकता की। पहले हमने निर्णय किया था कि आरोप पत्र नहीं देंगे। हम फ्री स्टाईल में आरोप लगायेंगे। परंतु बाद में हमने सोचा कि चलिये यह दे देते हैं इसलिए हमने आरोप पत्र दे दिया। परंतु अगर हम यह नहीं देते तो भी सरकार के खिलाफ हमको अविश्वास प्रस्ताव में बोलने का अधिकार है, आरोप लगाने का अधिकार है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- बृजमोहन भैया आपने संचालनालय के सरकार के अधिकारी के खिलाफ भी नाम लेकर आरोप लगाया है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम किसी मंत्री, मुख्यमंत्री, विधायक के व्यक्तिगत मामले में आरोप लगायें तो हमें लिखकर देना चाहिए। सरकार के मामले में हम आरोप लगायेंगे तो हमें लिखकर देने की आवश्यकता नहीं है। यह नियम है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। धन्यवाद।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष जी, बृजमोहन भाई बोल रहे हैं। यह अपने भाषण की शुरूआत किये तो हमारे मंत्रालय के अधिकारियों का नाम लेकर उन पर आरोप लगाया है। आप निकलवाकर देख लीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने ऐसे सभी आरोपों को विलोपित किया है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग अपनी बात रखेंगे। जब यह लोग हमारे ऊपर बात करें और जब हम इनके ऊपर बात करें तो इनको [XX][16] जाती है।

श्री अजय चंद्राकर :- अच्छा, अब यह कौन-सी भाषा है? यह भाषा है?

---

[16] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- पूछ लेते हैं। [XX] [17] असंसदीय है या संसदीय है?

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब यह लोग हाथ पटक देते हैं तब सही है। [XX] गयी असंसदीय है?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- [XX] भी असंसदीय है? [XX] भी असंसदीय हो गया?

श्री अजय चंद्राकर :- संसदीय कार्यमंत्री जी, आपको इस सदन के स्तर को गिराने के लिये बधाई।

अध्यक्ष महोदय :- [XX] असंसदीय शब्द है। मैंने उसे विलोपित कर दिया।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक गाना है। उसको [XX] तो मैं क्या करूं?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, यह असंसदीय शब्द नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- मिर्ची असंसदीय नहीं है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, बिना मिर्ची के काम कैसे चलेगा?

अध्यक्ष महोदय :- मिर्ची संसदीय है, [XX] असंसदीय है।

अरूण वोरा (दुर्ग शहर):- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक गाना भी तो है। मैं सरकार चला रहा था, इनको [XX] तो मैं क्या करूं (हंसी)? हमारे मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी सरकार चला रहे हैं, आपको [XX] तो क्या कर सकते हैं?

श्री केशव प्रसाद चंद्रा (जैजैपुर) :- अध्यक्ष महोदय, मिर्ची कई प्रकार के होते हैं। तीखी मिर्ची, बिना (व्यवधान) के मिर्ची होती है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उधर बताओ, उधर बता दो।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आपको मिर्ची लगा दूंगा तो आपको उत्तेजना आ जायेगी। फिर क्या होगा?

श्री सत्यनारायण शर्मा :- कहां मिर्ची लगा देंगे?

श्री अरूण वोरा :- अध्यक्ष महोदय, मैंने आपसे निवेदन किया है कि विशेष रूप ..(हंसी)। कहां मिर्ची लगा देंगे?

श्री अजय चंद्राकर :- वह सदन में ठीक-ठाक है, नहीं तो उनको उत्तेजना होती है।

श्री अरूण वोरा :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि चंद्राकर जी के लिये अगले सत्र में विशेष रूप से उत्तेजना मापक यंत्र लगाया जाये। क्योंकि यह इतने उत्तेजित होते हैं जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, बातों से उत्तेजित होना अलग बात है (हंसी) और बातों से उत्तेजना पैदा करना अलग बात है। माननीय मंत्री जी।

---

[17] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी सरकार में क्या-क्या नहीं होता था। हम इनको बोलते हैं तो, अब आप वह शब्द विलोपित कर दिये हैं, तो उसको छोड़ देता हूं (हंसी)।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे नेता प्रतिपक्ष और इनके सारे लोग, पूरे प्रदेश भर में, जो हमारा यूजर चार्ज है, जो टैक्स लगते हैं, उसका विरोध कर रहे थे कि कांग्रेस सरकार ने यह लगा दिया, इसे वापस लो, वापस लो। उसे लगाया किसने था? इन्हीं की सराकर ने वर्ष 2017 में वह आदेश जारी किया था। यह विरोध किसका कर रहे हैं? इन्हीं की भाजपा सरकार ने जो टैक्स लगाया है, इन्होंने जो स्लैब घोषित किया है, यह उसी का विरोध कर रहे हैं और हमको कह रहे हैं कि हमने लगाया है। आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी और इनके सारे लोग इस तरह का भी काम करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार ने इन 3.5 सालों में सबसे ज्यादा अच्छा काम हमारी नगरीय निकायों में किया है। इन्होंने नगरीय निकाय की जितनी बातें की है, इनके शासन काल में 15 सालों में कुछ होता नहीं था। बिलासपुर में देख लीजिये, इन लोगों ने बिलासपुर को खोदापुर बना दिया था। जनता ने इनको उसी गड्ढे में डाल दिया। आज बीच-बीच में चर्चा निकलती है, हमारे बिलासपुर के सदस्य श्री शैलेश पाण्डे भाई, वह चर्चा रखते हैं। हमने उसमें बहुत कुछ सुधारा है। यह भ्रष्टाचार की बात करते हैं, जो प्रोजेक्ट 120 करोड़ रूपये का था, वह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल के 15 सालों में 850 करोड़ रूपये हो गया, लेकिन वह परियोजना तब भी पूरी नहीं हुई। जो परियोजना 120 करोड़ की थी, उसमें 850 करोड़ लग गया। कितना हो गया? इतना बढ़ता है कहीं? यदि 5 प्रतिशत Above हो गया तो समझ में आता है, लेकिन 15 साल में पूरा का पूरा खा जाओ। हम लोगों ने नहीं सुना था कि इतना भ्रष्टाचार कहीं होता है। इन लोगों ने प्रत्यक्ष करके दिखाया है, 120 करोड़ से 850 करोड़। उसमें तब भी 120 करोड़ से ज्यादा का काम बचा ही है। यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार के कार्यकाल का है और यह हमारे ऊपर आरोप लगाते हैं। शर्म करो।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये और कितने मिनट बोलेंगे?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अच्छा, थोक अकन हे, बहुत अकन बोलहु तो..।

अध्यक्ष महोदय :- ज्यादा हो जाही, थोड़ा कम बोलिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- ज्यादा हो जाही।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इनके कार्यकाल में नगरीय प्रशासन में कर्मचारियों को 8-9 महीने तन्ख्वाह नहीं मिलती थी। जो सफाईकर्मी हैं, जो छोटे कर्मचारी हैं, वह बेचारे 4-4, 8-8 महीने तन्ख्वाह के लिये लटके रहते थे और इन लोगों ने उनका ए.टी.एम. कार्ड गिरवी रखवा दिया था। उनकी तन्ख्वाह आयी नहीं कि निकल जाती थी। उन कर्मचारियों के बच्चे भूखे मरते थे। आज हमारे नगरीय निकाय में एक भी ऐसा कर्मचारी नहीं है जिसको 7 तारीख के अंदर तन्ख्वाह न मिलती हो। उनको हर महीने तनख्वाह मिलती है। हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने शिक्षक लोगों का तो एडवांस में बजट भेज दिया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

था। तीन महीने पहले अग्रिम वेतन जमा करा दिया जाता था। आज नगरीय निकाय क्षेत्र में हमारे शिवरतन शर्मा जी बोल रहे थे कि श्रम विभाग में कोविड के समय इतने मरीज आये, इतने श्रमिक आये, उसका क्या हुआ? अरे, भईया, साढ़े 7 लाख से ज्यादा श्रमिक आये। वह सब आपके कार्यकाल में भागे थे, आपके समय में पलायन करके गये थे। भारतीय जनता पार्टी की सरकार के समय गये थे और वह जब वापस आये तो हम लोगों ने उनका ख्याल रखा। उनके लिए दवाई, चिकित्सा, रहने, खाने की व्यवस्था की। उन लोगों के पास कपड़े नहीं थे। उनके पास पैर में पहनने के लिए चप्पल नहीं था। माननीय मुख्यमंत्री जी ने सब दिलवाया। आज भी खुश हैं। अभी बहुत सारे यहीं हैं, वह वापस नहीं गये। यहां उनको रोजगार का अवसर उपलब्ध कराया जा रहा है। उनका तथा उनके बच्चों का सम्मान किया जा रहा है। उनके बच्चों के पढ़ाई की व्यवस्था की जा रही है। हमारी सरकार उनके कल्याण के लिए काम कर रही है।

अध्यक्ष महोदय :- आप अच्छा जवाब दे रहे हैं। सब शांतिपूर्वक सुन रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बोलूंगा तो बहुत समय लगेगा। कुछ लोग बोल रहे थे कि सत्ता का घमण्ड है। हमको घमण्ड है हमको इस बात का घमण्ड है कि हमने पूरे प्रदेश में किसानों का कर्जा माफ किया है, हमें इस बात का घमण्ड है। (मेजों की थपथपाहट) हमको घमण्ड है कि हमने कहा था कि बिजली का बिल हाफ करेंगे। पूरे प्रदेश के लोगों का बिजली का बिल हाफ किया है। हमको इस बात का घमण्ड है जब से हमारी सरकार बनी है इस प्रदेश के किसानों को सिंचाई टैक्स नहीं देना पड़ रहा है। हमने उनको टैक्स माफ किया है। हमको घमण्ड है। हमने किसानों को 2500 रूपये समर्थन मूल्य देने का वायदा किया था, किसानों को 2500 रूपये समर्थन मूल्य से ज्यादा मिल रहा है उन गरीबों को हक मिल रहा है आपने नगरीय निकाय में भी देखा होगा हमको इस बात का भी घमण्ड है कि मोबाईल मेडीकल यूनिट चलती है वह श्रमिकों की बस्ती में जाती है और उनका ईलाज होता है। हमको इस बात का भी घमण्ड है कि हमने गरीब लोगों के लिए धनवंतरी मेडिकल स्टोर खोला है। गरीबों को 60 पैसे, 70 पैसे कम रेट में दवाईयां मिलती हैं। इनके पास कुछ मुद्दे नहीं हैं। आपने सही कहा कि जिन मुद्दों को लेकर यह अविश्वास का प्रस्ताव लाया है, उन मुद्दों पर बोल ही नहीं पा रहे हैं। इनके पास न मुद्दे हैं, न योजना है, न कोई विजन है। यह चर्चा में रहने के लिए इस तरह का अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं और अविश्वास प्रस्ताव का हश्र क्या होगा, अभी थोड़ी देर में पता चल जायेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- आपको धन्यवाद्।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजेपुर) : - माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के विरूद्ध जो अविश्वास प्रस्ताव आए हावए, सबले पहिली प्रश्न तो ए हे कि अविश्वास का चीज के हे, दो तिहाई बहुमत के ए सरकार..।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आप पक्ष में बोल रहे हैं या विपक्ष में बोल रहे हैं उसको स्पष्ट कर दीजिए, उसके बाद बोलना शुरू करें।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बता दिहा।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं। यह बोलना पड़ता है कि मैं इनके विरोध में बोल रहा हूँ वह तो कानून है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मय बता दिहौं। आखिरी में अपने स्थिति भी स्पष्ट कर दूहूं।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप मुझे देखकर हंस रहे हैं। यह तो बोलना पड़ेगा। यहां बात करने वाले को बोलना पड़ेगा कि मैं पक्ष में बोल रहा हूँ या विपक्ष में बोल रहा हूँ ?

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दो तिहाई ले ज्यादा के बहुमत मा सरकार बनिस। जतका सीट खाली होईस, उप चुनाव होईस, ओमा जीतत गिस। फिर भी अविश्वास तो ये अविश्वास का चीज के हे ? माननीय अध्यक्ष महोदय, अविश्वास लाने वाला मन बोलिन कि सरकार के ऊपर आरोप लगाईन, सरकार पक्ष के मन अपन बचाव मा 15 साल तक सरकार रिहिस। केन्द्र में आने पार्टी के सरकार हे, तेखर ऊपर आरोप लगाईन, अविश्वास प्रस्ताव के आशय ये नइ हरे कि केवल आरोप लगाना। कोई भी सरकार रहिथे अच्छा काम भी करथे, लेकिन कतको अच्छा काम करथे तो ओमा बहुत सारा कमी भी रहिथे। आम जनता मन ला बहुत सारा चीज के फायदा नइ मिलत रहाए। अउ ए सदन मा चाहे सत्ता पक्ष के सदस्य रहाए, चाहे विपक्ष के सदस्य रहाए, अगर सरकार ला ओ कमी ला नइ बताही तो फिर सरकार सावधान कइसे हो ही। सरकार के सही काम, अगर प्रशासन चुस्त नई हे तो योजना कतको बढ़िया बनय, ओ योजना के लाभ नई मिलय। अऊ सरकार में अगर सबसे बड़े अविश्वास हे तो प्रशासन चुस्त नई हे, प्रशासन के सही काम नई हे, शासन के अधिकारी मन के ऊपर लगाम नई हे, ये सबसे बड़े अविश्वास ए। माननीय अध्यक्ष महोदय, बड़े-बड़े वादा करके सत्ता में अईन, कुछ वादा ला पूरा भी करिन, मैं सरकार के प्रशंसा भी करत हंव लेकिन बहुत सारा जो वादा करे हे तेखर लिए आज भी ए सदन के बाहर जनता मन, आस लगाए, नजर लगाए, देखत हावय, अविश्वास केवल ए सदन मा नई हे, बल्कि अविश्वास हे, तो सदन के बाहर आम आदमी मा भी अविश्वास हे। आप सदन के अविश्वास ला तो अपन बहुमत मा समाप्त कर लिहा, लेकिन सदन के बाहर जो अविश्वास हे, ओला आप कइसे साबित करिहा। अनियमित कर्मचारी, संविदा कर्मचारी, दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी मन के बात होईस। अब घोषणा करे हावए कि ए मन ला नियमित करना हे, नियम प्रक्रिया आप ला बनाना हे, सरकार मा आप हो, अधिकारी आपके हे लेकिन आज अगर एमन नियमित नई होत हे तो ओखर मन में तो अविश्वास आहि। आप पुराना पेंशन बहाल करा, धन्यवाद। ओ कर्मचारी मन भी आप मन ला धन्यवाद देत हे लेकिन आप पुराना पेंशन काकर बहाल करा, ओ कर्मचारी मन के जेमन हम महीना, 50 हजार, 1 लाख,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

2 लाख तनखा पात हे तेखर आप पुराना पेंशन बहाल करा लेकिन गांव के ओ गरीब आदमी जे निराश्रित पेंशन पात हे, दिव्यांग पेंशन पात हे, विधवा पेंशन पात हे, वृद्धा पेंशन पात हावय, एमन ला आशा दिलाय रेहेव कि आपके पेंशन के राशि ला बढ़ाबो। गरीब, किसान के सरकार ए कहात हव, ओ गरीब मन आपके का बिगाड़े हे, ऐसे गरीब मन के आप काबर हित नई करना चाहव। अइसे गरीब मन के पेंशन ला आप काबर नई बढ़ायेव, अगर बाहर मा सरकार के विरूद्ध अविश्वास हे, तो गरीब आदमी के मन मा अिवश्वास पैदा होय हे, काबर की पईसा वाला ला जरूर ए सरकार हा देखत हे। लेकिन ए गरीब के तरफ सरकार के नजर नई हे। माननीय अध्यक्ष महोदय, हर गांव मा, कहीं 100, कहीं 200, कहीं 400, कहीं 500 ओ विधवा, जेखर सहारा नई हे, ओ दिव्यांग, जे काम करके खाना तो चाहत हे, लेकिन अपन मजबूरी के कारण हो परिश्रम नइ कर पावत हवय। आशा भरी नजर से आपके विश्वास मा आप ला वोट दे के पूर्ण बहुमत के सरकार बनाईस, लेकिन आज आप ओखर आशा के ऊपर खरा नई उतर पावत हो। माननीय अध्यक्ष महोदय, ओ मनरेगा के कर्मचारी जेन मन आंदोलन करिन, जेखर कारण आज छत्तीसगढ़ के मजदूर मन ला काम नई मिलिस, ओ मन ला आप विश्वास दिलाए रहेव की, आपके नियमितीकरण करबो। एमन के कार्यकाल मा जन भागीदारी मा पढ़ाय रहिन, ऐसे गुरू जी मन ला भी आप विश्वास दिलाए रहे हावव, आप हमर सरकार बना दो, बना देहू तो आप मन के व्यवस्था करबो। साक्षर भारत मिशन में भी जो प्रेरक रहिन, ओला भी आप विश्वास दिला रहेव, गौसेवक मन ला भी आप विश्वास दिला रहेव। स्कूल में जो सफाई कर्मचारी हे, स्कूल के मध्यान भोजन मा जो रसोईयां हे, ओला भी आप विश्वास दिलाय रहे हावव। आप बहुत विरोध करेव, ए जब सरकार रहिस हे, तो बाहर ले पढ़वईया लानत हे करके विद्या मितान मन के आउटसोर्सिंग के बहुत विरोध करेव। लेकिन जे छत्तीसगढ़ के ओ विद्या मितान रहिन ओला भी आप विश्वास दिला रेहा, अऊ अगर आज आपके विरूद्ध अविश्वास के बात आत हे, तो आप विश्वास मा खरा नई उतरत हव तेखर कारण अविश्वास के बात हे। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज स्वास्थ्य विभाग अपन उपलब्धि गिनाथे। आज शिशु मृत्यु दर, संस्थागत प्रसव के बात होत हे, आज अगर शत प्रतिशत वैक्सीनेशन के बात होत हावय, अतके बड़े कोरोनाकाल में अगर सरकार सफलता ला प्राप्त करिस, ता ए गांव मा ओ गरीब मितानिन हे, तेखर कारण ए सफलता ला ए सरकार प्राप्त करिस ता ए गांव में ओ गरीब मितानिन हे तेकर कारण ए सफलता ला ए सरकार प्राप्त करिस अऊ ए मितानिन मन ला आप मानदेय दिंहा कहे रहा, ओ मानदेय आप आजतक निश्चित नहीं करे हा ऐकर अविश्वास हे ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, जल्दी समाप्त करिये ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- जी, अभी दुए मिनट होए हे । आपके संरक्षण चाहिए। मैं बहुत ज्यादा कछु बोलओं नहीं । मोर करा आंकड़ा भी नइ हे । थोड़ बहुत व्यावहारिक चीज हे, तेला बोल लेथओं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आप जल्दी बोलिए न । मैं बोल रहा हूं कि जल्दी-जल्दी बोलिए। मैं सुन तो रहा हूं ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी सहायक शिक्षक मन वेतन विसंगति के बात लेके आंदोलन करे रिहिन हे । महंगाई भत्ता बा अभी पूरा प्रदेश के कर्मचारी आंदोलनरत हें । आज तक ए व्यवस्था रिहिस कि केंद्र सरकार अगर डी.ए. ला बढ़ाय ता एक-दू महीना में प्रदेश सरकार हा ओ केंद्र सरकार के अनुरूप महंगाई भत्ता ला बढ़ा दे लेकिन आज दू साल होए के बाद भी ए प्रदेश सरकार ओमन के महंगाई भत्ता ला नइ बढ़ाए हे । अगर अविश्वास हे तो ए चीज के हे । ग्राम पंचायत के सचिव, जेमन के कोई निर्णय नइ होत हे, नियमितीकरण नइ होत हावय । धान खरीदी में डाटा एंट्री ऑपरेटर, ओ बेरोजगार पढ़े-लिखे नौजवान । जे मन ला आप नौकरी में रखे हावा लेकिन केवल 9 महीना तन्ख्वाह देथा । अइसे मन के विरूद्ध जो हे अविश्वास हावय ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आवास के बहुत बात होइस । मैं नइ जानओं कि केंद्र सरकार के गलती हे, धन प्रदेश सरकार के गलती हे लेकिन ए दुनों सरकार ए जरूर गलती करे हे कि ओ गरीब आदमी आवास से वंचित हावएं । आप शहरी क्षेत्र मा आवास देत हा, छत्तीसगढ़ के निर्माण करने वाला, श्रम के बदौलत ए प्रदेश अऊ देश के नाम रोशन करने वाला गांव के ओ गरीब आदमी आपके का बिगाड़े हे जेला आप साढ़े 3 साल ले एक आवास नइ दे हा ।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट । पहले आप सब लोग सुन लीजिये । अविश्वास प्रस्ताव पर 12 बजकर 5 मिनट से चर्चा जारी हुई है । लगभग 8 घंटे पश्चात् अब तक केवल 9 सदस्यों ने बोला है । मेरी मजबूरी कहिये या जो कहिये, मैं आपको इसलिए कम बोलने के लिये कहूंगा कि आप बहुत जल्दी खत्म करें और अभी आने वाले बहुत सारे सदस्य बचे हैं । मैं उनके लिये 10-10 मिनट का समय निर्धारित करता हूं ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमन के सब समय ला एमन खा देथे । हमू मन ला दू-दू मिनट दे दिहा ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं यही बोल रहा हूं कि जल्दी-जल्दी बोलें । बस इतना ही कहना है कि समय-सीमा का ध्यान रखें । मैंने तो सबसे पहले ही अनुरोध किया है कि जिन बातों का जिक्र आप लोगों ने प्रश्न और ध्यानाकर्षण में कर लिया है उसी-उसी को न दोहरायें, बस इतना ही कह रहा हूं ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एमन बहुत बात करिन कि ग्राम पंचायत के प्रतिनिधि मन के पेंशन ला बढ़ा दे हें । इही सरकार हा ग्राम पंचायत ला 50 लाख के अधिकार दे हें । 50 लाख तक के काम ग्राम पंचायत करहीं लेकिन होत का हे ? डेढ़ लाख के हैंण्डपंप कौन ठेकेदार बनवाही ? साढ़े 6 लाख के यात्री प्रतीक्षालय । रामकुमार यादव जी, आपके क्षेत्र मा सबसे ज्यादा बने हे । आपके फोटो लगे हे, कौन ठेकेदार बनाही ? आप ग्राम पंचायत के अधिकार ला कहां सुरक्षित करत

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हा ? साढ़े 3 साल मा न तो समग्र मा पइसा । का ग्राम के विकास नइ होना चाहिए? अभी आप नगर पंचायत जइसे जगह ला 3-3 करोड़ रूपया दे हा लेकिन ग्राम पंचायत ला आप कतका पइसा देत हा ? गांव के विकास के तरफ आपके सोच कहां हे ? अगर गांव के जनता मा अविश्वास हे ता एकर कारण अविश्वास हावय ।

समय :

8:23 बजे **(सभापति महोदय (श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, आज खाद के कमी हे । कृषि मंत्री जी अपन भाषण दिन बहुत अच्छा बतइन कि ऐमन के काल मा कतका अकन खातू अइस, आज कतका अकन खातू अइस । कतका अकन खातू आइस तेकर आंकड़ा मोर करा नइ हे लेकिन किसान भटकत हें । किसान 500-600 रूपया में यूरिया खरीदत हें । 1500 रूपया में डी.ए.पी. खरीदत हांवयं । अगर आप करा खाद हे ता ओकर समुचित वितरण के व्यवस्था काबर नइ होत हे ? माननीय कृषि मंत्री जी, अगर ए समुचित व्यवस्था नइ होत हे ता केवल समन्वय के कारण नइ होत हे । आपके कृषि विभाग ऐकर हेड हे, मार्कफेड खातु देथे । सेवा सहकारी समिति वितरण करथे । आपके 2-2 ट्रांसपोर्टर हे । कोई मा समन्वय नइ हे । आम आदमी, आम किसान अगर जाये ता काकर करा जाये, मोर निवेदन हे। अविश्वास प्रस्ताव हे, तभो आप करा निवेदन करथो कि किसान मन के हित मा एक बार समीक्षा करके अगर ये व्यवस्था ला बना देवव तो निश्चित रूप से खाद के कमी जो हे, ओहा आ जाही। आप ही के सरकार मा ए बात नहीं आथे। उहू मन के सरकार मा ये बात आइसे। नकली दवाई, गुणवत्ताविहीन बीज, नकली खाद, ये आम बाजार में बिकथे। एखर कारण का होथे..।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्रा जी, एमन के मे नकली डॉक्टर रहिसे, एमन कई जगह आंखी ला नचवा देहे।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- ओखर कारण किसान ठगे जाथे। ओखर फसल के उत्पादन नहीं होथे। माननीय सभापति महोदय, कार्रवाई काकर बर होथे, ओ गांव के एक बेरोजगार अगर दुकान खोल डारे हे तो ओखर ऊपर कृषि विभाग के अधिकारी, राजस्व विभाग के अधिकारी जांच बर भेजथे, लेकिन मैं कहना चाहथव कि ये दवाई कहां ले आथे? ये खाद कहां ले आथे? कहीं न कहीं तो बनथे। कहीं न कहीं तो आथे, लेकिन सरकार ओ बड़े आदमी के ऊपर कार्रवाई नहीं करे। लाचार, बेबस, गांव के गरीब बेरोजगार 1-2 हजार रूपया महीना कमाये बर अगर दुकान खोले हे, ओखरे ऊपर कार्रवाई करे के काम करथे। काबर कि सरकार ला आंकड़ा भी दिखाना हे कि हम अतका कन प्रकरण बनाएन।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्रा जी, डलवा के पानी मिली से या नहीं मिली से। एला डलवा के पानी मिली से या नहीं। पहली भा.ज.पा. के सरकार में मिले रहिसे का।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- डलवा में पानी मिले रहिस। धन्यवाद। यादव जी, आप व्यक्तिगत धन्यवाद नहीं देहौ, लेकिन कृषि मंत्री बइठे हे मैं व्यक्तिगत जाके धन्यवाद देहौ, माननीय मुख्यमंत्री जी ला व्यक्तिगत जाके धन्यवाद देहौ कि आप पानी देहौ तेखर कारण मोर जांजगीर-चांपा जिला के किसान के आज पलायन रूक गे हावै। अउ बढ़िया फसल हे। भले 1100-1200 रूपये प्रति क्विंटल में धान में बेचे हे, फिर भी एक-एक गांव मा 5-5 करोड़, 6-6 करोड़ रूपया के अगर धान होये हे तो पैसा के एक रोटेशन होये हावे। बहुत सारे कोई ला रोजगार मिले हे, कोई ट्रेक्टर वाला कमाये हे, कोई हार्वेस्टर वाला कमाये हे। मैं व्यक्तिगत धन्यवाद देहौं। आप पूछ सकथौ। आप मुख्यमंत्री जी ला भी पूछ सकथौ अउ कृषि मंत्री जी ला भी पूछ सकथ हावौ। माननीय सभापति महोदय, बजट मा प्रावधान आथे। मोर प्रश्न भी लगे रहिस, लेकिन ये दुर्भावना हे या हमर दुर्भाग्य हे कि बजट में प्रावधान आये के बाद भी जो जरूरतमंद काम हे, तेखर प्रशासकीय स्वीकृति नहीं मिलै। माननीय मंत्री जी, आप ओ दिन नहीं रहौ। मोर 12-15 ठन रोड 2 साल ले बजट ले बाहर हे। आपके जवाब हे। कतका लंबा रोड? 1 किलोमीटर, 2 किलोमीटर के सड़क। अगर नहीं बनाना हे तो बजट मा प्रावधान करे के का जरूरत हे। केवल एखर लिए ओहा स्वीकृत नहीं होइस कि प्रशासकीय स्वीकृति नहीं मिलही कि हम विपक्ष के विधायक हन, लेकिन अगर अइसना भावना हे अउ अगर अविश्वास पैदा होथे तो केवल आपके यही भावना के कारण जो हे अविश्वास पैदा होथे। आप बन गे हौ, अउ बहुमत के साथ बने हौ। आप ला अपन दिल ला बड़े रखना चाहिए। पूरा छत्तीसगढ़ के जनता आपके हे अउ जनता के हित मा आप ला काम करना चाहिए। माननीय सभापति महोदय, भ्रष्टाचार अउ करप्शन के का हालचाल हे। मैं कोई व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाओ, लेकिन अभी डेढ़ साल के समय हे। अगर सावधान होना चाहथव तो हो जावव। नक्शा, खसरा, बी.-1 किसान ला बिना पैसा के नहीं मिलथे। फौती, नामांतरण, बंटवारा बिना लेन-देन के कहीं भी नहीं होत हावय। अगर ए व्यवस्था ला सुधारना चाहथव तो सुधार लेवव। नहीं तो मंच मा बोले बर..।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, हमारे यहां तो फ्री में बन रहा है। आप ही के यहां कैसे?

श्रीमती इंदू बंजारे :- भैया, हमारे यहां बिना पैसे के कुछ भी नहीं होता है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय संतराम जी, आपके यहां क्या-क्या फ्री में हो रहा है, यह सब मुझे मालूम है। इहां बोलना आपके मजबूरी हे।

श्री कवासी लखमा :- तुम्हारा नेता भी तो बिना पैसा के टिकट नहीं देता है। (हंसी)

श्रीमती इंदू बंजारे :- दादी, आप इसके बारे में न बोले तो बेहतर है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- ये सब सदस्य ला मालूम हे कि कहां-कहां फ्री में होथे। हम तो सौभाग्यशाली हन जो पीड़ा हे तेला बोल लेथन, आप मन ला तो ओ भी सौभाग्य नहीं मिले हे कि आप अपन पीड़ा ला व्यक्त कर सकौ। अपन दर्द ला यहां व्यक्त कर सकौ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री इंदू बंजारे :- परेशानी सब ला हे, लेकिन यहां बोले के अधिकार कोई ला नहीं हे।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- अउ पीड़ा अउ दर्द ला व्यक्त नहीं करिहौ तो धीरे-धीरे ओ हा नासूर बनके घाव हो जाही। अउ ओ घाव हा बड़े हो जाही तो वह छोड़े नहीं।

सभापति महोदय :- माननीय चन्द्रा जी, समाप्त करिए।

श्री अमरजीत भगत :- आप धन्यवाद दे चुके, अब आप समाप्त करिए। बहुत लंबा भाषण हो गया।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- सरकार छत्तीसगढिया के सरकार हे। कोई शंका नहीं हे। हमर मुख्यमंत्री जी किसान आदमी हे। छत्तीसगढिया के बात करथे। गेड़ी भी चढ़थे। भौरा भी चलाथे। हरियाली मा गेड़ी भी चढ़थे। कल गेड़ी त्यौहार हे, गेड़ी भी चढ़ही। लेकिन केवल गेड़ी चढ़े, भंवरा चलाए अउ बोरे बासी खाए ले छत्तीसगढ़ के हित नइ होए । आप इहां के कतका अकन कंपनी मा छत्तीसगढ़िया मन ला नौकरी दे हौ । रेडी-टू-ईट, यहां के महिला मन ला हटाकर, आने प्रदेश के मन ला बीज निगम के माध्यम से ठेकेदारी करते हे, यादव जी । तुम्हरे करा रायगढ़ का फैक्ट्री बनाए हे ।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- दू प्वाइंट मा अउ बोलत हौं, सभापति महोदय आपके संरक्षण चाहिए । खनिज के बाद बहुत अकन करिस । रेत ला आप ठेका दे हौ अउ बहुत सारे खनिज इहां मिलते । कोयला के का हालचाल हे, आप करा संदेश मिले हे या नइ, लेकिन बाहिर मा बहुत हल्ला हे । गब्बर टैक्स लगते करके हल्ला हे । रेत मा जतका मन रायल्टी मा रेत निकलत हे, ओखर दस गुना बिना रायल्टी के निकलत हे, अउ रेत मा माफिया राज चलते हे ।

श्री संतराम नेताम :- सभापति महोदय, मैं आठ, साढ़े आठ साल से देख रहा हूं । आप केवल विरोध ही कर रहे हो, इधर आ जाओ कम से कम मजे में रहोगे । हम लोग मजे में ही हैं ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- तुम्हर हालत ला देख के ओती के मन एती आने वाला हे ।

सभापति महोदय :- चंद्रा जी कृपया समाप्त करें ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- जी, जी । नदी से अभी बरसात मा भी रेता निकलत हे, कोई अधिकारी के ताकत नइ हे कि ओमन काम कर सकंय । शराब बंदी के बात ही नइ करव, क्योंकि सरकार शराब बंदी करे ल नइ चाहत हे । नशा ला बंद करना ही नइ चाहत हे । बल्कि अब तो स्थिति यह हो गे हे के गांव-गांव के छोटा-छोटा किराना दुकान मा सुलोशन अउ नशा के गोली बिकत हवय । पुलिस अउ आबकारी दो विभाग के अउ कोई काम नइ हे, केवल शराब जप्त करना हे, सेटिंग करना हे अउ लेनदेन करके ओमन ला छोड़ना हे । केवल शराब पकड़े के काम हे । अब सरकार कही के शराब पकड़त हे त का गलत काम हे, बढ़िया बात हे । सभापति महोदय, कानून व्यवस्था के का स्थिति हे, मैं खुद पीड़ित आदमी हंव । 19 तारीख के मोर घर मा चोरी हो गे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रामकुमार यादव :- पइसा ला घर मा काबर रखे रहेव ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- 71 के बहुमत हे आप तो कुछ भी बोल दिहा । अब मैं पइसा ला काबर रखे रहेंव, मोर घर मा काबर चोरी हाइस । आपके लापरवाही हे बोल सकत हो । ता आपके पुलिस का चीज बर हे । पुलिस प्रशासन का चीज बर हे, समापति महोदय, पइसा ला मा एकर बर रखे रहेव कि छत्तीसगढ़ मा पुलिस के व्यवस्था हे कहिके रखे रहेंव । लेकिन मोला नइ मालूम रहिस के छत्तीसगढ़ मा पुलिस कानून नाम के कोई चीज नइ हे । जे दिन मैं ए मुद्दा ला उठाएं अनेक सदस्य मोर आलोचना करिन । कई झन कहिन पीड़ा केवल केशव चंद्रा के नो हाय, छत्तीसगढ़ प्रदेश के तमाम जनता के आय । केशव चंद्रा तो इहां व्यक्त करत हावय। सभापति महोदय, आज सातवां दिन हो गय, सदन चलते हुए सातवां दिन, एक विधायक के घर मा चोरी होना, अउ चोर के नइ पकड़ाना, ए केशव चंद्रा के गलती नइ हे, अगर नाकामी हे तो सरकार के नाकामी हे । चोर अगर चैलेंज करे हे तो केशव चंद्रा ला चैलेंज नइ कर हे, बल्कि सरकार का चैलेंज करे हवय । कानून व्यवस्था ला चैलेंज करे हावय । ये जवाबदारी आपके हे ।

सभापति महोदय :- चलिए, समाप्त कीजिए ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय सभापित महोदय, मैं अंतिम शब्द बोलना चाहत हौं, काबर कि मोला अध्यक्ष जी निर्देश दिन के तैं कौन पक्ष ले बोलना चाहत हौं । पक्ष मा हस या विपक्ष मा हस । सभापति महोदय, एहू मन 15 साल सरकार मा रहिन । उही काम ला करिन जे आज ये सरकार करत हे। एती बइठे तो कतका सुंदर सुंदर बात करंय । जब हमर मुख्यमंत्री जी बोलय ता बहुत बढ़िया लागय । ये कुर्सी में ही गड़बड़ हे, जेन जाथे ओखर बोली भाषा, चाल, चरित्र, व्यवहार सब बदल जाथे, ये कुर्सी में ही गलती हावय । ओखर सेती हमर सियान मन कहे हे ।

श्री रामकुमार यादव :- तुम्हर जइसने पहिली रहिस, वइसने अभी भी हे ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- बाबू दू चीज के घमंड मत करबे । अउ ए दू चीज का हे मालूम । पहिली धन दौलत अउ दूसर पद, पावर । ए दूनू चीज के अहंकार मत करबे । अउ दूनू चीज के अहंकार करबे तो ए दूनू चीज रहने वाला नइ हे, चलायमान हे ।

सभापति महोदय :- समाप्त कीजिए ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- सभापति जी, मैं बिल्कुल समाप्ति की ओर हौं । अपन स्थिति ला स्पष्ट कर देत हौं । मैं इहू मन के संग मा नइ हौं, काबर एमन अनुसूचित जाति के आरक्षण ला कम करिन 16 परसेंट ले 12 परसेंट करिन । ये मन पिछड़ा वर्ग के आरक्षण के बात ही नई करीस। आज ये देश के वन में रहने वाला आदिवासी समाज नक्सलवाद के नाम से प्रताड़ित हे, पुलिस से प्रताड़ित हे, ये मन येकर चिंता नइ करीन, लेकिन येकर सरकार आईस ता ओमन के आरक्षण ला 16 परसेंट करहूं कहे रहीसे, ओला 13 परसेंट मा लाके रोक दिस। यहां तुहूं मन के साथ नइ देत हे। सरकार बनाय बर 16

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

परसेंट के बात जरूर करे रहीन, लेकिन 12 ले 13 परसेंट करे हे। 27 प्रतिशत के बात करे रहीन, लेकिन ओमन कानून ऐसे नई बनाईस कि पिछड़ा वर्ग ला 27 प्रतिशत आरक्षण मिलय।

श्री रामकुमार यादव :- जिसका जितना संख्या भारी, उसका उतना हिस्सेदारी।

श्रीमती इंदू बंजारे :- यह हिस्सेदारी कहां मिलते हे? जोन पैसा के बात रहीसे ओहर नई मिलत हे।

श्री रामकुमार यादव :- भाई, 12.44 प्रतिशत हे, मतलब 13 परसेंट हे। जिसका जितना संख्या भारी। छत्तीसगढ़ में 12.44 परसेंट, ये एस.सी. के संख्या हे, ये 13 परसेंट हे। ठीक तो है।

श्रीमती इंदू बंजारे :- आपके सरकार अपन बात मा कायम नई हे।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करिये।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- माननीय सभापति महोदय, इसलिए ना मैं इस अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में हौं ना विपक्ष में हौं। अविश्वास प्रस्ताव यदि आय हावय तो केवल यह सदन के अविश्वास नई हे, बल्कि ये सरकार के अविश्वास हे, जेमा एक मंत्री अविश्वास करथे, जेमा ये संसदीय सचिव, जेमन ना बोले के लायक हे, ना जेमन प्रश्न लगाय के लायक हे। ये संसदीय सचिव मन बर अविश्वास हावय।

सभापति महोदय :- चंद्रा जी, चलिये बैठिये।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- यदि ये अविश्वास प्रस्ताव मा मतदान की स्थिति होही ता मोर दल, मोर पार्टी के दोनों विधायक, ओ मतदान मा हिस्सा नई लेन। सभापति जी, ये बात के घोषणा करते हुए आप मोला बोले के समय दे हौं, ओकर लिये मैं आप ला बहुत-बहुत धन्यवाद देथव।

सभापति महोदय :- माननीय मंत्री श्री अमरजीत भगत जी।

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- सभापति जी, बोले के पहली एक मिनट। सभापति जी, चंद्रा जी के भाषण कइसे लागीस? ना इधर के रहे, ना उधर के रहे, ना खुदा ही मिला, ना विशाले सनम।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अमरजीत जी, आप पूरा इंग्लिश में बोलना। आप बीच में संस्कृत में भी बोल देना।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय सभापति महोदय, आज विपक्ष के द्वारा जो अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। हम तो केवल आरोपत्मक बात सुनते आ रहे हैं और पिछले विधान सभा सत्र में जो बात हुआ और वही बात घीस-पीट कर घुमकर आ रहा है। मैं अपनी बात की शुरूआत

कबीर जी के दोहे से करना चाहता हूं कि -

"कबीरा तेरी झोपड़ी गल कटियन के पास।
जो करेगा सो भरेगा तू क्यों भयो उदास।।
साँच बराबरि तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है ताकै हृदय आप॥ " (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मानननीय सभापति महोदय, हम कब से केवल वही-वही बात सुन रहे हैं। मैं आज छत्तीसगढ़ की बात नहीं कर रहा हूं, मैं पूरे हिंदुस्तान की परिप्रेक्ष्य में बात कर रहा हूं कि छत्तीसगढ़ का कोई योजना यदि पूरे हिंदुस्ताव में हिट हो रहा है, छत्तीसगढ़ की योजना यदि पूरे हिंदुस्ताव में मॉडल बन रहा है, उसके पीछे कोई है तो केवल और केवल छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय श्री भूपेश बघेल जी है। हम उनकी प्रशंसा करते हैं। (मेजों की थपथपाहट) जब छत्तीसगढ़ के संदर्भ में बात होती है तो हिंदुस्तान के सबसे बड़े पंचायत, संसद के स्टैण्डिंग कमेटी छत्तीसगढ़ की योजना की अध्ययन के लिए टीम आती है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। कुछ दिन पहले जब योजना की शुरूआत हुई थी कि छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी - नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी येला बचाना है संगवारी, तो क्या उन्होंने कहा था कि - पैसा कहां से है संगवारी? इनको हर चीज में पैसा दिखता है। इनको काम नहीं दिखता है। पूरे हिंदुस्ताव के परिप्रेक्ष्य में जब किसान का आंदोलन होता है तो हर आंदोलन में छत्तीसगढ़ मॉडल की बात होती है। यह हमारी पहचान है, यह हमारी उपलब्धि है।

मानननीय सभापति महोदय, इनकी केन्द्र में सरकार है। उनकी किसानों की आय दोगुना करने की बात टाय-टाय फिस हो गई। यह लोग किसानों के बारे में क्या-क्या आरोप नहीं लगाये। यह लोग किसान को अलगांववादी बोल दिये, किसान को आंतकवादी बोल दिये, किसान को खालीस्तानी बोल दिये और उनके साथ ऐसा बर्ताव किया गया, जैसा बर्ताव अंग्रेज भी नहीं किया करते थे। किसान जब ट्रैक्टर से जा रहे थे तो जाते समय उनके रास्ते में कांटे बिछाये गये और कील बिछाये गये। उस ठण्ड में लोगों के ऊपर पानी का बौछार मारा गया और उनकी गलती क्या थी कि वह लोग केवल यह मांग कर रहे थे कि आपका जो किसानों का आय दुगुना करने का कमिटमेन्ट है आप उसको पूरा करें। पूरे हिुदुस्तान में ऐसा कोई स्टेट नहीं है जो छत्तीसगढ़ के बराबर किसानों को धान का दाम देता है। (मेजों की थपथपाहट)

मानननीय सभापति महोदय, हमारे लिए यह गर्व की बात है कि इस प्रदेश का मुख्यमंत्री किसान का बेटा है। इस प्रदेश का मुख्यमंत्री किसानी काम के बारे में अनुभव रखता है और सत्ता में बैठने के बाद यदि उन्होंने पहला दस्तखत किया तो किसानों के लिए ही किया। (मेजों की थपथपाहट) किसानों का 10,000 करोड़ रूपये का कर्जा माफ करना, क्या कोई छोटी-मोटी बात है ? मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि यह लोग 15 साल तक छत्तीसगढ़ में राज किये लेकिन आप लोगों ने 15 सालों में किसानों का कितना कर्जा माफ किया ? जब-जब भी किसानों की बात आई तो आपके चेहरे बेनकाब हुए। जब 2,500 रूपये में किसानों की धान खरीदी की बात हुई तो मुख्यमंत्री जी केवल 1 साल 2,500 रूपये दे पाये, दूसरी बार की सीजन में जब 2,500 रूपये में धान खरीदने की बात आई तो जितने भी नेता हैं आप लोगों के मुंह से किसानों के पक्ष में एक शब्द भी नहीं निकला।

श्री रामकुमार यादव :- ए मन उद्योगपति मन के कर्जा माफ करे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, 2,500 रूपये में खरीदी के पक्ष में आप लोगों का एक भी बयान नहीं आया। आप लोग अपने हाई कमान को एक भी चिट्ठी नहीं लिख सके। क्या आप केवल अवसर के लिए, वोट के लिए और सत्ता के लिए राजनीति करते हैं ? क्या आपका जनता के प्रति और छत्तीसगढ़ के प्रति कोई जवाबदारी नहीं है ? जब इस प्रदेश में धान खरीदी को लेकर अवरोध पैदा हुआ तो माननीय कृषिमंत्री जी और मैं स्वयं मुख्यमंत्री जी के साथ हम लोग दिल्ली गये। दिल्ली में मीटिंग हुई। आपके केन्द्रीय खाद्य मंत्री ने साफ मना कर दिया कि अगर आप एम.एस.पी. से एक पैसा भी ज्यादा देंगे तो हम छत्तीसगढ़ का चावल केन्द्रीय पुल में नहीं लेंगे। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के और माननीय कृषिमंत्री जी के जजबे को सलाम करता हूं। जब मीटिंग समाप्त हुई और जब केन्द्रीय खाद्य मंत्री जी हमको चाय के लिए ऑफर किये तो मुख्यमंत्री जी ने उनके ऑफर को ठुकरा दिया। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हम आपका चाय पीने के लिए नहीं आये थे। (मेजों की थपथपाहट) मुख्यमंत्री जी ने कहा कि केन्द्रीय पुल में चावल लेना या न लेना आपका दृष्टिकोण है और यह आपका विषय है लेकिन हम छत्तीसगढ़ के किसानों को 2,500 रूपये से एक पैसा भी कम नहीं देंगे। (मेजों की थपथपाहट) यह होता है कमिटमेन्ट।

माननीय सभापति महोदय, बहुत सारे अवसर आये, यदि आप अपने आपको छत्तीसगढ़ के किसान का हितैषी मानते हैं तो कम से कम जिस समय बारदाना को लेकर दिक्कत आयी, उस समय आपका एकाध बयान आ जाता कि केन्द्र ने हमारे साथ जो कमिटमेन्ट किया हमको उतना बारदाना नहीं दिया और हम पुराने बारदाने से काम चलाये। यह लोग केवल और केवल राजनीति किये। यह लोग हर जगह आंदोलन कराने के फिराक में रहते थे।

समय :
8:45 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे कहने में गर्व होता है कि हमारे मुख्यमंत्री किसान हैं और उन्होंने किसानों के लिए जो काम किया हैं, वह मैं बताना चाहता हूं । हमने वर्ष 2018-19 में 80.38 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की । 2019-20 में यह बढ़कर 83.94 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हो गयी, 2020-21 में यह बढ़कर 92 लाख मीट्रिक टन की खरीदी हो गयी । 2021-22 में यह बढ़कर 98 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की । आप अपने कामों की कभी तुलना करते हैं, आप लोग कहीं आसपास दिखते हैं ? आप लोग के समय में 70 लाख मीट्रिक टन धान के आसपास खरीदी रहती थी । हमारी सरकार के समय में 80 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी से रिकार्ड ओपनिंग हुआ है । पहले साल में किसानों को 14 हजार करोड़ रूपए, दूसरे साल में 15 हजार करोड़, तीसरे साल में 17 हजार करोड़ और चौथे साल 21-22 में 19 हजार करोड़ का भुगतान किया गया । अगर सबको जोड़ दें तो यह कुल

65,681 करोड़ रूपए होते हैं । यह सीधे-सीधे किसानों की जेब में गया है । राजीव गांधी किसान न्याय योजना का अलग है । राजीव गांधी किसान न्याय योजना के बारे में अगर आप जानना चाहेंगे ।

अध्याक्ष महोदय :- वह तो चौबे जी ने बता दिया था, आप समय का ख्याल रखिए ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यतक्ष महोदय, ये लोग कस्टम मिलिंग की बात करते हैं । वर्ष 2018-19 में 79.73 लाख टन धान मिलर्स के द्वारा उठाया गया और उसका चांवल 53.74 लाख मीट्रिक टन चांवल जमा किया गया । 2019-20 में 81.49 लाख मीट्रिक टन धान का उठाव हुआ और चांवल 54.98 लाख मीट्रिक टन चांवल जमा हुआ । 2020-21 में 80 लाख मीट्रिक टन धान का उठाव हुआ और 54 लाख मीट्रिक टन चांवल जमा हुआ । 2021-22 में अभी तक 97 लाख मीट्रिक टन धान का उठाव हो चुका है और 53 लाख मीट्रिक टन चांवल जमा हो चुका है । यह इतना स्मूथली, इतना अच्छे से संपादित हो रहा है । आपको बोलने के लिए कहीं मौका ही नहीं है । आज पूरे हिन्दुस्तान में हाहाकार मचा हुआ है । आपकी पार्टी ने जो कमिटमेंट किया था, उसमें से आपने एक भी वादा नहीं निभाया । आज महंगाई आसमान छू रही है, उसमें एक शब्द नहीं बोलते । आज डीजल और पेट्रोल 100 रूपये पार हो गए हैं, उसमें आपकी ओर से एक शब्द नहीं आता । आज रसोई गैस का सिलेण्डर 11-12 सौ रूपए में बिक रही है, उसमें आप लोगों का कोई स्टेटमेंट नहीं आता । आज हमारे देश के प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि अच्छे दिन लाऊंगा, आप मुझे अवसर दीजिए । मैं प्रधानमंत्री नहीं, प्रधानसेवक बनूंगा, लेकिन सारे वादे खोखले निकले । नोटबंदी की आवश्यकता नहीं थी, नोटबंदी ने इस देश की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया । जी.एस.टी. लाकर उद्योग-धंधे बंद कर दिए और इनके प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि मैं देश नहीं बिकने दूंगा । चाईना घूसकर बैठा है, आपने क्या उखाड़ लिया ? आपने क्या कर लिया ? अगर चाईना इधर आता है तो आपका दौरा दूसरे तरफ हो जाता है । जब चाईना के राष्ट्र पति भारत आते हैं तो आप झूला झूलाते हो । ये क्या है ?

अध्यूक्ष महोदय :- चलिए, छोड़िए, यह विषय नहीं है ।

श्री ननकीराम कंवर :- अध्यक्ष जी, ऐसा लग रहा है कि अमरजीत जी मंत्री नहीं रहकर सांसद बन गए हैं ।

अध्य क्ष महोदय :- यह विषय इनका नहीं है । इनको अगली बार सांसद बनाएंगे । अभी तक बहुत अच्छा भाषण चला ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, अमरजीत ने कहा कि क्या उखाड़ लिए तो संसदीय कार्यमंत्री जी इतने ईस्मित भाव से हंसे कि मैंने उनकी इतनी शानदार हंसी कभी नहीं देखी थी ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यभक्ष महोदय, मैं बहुत कम शब्दों में अपनी बात बोलकर समाप्त कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- अच्छे शब्दों में बात कर रहे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- अध्यक्ष महोदय, जब बात होती है तो तुलनात्मक बात होती है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह जो उखाड़ने की बात किए हैं, उसको विलोपित मत करियेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- जो उखाड़ लिए बोले है उसको विलोपित मत करिये, वह असंसदीय नहीं है।

श्री अमरजीत भगत :- अच्छा माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं बोलता हूं कि "जा के पैर ना फटे गोसाई ओ क्या जाने पीर पराई "

अध्यक्ष महोदय :- यहां शब्दों की बात नहीं हो रही है। मैं कोई आलोचना वगैरह नहीं कर रहा हूं। बात शब्द की नहीं हो रही है, शब्द से जो भाव प्रकट होते हैं, उसको देखते हुए विलोपित करना और नहीं करना हमारे ऊपर है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी मैं जो बोलूंगा उसको आप जरूर विलोपित करवा दोगे।

अध्यक्ष महोदय :- मैं खुद ही बोल रहा हूं कि भाव को देखते हुए विलोपित किया जाता है ना कि शब्द को देखते हुए विलोपित किया जाता है। अगर भाव गलत है तो उसमें वह विलोपित होगा।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये जो राजनीति करते हैं, अपनी पार्टी की आइडोलॉजी पर करते हैं। मैं उनके दल की परेशानी समझ सकता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- एकाध इंगिलिश में झाड़ो ना यार।(हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- B.J.P. is total स्टेटबाजी, His politics is not any fever to our kishan in Chhattisgarh. ये टोटल राजनीति करते हैं। एक सिंगल अवसर नहीं दिखा कि छत्तीसगढ़ के साथ इनका लगाव है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी राजनीति पूंजीपतियों के लिए होती है। इनकी राजनीति बड़े-बड़े उद्योपतियों के लिए होती है। नाम लूंगा तो फिर इनको तकलीफ होगी।

अध्यक्ष महोदय :- नाम मत लो, नाम बिलकुल मत लीजियेगा।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उन बड़े-बड़े उद्योग घरानों के लिए होती है और हम लोगों की राजनीति किसानों के लिए होती है, गरीबों के लिए होती है, सर्वहारा वर्ग के लिए होती है।

अध्यक्ष महोदय :- very good, Thank you. धन्यवाद, बहुत अच्छा बोले।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी यहां की संस्कृति को स्थापित करने की बात करते हैं, यहां की संस्कृति को आगे बढ़ाने की बात करते हैं, हमारे रीति-रिवाज को पुनर्जीवित करने की बात करते हैं, यहां की संस्कृति को नये कलेवर में देश-विदेश के सामने रखने की बात करते हैं, यहां पर हर त्यौहार को मनाने की बात करते हैं तो इनको तकलीफ क्यों होती है ? मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव को कराया, जिसमें देश और दुनिया के लोग यहां पर आकर हमारी संस्कृति से रूबरू हुए। लोग इस छत्तीसगढ़ को केवल

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नक्सलियों के गढ़ के रूप जानते थे। माननीय मुख्यमंत्री जी ने यहां की संस्कृति से रूबरू कराया। यहां के शांति के टापू के बारे में रूबरू कराया। यहो के त्यौहार के बारे में रूबरू कराया। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक अवसर नहीं दिखता है कि छत्तीसगढ़ के साथ इनकी भावना सकारात्मक रूप से जुड़ी हो।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बोलने के लिए बहुत कुछ था, लेकिन समय की पाबंदी को देखते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। आपने मुझे बोलने के लिए जो मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री रामकुमार यादव :- इंगलिश मा बोले हा तो आप ला इंगलिश मा धन्यवाद भी होना चाही।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, पूरा सदन जानना चाहता है कि टोपी पहने हैं तो हम लोग कन्फ्यूज होते हैं, इधर 4-5 लोग खड़े होते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- क्यों ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- तो वह आज टोपी कैसे पहने हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- टोपी पहनना भी एक कला है।

श्री रामकुमार यादव :- यह टोपी पहनत हे तुमन जम्मो ला टोपी पहनात हे।

श्री अमरजीत भगत :- यह टोपी गांधी जी की टोपी है साहब, जिन्होंने अंग्रेजो को भगाया था।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है भईया। टोपी पहनना और टोपी पहनाना दोनों में अंतर है। उन्होंने अभी टोपी पहना है या किसी ने पहनाया है, यह भी अपन समझ नहीं पा रहे हैं। आप कम समय में माननीय गागर में सागर की तरह बात करिये।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गागर में सागर की तरह तो कोशिश करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- मेरे कहने का अर्थ यह है कि कम समय में कहें।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, तुलसीदास भक्त कवि थे। उन्होंने श्रृंगार पर बहुत कम लिखा है। मैं उनकी एक पंक्ति से शुरू करके सीधे छत्तीसगढ़ी में आऊंगा। पंक्ति अयोध्या काण्ड की है, ये लोग रामायण उत्सव करवाये हैं, शायद वह एकाध पंक्ति जानते होंगे। मैं संस्कृति में भी बात करूंगा। छत्तीसगढ, छत्तीसगढ़िया और छत्तीसगढ़ी, इस पर भी बात करूंगा -

सुंदरता कहूं सुंदर करहि, छबि गृह दीप शिखा जनु बरहि
सब उपमा कवि रहै जुठारि, ते पट झरऊं विदैह कुमारी

इसका मतलब एक लाईन में समझा देता हूँ । सीताजी इतनी सुंदर है, उसका वर्णन करने के लिए जितनी उपमायें हैं, सब उपमाओं को कवियों ने जूठा कर दी । मैं कौन सी उपमा से उनकी सुंदरता का वर्णन करूं । अभिप्राय यह है । इस सरकार के कार्य और कारनामें इतने हैं कि मुझे कोई एडजेक्टिव,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

एडवर्ब या विशेषण मिल नहीं रहा है।अब इस सरकार को कुटहा कहूं तब, इस सरकार को मैं ढ़ीठ कहूं तब, इस सरकार को मैं घेक्खर कहूं तब, यह छत्तीसगढ़ी शब्द हैं, यह संसदीय है या असंसदीय है, उसे संसदीय मंत्री के ऊपर छोड़ देता हूँ, ज्ञाता हैं । ये सरकार में कऊत पर गे हे, आरी कतको कोचक, हिलना हे ना डोलना हे वोला, कऊत पर गे हस, किसान आदमी अस, गरवा लेला जाथन तव यहु ला टमर के देखथन, कऊत कतका परे हे । का भाव एखर लगही, के दांत के हे, दांत देखथन तइसने । कोई फर्क नहीं । आंखों की शाम तक बेची, बोलते हैं ना, उस तरह से बात है । अब सबसे महत्वपूर्ण बात, इस सदन की मर्यादा, आप माननीय अध्यक्ष जी, ननकीराम जी के बाद सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं, यदि सदन के नेता की विश्वसनीयता खत्म हो जाये, सदन में कही हुई बात का पालन मत हो, बाकी बात क्या करें, यह आप बताईये । मैं आपको बता देता हूँ । बोधघाट में चैलेंज स्वीकार किया । रमन सिंह जी थे, बोधघाट हम बनायेंगे ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- प्रेम से बोलो भईया । प्रेम से बात करना भई ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 11-12 करोड़ रूपया, डिस्कॉम, विस्काम किसको दे दिये ?

डॉ.चरणदास महंत :- ऐसा है, प्रेमप्रकाश जी बैठे हैं । प्रेम से बात नहीं करेंगे तो ठीक नहीं होगा ।

श्री अजय चन्द्राकर :- डिस्कॉम, विस्कॉम कौन सी कंपनी को 12-15 करोड़ रूपया दे दिया । आखिरी में बयान आता है कि आदिवासियों का मत लेंगे । घोषणा किये उस दिन नहीं मालूम था, जो कभी बन नहीं सकता । माननीय अध्यक्ष महोदय, रेत पर कितने बयान आये, खनिज निगम को देंगे, पंचायत को देंगे, ठेकेदार को देंगे, कितने प्रकार के बयान आ रहे हैं, आप विधान सभा से निकलवाकर देख लीजिए । इसी विधान सभा में कहा गया कि हम रबी फसल भी खरीदेंगे, माननीय कृषि मंत्री जी, कौन से सन् में खरीदे हैं ? एकाध दाना बता दीजिए । आप अपने भाषण में बड़ी लम्बी-लम्बी हांक रहे थे, माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी सदन में कहा कि हमारे यहां 5 हजार मेगावाट बिजली पैदा करते हैं, बिजली की कोई कमी नहीं है, रिकार्ड निकलवा लीजिए । कैप्टिव सेक्टर से, केन्द्रीय कोटा को हटा दीजिए, छत्तीसगढ़ में साढ़े तीन साल में बिजली उत्पादन घटी है । आगे बताऊंगा कितना घटा है उसको । छत्तीसगढ़ के हितों के लिये लम्बी-लम्बी हांक रहे थे । माननीय अध्यक्ष जी, मैं जातिवादी बाद कभी नहीं करता हूँ, लेकिन जाति को लेकर राजनीति भी नहीं करता हूँ । सुप्रीम कोर्ट की व्यवस्था है कि 50 परशेंट से ज्यादा आरक्षण नहीं होना चाहिये, मैं जिस वर्ग से आता हूँ, मैंने कभी जात-पात की बात नहीं की है । जितना परशेंट आरक्षण मिलता था, एस.सी. एस.टी. के बाद जितना बचेगा, ओ.बी.सी. का होगा यह संविधान कहता है । यह बात सदन के नेता जानते थे, फिर कहा हम 27 परशेंट ओ.बी.सी. को आरक्षण देंगे । यदि आर्थिक रूप से अक्षम है तो सामान्य वर्ग में उसको भी देंगे । बाकी बात इन्होंने कह दी । कांग्रेसी विधायक दो लोग हैं, बोलते हैं कि देश का पहला राज्य, देश का पहला राज्य बोलते हैं

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जिसने क्वांटिफाइबल डाटा आयोग बनाया। अरे वाह, वाह। आपको उच्च न्यायालय ने कहा कि आपके पास कोई डाटा नहीं है। आप जब 27 प्रतिशत आरक्षण देना चाहते थे, केवियेट क्यों नहीं लगाया? अभी शिवरतन शर्मा जी जिस आदमी, जिस व्यक्ति का उल्लेख कर रहे थे, मैं उसका उल्लेख नहीं करूंगा।

श्री रामकुमार यादव :- आप मन 15 साल काबर नई देव भैया।

श्री अजय चन्द्राकर :- 15 साल में यह बात कभी नहीं हुई, आप बैठ जाओ। अच्छी बात में बोलना नहीं चाहिए। यदि आपको समझ में नहीं आये तो अध्यक्ष जी से कक्ष में पूछ लेना।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- अजय जी, एक मिनट।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप खड़े होंगे तो आप मेरे मुर्शीद हैं। मैं तो बैठूंगा ही।

श्री मोहम्मद अकबर :- अभी आपने आरक्षण के बारे में यह कहा। सुप्रीम कोर्ट की व्यवस्था है कि 50 प्रतिशत से अधिक आरक्षण नहीं हो सकता। आप लोगों ने 32-12-14 प्रतिशत आरक्षण किये, क्या उस समय आपको नहीं मालूम था कि 50 प्रतिशत से ऊपर आरक्षण नहीं हो सकता ? 32-12-14 प्रतिशत आरक्षण तो आप लोगों ने किया था।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने किया तो आप भाषण में बोलियेगा। लेकिन इस सदन में नेता की विश्वसनीयता का सवाल है। क्वांटिफाइबल डाटा आयोग, अभी उसमें आऊंगा कि आपने किसमें-किसमें उसको डाटा नहीं दिया है। यह सदन का नेता यदि बोले और साढ़े 03 साल तक क्रियान्वित न हो तो विधायिका की क्या विश्वसनीयता रहेगी ? माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात मैं दूसरे विषय में उसके बाद आऊंगा, माननीय नेता जी ने जो-जो बातें कहीं। वास्तव में मैं आज भयभीत और निराश हूं। आपको अवगत कराया था। माननीय भूपेश बघेल जी पूरे सदन के नेता हैं, वह मेरे भी मुख्यमंत्री हैं। एक संस्था हैं, मैं इस बात को बार-बार बोलता हूं। मैं कभी व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाता। लेकिन यदि सदन का नेता गुस्से में फाईल पटकता है तो यह आदमी, सांसद भयभीत होंगे या नहीं होंगे कि आज इनका दिमाग क्या है, मैं उनसे बात करूं या नहीं करूं। दूसरा मैं इसलिए निराश हूं। मैं जब खड़ा होता हूं तो मेरे साथ 03 विधायक खड़े होते हैं तो माननीय मुख्यमंत्री जी हमेशा मना करते हैं। आपके ऊपर भी मैं बात कहूंगा क्योंकि आप हमारे संरक्षक हैं, आपके अंडर में हम निश्चिंत हैं। कभी उधर से 05 लोग हल्ला किये तो मैं नहीं देखा कि माननीय मुख्यमंत्री जी खड़े होकर सदन चलाने के लिए उनको बैठाये हों। अब व्यवस्था की बात करता हूं। माननीय सत्यनारायण शर्मा जी 1985 से विधायक चुनकर आ रहे हैं।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष जी, जब वहां से 05 लोग खड़े हो जाते हैं तो यह क्या सहयोग करते हैं ? यह स्पष्ट करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सत्यनारायण शर्मा जी 1985 से विधायक चुनकर आ रहे हैं। एक बार में वह एक साथ हारे थे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आपके नेता जी खड़े होते हैं तो आप लोग बात करते रहते हैं। आप लोग 2-3 लोग खड़े होते हो। अपने नेता का तो सम्मान करते नहीं हैं और यहां दूसरी तरह की बात कर रहे हैं।

श्री देवेन्द्र यादव :- यह अपने समय परंपरा बताते हैं और हमारे समय नियम, कायदे, कानून बोलते हैं। जब इनकी बात रहती है तो यह परंपरा बोलते हैं और जब हम खड़े होते हैं तो नियम, कायदे, कानून की बात बोलते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सत्यनारायण शर्मा जी, मेरे बडे भाई हैं, मैं बहुत आदर करता हूं। उनका चरण स्पर्श करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस बहस में आपने हस्तक्षेप किया कि अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय विषय पर बात नहीं होगी। किसी में बात नहीं होगी, उसमें बात नहीं होगी। ठीक है, अपने राज्य के विधान सभा की सूची है, concurrent list है, उसमें बात करेंगे। यह शुरूआत पी.सी.सी. चीफ श्री मोहन मरकाम जी ने की। बार-बार आग्रह करने के बाद माननीय सत्यनारायण शर्मा जी जैसे वरिष्ठ आदमी ने कोई व्यवस्था नहीं दी। जब शिवरतन शर्मा जी बोलना शुरू हुए।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो आसंदी पर आरोप लगा रहे हैं। यह गलत बात है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय चन्द्राकर जी ने मेरे नाम का उल्लेख किया है।

अध्यक्ष महोदय :- हॉ मैं आपको बोलने की अनुमति दिया न।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, उस वक्त मैंने व्यवस्था दी कि कार्यवाही देख ली जायेगी। माननीय अध्यक्ष जी को दिखाकर विलोपित कर दिया जायेगा। मैंने व्यवस्था दी। यह गलत शिकायत कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, शिवरतन शर्मा जी की हर बात, हर राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय विषय जो बोला गया, इसका हटा दिया जाये, इसको विलोपित किया जायेगा। अरे साहब, किसी भी विषय में एक व्यवस्था आती है, मैं उसमें आ रहा हूं। मैं उसमें बात करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- यदि आप लोग..।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, अब मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के विभागों पर कुछ बोल देता हूं। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के विभागों में जल्दी-जल्दी बोल देता हूं। क्योंकि मैं सदन के नेता के विश्वसनीयता पर बोल चुका हूं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 56 मिनट का टाईम था।

अध्यक्ष महोदय :- 9 बज गये हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 56 मिनट का टाईम था।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट, सुन लीजिये।

सदन को सूचना

अध्यक्ष महोदय :- 9 बज रहे हैं। इसलिये माननीय सदस्यों के लिये रात्रि कालीन भोजन की व्यवस्था लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिये प्रथम तल पर की गयी है। कृपया सुविधानुसार भोजन कर लें।

मंत्रिमण्डल के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव (क्रमश:)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, Sustainable millennium goal में..।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 56 मिनट का टाईम खत्म हो चुका है।

अध्यक्ष महोदय :- वह तो बहुत देर से खत्म हो चुका है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने निर्देशानुसार मैं जल्दी-जल्दी बोल रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- जी, जी।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, Sustainable millennium goal में 17 बिंदु होते हैं। उसमें जो चार बिंदुओं में दिया गया है, उसमें यदि केंद्र शासित राज्यों को मिला दें तो छत्तीसगढ़ 28वें स्थान पर है। यह 2021 की इकॉनॉमिक सर्वे की रिपोर्ट है।

दूसरा, Easy of doing business, पेड न्यूज चलता है तो पेपर में छपवा दिया या आपातकाल चलता है। मैं अभी एक लाईन जनसंपर्क में बोलूंगा। पेड न्यूज में छपवा दिया कि छत्तीसगढ़ एस्पायरिंग स्टेट है। यह नहीं बताया गया कि कितनी Category है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें तीन Category होते हैं। Top achiever, Achiever और Inspire। छत्तीसगढ़ Third class में है। आपके नेतृत्व में Easy of doing business में छत्तीसगढ़ तीसरी Category में है। क्यों? उसका कारण बता देता हूं। पिछले साल Oxford dictionary वाले पूरे देश का दौरा किये, जो शब्दकोष की सबसे प्रमाणिक संस्था है। वह धोखे से छत्तीसगढ़ भी आ गये कि चलो नया State बना है, उसको देख लें। छत्तीसगढ़ घूमकर उन्होंने लूट शब्द को अंग्रेजी में माना। उन्होंने लूट शब्द को अंग्रेजी शब्दकोष में शामिल किया कि इसको अंग्रेजी शब्दकोष मे शामिल किया जाये। क्यों? क्योंकि यह छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ सरकार के सांस्कृतिक रूप से, ढांचागत रूप से, संरक्षित रूप से, मान्यता प्राप्त है। यह जनजीवन का अंग है, इसलिये इसको अंग्रेजी में शामिल किया गया। (शेम-शेम की आवाज)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

संसदीय सचिव (श्रीमती रश्मि आशीष सिंह) :- अध्यक्ष महोदय, लूट बहुत पुराना शब्द है। यह शब्द आई.बी.सी. की धारा में है।

श्री अजय चंद्राकर :- आप कहीं स्थान नहीं रखते । अब यह टाईम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट है, मैं तारीख भी बता दूंगा। अब टाईम्स ऑफ इंडिया ने जिन 10 राज्यों की सूची जारी की है उसकी स्किल रिपोर्ट। काम के हिसाब से अच्छे शहर काम के लिये कौन सा है? उसमें छत्तीसगढ़ का कहीं नाम नहीं है। क्यों? Easy of doing business के लिये कानून व्यवस्था भी एक अंग है। पानी की उपलब्धता, हवा की उपलब्धता, राजनीतिक प्रशासन, निर्णय लेने की क्षमता, उसके बहुत सारे Goal है। माननीय मुख्यमंत्री जी उसे अच्छे से जानते हैं। बृजमोहन जी ने रायपुर को कल चाकूपुर कहा, रायपुर में रहने लायक नहीं है। वे अपराध के बारे में एक आंकड़ा पढ़ रहे थे। वे बिहार, यू.पी. की जगह में छत्तीसगढ़ का नाम ले रहे थे।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय,।

अध्यक्ष महोदय :- आप प्लीज उनको बोलने दीजिये। समय देखिये।

श्री अजय चंद्राकर :- मैंने आपको कहा था कि मैं आपको इस बात को समर्पित करूंगा।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, केन्द्र की सरकार ने छत्तीसगढ़ को सबसे स्वच्छ राज्य के रूप में भी पुरस्कृत किया है। वह जानकारी शायद इनके पास नहीं पहुंच पाई होगी तो मैं सूचना दे देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- कल पहुंचा देना।

श्री अजय चंद्राकर :- यह की बात कर रहे थे। यह पी.आई.बी. की रिपोर्ट है। नेशनल फूड सिक्योरिटी में एम्पलीमेंट में General State के Ranking में छत्तीसगढ़ का 20वें में 19वां स्थान है। मैं यह कागज आपको दे दूंगा, इसमें जो संस्था का नाम लिखा हूं, आप मिला लीजियेगा, आप ही को दूंगा। State support, Startup eco system report, मतलब Startup। इसमें Best performer, Top performer, Leader, Inspiring Leaders, Emerging Startup, इतनी Category है। इसमें छत्तीसगढ़ Inspiring Leader में है, आपने इसको भी पेड न्यूज में छपवाया है। आपने यह नहीं बताया कि 5 Category में हम 4थे स्थान पर थे। आपका Startup unicorn बनेगा। आपके पास दो Startup है, एक, गोबर और दूसरा, आप बासी दिवस में जो चम्मच में बासी खा रहे थे, वह Startup है, बासी खाओ दिवस में। पूरी दुनिया को सिखाईये कि छत्तीसगढ़ ने यह दो Startup दिया है। किसी भी Startup के लिये, हिन्दुस्तान के प्रमुख 100 Startup, आप unicorn की बात को छोड़ दीजिये, जो आज की रोजगार की सबसे बड़ी संस्था है। आज यदि सबसे ज्यादा रोजगार कहीं पैदा हो रहे हैं। तो स्टार्टअप में हो रहे हैं, छत्तीसगढ़ में स्टार्टअप का अता-पता नहीं है। क्योंकि आप इनोवेशन में लगते नहीं है...।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आप किसको देखकर, बात कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप एक लाख 76 हजार करोड़ रूपये कर्ज लेकर, ...।

अध्यक्ष महोदय :- आप किसको देखकर बात कर रहे हैं ?आप उधर मत देखिए।

श्री अमरजीत भगत :- अब मुझसे रहा नहीं जा रहा है। आप मुझसे एक श्लोक सुन लीजिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, इनको केवल एक श्लोक सुनाऊंगा। अध्यक्ष महोदय :- अंग्रेजी में है।

श्री अमरजीत भगत :- आप सुन तो लीजिए, आपको मजा आएगा।

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभयुत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।"

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।

आप इसका मतलब समझते हैं।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा :- आप इसको मंत्र जैसे पढ़ रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- 1 लाख 76 हजार करोड़ लेकर, राजीव गांधी क्लब बनाकर, यह क्लब बनाकर, वह क्लब बनाकर, 10 प्रकार के सेस लगाकर, पैसा देना राजकोषीय प्रबंधन नहीं है। वह उपलब्धि नहीं है यह तो पाप के भागीदार हैं कि छत्तीसगढ़ की उद्यमिता खत्म कर रहे हैं और जो उद्यमी राज्य नहीं रहा। मैं उन स्टेट, दुनिया में घूमने गया जो भारत के साथ स्वतंत्र हुए, लेकिन हमसे आगे कैसे बढ़े ?सिर्फ नागरिक गुणों के कारण बढ़े, अपनी उद्यमशिलता के कारण आगे बढ़े । जापान के आदमी इतने वर्को हॉलिक हैं कि काम करने के लिए कार में सोते हैं कि आज पूरा काम नहीं हुआ। यहां तो माल पीते हैं और फोकट का चावल खाते हैं, गोबर बिनते हैं, गोबर थोपते हैं और स्टार्टअप बनाते हैं।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- यह छत्तीसगढ़ की जनता का अपमान है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फोकट का चावल, क्या यह शब्द उचित है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हां फोकट का चावल बोल रहा हूँ।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस तरह इनकी भावना दिख रही है। आप छत्तीसगढ़ की जनता के ऊपर आप अपनी भावना व्यक्त कर रहे हैं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, फोकट का चावल, क्या यह शब्द उचित है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं फिर से बोल रहा हूँ। जिसको विलोपित करना है, वह कर देंगे। अगर माफी मांगने के लिए बोलेंगे तो मैं माफी मांग लूंगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, राजकोषीय कर्ज में बात हो चुकी है। मैं बोला 1 लाख 50 हजार जितना हो, मेरे पास लिखित है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आपने तो बोला था कि जल्दी खत्म करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप यह बताईये कि अभी तक ऋण प्राप्ति क्यों हुई और ऋण का उपयोग क्या हुआ ? आप उसकी जानकारी जो प्रश्नोत्तरी में है समग्र संसाधनों का भार ऋण होता है। मैंने प्रश्न क्रमांक भी पढ़ दूंगा। ऋण के व्यय और बजट योजनाओं को वन टाईम मेपिंग नहीं की जाती। ऐसा उत्तर दिया गया है। आप यह बताईये आपने ऋण लिया है तो उसको कहां लगाया है, क्यों लगाया है, किसलिये लगाया है, क्या खर्च किया है । राजस्व व्यय किया है, पूंजीगत व्यय किया है, यह किसी को नहीं बतायेंगे तो फिर उंगली तो उठेगी। अब माननीय मुख्यमंत्री जी कहेंगे कि मेरा नाम लिया गया। यहां भूपेश बघेल की सरकार तो कोई कहेगा ही या कांग्रेस की सरकार कहेगा। तो कांग्रेस की सरकार, वह दिल्ली वाले गिनते हैं जहां अभी आप लोग जाने वाले हैं। अब दूसरी बात, बजट प्रावधान करके खर्च नहीं करना। यह आपकी आदत बन गई है। यह अभी बता रहे हैं कि 1 लाख 16 करोड़ रूपये के आसपास कुछ बजट हो जाएगा। आप वर्ष 2019-20 में 27 प्रतिशत बजट खर्च नहीं किया है।

अध्यक्ष महोदय :- वह कॉम्पलीकेटेड है। उसको छोड़िए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2020-21 में 15 प्रतिशत बजट खर्च नहीं किया है। वर्ष 2021-22 में अभी तक 44 प्रतिशत बजट आखिर रात में करेंगे, अभी तक खर्च नहीं हुआ है। अब राजस्व व्यय, मैं पढ़ देता हूँ उसमें टाईम लगेगा।

अध्यक्ष महोदय :- वह कॉम्पलीकेटेड है। बजट समझ में नहीं आता।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक विशेष बात कहना चाहता हूँ। मैं आजू-बाजू नहीं बोलूंगा। मैं कोराना शुल्क, मैं तो कोरोना पर्व बोलूंगा। सरकार ने कोरोना पर्व मनाया। मेरा इसमें पी.आई.ए. स्वीकृत है उसमें बृजमोहन जी हैं, शिवरतन जी हैं, नारायण जी है । हाईकोर्ट ने सरकार को नोटिस दिया है दूसरे दिन समाचारपत्रों में सेस का ऐसा हिसाब छपा है यह मेरे पास हिसाब है। मैं इसमें बोल चुका हूँ। मुख्यमंत्री उन्नयन में 800 करोड़ रूपये लगा। यह कब बनी, किसलिए बनी, क्या खर्च होगा, किस तरह से खर्च होगा, हम लोगों को पैसा देंगे या नहीं देंगे। भगवान जाने, अभी उसमें पैसा रखा है। उसमें आपको भी 50 लाख रूपये मिला है। यदि कृषि कार्य में आऊंगा तो उसमें बोलूंगा। मैं जल्दी-जल्दी पढ़ देता हूँ। इसी साल का आर्थिक सर्वेक्षण है उसमें वर्ष 2020-21 में माईनस में जा चुका है जो विगत 5 वर्षों में बिजली उत्पादन, घरेलू उत्पादन, गैस, पानी आपूर्ति का योगदान जो 5 वर्षों में सबसे निचले स्तर का रहा, माईनस 0.17 प्रतिशत, इस साल बजट सत्र में जो आर्थिक सर्वेक्षण रखा गया है, उसमें आप पढ़ लीजिए। ताप विद्युत संयंत्र के विद्युत उत्पादन में निरंतर गिरावट आयी। मैं पढ़ सकता हूँ जो आर्थिक सर्वेक्षण रखा गया है, माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, आप उसमें पढ़ लीजिए । बिजली हाफ योजना, भाई, बड़ी प्रचारित योजना है। क्या बात है, क्या बात है। मैं उधर घूमने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जाता हूं तो रोज तिराहे में पोस्टर को देखता हूं, रोज रोजगार का नया-नया पोस्टर लगता है। माननीय भूपेश बघेल जी, राष्ट्रपति जी आई, उस दिन आपकी कितनी शानदार वाली फोटो लगी थी। देखकर दिल मचल जाता है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, प्लीज-प्लीज।

श्री अजय चंद्राकर :- साहब, एक मिनट प्लीज।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने एक मिनट दे दिया न।

श्री अजय चंद्राकर :- प्लीज-प्लीज, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- हां दिया न एक मिनट। मैंने बोला तो।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, ग्रामीण उपभोक्ता 37,20,663 हैं। इसमें लाभान्वित 24,75,342 हैं। शहरी लाभान्वित 16,40,259 हैं, ग्रामीण लाभान्वित 13,32,966 हैं। कुल 53 लाख हुए। लाभान्वित 38 लाख हुए। 15 लोग उसमें लाभान्वित नहीं हैं। आप इसी साल जो आर्थिक सर्वेक्षण रखा है, उसको पढ़ लीजिए। आप बहुत प्रचारित कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मैं बोधघाट में बोल चुका हूं। बिजली पंप कनेक्शन, 150 करोड़ है। 1500 को कनेक्शन दे सकते हैं। मुख्यमंत्री जी बता चुके हैं। मैंने जब कहा कि 53 हजार रिकार्ड बना, साढ़े तीन साल में 53 हजार रिकार्ड बना। बहुत सुंदर, आप किसानों के हितैषी हो। क्रेडा की बात को छोड़ देता हूं लेकिन इसमें मुंगेली जिले का बड़ा जोरदार आंकड़ा है। मैं आपको दे दूंगा। अब मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के एक दो विभाग हैं, उसमें किसी ने नहीं कहा है। विगत् दो वर्षों में मुख्य और गौण खनिज की भागीदारी में निरंतर कमी आई है। इसको आर्थिक सर्वेक्षण बोलता है। जो लगभग 7 गुना से तेजी के साथ कमी आई है, इसमें पूरा आंकड़ा है। मैं आपको इतना ही बता देता हूं। डी.एम.एस. के दुरूपयोग के बारे में बोला जा चुका है, मैं कुछ नहीं बोलता लेकिन 870 करोड़ राशि स्वीकृत है जिसमें 378 करोड़ रूपया नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी का है। माननीय कृषि मंत्री महोदय, आप भाषण दे रहे थे न तो मुख्यमंत्री जी की फ्लैगशिप योजना नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी के बारे में एक लाईन नहीं कहा। क्या आप मुख्यमंत्री जी की योजनाओं को महत्व नहीं देते। अवैध रेत खनन, हसदेव अरण्य कोल ब्लॉक में काफी चर्चा हो गयी है, कल हमने संकल्प पारित किया है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए समाप्त करिए।

श्री अजय चंद्राकर :- लेकिन आरीडोंगरी में आप खनिज विभाग का काम देख लीजिए। माननीय मुख्यमंत्री जी के पास जो सूचना प्रौद्योगिकी है, उसका एक ही काम है। ठेका मैनेज करना। समझ रहे हैं न। आरीडोंगरी में सब चीज ऑनलाईन था, सिर्फ जो कॉशनमनी जमा करना है, वह बस मैनुअल था। उसमें यह था कि ये-ये आदमी के जमा होंगे, नहीं तो फिर ट्रिगर देख लीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, अब समाप्त करिए। बहुत देर हो गया।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चलिए, मैं सामान्य प्रशासन में नहीं देखता लेकिन दो, तीन चीजें बहुत महत्वपूर्ण है, आप छत्तीसगढ़ के राजनेता हैं। राज्य का आर्थिक अपराध ब्यूरो जो मुख्यमंत्री जी का थाना होता है, दिनांक 01.01.2021 की स्थिति में 88 प्रकरण दर्ज हैं जिसमें मात्र 4 प्रकरण पंजीबद्ध हुए हैं। बाकी अब आगे नहीं बोलता आरोप हो जाएगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, लोक सेवा गारंटी अधिनियम में 60 हजार प्रकरण लंबित हैं। मैं जल्दी-जल्दी चर्चा कर रहा हूं। आपके घोषणा पत्र में चौबे जी को कुछ देना होगा, लंबी-लंबी भाषण दे रहे थे, ये किये, वह किये। पूरे दोनों पक्ष के विधायकों को 15 लाख 70 हजार टन पैरादान हुआ। कहां पैरादान हुआ ? आप अगर अनुमति दें तो मैं एक पत्र पटल में रख देता हूं। मैंने उस दिन कहा था कि आप निर्देश दिए हैं। आपने 50 लाख रूपया पैरा ट्रांसपोर्ट के लिए दिया है। यहां के जितने तौल कांटे वाले हैं, कहीं पैरा तौल हुआ होगा तो देख लीजिए। 15 लाख 70 हजार में 50 हजार गोल। छत्तीसगढ़ में हार्वेस्टिंग होती है, हार्वेस्टर से लुवाई होती है, पैरा खेत में ही छोड़ देते हैं। यह पैसा गोल और बजट में कहा गया। आप मुझे बताईये कि आपने आंकड़ा दिया है कि नहीं दिया है कि आप पैरादान का रोज पैरा को लाईये और ये ट्रांसपोर्टिंग का पैसा लीजिये। आपने उसको दान कैसे लिख दिया ? किस हैसियत से आपने लिख दिया ? ये सदन को गुमराह करते हैं इसीलिये मैं आपको कहता हूं कि सदन का स्तर गिर रहा है करके ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, हो गया ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कृपया थोड़ी देर और बोल लेता हूं । अच्छा मैं बता देता हूं, मैं आपको बता देता हूं कि जैसे Quantifiable Data Commission (क्वांटिफायबल डाटा आयोग) था जो महानदी जल प्राधिकरण है, इन्होंने जो अपील की है । आज तक इनके पास अपना अधिकार मांगने के लिये डाटा नहीं है । छत्तीसगढ़ के हितों का क्या होगा? हमको जोरा नाला में 50-50 परसेंट पानी मिलना है । अभी तक आप न्यायालय में प्रकरण दायर नहीं कर सके हैं ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- ये महानदी के विवाद का पूरा जिम्मेदार कौन है ?

श्री अजय चंद्राकर :- मैं हूं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपकी पुरानी सरकार उद्योगपतियों को पानी देने के लिये ...।

श्री अजय चंद्राकर :- आप अभी तक डाटा तैयार नहीं कर सके हैं । क्या वह भी मेरी जिम्मेदारी है ? महाराज, आप उत्तेजित मत होईए । मैं आपको बार-बार कह रहा हूं कि आराम से बोलिए । मैं भी आराम से बोल रहा हूं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं तो आप गलत बात क्यों बोल रहे हैं ?

श्री अजय चंद्राकर :- गलत बात ये नहीं है, सही बात है कि आपके पास डाटा नहीं है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- आप एकदम असत्य बात बोल रहे हैं । पूरी जिम्मेदार डॉ. रमन सिंह जी की सरकार और आप थे ।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, ये बोल रहे हैं कि मैं थोड़ा भयभीत महसूस करता हूं । हम लोग इनकी हरकतों से भयभीत महसूस कर रहे हैं । (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- तोर खाए के व्यवस्था ऐती होगे हे, जा तें हा खा । तें हा अऊ कछु मत कर बस ।

श्री अमितेश शुक्ल :- तें पांच साल बहुत खाए हस भैया । तोला जानथओं । तें हा पांच साल डट के खाए हस ददा । (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- अमितेश भैया जइसे भयभीत हे ता हमन के काए होही ओला तुमन समझ सकत हओ ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर मैं छत्तीसगढ़ के हितों के खिलाफ कोई अनुपयोगी बात कर रहा हूं तो आप बंद करवा दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत उच्चस्तरीय बात कर रहे हैं इसीलिये बोल रहा हूं ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पोलावरम में जो छत्तीसगढ़ की अंतिम सुनवाई होने वाली है । आजतक वकील नहीं लगा पाये हैं । हमारी 1300 एकड़ जमीन हमारी डूब में आयेगी । किसी सुनवाई में कोई हाजिर नहीं हुआ है । इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा ?

श्री रविन्द्र चौबे :- पूरा पाप आपका और भाजपा और रमन सिंह सरकार का । चाहे पोलावरम हो, चाहे महानदी का विवाद हो ।

श्री अजय चंद्राकर :- सरकारें आती हैं जाती हैं । राज्य रहता है । (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- अजय भैया, आपके समय में कोरोना नहीं था । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आप उत्तेजित भर मत होइए । (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- आप जो आंकड़े दिखा रहे हैं वह थोड़े बहुत कम हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं थोड़ा सा मेरे माननीय मुर्शीद और रहबर के बारे में बोलूंगा । बोलेने लायक दो मंत्री ही तो हैं । बाकी कोई नहीं है । क्या है कि सिंचाई मंत्री बैठक लेते हैं, पेपर में आता है कि छत्तीसगढ़ के जो रूपांकित सिंचाई है उसको पाने के लिये अफसर कोशिश करें । रूपांकित सिंचाई की बात कर रहे हैं, एक डिसमिल प्रतिशत बढ़ा दिया । इन्होंने एक इंच सिंचाई आगे नहीं बढाई है । यह क्षमतावान मंत्री हैं, मैं दिल से इनकी इज्जत करता हूं फिर भी ये बात मैं बोल रहा हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं मेरे मुर्शीद और रहबर के लिये अब 2-4 लाईन बोलता हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, मुर्शीद के लिये बोलिए ।

श्री अजय चंद्राकर :- साहब, आपने वर्ष 2018 के बाद से पशुओं की कोई जनगणना नहीं करवाई है । आप समझ रहे हैं । लेंटाना उन्मूलन में बोल दिया, अब नहीं बोलता, कैम्पा मद में नहीं बोलता । शिवनाथ के मुहाने की दिशा रेत चोरों के कारण बदल रही है । मुख्यमंत्री जी रोज खारून क्रास करते हैं । आपने खारून और अरपा की फोटो देखे होंगे कि कैसा दिख रहा है । आप समझ रहे हैं । दूसरी बात, मैं स्थानीय शासन मंत्री को हाथ जोड़कर नहीं बोल सकता । वैसी भाषा, वैसे संस्कार मेरे नहीं हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये न, मुर्शीद को बोलिए और खत्म करिये ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पब्लिक ट्रांसपोर्ट । माननीय ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर हैं, आपका विषय नहीं है । स्मार्ट सिटी का विषय है तो भी आपको बोल देता हूं, आप परिवहन के हैं । चलिये, मैं बोल देता हूं कि थर्ड ट्विन सिटी है । भिलाई है, रायपुर है, बिलासपुर है, दुर्ग है । पब्लिक ट्रांसपोर्ट की क्या व्यवस्था है ? सबसे महंगा पब्लिक ट्रांसपोर्ट यदि कहीं है तो छत्तीसगढ़ में है । जितने स्मार्ट सिटी के बस थे सब जगह बंद हो चुके । अब बस लिमिटेड को काम क्या मिला है, उसको संशोधन करके स्लम में अस्पताल चलाने की जिम्मेदारी दी गयी है । क्या योजना है, मुख्यमंत्री स्लम स्वास्थ्य योजना नाम है । क्यों ऐसा किया गया ? बाबा जी को नहीं देना है । उसके रेट जो ग्रामीण है, उससे 3 गुने हैं। एक ही कंपनी को बार-बार ज्यादा रेट में। डॉक्टर कौन है? नर्स कौन है? चेकिंग कौन करता है? स्थानीय शासन के पास डॉक्टर हैं? कितनी भर्ती हुई है? आप मुझे बताइएगा। धनवंतरी से दवाई लेते हैं या अस्पताल से दवाई लेते हैं? आप बताइएगा, फिर मैं आपको दे दूंगा। संक्षिप्त में बोलना है। आपको बता दूं, एक पेपर में छपा था। रायपुर में वर्षा इसलिए नहीं हो रही है कि प्रदूषण सबसे ज्यादा है। जो ओस है, वह रायपुर के ऊपर में पानी नहीं बन रही है। 10 स्थानों पर जो मशीन लगना था, एल.सी.डी. मॉनिटरिंग 77 स्थानों में 100 मशीन लगने थे, उसमें आपने सिर्फ 10 मशीन लगवाया। अब आप तो ऐसे नहीं थे मेरे मुर्शिद। अवैध कॉलोनी, छत्तीसगढ़ में सबसे ज्यादा मैं माननीय मुख्यमंत्री जी के ऊपर आरोप तो नहीं लगाउंगा, लेकिन सबसे ज्यादा यदि कहीं पर है तो दुर्ग और भिलाई में है और आज अवैध कॉलोनी संरक्षण में है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, हो गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- और आप कुछ नहीं कर सकते। आप सक्षम हैं, तभी तो मैं आपको अपना रहबर बोलता हूं, मुर्शिद बोलता हूं। हसदेव और अरण्य में जैव विविधता छत्तीसगढ़ में यदि खत्म हुई तो इस प्रदेश में कांग्रेसी ही कांग्रेसी ही बचेंगे। बाकी सब खत्म हो जायेंगे। जैव विविधता में आप ही लोग बचेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, खत्म करिए। प्लीज खत्म कर दीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं बोलने देना है, पर चिटफंड कंपनी में बोल देता हूं। चिटफंड कंपनी में बड़ी बात हुई कि कुछ नहीं किया।

अध्यक्ष महोदय :- आप कई बार प्रश्न कर चुके हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- ना-ना, मैं आपको नई बात बताता हूं। मैं आपको नई बात बता देता हूं। मैं तो आपकी बात मानता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपके बाद आपके मुर्शिद को बुलवाना चाहता हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- 375 लोगों के ऊपर प्रकरण दर्ज है। एक के ऊपर वापस नहीं लिया है, यह बता देता हूं। है न। एक के ऊपर वापस नहीं लिया है। 56 कंपनियों के जो 79 मालिकों के खिलाफ प्रकरण दर्ज है, कितना पैसा मिला? कितने को किस प्रतिशत से वितरित किया गया, उसे कभी सार्वजनिक नहीं किया गया। कब से उपयोग किया गया, कभी सार्वजनिक नहीं हुआ। आदिवासियों की रिहाई के लिए जो कमेटी बनी है, अनलॉफुल एक्ट पटनायक कमेटी के बाद अभी भी मेरी बात में लंबी-लंबी बात कर रहे थे। मैं किसी का नाम नहीं लेता। अनलॉफुल एक्ट अभी भी आदिवासियों के ऊपर बस्तर में सरगुजा में लगाये जा रहे हैं। विभाग में पदोन्नति, क्रमोन्नति का जो सवाल है..।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया न। बहुत हो गया।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक मिनट। अब मैं केवल संस्कृति में बोल देता हूं। मैं ईमानदारी से संस्कृति में बोलने के बाद बंद कर दूंगा। संस्कृति में चूंकि बात हुई और शायद आपको अच्छा भी लगेगा, मुझे लगता है और उसके बाद मैं ईमानदारी से बंद कर दूंगा। भूपेश बघेल जी संस्कृति के ठेकेदार बन गये।

श्री शैलेश पाण्डे :- ये गलत बात है।

श्री अजय चन्द्राकर :- छत्तीसगढ़ के इतिहास में किसी भी इतिहासकार की किताब आप पढ़ लीजिए। कोसल जमींदारी के राजा भानूमंत की कन्या कौशल्या उत्तर कोसल के राजा दशरथ को बिहायी गयी थी। चंदखुरी उसका जन्म स्थान था, आप मुझे किसी जगह दिखा दीजिए। ये इस इतिहासकार ने लिखा है। इस इतिहासकार ने लिखा है, मुझे एक जगह बता दीजिए। हरि ठाकुर को दिखा दीजिए। प्यारेलाल गुप्त जी का किताब भी, कोई भी बड़ा इतिहास हमारे छत्तीसगढ़ के इतिहासकारों का दिखा दीजिए। दूसरा, मुख्यमंत्री जी का बयान आया कि हम राम वन गमन पथ में चंपारण को भी शामिल करेंगे। चंपारण की विशेषता क्या है? माननीय अध्यक्ष महोदय, चंपारण इतनी बड़ी चीज है, मैं आपको बता दूं। सबसे पहले आदि शंकराचार्य ने अद्वैत का दर्शन दिया, जिसे हम वेदांत बोलते हैं। वल्लभाचार्य की जन्मभूमि है, जिन्होंने भारत ही नहीं विश्व को विशिष्टाद्वैत का दर्शन दिया। वह क्या है, कभी जान तो लें। ठेकेदार बन गये। जो चंदखुरी है, वह किसलिए फेमस है, यह मैं आपको बता देता हूं। आप पुराने लोगों से पूछ लीजिए। धनतेरस के दिन वहां की जो जड़ी-बूटियां हैं, वह औषधि गुण में आ जाती हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सुषेन वैद्य वहीं के रहने वाले थे। उसको रावण ले गया। जब हनुमान जी उसे बोले कि आपका भांचा घायल है, तब वह इलाज करने के लिए आया। इस नाम से चंदखुरी जानी जाती है। माननीय अध्यक्ष महोदय, ओलंपिक संघ के अध्यक्ष हैं। ओलंपिक संघ से कोई पर्यवेक्षक नहीं आया। मैंने नरेन्द्र बत्रा जी से बात की है। एक सरदार को पकड़ लिये और ओलंपिक संघ का अध्यक्ष बन गए । ओलंपिक संघ का अध्यक्ष बन गए अच्छा है । मैं फुटबॉल संघ का अध्यक्ष हूं, उसको भी बन जाना, मैं कल अपने सचिव के पास इस्तीफा भेज दूंगा । अब उसमें क्या हुआ कि छत्तीसगढ़ के लिए उन्नयन बोलते हैं, वह खेल है । पिट्टुल पूरे हिंदुस्तान में खेला जाता है, गेड़ी कौन नहीं जानता, गिल्ली पूरे हिंदुस्तान में खेली जाती है, भंवरा पूरे हिंदुस्तान में खेला जाता है । सब जगह खेला जाता है, यदि वह है तो ओलंपिक संघ में छत्तीसगढ़ में उसका खेल संघ बनाएं और उसको अनुदान दें और उसको अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक खेल बनाने के लिए कोशिश करें ।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया भई ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सर, सर, सर ।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, प्लीज, प्लीज ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं संस्कृति में ही बोल रहा हूं ।

श्री अमरजीत भगत : - पता नहीं कौन स एनर्जी चूर्ण लेकर आए हैं, परेशान कर रहे हैं । अध्यक्ष जी, ये परेशान कर रहे हैं । वही वही रिपिटेशन हो रहा है ।

श्री देवेन्द्र यादव :- इस्तीफा तो उस समय भी देने वाले थे, किसानों का कर्जा माफ हो जाएगा तो इस्तीफा दे दूंगा । वैसे ही इस्तीफा दे रहे हैं अभी ।

श्री अमरजीत भगत :- बाहर से आते हैं, उसके बाद हाइपर हो जाते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- भारतीय संस्कृति के चार अध्याय । माननीय रामधारी सिंह दिनकर, (व्यवधान) भौतिक संस्कृति, अभौतिक संस्कृति में परिभाषा को नहीं बताता, बहुत शॉर्ट कर रहा हूं । अभौतिक संस्कृति में विचारों, विश्वासों, धर्म, भाषा, साहित्य आदि से होता है । संस्कृति के हर दौर में हमारी भाषा, संस्कृति, साहित्य का क्या योगदान रहा । संस्कृति मंत्री मुझको बताएं कि ठाकुर जगमोहन सिंह जी कौन थे । पदुम लाल पुन्ना लाल बख्शी कितनी बार सरस्वती के सम्पादक रहे । छायावाद को मुकुटधर पाण्डेय ने कौन से रूप में प्रवर्तित किया । मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में इस सदी में सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली कविता है, जो छत्तीसगढ़ की धरती पर लिखी गई । मैं ऐसे कितने नाम बताउं । हिंदी ग्रंथ अकादमी...।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष महोदय, ये कानून व्यवस्था पर कोई बात नहीं कर रहे हैं । इधर ले जा रहे हैं, उधर ले जा रहे हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, ये ज्यादा हो रहा है । मैंने कहा था कुछ कुछ किताब पढ़कर आते हैं और यहां परेशान करते हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- नागार्जुन यहां पैदा हुए, (व्यवधान) छत्तीसगढ़ का इतिहास बारदोली से पहले हमारे यहां सत्याग्रह हुआ । (व्यवधान)

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- छत्तीसगढ़ में एक किताब चलती थी, वह आप लोगों ने बंद करा दी । छत्तीसगढ़ में हिंदी में एक किताब चलती थी, उसे आपने बंद करा दिया । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप कहना क्या चाहते हैं, क्या कहना चाहते हैं आप । (व्यवधान)

श्री शैलेश पाण्डे :- बस करो भइया बस करो ।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- आपको 15 साल अवसर मिला था आपने क्या किया?

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग खड़े क्यों हो गए हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- सर, मैंने आपसे कहा कि मैं खत्म कर रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- हां तो करिये ना ।

श्री नारायण चंदेल :- मोहन जोदड़ो, हड़प्पा के बारे में...।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट लगेगा सर ।

श्री संतराम नेताम :- ये आरोप पत्र पर नहीं जा रहे हैं । दाएं जा रहे हैं, बाएं जा रहे हैं, आज का सबसे खराब भाषण चंद्राकर जी का रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने धान खरीदी की बड़ी वाहवाही की ।

अध्यक्ष महोदय :- अरे, बहुत हो गया । (व्यवधान) चलिए, अकबर जी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सोसायटी बैठ जाएगी, मैं तर्कों से साबित कर सकता हूं। 9645 करोड़ का ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, ठीक है ना कर लीजिएगा ।

श्री अमरजीत भगत :- इनका टाइम तो हो गया है, बंद कराइए इनका भाषण।

अध्यक्ष महोदय :- हो गया ना यार, कहां लगे हो । आप लोग बैठिये अकबर जी बोलेंगे ।

श्री अमरजीत भगत :- उनको बैठाइए ।

अध्यक्ष महोदय :- अजय भाई के प्रिय मुर्शिद बोल रहे हैं, बैठिये ।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- मैं क्या करूं, वह बैठते ही नहीं है।

श्री देवेन्द्र यादव :- अध्यक्ष महोदय, उनको 9 घंटे हो गये हैं, हमको बोलने का समय ही नहीं मिलता है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महादेय,

"दांवों पर सब कुछ लगा है, रूक नहीं सकते।

टूट सकते हैं, मगर हम झुक नहीं सकते हैं।।"

"यह सरकार इस कदर आवाम पर अहसान करती है,

आखें छीन लेती है और चश्मे का दान करती हैं।।"

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप लोगों ने आंखें छीन लिया। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आप आंखफोड़ा कान का बता रहे हैं क्या?

श्री अजय चंद्राकर :- रुख हवाओं का जिधर का है, उधर के हम हैं |

श्रीमती संगीता सिन्हा :- भैया, टाईटल मत बांधो।

श्री मोहम्मद अकबर :- हो गया ना। अजय जी फिर खड़े हो गये।

श्री अजय चंद्राकर :- रुख हवाओं का जिधर का है, उधर के हम हैं |

श्री मोहम्मद अकबर :- ठीक है, हो गया।

अध्यक्ष महोदय :- अकबर जी, जल्दी अपनी बात पूरा करिये।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष, हमारे विपक्ष के साथियों ने जो सरकार के प्रति ...।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट। जब ले अविश्वास प्रस्ताव लगे हे तब ले हमन लगाकर के सुनत हन चित, लेकिन एमन के दरिहा गेहे मन पित।

अध्यक्ष महोदय :- बढ़िया।

श्री देवेन्द्र यादव :- अध्यक्ष जी, उन लोगों के 5 घंटे, 56 मिनट हो गये। हम लोगों का अवसर आयेगा या नहीं आयेगा। हम लोग भी इसमें अपनी बात कहना चाहते हैं।

एक माननीय सदस्य :- अध्यक्ष महोदय, मैं अजय भैया के पंक्ति का जवाब देना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, रहने दीजिये। अकबर जी, आप बोलिये।

श्री मोहम्मद अकबर :- जिन बिंदुओं पर अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, उसके देखने पर ऐसा लगता है कि यह ..।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष जी, मैं सरकार को एक सुझाव दे देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- छोड़िये, क्यों दे रहे हैं?

श्री अजय चंद्राकर :- आप ठगी की अकादमी खोल लीजिये। सुकेश चन्द्रशेखर ने आपत्ति ली थी, उसको जेल से रिहा करवा लो और छत्तीगसढ़ में एक ठगी का अकादमी खोल दो। माफिया राज के लिए मैक्सिको जाओ, पुलिस को दौरे में वहां भेजो। मैक्सिको जाकर माफिया राज को मजबूत करो। माफियाराज के जन्मदाता इधर ही है। वहां गृहमंत्री जी को भेज दो।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह लाल जैकेट वाली मैम साहब बार-बार क्यों खड़े हो जाती है?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- अध्यक्ष जी, जिन बिंदुओं पर अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, उसके देखने पर ऐसा लगता है कि यह सारी बातें विधानसभा में स्थगन, ध्यानाकर्षण, प्रश्नों के माध्यम से सारी बातों का उत्तर दिया जा चुका है और मैं ऐसा समझता हूं कि मैं देखने की कोशिश कर रहा था कि कोई बिंदु ऐसा भी है, जिसमें भ्रष्टाचार का उल्लेख नहीं है। हर जगह भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार था। पहले मैं बहुत संक्षिप्त में अपने विभाग के बारे में बताकर माननीय साथियों ने जो बात रखी है, उसके बारे में मैं अपनी बात रखूंगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां वन विभाग के बारे में बात हुई है। वन विभाग में चुनाव के पहले सरकार के तरफ से वायदा किया गया था कि तेंदूपत्ता का जो संग्रहण मूल्य है, वह ढाई हजार से बढ़ाकर हम चार हजार रूपये करेंगे। सरकार बनने के बाद से अब तक लगातार चार हजार रूपये के मूल्य के हिसाब से तेंदूपत्ता का क्रय किया जा रहा है। इसके अलावा 60 लघु वनोपजों को समर्थन मूल्य में खरीदने के लिए ..।

अध्यक्ष महोदय :- मैं इसके बाद आपको बता देता हूं कि किसी प्रकार की कोई सुनवाई नहीं होगी। नेता प्रतिपक्ष जी और माननीय मुख्यमंत्री जी बोलेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के सदस्यों ने अविश्वास प्रस्ताव दिया है। अविश्वास प्रस्ताव विपक्ष का है। हम लोग बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने सुन लिया। आप अपना समय कर दीजिये। पांच मिनट का निपटाईये।

श्री मोहम्मद अकबर :- 60 लघु वनोपजों को बढ़ाकर 65 कर दी गई है।

अध्यक्ष महोदय :- देखिये, 27 तारीख, 12 बजे तक समाप्त हो जायेगा। मुझे राज्यपाल जी का निर्देश है कि 27 तारीख तक विधान सभा है।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष जी, नहीं, हम लोग राज्यपाल का निर्देश का पालन करेंगे, लेकिन विपक्ष के लोग बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- बोलिये ना, लेकिन इनका समय कम करवा दीजिये। हम कहां बोल रहे हैं कि आप मत बोलिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, 56 मिनट बोलने का था। 4-5 घंटा हो गया, अब और कितना बोलेंगे।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में लघु वनोपज की जो खरीदी होती है वह 7 से बढ़कर उसका आइटम 65 हो गया है और पूरे भारत का 74 प्रतिशत लघु वनोपज अकेले छत्तीसगढ़ राज्य ने क्रय किया है। इसके लिए भारत सरकार की तरफ से छत्तीसगढ़ सरकार को 13 पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। स्वयं केन्द्रीय मंत्री जी आये थे और उन्होंने यहां पर पुरस्कार प्रदान किया है। केन्द्रीय प्रसंस्करण यूनिट पाटन में लगभग 100 करोड़ रूपये की लागत से निर्माणधीन है और इस समय वर्तमान में 4,800 महिला स्व-सहायता समूहों के जरिए लघु वनोपज संग्रहण के जरिए

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लघु वनोपज संग्रहण का कार्य होता है और 1300 महिला स्वय-सहायता समूहों को जोड़कर 70,000 महिलाओं को अतिरिक्त आय की सुविधा प्रदान की गई है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने शहीद महेन्द्र कर्मा सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना भी लागू की है। इसके पहले तात्कालीन सरकार के समय 50 प्रतिशत की राशि छत्तीसगढ़ की सरकार और 50 प्रतिशत की राशि भारतीय जीवन बीमा निगम यह व्यवस्था लागू थी और जिसमें मृत्यु होने पर और शारीरिक क्षति होने पर उसको मुआवजा देने का प्रावधान था लेकिन छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद भारत सरकार की तरफ से जो जीवन बीमा निगम है उन्होंने मना कि हम अपना कॉन्ट्रिब्यूशन अब आगे चलकर आपको नहीं देंगे तब छत्तीसगढ़ में शहीद महेन्द्र कर्मा जी के नाम से बीमा योजना लागू की गई और सामाजिक सुरक्षा के हिसाब से 50 प्रतिशत की राशि लघु वनोपज संघ और 50 प्रतिशत की राशि छत्तीसगढ़ सरकार के कॉन्ट्रिब्यूशन से यह योजना संचालित की गई है। इसमें दुर्घटना से मृत्यु होने पर 4 लाख रूपये और सामान्य मृत्यु होने पर 2 लाख रूपये दिये जाने का प्रावधान है। उसके अन्य प्रावधान भ हैं। शारीरिक क्षति के हिसाब से भी अलग-अलग राशि का निर्धारण किया गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वृक्षारोपण के क्षेत्र में भी छत्तीसगढ़ अग्रणी है। 44.2 प्रतिशत वन है। छत्तीसगढ़ का क्षेत्रफल 1 लाख, 35 हजार वर्ग किलोमीटर है। इस बार 166.80 लाख हरियाली प्रसार योजना के अंतर्गत वृक्षारोपण का कार्य किया गया। मुख्यमंत्री वृक्षारोपण के अंतर्गत 2 लाख, 53 हजार, 167 और इसी प्रकार से जीवनोपयोगी वृक्षों के रोपण के लिए कृष्ण कुंज स्थापित किये जाने का भी निर्णय लिया गया है। 170 नगरीय निकायों के अंतर्गत कुल 69 हजार, 320 पौधों का रोपण किया जाएगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वन अधिकार पत्र के मामले में भी अन्य राज्यों की तुलना में छत्तीसगढ़ का काम बहुत बेहतर है और छत्तीसगढ़ राज्य में 4 लाख, 46 हजार से अधिक व्यक्तिगत वनाधिकार पत्रों का वितरण किया गया है। जिसका रकबा 3 लाख, 63 हजार, 597 हेक्टेयर है। इसके अलावा राज्य में 45 हजार, 764 सामुदायिक वन अधिकार पत्रों का भी वितरण किया गया है जिसका रकबा 19 लाख, 82 हजार, 977 हेक्टेयर है। वर्तमान सरकार द्वारा पहले करते हुए सामुदायिक वन संसाधन अधिकारों को भी प्रदान करने की शुरूआत कर दी गई है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, नदी तट वृक्षारोपण का भी निर्णय लिया गया है। वर्ष 2020-2021 में नदी तट वृक्षारोपण योजना अंतर्गत 855 लाख रूपये का प्रावधान रखा गया। जिसमें महानदी, शिवनाथ, अरपा, इंद्रावती आदि 24 नदियों के तटों में 983.22 हेक्टेयर में 10 लाख, 22 हजार, 532 पौधों का रोपण किया गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, राम वन गमन योजना अंतर्गत भी वृक्षारोपण किया गया है। वर्ष 2020-2021 में राम वन गमन योजना अंतर्गत 526 किलोमीटर में 1 लाख, 57 हजार, 892 पौधों का रोपण कार्य किया गया है और वर्ष 2021-2022 में योजना अंतर्गत 28.22 किलोमीटर में 7 हजार 56 पौधों का रोपण किया जाएगा। इसक अलावा घर पहुंच पौधा रोपण का भी निर्णय सरकार की तरफ से है और मौजूदा मानसून सीजन में सरकार ने 2.81 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। जिसमें 1.14 करोड़ पौधे लगाएंगे और नागरिकों को वृक्षारोपण के लिएप्रोत्साहित करते हुए घर पहुंच सेवा में उनको पौधा प्रदान किया जाएगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अवैध कटाई के भी प्रकरण में भी वन विभाग की तरफ सक्षम कार्रवाई की गई है और अब तक 465 वाहन शासन के पक्ष में राजसात किया गया है और अवैध परिवहन में लिप्त 1280 वाहनों को विगत 3 सालों में जप्त किया गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 66 नल हाईटेक बैरियर का भी निर्माण किया गया है जो संचालित है और देवसरना प्रदेश में 209 देवगुड़ी का संरक्षण और उन्नयन का कार्य भी किया गया है। छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वपूर्ण योजना नरवा, गरूआ, घुरूवा, बारी है । उसमें जो नरवा योजना है, वह वन विभाग में संचालित है और वन विभाग में 4855 नरवा है, जिसमें 20 लाख, 86 हेक्टेयर जल ग्रहण क्षेत्र का उपचार किया गया और 41 लाख, 51 हजार, 761 संरचनाओं का निर्माण किया गया है । अब तक इसमें कुल 443 करोड़ रूपए व्यय की गई है । कुल 12 हजार जैव विविधता प्रबंधन समिति का गठन और 4431 लोक जैव विविधता पंजी ई विहार का निर्माण कार्य किया गया है । सबसे महत्वपूर्ण काम तमोरपिंगला, सेमरसोत और बादलखोल तीन हाथी अभ्यारण्य एलीफेंट रिजर्व के नाम से थे, जिसको हम जानते थे। तत्कालीन सरकार के समय 2008 में केन्द्र सरकार की ओर से 452 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के लिए नोटिफिकेशन एलीफेंट रिजर्व के बारे में जो जानकारी आई थी, जिसमें भारत सरकार से सैद्धांतिक सहमति मिली थी, लेकिन तत्कालीन सरकार के समय चूंकि नीचे जमीन में कोयला है तो कोल ब्लॉक को बचाने के चक्कर में उसका नोटिफिकेशन नहीं किया और कांग्रेस की सरकार बनने के बाद लेमरू हाथी रिजर्व के नाम से 1995 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का नोटिफिकेशन किया जा चुका है, जिसको एलीफेंट रिजर्व के नाम से चिह्नित किया गया है । आवर्तीचराई योजना में भी 1527 आवर्तीचराई केन्द्रों में 148 करोड़ रूपए की स्वीकृति दी गई है और 630 आवर्तीचराई केन्द्र में गोबर खरीदी का कार्य भी प्रारंभ हो चुका है ।

समय :
9:46 बजे

(सभापति महोदय (श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह) पीठासीन हुए)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, अब मैं बहुत संक्षिप्त में परिवहन विभाग के बारे में भी कुछ जानकारी देना चाहूंगा । परिवहन विभाग में टैक्स जमा करना है तो ऑनलाईन टैक्स सिस्टम से जमा किया जा सकता है । बस मालिकों को ऑनलाईन परमिट देने का प्रावधान है । ड्राईविंग लाईसेंस बनाने हेतु लर्निंग लाईसेंस के लिए आवेदन भी ऑनलाईन दिया जा सकता है और एक महत्वपूर्ण योजना जो परिवहन विभाग में संचालित है-तुहर सरकार, तुहर द्वार । उक्त योजना के अंतर्गत आम लोगों को 7 लाख, 65 हजार पंजीयन पुस्तिका और 3,75,705 ड्राईविंग लाईसेंस, यह डाक सेवा के माध्यम से घर पहुंच सेवा से देने का प्रावधान किया गया है और यह योजना सफलतापूर्वक संचालित है । 492 परिवहन सुविधा केन्द्र खोले जाने हेतु अनुमोदन दिया गया है, जिसमें आम जनता अपने आसपास की परिवहन सुविधा केन्द्र से लर्निंग लाईसेंस बनवा सकती है । इसके अलावा इंस्टीट्यूट आफ ड्राईविंग ट्रेनिंग और रिसर्च सेन्टर का भी लोकार्पण किया गया है, जो संचालित है और आटोमेटिक ड्राईविंग टेस्ट ट्रेक भी स्थापित कर दिया गया है । इसके अलावा कोविड-19 के दौरान बस संचालन सुविधा होने के कारण बसों से लिए जाने वाले करों में छूट दी गई और बसों के अधिक पुराना करों के लिए 2 हजार रूपए तक के माल के लिए पूर्णत: छूट दी गई और बसों में कर बकाया जमा करने के लिए 2013 से 2018 तक के लिए वन टाईम सेटलमेंट के अंतर्गत पेनॉल्टी में छूट प्रदान की गई ।

माननीय सभापति महोदय, एक महत्वपूर्ण चीज अंतर्राज्यीय बेरियर के बारे में प्रतिपक्ष की ओर से हमेशा यह बात आती थी कि अंतर्राज्यीय बेरियर की स्थापना भ्रष्टाचार के लिए की गई है । मैं आपकी जानकारी में बताना चाहता हूं कि जो नक्सल प्रभावित राज्य है और इस राज्य में जिन वाहनों की आवाजाही है, राज्य के बाहर जाना, राज्य के भीतर आना, यह सरकार की जानकारी में होनी चाहिए । जब 2017 में यह बेरियर बंद किया गया, तब उस समय इसकी आय 13 करोड़ रूपए प्रतिवर्ष थी और वर्तमान में इसकी आय 120 करोड़ रूपए प्रतिवर्ष है । इसके हिसाब से हम यह प्रमाणित करने में सफल हुए हैं कि राज्य की सुरक्षा के हिसाब से जो आवागमन है, वह हमारी जानकारी में होना चाहिए कि कौन सा वाहन आया, कौन सा वाहन गया और उसके साथ-साथ उसमें हमको पर्याप्त आय भी हो रही है ।

माननीय सभापति महोदय, पर्यावरण संरक्षण के मामले में भी माननीय अजय चन्द्राकर जी ने जो बात कही । पर्यावरण संरक्षण में भी प्रमुख उपलब्धियों के बारे में मैं बताना चाहूंगा । राज्य में चिमनी विसर्जन पर 24/7 निगरानी रखने के लिए 17 प्रकार के वायु प्रदूषणकारी प्रकृति के 165 उद्योगों में ऑनलाईन immersing monitoring system की स्थापना कराई गई है । इसके अलावा राज्य के सभी रोलिंग मिलों में ऑनलाईन immersing monitoring system स्थापित है ।

समय :
9:50 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, सबसे महत्वपूर्ण बात, राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मॉनीटरिंग प्रोग्राम के तहत 18 स्थलों, रायपुर में 6, भिलाई में 4, कोरबा में 4 , बिलासपुर मे 1 तथा रायगढ़ में 3 परिवेशी वायु गुणवत्ता मापन कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त 8 स्थलों रायपुर में 2, भिलाई में 1, कोरबा में 1 रायगढ़ में 2 में स्थापित कन्टीन्यूस परिवेशी वायु गुणवत्ता मॉनीटरिंग स्टेशन के माध्यम से परिवेशी वायु गुणवत्ता मापन कार्य किया जाता है। राज्य में 12 स्थानों में कोरबा में 4 , भिलाई 2, रायगढ़ में 4 स्थानों में कन्टीन्यूस एन.बी.एन. एयर क्वालिटी मानीटरिंग सिस्टम की स्थापना की गई है, जिसमें लगातार काम चल रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- अब आपकी तरफ से भूपेश बघेल बोल देंगे। मत परेशान हो।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- नहीं, उनको बोलने दीजिये, मुझे बोलने के लिए कुछ रहा नहीं है। बोलने दीजिये। नेता जी नहीं हैं, आप उनको बुलायेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- दोनों के लिए 5 मिनट का रिकवेस्ट किया है।

श्री भूपेश बघेल :- अभी हमारे तरफ से लोग बोलेंगे। अब इनको बुलवाने के बाद किसी और को बुलवायेंगे ?

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो आरोप-पत्र है, उसमें अनेक स्थानों पर अपनी बातों पर भी लगातार भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार, घोटाला के बारे में यहां बहुत अधिक बात हुई है। मैं आपको एक छोटी सी घटना के बारे में जानकारी देता हूं, जिसमें मैं समझता हूं कि इनको भ्रष्टाचार का जवाब मिल जायेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक व्यक्ति अपने बालक को लेकर एक संत के पास गया और उसने उनसे कहा कि संत जी यह मेरा बेटा यह बहुत ज्यादा शक्कर खाता है। आप इसको कह दें कि आज से यह शक्कर खाना बंद कर दे। संत ने बहुत ध्यानपूर्वक उनकी बातों को सुना और कहा कि ऐसा करो कि इसको कल लेकर आओ। फिर उसके पिता अगले दिन फिर से उस बच्चे को लेकर गये और उन्होंने कहा कि महाराज आप उसको बोल दो कि यह शक्कर खाना बंद कर दे। तो संत जी ने कहा कि बेटा आज से तू आज से शक्कर खाना बंद कर दे। बालक के पिता ने कहा कि महाराज, यह बात तो आप कल भी बोल सकते थे, आपने कल क्यों नहीं कहा। तो उन्होंने कहा कि मैं कल तक खुद भी शक्कर खाता था इस कारण उपदेश देने की स्थिति नहीं थी। अब इनको उपदेश देने की स्थिति आ गई है और ये हमको उपदेश दे रहे हैं। इस प्रकार से भ्रष्टाचार के बारे में बातें कही है, मैंने जानकारी दी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने हमारे घोषणा-पत्र के बारे में भी बातें उठाईं। जब आपके घोषणा-पत्र के बारे में बात होती है तो आपने सभी बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता देने की बात कही थी, सभी आदिवासी परिवार को एक गाय देने की थी, 5 हार्स पावर तक के बिजली पंप को फ्री करने की बात की थी, 270 रूपया बोनस देने की बात की थी और हर आदिवासी के एक सदस्य को नौकरी देने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की बात की थी, आप उसके बारे में कभी चर्चा नहीं करते हैं। आप इसलिए चर्चा नहीं करते क्योंकि आप नहीं कर पाये। अब यदि भारत सरकार की बात करें तो बात हुई कि विदेशों से काला धन लाना है और सबके खाते में 15 लाख रूपया देना है। सबके खाते में अब तक 15 पैसा नहीं आया है, आप उसके बारे में बात नहीं करेंगे। 2 करोड़ लोगों को रोजगार देने की बात की थी, आप उसके बारे में बात नहीं करेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां आवास के बारे में बहुत अधिक बातें हुईं। माननीय बृजमोहन जी ने आवास के बारे में कहा कि हमारे हाथ से 18 लाख 50 हजार आवास निकल गया, लेकिन ऐसा नहीं है। यह योजना 2024 तक के लिए बढ़ा दी गई है। अब 762 करोड़ रूपये का मंत्रिमण्डल ने मंजूरी दे दी है। उसके लिए बीड बुलाया गया, देना बैंक की तरफ से प्रस्ताव भी आ गया। लेकिन केन्द्रीय रिजर्व बैंक की तरफ से उसमें अड़ंगा आ गया कि जो भी निगम है, प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए जो हाऊसिंग कार्पोरेशन बना हुआ है, उसमें उसकी लायबिलिटी होनी चाहिए। वह अपने ही मदों से पैसा पटाये तब आप उसको लोन दे सकते हैं। इस प्रकार का अड़ंगा भारत सरकार की तरफ से लग गया और नहीं हो पाया। अब भारत सरकार की तरफ से बहुत सा पैसा देना बाकी है। खाली जी.एस.टी. का ढाई हजार करोड़ लेना बाकी है। यदि यह राशि जमा होगी तो पहले 2020-21 का जारी होगा और राज्य सरकार की तरफ से सन् 2024 तक के लिए निवेदन भी चला गया है और सन् 2024 तक अवधि बढ़ गया है। भारत सरकार की तरफ से आया है जब आप 2020-21 की राशि जारी करेंगे तो कि आगे का भी जो आवास हैं, वह आपको प्रदान कर दिया जायेगा। इसलिए कोई भी आवास नहीं गया है, आप उसके बारे में बार-बार भ्रमित करने का प्रयास ना करें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जो सदन के सदस्य हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है। बाकी लोगों के नाम लेने के लिए आपने प्रतिबंध लगाया है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिह ने में आयोजित बी.जे.पी. के कार्यसमिति की बैठक के समापन पर कार्यकर्ताओं और नेताओं को जमकर खरी-खोटी सुनाई। उन्होंने अपने मंत्रियों और विधायकों और निगम मंडलों के अध्यक्षों से कहा कि यदि वे एक साल तक कमीशन लेना बंद कर दें तो राज्य में बीजेपी को 30 साल तक सत्ता से कोई नहीं हटा सकता और आगे मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि लोगों के बीच आम धारणा बन गई है कि कमीशन के बिना सरकारी काम नहीं होते । यह आपके तत्कालीन मुख्यमंत्री का बयान है और आप लगातार भ्रष्ट्राचार, भ्रष्ट्राचार इसी प्रकार की बात किये जा रहे हैं ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- अंदर के बात रहिसे, घरेलू बात हे ओहर ।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बात लगातार उठाई जा रही है, हमारे कांग्रेस के जो लीडर है, नेता है, ई.डी. की पूछताछ चल रही है, लगातार इनके द्वारा यह कहा जाता है कि इनके वर्तमान के प्रधानमंत्री और पूर्व के गुजरात के मुख्यमंत्री को एस.आई.टी. के सामने प्रस्तुत करने को कहा गया, वह सहज रूप सये चले गये, किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं किया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- एक शब्द को सुधार लो, इनके प्रधानमंत्री नहीं, हमारे प्रधानमंत्री ।

श्री मोहम्मद अकबर :- ठीक है, मैं सुधार लेता हूँ, हम सबके प्रधानमंत्री हैं । तत्कालीन गुजरात के मुख्यमंत्री को जब एसआईटी के सामने प्रस्तुत होना था, जिस प्रकार से आप कहते हैं कि कांग्रेस के लोग नाटक कर रहे हैं, जबरदस्ती विरोध कर रहे हैं, सहज रूप से जाना चाहिये, आपकी जानकारी में दे रहा हूँ, बीजेपी एम.एल.ए. कालूमालीवाड़, यह हाई कोर्ट गये थे, इसके विरोध में कि एस.आई.टी. के समक्ष इनको प्रस्तुत न किया जाये और हाई कोर्ट से उनकी याचिका खारिज हुई । उसके बाद वह सुप्रीम कोर्ट गये । सुप्रीम कोर्ट से उनकी याचिका खारिज हुई । उसके बाद गुजरात के गवर्नर के खिलाफ पूरा वॉल पेंटिंग और होर्डिंग वगैरह, गुजरात में पाट दिया गया, भारी विरोध किया गया । यदि आज कांग्रेस विरोध कर रही है तो आपको क्यों परेशानी हो रही है । बार-बार आप कहते हैं कि मुख्यमंत्री जी ने गिरफ्तारी दी । वहां गये, मैं ऐसा कहता हूँ कि हमारे केन्द्रीय लीडर राष्ट्रीय नेताओं के बारे में यदि इस प्रकार की कार्यवाही हो गई तो एक बार नहीं, अगर 10 बार भी गिरफ्तारी देना पड़े तो हम देंगे । (मेजों की थपथपाहट) अपने लीडर के लिये गिरफ्तारी नहीं देंगे तो किसके लिये गिरफ्तारी देंगे । जो मुख्यमंत्री जी ने किया है, बिल्कुल सही किया है।एक बार नहीं 10 बार करने की जरूरत पड़े तो किया जायेगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, अब (भ्रष्ट्राचार के ऊपर आईये । माननीय लालकृष्ण आडवाणी जी जब यहां 17-10-2011 को आये थे । सौरभ सिंह जी यहां बैठे हैं । मैंने उनको जाकर व्यक्तिगत पत्र दिया था । 52 साल पुराना रोगदा बांध जो आपके क्षेत्र का है, उसको रमन सरकार ने बेच दिया । यह छत्तीसगढ़ की पहली घटना थी । 52 साल पुराना रोगदा बांध था । अब बांध के निर्माण के लिये अभी यहां बहुत आदिवासियों की बात चल रही थी । आदिवासियों के बारे में आधा एकड़ की एक जमीन जो उद्योगपति लेना चाहते थे, कुल आधा एकड़ जमीन थी, नियम यह है कि जीविका चलाने के लिए कम से कम 5 एकड़ जमीन बचना चाहिये । आधा एकड़ जमीन थी । परमिशन के लिए जब तहसीलदार और एस.डी.एम. से कलेक्टर के पास गया, बकायादा तहसीलदार ने आपत्ति दर्ज किया कि यह आदिवासी है और मात्र आधा एकड़ जमीन है । यदि यह भी कंपनी ले लेगी, क्या खायेगा, क्या करेगा, कलेक्टर ने अपने आदेश में लिखा कि यह मजदूरी करेगा । यह इनका हाल है । उसके बाद वह जमीन उससे ले ली गई । आप यहां भ्रष्ट्राचार की बात करते हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, कोल ब्लॉक के बारे में मैं खुद और माननीय मुख्यमंत्री जी, यह 2009 की बात है । कोरबा जिले के एक कोल ब्लॉक के बारे में हम लोग लगातार आवाज उठाते थे, वह 4 लाख मिट्रिक टन का ईकाई था, 2 लाख मिट्रिक टन में संचालित था । बाद में और एक कोल ब्लॉक देने के लिए 8 लाख मिट्रिक टन क्षमता विस्तार के हिसाब से उसको दिया गया । यह आपके क्षेत्र का ही मामला है । उस समय लगातार हम लोग यह मांग उठाते थे कि क्षमता विस्तार नहीं हुआ है, 2 लाख मिट्रिक टन के आधार पर ही कोल ब्लॉक उसको जो मिला है, उसके उद्योग की क्षमता वर्तमान में भी दो लाख है, 4 लाख के हिसाब से मिला है, वह चार लाख अब

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

तक नहीं हुआ है। बाद मे 4 से 8 लाख करने के लिए भी उसकी अनुशंसा चली गई। माननीय अध्यक्ष महोदय, इस कोल ब्लाक के बारे में मैं आपको अभी जानकारी दे रहा हूं। तत्कालीन मुख्य सचिव जिनके बारे में मैंने एक बार विधान सभा में कहा था कि दीर्घा में एक ऐसा अधिकारी भी बैठा है तो देर रात तक मंत्रालय में बैठकर भ्रष्टाचार को लीगली फ्रेम करता है, यह मैंने आरोप लगाया था। उनके पास खनिज विभाग भी था। उनकी पिछले महीने पेशी थी। जो आरोप मैं और माननीय भूपेश बघेल जी लगाते थे, उसके आधार पर केन्द्र की एजेंसी मे पिछले महीने पेशी हुई है, तत्कालीन मुख्य सचिव की और संबंधित अधिकारी जिसने गलत जानकारी दी थी कि यह उद्योग की क्षमता 2 से 4 और 4 से 8 लाख बढ़ गई है, जबकि 02 लाख मीट्रिक टन में वह उद्योग आज भी संचालित है। उसकी पेशी केन्द्रीय एजेंसी में प्रारंभ हो गई है। आप पता कर लेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मामला डीजल के बारे में आता है। बायोडीजल निर्माण के बारे में लगभग 1 हजार करोड़ रुपये सरकार ने बरबाद किया। अब यह किस तरीके से लोगों को ठगने का काम करते हैं, यह बाड़ी से बायोडीजल का आप विज्ञापन देखिये। यह पेड़ है और पेड़ से पाईप लगा है और डायरेक्ट डब्बा भर रहे हैं। आप यह देखिये। यह पेड़ से पाईप लगाकर सीधे बाक्स को भरा जा रहा है। यह डॉ. रमन सिंह जी के जमाने का है। डीजल नहीं अब खाड़ी से और डीजल मिलेगा बाड़ी से, यह उनका नारा था। मैंने उस समय विधानसभा में उनसे कहा था कि डीजल नहीं है अब बाड़ी में तो क्या वापस जायें खाड़ी में। तो उन्होंने कहा था कि आप व्यंग्य कर रहे हैं, आगे चलकर डीजल के मामले में छत्तीसगढ़ की सरकार नंबर-वन हो जायेगी। लेकिन बाद में यह पता लगा कि बायोडीजल के मामले में हम आज तक कुछ नहीं कर पाये।

श्री शिवरतन शर्मा :- अकबर भैया जो सफेद मुसली का हश्र हुआ न, वही हश्र बाड़ी का हो गया।

डॉ.(श्रीमती) रश्मि आशीष सिंह :- पूर्व राष्ट्रपति कलाम साहब को भी वैसे ही बता दिये थे। कलाब साहब तक ने इस बात का यकीन कर लिये थे।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात 2007 की है। एक IL&FS कंपनी को 1500 किलोमीटर का टेंडर दिया गया। 1500 किलोमीटर का टेंडर 9895 करोड़ रुपये का टेंडर हो गया। लेकिन इसको आदेश 16704 करोड़ रुपये का मिला, 7000 करोड़ रुपये का अंतर। जब इसके बारे में हम लोगों ने विरोध किया। राजेश बिसरत जी सूचना के अधिकार के तहत जब आवेदन लगाये, यह वह मामला है जिसमें तत्कालीन सचिव ने लिखा कि 7000 करोड़ रुपये का अंतर कैसे हुआ? तो due to printing error, यह वही मामला है। माननीय धर्मजीत सिंह जी उस समय विधायक थे और तत्कालीन जो मंत्री थे उनको इन्होंने खड़े होकर बोला कि अंग्रेजी में है, समझ में आया या नहीं। फिर आपने मुझसे कहा कि इनको हिन्दी में बताओ। मैंने कहा- टंकण त्रुटि। उसके बाद से अब तक टंकण त्रुटि और due to printing error और typing mistake, 7000 करोड़ रुपये की typing mistake

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तत्कालीन सरकार में हुआ और भ्रष्टाचार की बात करते हैं। आप लगातार भ्रष्टाचार का आरोप लगा रहे हैं। जबकि 7000 करोड़ रुपये के अंतर में printing error और टंकण त्रुटि आप लोगों ने किसी समय में किया है। एक और मामला 2006 का है। देश के लौह अयस्क के सबसे बड़े भंडार रावघाट का है। यह भिलाई स्टील प्लांट का लोहे की खदान देने का है, इसमें भी माननीय भूपेश बघेल जी और हम लोगों ने आंदोलन किया। यह रावघाट का आप प्रायवेट कंपनी को नहीं दे सकते, यह भिलाई स्टील प्लाण्ट के लिए चिन्हित खदान है। लेकिन यहां से अनुशंसा केन्द्र सरकार को चली गई कि यह खदान निजी व्यक्ति को आवंटित कर दिया जाये। भारी विरोध के बाद उसमें हमारे साथ बहुत से भिलाई स्टील प्लांट के भी कर्मचारियों ने भी साथ दिया और अंततः सरकार को मजबूर होकर इसको वापिस लेना पड़ा। यह तत्कालीन सरकार के समय की बात है। टाटा के बारे में 10 हजार करोड़ रुपये का एम.ओ.यू. हुआ। उस समय माननीय रमन सिंह जी ने कहा कि बस्तर के नये युग की शुरूआत है। अब 10 हजार करोड़ रुपये का एम.ओ.यू. हुआ। उस एम.ओ.यू. में उनको लोहे की खदान देना है, उनको बिजली देना है, उनको पानी देना है, उनको जमीन देना है, उनको पर्यावरण का क्लीयरेंस देना है, सबकुछ देना है। लेकिन उसमें रोजगार के बारे में कुछ नहीं लिखा गया। हम लोगों ने विधान सभा में बात उठाई कि हमको एम.ओ.यू. की कॉपी उपलब्ध कराई जाये। अब आप अंदाज लगाईये कि उस समय राज्य सरकार का यह जवाब था कि यह एम.ओ.यू. गुप्त है, हम इसकी कॉपी उपलब्ध नहीं करवा सकते। जब उसमें पब्लिक मनी इनवॉल्व है, लोहा दे रहे हैं, पानी दे रहे हैं, बिजली दे रहे हैं, जमीन, पर्यावरण क्लीयरेंस दे रहे हैं, सबकुछ दे रहे हैं। लेकिन मैंने जब यहां प्रश्न करते हुए पूछा कि क्या विधायक इसको देख सकेंगे? उस समय अमर अग्रवाल जी थे, उन्होंने कहा कि नहीं इसको विधायकों को भी देखने की अनुमति नहीं है। उसमें क्या कर रहे थे? ऐसी कौन सी बात थी कि उसको विधायक भी नहीं देख सकते? फिर उसके बाद हमें हाई कोर्ट जाना पड़ा, उसके बाद दस्तावेज सार्वजनिक हुआ। आप 10-10 हजार करोड़ का एम.ओ.यू. करेंगे और जनता को नहीं बताना है, विधायकों को नहीं बताना है। तो उसमें ऐसा क्या था? आप लोग क्या करने जा रहे थे?

माननीय अध्यक्ष महोदय, अब मैं कानून व्यवस्था के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। दिनांक 17-12-2007 को जो मामला घटित हुआ, वह छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद से अब तक पूरे राज्य का पहला मामला था ।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- अकबर भाई, आप लोग डी बियर्स के बारे में भी बहुत बातें करते थे। 3.5 सालों में डी बियर्स के बारे में कुछ नहीं हुआ।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह थी। यह कानून व्यवस्था की बहुत बात कर रहे हैं, चाकूपुर, अपराधगढ़। राज्य की पहली घटना, ''दंतेवाड़ा में जेल ब्रेक''। दंतेवाड़ा में जेल ब्रेक हुआ और नक्सली वारदातों में गिरफ्तार 298 कैदी पहरियों से हथियार लूटकर फरार हो गये। आप लोगों

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का क्या नियंत्रण था? उस समय जेल ब्रेक हो गया, उसके बाद आज तक यह कभी नहीं हुआ और मैं समझता हूं कि आने वाले समय में ऐसा हो भी नहीं पायेगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय उच्चतम न्यायालय ने दिनांक 10-07-2010 को कहा कि माओवादी हिंसा से प्रभावित छत्तीसगढ़ में, आधे राज्य में तो सरकार ही नहीं है। यह माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने तत्कालीन सरकार के लिये कहा कि आधे राज्य में आपकी सरकार नहीं है। अब वही बस्तर है, जहां स्कूल भी खुल रहे हैं, आंगनबाड़ी भी खुल रहे हैं, पढ़ाई भी हो रहा है, स्वयं सहायता समूह के जरिये लघु वनोपज का संग्रहण भी हो रहा है, वहां रोड भी बन रहा है और सारी चीजें हो रही है। लेकिन उस समय माननीय सर्वोच्च न्यायालय की तरफ से यह टिप्पणी की गयी कि आधे छत्तीसगढ़ में सरकार नहीं है ।

तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री जी का बयान आया। इन्होंने वर्ष 2010 में कहा कि ''खत्म हो रहा है खाकी का खौफ'' और बिगड़ती कानून व्यवस्था पर सी.एम. की तल्ख टिप्पणी कि पुलिस मुख्यालय आना, सलामी देखना, मुझे अच्छा लगता है लेकिन कानून व्यवस्था की समीक्षा के लिये आना मुझे अच्छा नहीं लगता है। कानून व्यवस्था की स्थिति खराब है, इसे सुधरवाने की जरूरत है। यह तत्कालीन मुख्यमंत्री जी ने दिनांक 01-12-2010 को कहा था।

अब वर्ष 2008 में गृहमंत्री के काफिले की स्कॉर्पियो चोरी। आप अपनी कानून व्यवस्था का अंदाज लगाईये। गृहमंत्री के काफिले की बिना नंबर की स्कॉर्पियो शैलेन्द्र नगर में चोरी हो गयी। गृहमंत्री के यहां जो पदस्थ अधिकारी थे, जिन्होंने दिवाली में गाड़ी खरीदी थी। अब गृहमंत्री का यह हाल है कि जब उनकी स्कॉर्पियो चोरी हो गयी तो आप लोग किस प्रकार की कानून व्यवस्था की बात करते हैं? इसी प्रकार से कल आपका ठगी के बारे में एक विषय आया था। आपने 29 प्रकरणों को एक साथ रखा और यह बताने की कोशिश की कि यहां पर ठगी बहुत अधिक हो रही है। आमजनों के बारे में, तब हम लोगों ने आपत्ति की कि यह ध्यानाकर्षण का विषय हो नहीं सकता। ठगी के बारे में, पिछली विधान सभा और इस विधान सभा के बीच में जो घटना घटित होती है उसी की बात होगी। अब आप आमजनों के बारे में बात कर रहे थे और मैं आपके मंत्रियों के बारे में बता रहा हूं। विदेश उड़ान में..।

श्री अजय चंद्राकर :- सरकार, मेरे मुर्शिद, एक मिनट सुनिये। पहला, ध्यानाकर्षण दोनों सत्रों के बीच में था, कोई घटना मार्च के पहले की नहीं है।

दूसरी बात, वह विधान सभा से अनुमोदित थी और विधान सभा की व्यवस्था दोनों पक्षों के लिये थी उसी दिन सी.एम. साहब का उत्तर मेरे से डेढ़ गुना ज्यादा था और मेरा ध्यानाकर्षण उससे छोटा था लेकिन मेरे लिये व्यवस्था आयी। बाकी चीज के लिये व्यवस्था नहीं आई।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विशेष उड़ान के लिए हमारे दो मंत्रियों माननीय ननकीराम कंवर जी और माननीय रामविचार नेताम जी, एक-एक लाख रूपया और हमारे तीन

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अधिकारी भी थे, विदेश जाने के लिए एक-एक लाख रूपया दिया। वह विदेश क्यों जाना चाहते थे ? यूरोपीय देशों में राहत और पुनर्वास में हुए काम का अध्ययन करने जा रहे थे। यह बात 18.03.2006 की है और वह एजेंट इन लोगों का एक-एक लाख रूपये लेकर फरार हो गया। अब आप बताईये, आप हमसे यहां ठगी के बारे में सवाल कर रहे हैं। आपके मंत्री भी सुरक्षित नहीं थे, खुद ही ठगी के शिकार हो गये।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके राज में कोई सुरक्षित नहीं है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट। इसी प्रकार से तत्कालीन सरकार में जो मुख्य सचिव थे उनका मंत्रालय से मोबाईल चोरी हो गया, मैं आपको तारीख सहित बता रहा हूँ। यह 12.01.2008 की बात है। तत्कालीन मुख्य सचिव का मोबाईल चोरी हो गया। आप कानून व्यवस्था की बात कर रहे हैं और अंत में एक बयान आपको दिखाना चाहता हूँ। यह आखिरी है। यह माननीय ननकीराम कंवर जी का बयान है। सच बोलकर, छा गये ननकी। कहा पुलिस घूस खाती है। थानेदार का महीना बंधा रहता है, उस समय खुद गृहमंत्री थे। अब बताईये। यह खुद गृहमंत्री थे। आपने यहां पर जिस प्रकार की यह कानून व्यवस्था के बारे में जो बातें रखी हैं मैं ऐसा समझता हूँ कि आपके अविश्वास प्रस्ताव में कोई दम वाली बात नहीं है और थोड़ी देर में इसका परिणाम आपके सामने आ जाएगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री अजय चन्द्राकर :- अविश्वास प्रस्ताव के परिणाम क्या है, सब जानते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपसे आग्रह है। हमारे 4 सदस्य हैं सबको 5-5 मिनट का समय दें।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह तीसरी बात के विधायक हैं।

श्री यू.डी. मिंज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक निवेदन है अगर उनको समय देंगे। हम लोगों को बोलने का मौका नहीं है हमारे नये विधायक हैं उनको बोलने का मौका दिया जाये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग बैठने के लिए तैयार हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं 12.00 बजे के बाद बैठने के लिए तैयार नहीं हूँ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम अविश्वास प्रस्ताव में नहीं बोलेंगे तो किसमें बोलेंगे ?

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदया जी की बातों का ध्यान रखिएगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सीनियर विधायक हैं। माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों को 5-5 मिनट का समय दें। पूरा समय तो हल्ला गुल्ला में चला गया।

श्री यू.डी. मिंज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक निवेदन है हम लोगों को बोलने का मौका नहीं है। कम से कम हमारे नये विधायकों को अविश्वास प्रस्ताव में बोलने का मौका दिया जाये।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, राज्यपाल महोदया के निर्देशानुसार ...।

श्री अजय चन्द्राकर :-ऐसा नहीं हुआ है साहब, हम लोग कई बार 5.00 बजे तक रूके हैं।

अध्यक्ष महोदय :- कई बार चला होगा। हमेशा नहीं चलेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- हम लोग 5.00 बजे तक बैठे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं उस जमाने में नहीं था नहीं तो मैं नहीं चलने देता। यदि आपके लोगों को बोलना है तो आपके नेता प्रतिपक्ष अपने भाषण का समय कम करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ठीक है। हम समय कम कर लेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- आप करिये। आप सोच लें।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह कितनी देर बोलेंगे। आप भी से घोषित कर दें। आप घोषित करिये तब तो समय कम करेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप तय कर दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- देखिए, नेता प्रतिपक्ष, माननीय मुख्यमंत्री जी आप लोग ज्यादा से ज्यादा एक घण्टे बोलते हैं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हां ठीक है। एक घण्टे 40 मिनट बोलेंगे। हमारे सदस्य केवल 10-10 मिनट बोलेंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे 4 सदस्यों को 10-10 मिनट बोलवा लीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह लोग 10-10 मिनट में बोलेंगे और आप 40 मिनट में नेता प्रतिपक्ष बोलेंगे।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग केवल 5 मिनट बोलेंगे। 10 मिनट नहीं बोलेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप 40 मिनट में बंद करवा लीजिएगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी केवल 3 ही सदस्य बाकी हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चलिये, दो लोगों को ही समय दे दीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इधर भी बहुत सदस्य हैं। जब बोलने लगेंगे तो बहुत समय लगेगा। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री यू.डी. मिंज :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमें भी बोलने का मौका दिया जाये। हम लोगों को बोलने का मौका नहीं आया।

श्री शैलेश पाण्डे :- आसंदी की व्यवस्था आ गई है।(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने कहा है तो नेता जी का समय कम कर दीजिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- आसंदी की व्यवस्था आ गई है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता जी सुन रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उनके बोलने से क्या होता है ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, और कोई बात होगी तो नेता जी को लिखकर दें, वह बोल देंगे।

श्री शैलेश पाण्डे :- आसंदी की व्यवस्था आ गई है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता जी, बोलें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता जी आप बोल दीजिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- आसंदी की व्यवस्था आ गई है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं आप लोगों से कितनी बार निवेदन करते रहा कि आप 40 मिनट नहीं, 50 मिनट नहीं, कम बोलिए। आप लोगो ने किसी ने सुना ? क्या किसी ने मेरी बात को सुना ? मैं पहले बोल रहा हूँ। कल से बोल रहा हूँ कि 12.00 बजे खत्म करना पड़ेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी पूरी बात हम लोग सुन रहे हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,हम लोग इतने में तो बोल लेते। (व्यवधान) आपका समय खत्म हुआ। आप वहां से घण्टी बजा देना।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने 56 मिनट से यहां तक पहुंचा दिया।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता जी, आप खड़े होकर बोल दीजिए कि मैं अपना समय देता हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन अविश्वास प्रस्ताव में सुबह 7.00 बजे तक चला है। यह पूर्व उदाहरण है।

अध्यक्ष महोदय :- पहले सदन चला होगा। पूर्व उदाहरण से ही सब चीज नहीं चलेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपसे इस बात का आग्रह है।

अध्यक्ष महोदय :- इतनी लम्बी चर्चा नहीं होती है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप हमारे माररीय सदस्यों को 10-10 मिनट का समय दे दीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- बृजमोहन जी, माननीय नेता जी कुछ बोल रहे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे नेता प्रतिपक्ष जी का पूर्व में 3-3 घण्टे तक भाषण हुआ है।

श्री शैलेष पाण्डे :- यह गलत बात है। आंसदी की व्यवस्था आ गई है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे कुल 12 सदस्य हैं। वह अविश्वास प्रस्ताव में अपनी बात नहीं रखेंगे तो कहां रखेंगे।

श्री शैलेष पाण्डे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आंसदी की व्यवस्था आ गई है।

श्री धरमलाल कौशिक :- यदि समय कम करना है तो मैं अपना समय कम कर लूंगा।

श्री शैलेष पाण्डे :- यह सभी सदस्यों को मानना चाहिए। सभी बातें आ गई हैं।

अध्यक्ष महोदय :- सब बातें आ चुकी हैं। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- इस विधानसभा में 4-4 बजे तक चलाएं हैं।

श्री शैलेश पाण्डे :- सभी बातें आ गयी है। (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, अनर्गल बातें करते रहते हैं। बेकार की बातें करते हैं। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ...।

अध्यक्ष महोदय :- पूरी बातें आ चुकी हैं, क्या अवसर दें ? पूरी बात तो आ चुकी है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, आप हमारे सदस्यों को 10-10 मिनट समय दे दीजिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- आसंदी की व्यवस्था आ गयी है।

अध्यक्ष महोदय :- संभव नहीं है। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम 12 लोग उपस्थित हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- 12 उपस्थित हैं और 12 नहीं बोलेंगे तो कौन बोलेगा। (व्यवधान)

श्री शैलेश पाण्डे :- आसंदी की व्यवस्था मानना चाहिए। (व्यवस्था)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, हमारे तरफ के सदस्यों को भी 5-5 मिनट देना चाहिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, सिर्फ तीन लोग बचे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- जब हम लोग स्वीकार कर रहे हैं तो....।

अध्यक्ष महोदय :- आप क्या बोलना चाहते हैं बोलिए।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष जी, समय की बाध्यता तो है। अगर आप चाहते तो पहले भी संक्षिप्त किया जा सकता था। अब अजय जी, अभी तो कह रहे हैं कि हमारे सदस्य 10 मिनट में समाप्त कर लेंगे। जब आप बोल रहे थे तो 10 मिनट तक तो आपसे अनुरोध

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करना पड़ा था। उसके बावजूद भी अगर नेता प्रतिपक्ष जी चाहते हैं कि बहुत संक्षिप्त में बोलेंगे या 5-5 मिनट में माननीय सदस्य बोलेंगे तो स्वाभाविक है, उधर से कोई बोलेंगे तो इधर से भी बोलेंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- बोलवा लीजिए न।

श्री रविन्द्र चौबे :- ऐसा तो होगा नहीं कि 3 सदस्य उधर से बचे हैं। इधर तो नाम के अनुसार हमारे 21 सदस्य बचे हुए हैं। इसलिए माननीय अध्यक्ष महोदय,...।

श्री अजय चंद्राकर :- नेता प्रतिपक्ष अपने समय को कम करूंगा बोल रहे हैं। ऐसा कभी नहीं हुआ है कि वे अपना समय कम करूंगा बोल रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कहां कम करेंगे, 56 मिनट का समय था। 5 घंटे से ज्यादा बोल चुके हैं। समय तो खत्म हो चुका है और कौन से समय में अपना समय कम करेंगे। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- तो हम लोग जाएं।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं-नहीं, कौन जाने के लिए बोल रहा है। काहे के लिए एकदम उत्तेजित हो जाते हो, भाई। अजय जी, बात शुरू नहीं हुई है,एकदम उत्तेजित हो जाते हो।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं कहां उत्तेजित हूं। उसी से पूछ रहा हूं जाएं क्या करके?

श्री रविन्द्र चौबे :- आपको किसने जाने के लिए कहा है ? अविश्वास प्रस्ताव लाए हैं तो उसका हश्र देखकर जाना चाहिए।

श्री अजय चंद्राकर :- हश्र हमको मालूम है।

श्री रविन्द्र चौबे :- तो क्यों भागने के लिए तैयारी हो रही है ?

श्री अजय चंद्राकर :- भागने की नहीं, उन्होंने किस भाषा में कही है, उनसे पूछिए।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- भागना हे ता भाग जा।

श्री रविन्द्र चौबे :- इसलिए माननीय अध्यक्ष जी...।

अध्यक्ष महोदय :- आप सलाह दीजिए, क्या करना है, आप यहां के संसदीय कार्य मंत्री हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, दोनों पक्ष के जो सदस्य बचे हैं, उनको थोड़ा 5-5 मिनट समय दे दीजिए। इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- सौरभ जी, 5 मिनट।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं सदन को एक सूचना देना चाहता हूं। हमारे सदन की सदस्य डॉ. लक्ष्मी ध्रुव जी हैं, उनके खिलाफ एक एफ.आई.आर. धारा 420 का प्रकरण दर्ज हुआ है और यह हाईकोर्ट के निर्देश पर 23 लाख 50 हजार रूपए के कई आरोप लगे हैं। यह अभी समाचार पत्रों में टी.व्ही. में चल रहा है। हमारी विधायिका के खिलाफ में 420 दर्ज हुआ है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय बृजमोहन जी।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट, एक मिनट, एक मिनट। आप क्या कहना चाहते हैं ?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं आपकी जानकारी में ला रहा हूं कि हमारी सदन की सदस्य के विरूद्ध में आज 420 का मुकदमा दर्ज हो गया है। यह मैं आपकी जानकारी में लाना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आप बिना देरी किए बोलिए।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- बृजमोहन जी, एक विधायक के बारे में आप ऐसा बोल रहे हैं। आप वरिष्ठ सदस्य हैं। एक माननीय सदस्या के बारे में बोल रहे हैं। सदन में बताने की क्या जरूरत है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं आरोप नहीं लगा रहा हूं।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- एक सदस्य के बारे में बोल रहे हैं, यह आपकी शालीनता है।

अध्यक्ष महोदय :- इस बात को छोड़िए। मतलब भी नहीं है। 5 मिनट सिर्फ 5 मिनट।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया उसके लिए धन्यवाद। आपको जहां पर समझ में आएगा आप रोक दीजिएगा। आपसे आग्रह है कि कोई टिका टिप्पणी न करें।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

समय :
10:18 बजे

(सभापति महोदय (श्री लखेश्वर बघेल) पीठासीन हुए)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय सभापति महोदय, जब तक यह कोर्ट में साबित नहीं हो जाता है, कोई भी, कुछ भी लगायेंगे, यह सही थोड़ी मानेंगे।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ की इस सरकार बनने के बाद कोलमाफिया, सप्लाई माफिया, शैंड माफिया, गिट्टी माफिया, सीमेंट माफिया, रेडी टू ईट माफिया, कैश माफिया का साम्राज्य फैल गया है। माननीय सभापति महोदय, यह बड़ी दुर्भाग्य की बात है कि यह जो माफिया का संचालन किया जा रहा है। वह जो संचालनकर्ता लोग हैं, उन लोगों के यहां इनकम टैक्स के छापे पड़ रहे हैं और इनकम टैक्स की छापों की जांच मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुंच रही है। माननीय अकबर भाई बोल रहे थे, मैं आपसे एक आग्रह करता हूं, आप आवास एवं पर्यावरण मंत्री हैं। हमने आपकी बहुत सारी बातें सुनी। एन.जी.टी. ने बोला है कि एस.डंपिंग का का काम कैसे हो रहा है ? मैं आपको एक कोरबा जिले का उदाहरण दे रहा हूं। एन.जी.टी. ने डायरेक्टीव दिया है कि कोरबा जिले का काम हो रहा है और वह एस डंपिंग का काम और एस का काम कौन कर रहा है ? आज लगातार चर्चाएं हो रही है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- सौरभ भैया, वह सी.एम. मैडम की डायरी में लिखा था, उसको कौन मैडम है, थोड़ा सा बताईए न। उसको भी बताईए न।

सुश्री शकुंतला साहू :- 15 साल में सीएम मैडम ने क्या लिखा था, वह बताईए न।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सौरभ सिंह :- डी.एम.एफ. मद की भी बातें हुई, डी.एम.एफ. मद में बहुत सारी चर्चाएं हुई। मैं बहुत डिटेल में नहीं जाना चाहूंगा। जब भी खरीदी की बात होती है, जब भी यह ऑब्जेक्शन उठाता है, कोई भी आदमी जाकर बोलता है, इस पक्ष का हो या उस पक्ष का हो ।

श्री मोहम्मद अकबर :- रोगदा बांध के बारे में क्या बोलना है ? वह तो बोलिए। वह आपके यहां का है, 52 साल पुराना है ।

श्री सौरभ सिंह :- आप भी जांच समिति में थे, जो जांच कमेटी आयी । विधानसभा की जांच कमेटी का टेबल आ गया, उसके ऊपर चर्चा मत करिये ।

श्री मोहम्मद अकबर :- 5 लोगों की विधानसभा की समिति बनी थी । मैं था और माननीय धर्मजीत सिंह जी थे । बहुमत के आधार पर 3 लोगों ने उसको उल्टा कर दिया, यह बोल दिया गया कि जो दिया गया है वह उचित है । आपकी यह तो स्थिति है ।

श्री सौरभ सिंह :- वह विधानसभा की समिति है उसका हो गया ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उसको तो आप लोग ही बेच दिये थे, इन लोग रोगदा बांध को बेच दिये थे ।

श्री सौरभ सिंह :- आप लोग टोका-टाकी मत करें । जब डीएमएफ की खरीदी होती है चाहे कोई भी व्यक्ति वहां पर जाकर बोलता है तो वहां पर जो कलेक्टर बैठे हुए हैं । पहले 23 परसेंट से चालू हुआ था वह 30-40 तक पहुंच गया और मैं यह कहना चाहता हूं कि एक नया बहाना उन्होंने खोजा है । वह बहाना है कि सत्यता है? हाउस से खबर आयी थी । न हाउस को कोई पूछने जा रहा है, न हाउस को कोई देखने जा रहा है और न ही कोई बताने जा रहा है । यह क्या हो रहा है ? इस ढंग से सिस्टम चल रहा है । अगर हाउस की संलिप्तता नहीं है, अगर हाउस से कोई खबर नहीं जा रही है तो स्पष्ट बोलें कि कोई खबर नहीं जा रही है करके ।

श्री कवासी लखमा :- कल इसी मुद्दे में मुख्यमंत्री जी ने आप लोगों का पूरा जवाब दिया है अब फिर यह बात कहां से आ रही है ?

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ में काला सोना होता है कोयला । इस सरकार में वह चरितार्थ होता है कि काला सोना से कैसे काम किया जाता है और उस काले सोने की आंच इंकमटैक्स में आने लगी है । लगातार कोरबा में कोयले की चोरी हो रही है । एसईसीएल के अधिकारी, एसईसीएल में जो आईटीबीपी के लोग पदस्थ हैं । वे जाकर शिकायत कर रहे हैं और शिकायत करके बोल रहे हैं कि उनकी एफआईआर नहीं लिखी जा रही है । उनके साथ कोयला चोर मारपीट कर रहे हैं और कोयला कहां खप रहा है ? कोयला उन्हीं वाशरियों में खप रहा है जिन वाशरियों की खरीदी की जा रही है । वहीं पर जाकर कोयला खप रहा है और जो कोयला खप रहा है । आज साढ़े 3 साल बाद कोलवाशरियों में छापे लगे । छापा मारने 5 टीम गयी, साढ़े 3 साल से क्यों छापा नहीं मारा गया ? साढ़े

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

3 सालों तक उनको क्यों छोड़ दिये थे? साढ़े 3 साल पहले छापा लगाते, 5-5, 6-6 डिपार्टमेंट के छापे लगे अगर कोयले की चोरी हो रही है ।

मानननीय सभापति महोदय, कोयले का प्रोडक्शन नहीं बढ़ रहा है । कोयले का प्रोडक्शन अगर नहीं बढ़ रहा है तो राजस्व का नुकसान छत्तीसगढ़ सरकार को हो रहा है, मैं एसईसीएल कोयले की बात कर रहा हूं और इसलिये नहीं बढ़ रहा है कि वहां पर के जो अधिकारी पदस्थ हैं वे अपने निजी स्वार्थों के लिये माईंस का एक्सटेंशन नहीं कर रहे हैं, ओवरबर्डन में भ्रष्टाचार करके पैसा मांग रहे हैं इसलिये माइंस का एक्सपेंशन नहीं हो रहा है और प्रोडक्शन नहीं हो रहा है इसलिये आज जो परिस्थिति कोलांचल में हो गयी है वह धनबाद जैसी परिस्थिति हो गयी है । गैंस ऑफ वासेपुर जैसे माफियाओं का कंट्रोल आ गया है और जो माफियाराज चल रहा है वह माफियाराज पूरे छत्तीसगढ़ को बर्बाद करेगा । कोलब्लॉक की बात हो रही थी, अकबर भाई ने कोलब्लॉक की बहुत सारी बातें की । 18 कोलब्लॉकों के लिये एक कोलब्लॉक जिसकी बात हो रही थी, अभी बहुत सारी हसदेव अरण्य की कोलब्लॉक की बात हो रही थी उस हसदेव अरण्य के कोलब्लॉक में जो आदमी काम कर रहे हैं एमडीओ का, मैं नाम लूं और अगर आप बोलें तो मैं नाम ले लेते हैं, कोई दिक्कत की बात नहीं है । वह छत्तीसगढ़ मिनरल डवलपमेंट कॉर्पोरेशन के गरेपलमा के कोलब्लॉक का भी एमडीओ का काम कर रहे हैं और उसके कोल ट्रांसपोर्टिंग का काम कौन कर रहा है, मैं कंपनी का नाम लूं ।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करें । 5 मिनट का समय निर्धारित किया गया था ।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, जो 108 चला रहे हैं, वही ट्रांसपोर्टिंग का काम कर रहे हैं और कंपनी वही है तो यह डबल मापदंड क्यों ? यह डबल मापदंड नहीं होने चाहिए । विरोध करना है तो पूरा विरोध करिये ।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करें ।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आप बोलेंगे तो मैं समाप्त कर दूंगा ।

सभापति महोदय :- नहीं-नहीं । 5 मिनट का समय निर्धारित था ।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं एक बात बोलकर बंद कर देता हूं । छत्तीसगढ़ सरकार ने 2 बिजली के प्लांट बंद किये हैं, निर्देश था कि वह प्लांट आउटडेटेड हो गये थे उनको बंद करना चाहिए लेकिन उसका जो स्क्रेप बेचा गया, उसकी निविदा कैसे हुई थी, किस आदमी को स्क्रेप मिला, किस ढंग से स्क्रेप मिला और किस ढंग से वह स्क्रेप बेचा गया ? इस ढंग की व्यवस्था यहां पर चल रही है । माननीय सभापित महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- धन्यवाद । श्री देवेन्द्र यादव जी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री देवेन्द्र यादव (भिलाई) :- माननीय सभापति महोदय, विपक्ष के साथियों का अविश्वास प्रस्ताव कल रात 3-4 घंटे पूरा देखकर मैंने इसे पढ़ा है और पढ़ने के बाद यह समझ में आया कि चर्चाओं को बेस बनाकर इन्होंने ये अविश्वास प्रस्ताव तो रख दिया, लेकिन देखकर ऐसा लगता है कि इनकी बी.जे.पी. की आई.टी.सी.एल. जो सोशल मीडिया की टीम होगी, उसने बना दिया और इन्होंने दस्तखत करके रख दिया। तथ्यों पर कहीं बात नहीं हुई। मैं सारे विषयों को पढ़ चुका हूं, लेकिन..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय विधायक देवेन्द्र जी, आप अपने बार का नाम लॉर्ड ऑफ ड्रिंक रख दीजिए। भारत के एक बड़े नेता नेपाल में लॉर्ड ऑफ ड्रिंक में हैं। आप लॉर्ड ऑफ ड्रिंक रख दीजिए।

सभापति महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी, टोका-टाकी न करें। समय निर्धारित है। आप टोका-टाकी न करें।

श्री देवेन्द्र यादव :- अगर कभी अवसर मिला कि वैसे तो मैं कोई व्यापार-व्यवसाय करता नहीं, लेकिन अगर ऐसा कोई व्यापार-व्यवसाय करेंगे तो मैं आपकी बात का ध्यान रखूंगा और मैं आपको उसमें बुलाउंगा, क्योंकि आप तो शाम को उसकी शोभा बढ़ायेंगे, मुझे यह लगता है। माननीय सभापति महोदय, मैं सभी विषयों पर नहीं जाउंगा। मैं एक विषय इसमें पढ़ रहा था। इन्होंने पंडो जनजाति को लेकर उल्लेखित किया है कि पंडो जनजाति के साथ यह सरकार दुर्व्यवहार कर रही है। मैं पिछले समय की बात बताउंगा। वर्ष 2017 में सूरजपुर जिले में 2 माह के भीतर 30 पंडो जनजाति के लोगों की मौत हुई। इस पर केन्द्रीय समिति बनी और केन्द्रीय जांच समिति छत्तीसगढ़ आयी। वर्ष 2016 में वॉड्रफनगर में रामकरण पंडो की मौत हुई, जिसके खिलाफ पंडो जनजाति ने तत्कालीन सरकार का सामूहिक विरोध किया और आंदोलन किया। इसके बाद पंडो नगर ग्रामवासियों ने विधान सभा चुनाव का बहिष्कार किया और आज ये आरोप-पत्र में पंडो जनजाति की चिंता कर रहे हैं। मैं इनको बताना चाहता हूं कि हमारी भूपेश बघेल जी की सरकार बनने के बाद अबूझमाडिया हो, कमार, बैगा, बिरहोर, पहाड़ी कोरवा, पण्डो, भुंजिया को सीधे भर्ती का लाभ देने की घोषणा इस सरकार ने की और इन जनजातियों के लोगों को लाभ देने का काम हमारी सरकार कर रही है। इनका जो अविश्वास पत्र था, आरोप-पत्र था, उस पर मैंने पढ़ा, इन्होंने खेती-किसानी को लेकर भी बहुत सारी बातें कीं। मैं बहुत विस्तार में नहीं जाउंगा, एक उदाहरण दूंगा। कवर्धा जिला पूर्व मुख्यमंत्री जी का जिला है। जब उनकी सरकार थी तो लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना की स्थिति क्या थी और आज की स्थिति क्या है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि कांग्रेस की सरकार में भूपेश बघेल जी की सरकार में आज के समय देश में वह कारखाना सबसे पहले स्थान पर है। आज वर्ष 2020-21 में 426.25 रूपये किसानों को मिलता है और वर्ष 2021-22 में 444 रूपये जो यू.पी. के 325 और गुजरात के 339 रूपये से कहीं ज्यादा है। आज ये देखेंगे कि गुजरात में गन्ने की फसल को लेकर वहां के किसान जमीन पर बैठे हुए हैं और आंदोलन कर रहे हैं। यहां पर हर फसल को बढ़ावा देने का काम हमारी सरकार कर रही है। इनके आरोप-पत्र में मैं पढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रहा था, जनप्रतिनिधियों का अपमान। जनप्रतिनिधियों के अपमान से मुझे हमारे पूर्व विधायक विमल चोपड़ा जी याद आ गये। मुझे याद आ गया कि किस तरीके से उनके कपड़े फटे थे। उनकी पीठ में डंडे के निशान थे। वे तत्कालीन विधायक थे। इनके समर्थक थे और इसके बाद भी उस समय की सरकार क्या रवैया करती थी, ये खुद बता सकते हैं। अब मैं कहीं और दूर नहीं जाउंगा, जनप्रतिनिधियों की यदि बात की जाये तो मैं वर्ष 2017 में महापौर था। एक कार्य चल रहा था। तोड़-फोड़ चल रही थी। महापौर के रहते हुए मैं उस जगह पर गया, महापौर संस्था का मुखिया रहता है और मैंने अधिकारियों को बोला कि तोड़-फोड़ रोक दीजिए तो क्या हुआ? उसी समय शाम को मेरे खिलाफ सरकारी कार्य में बाधा आ गयी। एक तरफ आप कहते हैं कि तृतीय प्रणाली में सबसे पहले नगर की सरकार रहती है। केन्द्र की सरकार, राज्य की सरकार और नगर की सरकार और इसके बाद नगर की सरकार जो प्रशासनिक अधिकार रखती है, उसी पर आप प्रशासनिक कार्यवाही को रोकने की धारा लगा देते हैं। ये आपकी नीयत और रीति-नीति थी। मैं सब चीजों पर जा सकता हूं। बहुत ज्यादा चीजों पर नहीं जाउंगा। चिटफंड कंपनियों की बात हो रही थी।

सभापति महोदय :- चलिए, अब समाप्त करिए।

श्री देवेन्द्र यादव :- आखिरी दो मिनट लूंगा। प्लीज संरक्षण दीजिएगा। चिटफंड कंपनियों की बात हो रही थी। चिटफंड कंपनियों का फीता काटने कौन जा रहा था। इनके ही मंत्री जाते थे। इनके ही मुख्यमंत्री जाते थे, उनके सुपुत्र जाते थे और इसके बाद चूंकि मैंने इस पूरे आरोप-पत्र में यह देखा कि हमारे घोषणा पत्र में इनका बड़ा अच्छा अध्ययन था । मैंने 2003, 2008, 2013, 2018 सारे घोषणा पत्र निकाले और 2014 और 2019 का भी निकाला ।

सभापति महोदय :- चलिए, समाप्त करें ।

श्री देवेन्द्र यादव :- मैं आखिरी दो मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा । 2014 के घोषणा पत्र में इन्होंने लिखा था "एक भारत श्रेष्ठ भारत", उसके बाद इन्होंने लिखा "वाइब्रेंट डेमोक्रेसी" बनाएंगे । वाइब्रेंड डेमोक्रेसी की ये बात करते हैं, आप देखिए ज्यूडिशियरी का क्या हाल है ? देश के इतिहास में पहली बार ज्यूडिशियरी के सुप्रीम कोर्ट के सभी जज प्रेस कॉफ्रेंस करके यह बोलते हैं कि हमको आजादी चाहिए । सभापति महोदय, पार्लियामेंट की क्या स्थिति है, गवर्नर, एल.जी. इनकी सरकार बनाने में लगे हैं । महाराष्ट्र, एम.पी., गोवा में क्या स्थिति है ? आज मीडिया को इन्होंने अपनी कठपुतली बनाकर रखा है और मीडिया वाले 2000 के नोट में चिप ढूंढते हैं । यह स्थिति इनकी सरकार ने बनाकर रखी है । सभापति महोदय, मैं इनके अविश्वास प्रस्ताव पर इनको भी पूरा विश्वास नहीं है । इस अविश्वास प्रस्ताव का जवाब छत्तीसगढ़ की जनता इनको 2023 में देगी । बहुत बहुत धन्यवाद्।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- माननीय सभापति महोदय, आपने समय दिया धन्यवाद् । मैं इस अविश्वास प्रस्ताव का पूर्ण रूप से समर्थन करता हूं । भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

द्वारा भूपेश सरकार के खिलाफ, कांग्रेस सरकार के खिलाफ अविश्वास इसलिए लाया गया है कि इन्होंने प्रदेश की जनता का विश्वास खो दिया है । विश्वास ऐसे खोया है, 2018 के चुनाव में इनको 68 सीटें मिलीं । जब 5 महीने के बाद अप्रैल में लोक सभा का चुनाव हुआ, मई में उसकी मतगणना हुई तो भारतीय जनता पार्टी को पुन: 65 सीटें प्राप्त हो गईं । उस लोक सभा में जो विधान सभावार मतगणना हुई तो जनादेश पुन: भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में आ गया । इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है कि इसने जनता का विश्वास खो दिया है । मैं एकदम नई बात बताउंगा ।

सुश्री शकुंतला साहू :- चुनाव का भी बताइए ना भइया ।

सभापति महोदय :- टोकाटाकी न करें ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- फिर नगर पालिका में, नगर पंचायत में आपका बुरा हाल क्यों हुआ ?

श्री नारायण चंदेल :- सभापति महोदय, इस भूपेश की सरकार ने, इस कांग्रेस की सरकार ने लोकतंत्र की हत्या की । लोकतंत्र की हत्या कैसे की ? नगर पालिका, नगर निगम, नगर पंचायतों के चुनाव जो सीधे मतदान प्रणाली द्वारा होते थे, आपने उसको अप्रत्यक्ष मतदान प्रणाली से करवा दिया ताकि आप खरीद-फरोख्त कर सको, ताकि आप मैनेज कर सको, ताकि आप भ्रष्टाचार कर सको, ताकि आप प्रजातंत्र का गला घोंट सको, सरकार का दुरूपयोग कर सको । सभापति महोदय, आपने अभी मंडियों में मनोनीत कर दिया । इस सरकार में इतनी हिम्मत नहीं थी कि जनता के बीच जाती । मंडियों में मनोनयन करके आपने लोकतंत्र की हत्या की है । कांग्रेस के पदाधिकारियों को मंडियों में बैठा दिया, गांव के किसानों को बैठते । सभापति जी, कल आपने सोसायटी का बिल लाया, किस मंशा से लाया ? आप सोसायटियों में कांग्रेस के लोगों को मनोनीत करने वाले हैं । आप सोसायटियों का चुनाव क्यों नहीं कराते ?

श्री रामकुमार यादव :- भइया, तुमन बड़का छाती के रहे हौ तो 15 साल मा तुमन नइ करातेव ।

श्री नारायण चंदेल :- सभापति महोदय, यह लोकतंत्र की क्रूर हत्या है । महाराष्ट्र की चर्चा यहां नहीं हो रही है, छत्तीसगढ़ की चर्चा हो रही है और न केन्द्र की चर्चा हो रही है । सभापति जी, आपने राजीव मितान क्लब बना लिया । उसमें सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले जो लोग थे उनको आप मनोनीत करते, लेकिन अपने पैड वर्कर को उसमें मनोनीत कर दिया । आप इस छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार प्रशासन का राजनीतिकरण एवं राजनीति का अपराधीकरण कर रही है । इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है । लोकतंत्र जिंदा नहीं है, छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता माननीय अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था कि "सरकारें आती हैं, जाती हैं लेकिन प्रजातंत्र जिंदा रहना चाहिए, लोकतंत्र जिंदा रहना चाहिए ।" सभापति महोदय, इनमें से किसी को इतनी फुर्सत नहीं है अकलतरा के पोड़ीभाठा में किसी शराबी के द्वारा, किसी अपराधी के द्वारा एक महिला के साथ दर्दनाक हादसा होता है । इनमें से कोई कोई मंत्री या विधायक गया था? प्रशासन का कोई अधिकारी गया था। कोई नहीं गया था,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। खरौद में जहां विधानसभा अध्यक्ष जी का जिला है, वहां नर कंकाल मिलता है। वहां प्रशासन के किसी मंत्री और अधिकारी को जाने की फुर्सत नहीं है। भोजपुर, चांपा में एक युवक की संदिग्ध अवस्था में लाश मिलती है। वहां किसी को जाने की फुर्सत नहीं है, इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करियेगा।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सभापति महोदय, यहां पंचायत मंत्री नहीं हैं। अभी अकबर जी प्रधानमंत्री आवास की बात कर रहे थे। मुख्यमंत्री जी जब रिप्लाई देंगे तब हम उस बात को चर्चा में लायेंगे। हमने नहीं कहा है कि 8 लाख मकान गरीबों के इस सरकार के कारण केन्द्र को वापिस चले जाये, यह इस सरकार के पंचायत मंत्री ने कहा है।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करियेगा।

श्री नारायण चंदेल :- इस सरकार के ऊपर में संवैधानिक संकट है। मुख्यमंत्री जी के ऊपर, शासन के ऊपर आरोप लगाता है। कोरबा में एक जिम्मेदार मंत्री वहां के कलेक्टर को महाभ्रष्ट कलेक्टर कहता है। वहां यदि सरकार की मीटिंग होती है, एक डिप्टी कलेक्टर मीटिंग को कैंसल कर देता है। इसलिए हम यह अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं।

सभापति महोदय :- चलिये, यह बात पहले भी आ गई थी।

श्री नारायण चंदेल :- मैं यह बात दूसरी बार बोल रहा हूं। इसलिए लोकतंत्र जिंदा रहना चाहिए, प्रजातंत्र की रक्षा करनी चाहिये, यहां तो विधायिका का अपमान होता है। 22 मार्च को माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी के बगल में बैठे हुए पंचायत मंत्री ने 14 अधिकारियों को सस्पेंड करने की घोषणा की थी, उनको निलंबित करने की घोषणा की थी।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करियेगा। माननीय शैलेष पाण्डेय जी।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सभापति महोदय, विधायिका का इतना अपमान प्रजातंत्र के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ, जितना इस सरकार में हुआ है।

सभापति महोदय :- चलिये, शैलेष पाण्डेय जी।

श्री नारायण चंदेल :- 14 अधिकारी कई महीने तक काम कर रहे थे। वह आज भी उस सीट पर हैं, वह आज भी सस्पेंड नहीं हुए हैं। उसमें जांजगीर के जिला पंचायत का एक सी.ई.ओ. भी था। अभी राजनांगांव का सी.ई.ओ. है। यह विधायिका का अपमान है। इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। किसी सरकारी कार्यक्रम में मनोनित व्यक्ति मुख्य अतिथि बनता है, वह उसकी अध्यक्षता करता है, चुने हुए जनप्रतिनिधियों का अपमान होता है और यह लोग मौन बैठे रहते हैं।

सभापति महोदय :- चलिये। श्री शैलेष पाण्डेय जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री नारायण चंदेल :- यह आभाषी विधायक क्या है? छाया विधायक क्या है? माननीय मुख्यमंत्री जी जब जवाब देंगे तो छाया विधायक की व्याख्या भी करेंगे, जानकारी देंगे और इसलिए हमने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। आज चाहें किसान, नौजवान हो या व्यापारी हो, सभी इस सरकार से त्रस्त हैं। सबको लूटा जा रहा है।

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति जी, वह जितनी भी बात बोल रहे हैं, उसको रिकार्ड ना करवायें।

सभापति महोदय :- चलिये, श्री शैलेष पाण्डेय जी, अपनी बात रखिये।

श्री नारायण चंदेल :- और पूरे छत्तीसगढ़ की जनता इस सरकार के बारे में कह रही है कि तुमने हमको बाजार में ऐसे लूटा इस भरी कि चुनरी तक का रंग उड़ गया फाल्गुन के त्यौहार में।

श्री धर्मजीत सिंह :- वाह-वाह।

सभापति महोदय :- चलिये, धन्यवाद। श्री शैलेष पाण्डेय जी।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- चंदेल भैया, क्या है कि जांजगीर-चांपा का जिला पंचायत का सी.ई.ओ. है ना, वह सस्पेंड नहीं हुआ है। उसका ऊपर में सेटिंग हो गया है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अकबर जी, व्यवस्था आई थी कि मंत्री आयेंगे तो बयान देंगे। मंत्री आकर चले गये और आपके बयान पर सरकारी बयान आया ही नहीं।

सभापति महोदय :- चलिये, पाण्डेय जी, अपनी बात रखिये।

श्री शैलेश पाण्डेय (बिलासपुर) :- माननीय सभापति महोदय, आज विपक्ष के द्वारा जो अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है। हम सबने देख लिया है कि वह आज दिन भर में टाय-टाय फिश हो गया है ।

श्री अजय चंद्राकर :- पंडित जी, आपके नेता टारगेट किलिंग के शिकार हैं।

श्री शैलेश पाण्डेय :- आज यही समझ में नहीं आया कि स्टेरिंग किसके पास था, कौन चला रहा था, किसके पास सामान थी? आप पूरा अविश्वास प्रस्ताव धराशायी हो गया। वह टाय-टाय फिश हो गया है।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- पाण्डेय जी, रेट लिस्ट भी एक बार बतायेंगे। सभापति जी, वह पुलिस का रेट लिस्ट निकाल रहे थे। वह रेट लिस्ट बता दें।

सभापति महोदय :- बैठिये। टोका-टाकी ना करें।

श्री शैलेश पाण्डेय :- माननीय सभापति महोदय, मैं इनके लिए एक शेर कहना कहना चाहता हूं। आज सदन में भारतीय जनता पार्टी की जो स्थिति है, वह न मांझी, न रहबरर, न हक में हवाएं है, है कश्ती भी जर्जर, ये कैसा सफर है। आज दिन भर में कुछ समझ नहीं आया कि विपक्ष के मुद्दे क्या थे? विपक्ष ने किस मंशा से अविश्वास प्रस्ताव लाया है? यह समझ के परे हैं। आज हम लोगों को समझने में दिन भर लग गया, लेकिन हम लोगों को अभी भी समझ में नहीं आया कि यह अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाया गया है?

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- तो आप अपने नेता से पूछ लीजिये।

श्री शैलेश पाण्डेय :- आप बैठिये। मैंने आपके भाषण में बोला था क्या?

श्री शैलेश पाण्डेय :- माननीय सभापति महोदय, विश्वास एक छोटा-सा शब्द है। इसको पढ़ने में 1 सेकण्ड लगता है। सोचो तो 1 मिनट लगता है। समझो तो दिन लगता है और साबित करने में बहुत समय लगता है। बहुत समय लगता है। (मेजों की थपथपाहट) इन लोगों ने 15 वर्षों तक सरकार चलाई। इनकी हुकूमत थी। 15 वर्षों में यह जनता का पूरा विश्वास खो दिये। जनता ने कांग्रेस को 68 सीटों से जीता कर सरकार की कमान दी और शासन करने की जिम्मेदारी दी। वर्ष 2018 में यह जनता का विश्वास था।

माननीय सभापति महोदय, वर्ष 2019 में जब पूरे प्रदेश में नगर-निगम और नगर-पंचायत के चुनाव हुए तो पूरे प्रदेश की जनता ने सारे के सारे नगर-निगम सौंपे तो कांग्रेस को सौंपे। वर्ष 2019 में भी यह लगातार उनका विश्वास था। जब हम वर्ष 2020 की बात करते हैं तो जिला पंचायत, जनपद पंचायत और पंचायतों में भी जो चुनाव हुए, उसमें भी लगातार कांग्रेस की जीत हुई और वर्ष 2020 में भी हमने जनता का विश्वास जीता। (मेजों की थपथपाहट) वर्ष 2018, 2019 और 2020 और उसके बाद दंतेवाड़ा, चित्रकूट, मरवाही और वर्ष 2022 में खैरागढ़ को जीता। लगातार वर्ष 2022 तक हमारी सरकार माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार जनता के विश्वास में काम कर रही है तो अविश्वास कौन कर रहा है ? अविश्वास वह लोग कर रहे हैं जो सत्ता के लालची हैं और जिन्होंने लोकतंत्र की हत्या की है और जो अनैतिकता के माध्यम से सत्ता पाना चाहते हैं। यह बात उन्हीं के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने परसों कही थी। उन्होंने कल ही के दिन कही थी। उन्होंने अपनी पार्टी के बारे में पूरे देश को पूरा चित्र दिखा दिया था। यह लोग अविश्वास कर रहे थे। इनके अविश्वास से क्या होता है ? आज हमने इनका अविश्वास भी देख लिया है और वह धराशायी हो गया। वह अविश्वास कहीं भी टिक नहीं पाया। किसी भी मुद्दे पर वह अविश्वास नहीं टिक पाया।

माननीय सभापति महोदय, पिछले 15 सालों से इनकी सरकार ने छत्तीसगढ़ को नशे का अड्डा बनाकर रखा हुआ था। नशे का अड्डा। पूरे छत्तीसगढ़ में छोटे-छोटे बच्चे नशे के आदी दो गये थे। स्कूल जाने वाले बच्चे जाकर हुक्का पीते थे। लड़कियां जाकर हुक्का पीती थी। महिलाएं जाकर हुक्का पीती थी। इन्होंने पूरे प्रदेश में यह फैशन पैदा कर दिया था।

माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार ने न केवल हुक्का-बार को बंद कराया बल्कि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने पूरे प्रदेश में ऐसा कठोर कानून लाया जिससे पूरे प्रदेश में हुक्का-बार बंद किये गये। आज कोई बच्चा हुक्का नहीं पीता है। (मेजों की थपथपाहट) यह 15 साल में संवेदनशील...।

श्री संतराम नेताम (केशकाल) :- भैय्या। माननीय सभापति महोदय, यदि हम 15 साल के अपराध के बारे में तुलनात्क बात करें तो कहीं न कहीं इनके 15 साल के कार्यकाल में और हमारे साढ़े 3

साल के कार्यकाल में अपराध में नियंत्रण हुआ है। हमारी पुलिस ने इसमें काम किया है। यदि आप तुलनात्मक रूप से देखें तो अपराध में जो कमी आई है वह हमारी सरकार के कार्यकाल में आई है।

सभापति महोदय :- चलिये। पाण्डे जी, आप अपनी बात रखिये।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, बहुत सारी बातें आ चुकी हैं और थोड़ी-सी बातें जो आज यहां पर नहीं आ पाई हैं, मैं उनको आपके सामने रखाना चाहता हूं कि केन्द्र में इन्हीं की सरकार है।

सभापति महोदय :- चलिये। अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, आप मुझे केवल दो मिनट का समय दीजिए। केन्द्र में इनकी सरकार है। क्या आपको मालूम है कि 10 दिन पहले वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण जी ने जो घोषणा की है उससे इस देश के बच्चे पढ़ नहीं पाएंगे। बच्चे जिस इंक (स्याही) का प्रयोग करते हैं उस स्याही पर टैक्स को 12 प्रतिशत से बढ़ाकर 18 प्रतिशत लगा दिया गया है। आप यह बताइये कि ऐसे में इस देश के बच्चे कैसे पढ़ाई करेंगे ? इस देश में हमारे भविष्य कैसे गिने जाएंगे ? केन्द्र की सरकार मोदी जी की सरकार टैक्स की लालची है जो छोटे बच्चों की स्याही पर भी टैक्स 18 प्रतिशत टैक्स ले रही है।

माननीय सभापति महोदय, माननीय धर्मजीत भैय्या, अब मैं जो बात बोलने जा रहा हूं वह तो हमारे पूरे देश के लिए बहुत शर्म की बात है कि हमारी केन्द्र सरकार, मोदी जी की सरकार ने बच्चों का पेन्सिल शार्प करने का पेन्सिल छीलने का जो शार्पनर होता है उस पर भी जी.एस.टी. को 12 प्रतिशत से बढ़ाकर 18 प्रतिशत लगा दिया गया है। इस देश के लिए यह शर्म की बात है।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त कीजिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, यह क्या जाता है और इसके बारे में कभी कोई कुछ नहीं बोला। टेट्रा पैक में मिट्टी से जुड़े 12 से 18 उत्पाद, जिसे गरीब और ग्रामीण लोग बनाते हैं उसमें टैक्स को 12 प्रतिशत से 18 प्रतिशत कर दिया गया है। पानी के सामान्य पम्प में भी 18 प्रतिशत जी.एस.टी. पहुंच गई हैं । इसका मतलब क्या हुआ । इसका मतलब यह हुआ कि आप इस देश से कितना टैक्स लेना चाहते हैं ? जनता से कितना टैक्स लेना चाहते हैं । डीजल, पेट्रोल, मिट्टी का तेल, खाद्य तेल, रसोई गैस ऐसी बहुत सी चीजें है, जिसमें जी.एस.टी. नहीं है । इस देश की जनता परेशान है । बोलने के लिए तो बहुत है, लेकिन आपने जो समय दिया, उसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं । धन्यवाद ।

सभापति महोदय :- रजनीश कुमार जी, पॉच मिनट में अपनी बात समाप्त करें ।

श्री संतराम नेताम :- सभापति महोदय, हम लोगों का नम्बर लगेगा या ऐसे की इंतजार करना पड़ेगा ।

श्री रजनीश कुमार सिंह (बेलतरा) :- माननीय सभापति महोदय, आज भारतीय जनता पार्टी के द्वारा लाये अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोले बर खड़े होए हवं और एति ले बार-बार यह विषय आथे कि अविश्वास प्रस्ताव समझ में नहीं अईस । अईसने विषय के ऊपर चर्चा चलथे ।

श्री संतराम नेताम :- समझ में नहीं आवथे तो तै हमर से मिले कर ना ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- तुमन ला समझ में नहीं आवथे, वही ला समझाथौं।

श्री संतराम नेताम :- हमर से मिलबे तो जल्दी समझ में आही ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- एति ले सब बार-बार कहिसे कि समझ नहीं आवथे, उही ला समझाथौं । बार-बार यह विषय आथे कि समझ नहीं अईस । पूरा विषय ध्यानाकर्षण मा, प्रश्न मा आ चुके हे, वही विषय ला लाए गे हे । आपके हार तो वही विषय में होगे कि विपक्ष मा 14 विधायक रहते हुए आपके साढ़े तीन साल के कारनामा हम प्रश्न और ध्यानाकर्षण के माध्यम से पूरा ले आएन, अतका बिन्दु हे, 84 दे हन और 151 बिन्दु हे । आप सब कहात हव कि ओमा कोई भी विषय नहीं छूटे हे । यह तो आपके पक्ष मा हार हो चुके हे । दूसर हार, आप यह बात भी बार-बार बोलथौं कि हम 38-40 विधायक रेहेन, आपके अविश्वास प्रस्ताव रिहीसे, आप मन भी अविश्वास प्रस्ताव लाए रेहेव । रात भर चलिए, माननीय नेता प्रतिपक्ष ढाई-तीन घंटा बोलिस । सबला बोले के समान अवसर मिलिस और ओला आप नया विषय लेकर आए हव, एकर मतलब साफ हे कि आप 15 साल में वहिसनाहा कोई विषय नहीं पाए रेहेव, जेकर प्रश्न और ध्यानाकर्षण मा ला सकौ । यह आपकी नैतिक हार हे । दूसरा बात, अविश्वास प्रस्ताव काबर अईस । अविश्वास प्रस्ताव तो आपके खिलाफ 18 तारीख के ही आ गे हे, आप के ही सदस्य ले आए हे । यदि याद नहीं आवत होही तो थोड़ी सुन लौ । जब माननीय राष्ट्रपति महोदया के चुनाव होईस त अविश्वास प्रस्ताव तो आपके सदस्य ह ला चुके हे । लेकिन ओकर बाद भी समझ मा नहीं आवथे तो आपला मुबारक । अभी कुछ-कुछ बात अईस, 15 साल मा का होईस, पूरा सवाल के जवाब दे रहितेव । केन्द्र सरकार आपला का-का दिस, ओकरो सवाल के जवाब रिहीसे, लेकिन कुछ सदस्य यह कहिन की सुप्रीम कोर्ट के अवमानना होवथे। यादव जी, सुप्रीम कोर्ट प्रेस कांफ्रेंस करथे । सी.जे.आई. के खिलाफ मा आप मन ह महाभियोग लाए रेहेव, चूंकि एक फैसला आपके खिलाफ दिस तो कांग्रेस पार्टी ह महाभियोग लाये रिहीसे और बात नैतिकता के करथे, हमला बात समझाथे कि अविश्वास प्रस्ताव काबर लाए हव । 15 साल के कुछ घटना के जिक्र करके जस्टिफाई करे के कोशिश करे जाथे कि अभी जौन होवथे, वह सब अच्छा होवथे, लेकिन छत्तीसगढ़ के जनता देखथे, समझथे । माननीय मोदी जी का करिस । पाण्डे जी, देश के झंडा लेकर पाकिस्तान के बच्चा बाहिर निकलथे ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पाण्डे जी ला काबर कहाथस ।

डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह :- सभापति जी, अभी-अभी तो पार्टी में झंडा लगाना शुरू किये हो । पहले कहां लगाते थे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रजनीश कुमार सिंह :- मंत्री जी, पाण्डे जी मोर मित्र हे, ओकर कोई मैं गलत आशय से नहीं कहात हव, वो मोर मित्र ए । सभापति महोदय, मोदी जी के आये के बाद बहुत सारा बात बोल सकथव ।

श्री देवेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, ग्लोबल *हैंम्बर्ग* के हिसाब से 106 देशों में भारत का स्थान 101 नम्बर पर है । यह स्थिति है ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- माननीय मोदी जी के प्रधानमंत्री बने के बाद पूरा विश्व में हा असर होएहे, आज ओ व विश्व के चौधरी हे ।

श्री रामकुमार यादव :- तुहर गोठ से अईसे लागथे कि मोदी जी ह बंदूक ला धरके पाकिस्तान जावथे ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- जेला हमन विश्व के चौधरी कहिथन, जेकर बिना पत्ता नहीं हिलय, अमेरिका जईसे देश के लईका मन फंस जथे, ओ कर लईका जब विश्व के लड़ई के स्थान से बाहिर निकाले ला पड़थे तो भारत के झंडा ला लेकर निकलथे, ये मोदी जी हे । और बहुत सारा बात हे ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति जी, आर.एस.एस. और भाजपा वाले संविधान की प्रति जलाये थे । ये कब से झंडा को मानने वाले हो गए । भारतीय झंडा को, तिरंगा को कभी मानते नहीं थे ।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- सभापति महोदय, मोदी जी में इतनी ताकत है कि वे झंडा बस में लगाकर 25 हजार भारतीय छात्र, 10 हजार पाकिस्तानी, अमेरिकी, इंग्लैण्ड और विश्व के बड़े-बड़े देश झंडा लगाके निकलथे । ये मोदी जी के आए के बाद फर्क पड़े हे ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आर.एस.एस. के कार्यालय में काला झण्डा फहराते थे या नहीं फहराते थे ?

सभापति महोदय :- चलिये समाप्त करिये। श्री संतराम नेताम जी।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- माननीय सभापति महोदय, बहुत कम समय मा समाप्त करत हव। बार-बार बहुत बात करथे येला बेच दिस, ओला बेच दिस। 5-7 ठन चीज के नाम गिना देवत हव। मोदी सरकार के ऊपर आरोप लगाने वाला यह जान लें कि आई.सी.आई.सी.आई., एच.डी.एफ.सी. क्या था ? पूरा 33 ठन लिस्ट रहिस हे, मैं 2 ठन के ला बता देवत हव। आई.सी.आई.सी.आई. बैंक का पूरा नाम इण्डस्ट्रियल क्रेडिट एवं इनवेस्टमेंट कार्पोरेशन आफ इण्डिया था, भारत सरकार की ऐसी संस्था थी, जो बड़े उद्योगों को कम दर पर लोन देती थी। दूसरा, एच.डी.एफ.सी. बैंक, जेला पहली एक्सिस बैंक बना के बेच देय गइस। ओखर बार 33 और जो बहुत बड़े-बड़े भारत के कम्पनी रहिस हे, ऐला याद रखव, 2004-2014 तक जो बेचे हव, एस.टी.पी.सी., एन.एम.डी.सी., मोर पास लिस्ट हे, जो बड़े-बड़े भारत सरकार के बड़े-बड़े कम्पनी रहिस हे, ओला बेचे हे। येका भी याद रखव। माननीय मोदी जी के ऊपर आरोप लगाय के पहली ये बात ध्यान रखव।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रामकुमार यादव :- अरे बबा, अभी तो सफा रेल्वे ला बेच देत हा गा। ले तो हमन ट्रेन देखे बर कहां जाबो ?

सुश्री शकुन्तला साहू :- अभी तो मोदी जी पूरा सब चीज ला बेचत हे ओखर बारे मा बोलव ना ?

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- बासी खावा।

श्री देवेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, ये खुद ट्रांसपरेंसी की बात कर रहे हैं और केन्द्र सरकार के पास आर.टी.आई. 38 हजार 6 सौ 11 में आवेदन पेण्डिग है।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- पांडे जी, दो मिनट, आप बर कविता समर्पित करे हव। सुन लेवव।

"दाने-दाने चुन कर चटोरे खा गये,

जनता के हिस्से में सूखे भूसे आ गये।

गा कर नगमें यहां, बेगाने नाम कमा गये। "

माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आपका एक मिनट ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। इस सदन में अविश्वास प्रस्ताव पेश हुआ, 8-10 घंटे से चर्चा हो रही है। हमारे पक्ष से रंजना जी महिला विधायक वह बोली हैं। परन्तु बहुत अफसोस हो रहा है कि इस तरफ से 71 में से 1 भी महिला को बोलने के लिए अवसर नहीं दिया। आप लोगों ने अवसर नहीं दिया, नाम भी नहीं है और मैं अभी देखा भी हूं। पता भी कर रहा हूं।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- अध्यक्ष जी से पूछियेगा।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- हम लोगों ने नाम दिया है।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- आप अनुमति दीजिये, अभी बोल देंगे। अभी बोलना शुरू कर दिए होते, लेकिन अनुमति नहीं दिए हैं। अध्यक्ष जी ने काट दिया है।

सुश्री शकुंतला साहू :- नाम दिए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- महिलाओं का बोलवाना चाहिए। आप महिलाओं का अपमान करते हैं। महिलाओं को अवसर नहीं दे रहे हो, आप उनका अपमान करके उनको दबा रहे हो।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- अध्यक्ष जी ने नाम काट दिया है। 6 महिलाओं का नाम था। संगीता सिन्हा, अनिला भेंडिया।

श्री धर्मजीत सिंह :- देवेन्द्र यादव बोलेंगे, पाण्डेय जी बोलेंगे और आप महिलाओं को, हमारी बहनों को अवसर नहीं दे रहे हो। बुलवाईये न, अभी कोई नाम नहीं है। अभी भी क्या बिगड़ा है, बुलवा दीजिये।

सभापति महोदय :- चलिये, संतराम नेताम जी, अपनी बात रखिये।

डॉ. रश्मि आशीष सिंह :- ममता चन्द्रकार, अनिता शर्मा, हमारी तरफ से 6 महिलाओं का नाम था।

Uncorrected and unedited/Not for Publication
अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- नेता प्रतिपक्ष के पहले हमारी तरफ से महिलाएं बोलेंगी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनका नाम इसलिए काटा गया है देश की राष्ट्रपति एक महिला बनी है। इस सदन के किसी भी महिला सदस्य उस महिला को वोट नहीं दिया है इसलिए नाम काटा गया है। द्रौपदी मुर्म जी को राष्ट्रपति के रूप में किसी भी महिला ने वोट नहीं दिया है। इन्होंने तो पूरे आदिवासियों ने, वनवासियों ने नाराज कर दिया कि आदिवासी राष्ट्रपति को किसी ने वोट नहीं दिया इसलिए सबका नाम काटा गया है।

श्री संतराम नेताम (केशकाल) : माननीय सभापति महोदय, साहब धीरज रखिये, आप सीनियर लीडर हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- शुरू में एकाध को तो बुलवाना था।

श्री संतराम नेताम :- मेरे बाद तुरन्त उनका नाम आने वाला है। माननीय सभापति महोदय, विपक्ष के साथियों के द्वारा मंत्रिमण्डल के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, मैं उसका विरोध करता हूं और एक बात कहना चाहता हूं। पूरे प्रदेश में एक नारा चल रहा है- भूपेश है तो भरोसा है (मेजों की थपथपाहट) यह संतराम नेताम नहीं कह रहा है, कांग्रेस का कार्यकर्ता नहीं कह रहा है। यह नारा वह किसान, वह मजदूर, वह गरीब, वह बेरोजगार इस नारे को कह रहा है भूपेश है तो भरोसा है। वह इसलिए कह रहा है क्योंकि सभापति महोदय, आप भी बस्तर से आते हैं और मैं भी बस्तर से आता हूं। हमारे विपक्ष के बहुत सारे साथी कह रहे थे..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- परन्तु वह बहुत दु:खी हैं, आप भी दु:खी हो।

श्री संतराम नेताम :- वह तो इतने बड़े सीट में बैठे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप भी दु:खी हो।

श्री संतराम नेताम :- आप असत्य कथन कह रहे हो।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- बाहर बोल रहे थे कि मैं भी दु:खी हूं, दूसरी बार वाला हूं, मुझे मंत्री नहीं बनाया।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, आप मुझे यह बताईये आज हमारे माननीय उस पद पर बैठे हैं। तो मैं सबसे पहले कहना चाहता हूं कि हमारे माननीय पूर्व मुख्यमंत्री बस्तर प्राधिकरण का अध्यक्ष हुआ करते थे। हमारे बस्तर के अधिकार को छीनने का काम किया, लेकिन मैं आज इस सदन में कहना चाहता हूँ कि हम सौभाग्यशाली हैं, मेरे से क्या, मैं तो उपाध्यक्ष हूँ, पूरा मालदार तो हमारे अध्यक्ष महोदय जी हैं । बस्तर में क्या होना चाहिये, सड़क बनना है, नहीं बनना है, वहां स्कूल हो, नहीं हो, उसका फैसला पहले रमन सिंह जी करते थे । आज हमारे सभापति, माननीय अध्यक्ष जी करते हैं । यह हमारी भूपेश सरकार की ताकत है । यह उनकी सोच है, मैं सलाम करता हूँ । आज कहना चाहता हूँ कि ऐसे माननीय मुख्यमंत्री जी पूरे भारत देश में कोई नहीं होगा जो अपने पॉवर को दूसरे को

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

दे दे । यहीं से शुरूआत कर रहा हूँ । हमारी मुख्यमंत्री की सोच, इसीलिए कहते हैं कि भूपेश है तो भरोसा है । पूरे आदिवासियों को भरोसा है । सभापति महोदय, मैं एक बात कहना चाहता हूँ । इन्होंने बेरोजगारी की बात कह दी है । नौकरी नहीं लग रहा है, लोग पलायन कर रहे हैं, मैं आपको यह बात कहना चाहता हूँ । मैं इसी सदन में था । मैं वर्ष 2013 में आया, आप वर्ष 2013 से बस्तर का रिकार्ड देख लीजिए । मैं बस्तर की बात कह रहा हूँ । पूरे बस्तर के ऐसे आदिवासी बेरोजगार, उन्हें छत्तीसगढ़ में रोजगार नही मिल पा रहा था, छत्तीसगढ़ में नौकरी नहीं मिल पा रही थी, आज वही बस्तर के लोग आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, क्यों गये ? आपने काम क्यों नहीं दिया ? यह बोर गाड़ी में काम करने गये, क्यों गये ? आप रोजगार नहीं दे पा रहे थे । वही बस्तर के लोग पलायन इसलिए किये कि आपके सरकार में वह क्षमता नहीं थी । 15 साल में आपको मौका मिला । आप क्यों नहीं दिये ? सभापति महोदय, आज भी कहना चाहता हूँ कि मुझे दु:ख होता है । मैं एक आदिवासी आदमी हूँ । मेंरा साथी आज तमिलनाडु के जेल में बंद है । कई लोगों की मौत हो गई । सभापति महोदय, आखिर इसके लिये कौन जिम्मेदार है ? आप रोजगार की बात करते हैं । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने रोजगार का अवसर खोला । आज बस्तर में पुलिस की भती हो रही है, आरक्षक की भर्ती हो रही है, एक जिले में 300 की भर्ती हो रही है । बस्तर संभाग में 7 जिले हैं और 2100 उन बेरोजगारों को सरकारी नौकरी मिल रहा है । (मेजों की थपथपाहट) यह हमारी सरकार की ताकत है। एक बात और कहना चाहता हूँ, आपने 10 वीं और 8 वीं पास रखा । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को कहना चाहता हूँ, उनकी सोच को प्रणाम करता हूँ, पांचवी पढ़ने वालों को भी उन्होंने अवसर दिया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- प्रणाम किस तरह से कर रहे हो ? दूर से कि दण्डवत करोगे, चरण छूकर, किस तरह से प्रणाम करोगे ?

श्री संतराम नेताम :- दोनों तरह से हो सकता है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी करके बताना ।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करें ।

श्री संतराम नेताम :- मैं आज कहता हूँ कि मुख्यमंत्री जी की सोच कि वह पांचवी पास करने वाले आदिवासी भाई-बहनों को नौकरी दे रहे हैं । सभापति महोदय, आज पांचवी पढ़ने वाले पुलिस की नौकरी करेंगे । मैं हमारे मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ, हमारे यहां 975 सब इंन्सपेक्टर की भर्ती हो रही है, स्टॉफ नर्स की पूरी व्यवस्था हो रही है, पर्यवेक्षक महिला बाल विकास भी हुआ है, प्रोफेसर की भर्ती हो चुके हैं, उसकी पोस्टिंग चल रही है, व्याख्याता की भर्ती हो गई । अभी 10 हजार शिक्षकों की भर्ती होने वाली है । (मेजों की थपथपाहट) यह हमारी सरकार की सोच है । माननीय मुख्यमंत्री जी की बेरोजगारी को दूर करने की सोच है । सभापति महोदय, आप हमारे यहां से आते हैं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और इतनी जल्दी समाप्त करने के लिए कह रहे हैं । एक-एक घण्टा चन्द्राकर जी को दिये । 25 मिनट तो मुझे दीजिए ।

सभापति महोदय :- प्लीज, ऐसा नहीं ।

श्री संतराम नेताम :- सभी विभागों में बंफर भर्ती हो रही है । अब तो आपको तकलीफ होगी । इसलिए सभी बेरोजगार खुश हैं । इसीलिए कहते हैं कि भूपेश है तो भरोसा है । उसके बाद भी अविश्वास ? किस बात का अविश्वास ? माननीय सभापति महोदय, आपको कहना चाहता हूँ, आपने स्कूल बंद कर दिया है । केदार कश्यप जी थे, हमारे आदिवासी मंत्री थे..।

सभापति महोदय :- चलिये जल्दी समाप्त करिये ।

समय :
11:00 बजे

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, आप इतनी जल्दी समाप्त करने के लिए क्यों कह रहे हैं? आप कहेंगे तो मैं चुप हो जाता हूं।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, उनको बोलने दीजिए, वह अच्छा बोल रहे हैं, वह सीनियर विधायक हैं।

सभापति महोदय :- प्लीज, समाप्त कीजिए।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, एक बार तो मौका दीजिए। 23 बज रहे हैं और 12 बजे के बाद सरदार की बारी आयेगी। अभी जुनेजा नहीं हैं।

सभापति महोदय :- आप 5 मिनट में समाप्त कीजिए।

श्री संतराम नेताम :- अभी हमारी बारी है, 12 बजे के बाद कुलदीप जुनेजा की बारी आयेगी। माननीय सभापति महोदय, अगर हमारे भी अधिकार को हनन करेंगे तो फिर मैं तो बैठ जाता हूं। मैं कुछ pointed बात कर रहा हूं। अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाया गया? हमारी सरकार ने स्कूल बंद नहीं किया, इनकी सरकार ने स्कूल बंद किया था। 3000 स्कूल बंद हो गये। आज हमारी सरकार द्वारा वह आदिवासी परिवारों के लिए स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम का स्कूल खोला गया है। वह अंग्रेजी पढ़ेंगे तो इनको तकलीफ क्यों हो रही है? इस बात का अविश्वास है। हमारे माननीय कवासी लखमा जी ने एक बात कही वह बच्चे अभी L.K.G. U.K.G. में पढ़ेंगे, अमरजीत भगत क्या बोल रहे थे कि हमको 20 साल के बाद गौरव महसूस होगा। पर मैं एल.एल.बी. करने के बाद भी इंग्लिश नहीं जानता हूं। मैं एल.एल.बी. किया हूं। मुझे लज्जा महसूस होती है। आपके सामने इसी सदन में कोंनगूड़, बस्तर में पढ़ने वाले बच्चे अंग्रेजी में बात करेंगे। यह गौरव की बात है। सभापति महोदय, यह आरोप पत्र है, इसमें

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

स्वामी आत्मानंद स्कूलों का विरोध हुआ है। मैं यह कहना चाहता हूं कि किस बात का विरोध है। स्वामी आत्मानंद स्कूल में अगर कोई आदिवासी अंग्रेजी पढ़ रहा है तो किस बात का अविश्वास है।

माननीय सभापति महोदय, मैं तेदूंपत्ता के बारे में कहना चाहता हूं। आप मुझे थोड़ा समय देंगे तो मैं दो-तीन बात कहकर दो-तीन मिनट में समाप्त कर दूंगा। तेदूंपत्ता में इनकी सरकार में, वह आदिवासी, सामान्य इलाके में तो तेंदूपत्ता की तोड़ाई नहीं होती, हम बस्तर और सरगुजा के लोग ही तेंदूपत्ता तोडते हैं। मेरे पिताजी, मेरी माताजी भी तेंदूपत्ता तोडने जाते हैं। मैं उनके पीछे-पीछे तेंदूपत्ता तोड़ने जाता था। तेंदूपत्ता तोड़ने में कैसी परेशानी होती है, कैसे कांटा गढ़ता है।

सभापति महोदय :- चलिये, कृपया समाप्त करिये। 05 मिनट का सभी सदस्यों का चल रहा है।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, तेंदूपत्ता की बात छोड़ता हूं। मैं थोड़ा मुख्यमंत्री जी की बात बोल देता हूं। छत्तीसगढ़ में पहला मुख्यमंत्री है जिसके लिए आप लोगों ने अविश्वास प्रस्ताव लाया है। बस्तर में कौन ऐसा है, किसी के माई के लाल में दम है।

सभापति महोदय :- कृपया, समाप्त करिये।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, थोड़ा बोलने तो दीजिए न।

सभापति महोदय :- सहयोग करें।

श्री संतराम नेताम :- आप लोग बताईये, मैं बोलूं या न बोलूं।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति जी, हमारे वरिष्ठ नेता हैं, उनको 02 मिनट और दे दीजिए।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, किस माई के लाल में दम है तो बस्तर में जाकर रात में रूकते हैं।

सभापति महोदय :- प्लीज, सहयोग करें।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, कौन सा ऐसा मुख्यमंत्री है जो नक्सल प्रभावित एरिया में।

सभापति महोदय :- माननीय श्री धरमलाल कौशिक जी।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, 02 मिनट में समाप्त करता हूं। मैं अंतिम बात कर लेता हूं। मैं मुख्यमंत्री जी के बारे में बात करना चाहता हूं। किसी में दम है जो बीजापुर, सुकमा, कोंटा में जाकर रात में रूके। आदिवासी के यहां भोजन करने में किसी में दम है और यदि दम है तो माननीय भूपेश बघेल जी में दम है जो आदिवासियों के परिवार के साथ खाना खा रहे हैं।

सभापति महोदय :- चलिये, समाप्त करिये।

श्री संतराम नेताम :- ऐसे व्यक्ति और ऐसी सरकार के खिलाफ में अगर कोई अविश्वास प्रस्ताव लाता है तो प्रदेश की जनता देख रही है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- प्लीज, सहयोग करें।

श्री संतराम नेताम :-माननीय सभापति महोदय, आप हमारे इलाके से आते हैं। मैं उधर आऊंगा तो फिर आपको मौका नहीं दूंगा। मैं भी उधर आऊंगा।

सभापति महोदय :- प्लीज, समाप्त करिये। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, मुझे 02 मिनट बोलने दीजिए। क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव किस बात का लाया गया।

सभापति महोदय :- आपकी सारी बात आ गई है।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, फिर वही बोल रहे हैं। अरे, जनता से हाथ मिलाते थे, वहां पर कोई सुरक्षा नहीं थी। आदिवासी के घर में खाना खाना खाते थे। इसलिए कहते हैं कि कका है तो भरोसा है। आज मैं वीडियो देख रहा था। छोटा बच्चा भी कह रहा था कि कका है तो भरोसा है। सभापति महोदय, कका इसलिए कह रहे हैं कि अपनापन लगता है।

सभापति महोदय :- चलिये, कृपया समाप्त करिये।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, फिर वही बात। (हंसी) मैं फिर उधर आऊंगा तो फिर आपका समय काटूंगा। अगर आप बोलेंगे तो मैं चुप हो जाता हूं। अगर कहीं गलत बोल रहा हूं तो कहिये। मैं बोलूं या न बोलूं?

सभापति महोदय :- आपकी सारी बात आ गई है। कृपया समाप्त करिये।

श्री संतराम नेताम :- सरकार के खिलाफ में अविश्वास प्रस्ताव आया है, आप बोलने दीजिए न। मैं गलत बोल रहा हूं तो आप बता दीजिए।

सभापति महोदय :- 12.00 बजे तक खत्म करना है।

श्री संतराम नेताम :- एकात बार तो बस्तर के आदिवासियों को मौका मिलता है।

सभापति महोदय :- प्लीज, प्लीज समाप्त कीजिए। माननीय नेता जी।

श्री संतराम नेताम :- चलिये, ठीक है। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए धन्यवाद।

समय :
11.05 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आपने माननीय मोहम्मद अकबर जी का जो बयान था कि मैंने सस्पेंड नहीं किया है, उस पर एक व्यवस्था दी थी। आपने माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी को याद किया था कि वह वक्तव्य देंगे। वह वक्तव्य आ जाये फिर चर्चा शुरू हो जाये।

अध्यक्ष महोदय :- कौन-सा वक्तव्य देने की बात हुई?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मोहम्मद अकबर जी ने कहा कि मैंने सस्पेंड नहीं किया है, स्वास्थ्य मंत्री ने सस्पेंड किया है।

अध्यक्ष महोदय :- छोड़िये, अब टाईम हो गया है।

श्री अजय चंद्राकर :- आपने ही कहा था कि संसदीय कार्यमंत्री आयेंगे तो वक्तव्य देंगे। आपने ही व्यवस्था दी थी।

अध्यक्ष महोदय :- आप इस तरह से समय खराब न करो। प्लीज।

श्री अजय चंद्राकर :- आप ही ने व्यवस्था दी थी। मैंने नहीं दी थी।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, माननीय धरमलाल कौशिक जी।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, केंद्र की, राज्य की या पंचायत की सरकार हो। सरकार बनाने के लिये जो वायदे करते हैं तो उसकी व्यवस्था भी की जाती है और उस व्यवस्था के अनुरूप सरकार चलाई जाती है। लेकिन 3.5 साल में यह सरकार, खोखले वायदों की, खोखली योजनाओं की और खोखली नीतियों की सरकार है। इसके कारण केवल हमारा अविश्वास नहीं, बल्कि इस सरकार ने जनता का विश्वास भी खो दिया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब सरकार चुनाव के पहले घोषणा करती है उसको हम वचन पत्र बोले, घोषणा पत्र बोले या संकल्प पत्र बोले, जनता उन्हीं कारणों से उम्मीद के साथ वोट देती है। सरकार के लिये यह आवश्यक है कि जनता से वोट लेने के बाद वह उन वायदों को निभाये। लेकिन पूरे प्रदेश में जिस प्रकार की परिस्थिति बनी हुई है, कि जिन वायदों के, जिन घोषणाओं के बल पर यह सरकार आयी है। इन्होंने अपने घोषणा पत्र में 36 मुख्य बिंदु रखे थे और उसके अंतर्गत 250 बिंदु। उन्होंने बमुश्किल से घोषणा पत्र में किये वायदों में से 6 वायदे आधे-अधूरे लागू किये हैं लेकिन वे जवाब देते हैं कि हमने इतने वायदे पूरे कर दिये हैं। आज दुर्भाग्य की बात यह है कि जो घोषणा पत्र बनाने वाले है, जो घोषणा पत्र समिति के अध्यक्ष रहे हैं, वह इस सदन में नहीं है और घोषणा पत्र की जो क्रियान्वयन समिति बनी है, वह उस कमेटी में नहीं है। बाकी को तो अपना घोषणा पत्र याद ही नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से यह सरकार चल रही है और वास्तविक में चाहे युवाओं की, महिलाओं की, नौजवानों की और किसानों की, जो अपेक्षाएं रही है और घोषणा पत्र में जो बिंदु डाले गये थे, वे आज भी अधूरे हैं। हम देख रहे हैं कि 3.5 साल में क्या स्थिति बनी है। लगातार बिगड़ती हुई कानून व्यवस्था। प्रदेश में, एक गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ की तर्ज पर बहुत सारे विषयों में चर्चा किये हैं, हर एक अपराध में। आज हमारे युवा उपेक्षित है और उसके साथ जिस प्रकार से महिलाओं के वोट लिये गये लेकिन आज शराब के कारण, नशे के कारण, प्रदेश की क्या स्थिति बनी हुई है? यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। इसलिये जो वायदे किये गये, चाहे वह धान के 2500 रूपये समर्थन मूल्य की बात हो, उसके साथ में जो बेरोजगारों की बात हैं। मैं समझता हूं कि यदि इसका पूरा हिसाब लगायेंगे तो आज उनकी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राशि कितनी हो गयी है। जितने विभाग चल रहे हैं, उनमें ऐसा एक विभाग नहीं है, जहां भ्रष्टाचार नहीं हो रहा है। आज आप लगातार समाचार पत्रों में और विधान सभा के प्रश्नों में देख रहे हैं कि सारे विभागों में भ्रष्टाचार का आलम छाया हुआ है।

मानननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से हमने कहा कि अविश्वास की बात है। जब अविश्वास की बात कहते हैं तो सरकार के मंत्री का इस सरकार के प्रति विश्वास नहीं है तो यह सरकार आम जनता का विश्वास कैसे जीतेगी ?जिस प्रकार से 4 पन्नों का आरोप लगाया गया। आप लोगों ने उन 4 पन्नों के आरोप में देखा है कि जो आरोप लगाये गये हैं कि सरकार आज उस आरोप को काटने की स्थिति में नहीं है। यहां पर जो तथ्य दिये गये कि उन्होंने क्यों त्यागपत्र दिया है? और इसलिए हम इस सरकार में देख रहे हैं कि अंतरद्वन्द की स्थिति है। जब मुख्यमंत्री के प्रति सरकार के मंत्री का विश्वास न हो, जब सरकार के मंत्री का एक दूसरे मंत्री के प्रति विश्वास न हो, यदि विधायक मंत्री के ऊपर आरोप लगाये कि जिस प्रकार से ट्रांसफर में लेनदेन हुआ है, मंत्री को त्यागपत्र देना चाहिए, निकालना चाहिए। यदि विधायक आरोप लगाये कि मुख्यमंत्री बनने के लिए, मंत्री मेरी हत्या करवाना चाहते हैं। यदि मंत्री, अधिकारी के ऊपर आरोप लगाये, कलेक्टर के ऊपर आरोप लगाये और जब विधायक मंत्री के ऊपर प्रश्नचिन्ह खड़ा करे तो जब उस दल के विधायकों, मंत्रियों का इस सरकार के प्रति विश्वास नहीं है तो यह सरकार आम जनता का विश्वास कैसे जीतेगी? इसलिये साढ़े तीन सालों में इस सरकार ने जो कार्य किये हैं चाहे हम योजना की बात करें, उनके क्रियान्वयन की बात करें, इन योजनाओं और क्रियान्वयन से स्पष्ट हो गया है कि इस सरकार ने जनता का विश्वास खो दिया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां किसानों के बारे में बड़ी-बड़ी बातें होती हैं। यह किसानों की सरकार है और हमने किसानों के लिए किया है। चाहे आज गाड़ी की खरीदी हो रही हो, चाहे आज बाजार के बूम होने की बात करते हैं कि इस राज्य सरकार ने राशि दी है, लेकिन इस राज्य सरकार ने आने के पहले यह कहा था, इस सरकार ने कहा था कि हम किसानों का कर्जा माफ करेंगे। आज भी 91 हजार किसान ऐसे हैं जिन किसानों का कर्ज माफ नहीं हुआ है। आज भी उनके यहां नोटिस भेज रहे हैं। हम जब 2 सालों के बोनस की बात करेंगे। तो आज तक सरकार दो सालों का बोनस नहीं दे पायी और उसकी चर्चा करना भी बंद कर दिया है। मुख्यमंत्री जी प्रदेश में भेंट मुलाकात के कार्यक्रम में जा रहे हैं। यहां पर औचक निरीक्षण की बात आई थी, वह भेंट मुलाकात में बदल गई और खुले आम भेंट मुलाकात में आरोप लगाये जाते हैं कि इस सरकार में बिना 10 प्रतिशत, 12 प्रतिशत कमीशन के काम नहीं दिया जाता है। उसका समाधान एक अधिकारी को ट्रांसफर करने से नहीं होगा। यह पूरे प्रदेश में इसी प्रकार की स्थिति है। उस समय भेंट मुलाकात में कौन करे, कैसे करे ? इसके कारण में माननीय मुख्यमंत्री जी को उसको प्रतिबंधित करना पड़ा। क्योंकि एक जगह नहीं, लगभग सभी जिलों में आवाज आ रही थी। इस भेंट मुलाकात के दौरान जो समस्याएं आईं, आज तक उन समस्याओं का निदान नहीं हुआ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं हमारे किसानों की बात कर रहा था। हमारे बहुत सारे मित्रों ने एक तरफ खाद की समस्या उठायी है। माननीय चौबे जी, इस बात की चर्चा कर रहे थे कि पिछले समय में आप लोगों ने इतना खाद बांटा। हम लोगों ने 11 लाख मेट्रिक टन खाद बांटा। यदि आप लोगों ने 11 लाख मेट्रिक टन खाद बांटा और आज भी यदि डबल लॉक में यूरिया है, डी.ए.पी. है तो इसका मुख्य कारण केन्द्र सरकार की उदारता है। आपको केन्द्र सरकार ने जो अवसर दिया, आपको खाद दिया, लेकिन आप उस खाद को भी नहीं बांट पा रहे हैं। आपका खाद डबल लॉक में है, लेकिन आप उसको भेज नहीं पा रहे हैं । किसानों को खाद उपलब्ध नहीं है। आज लोगों को 265 रूपये की यूरिया यह किसान हितैषी सरकार के कार्यकाल में 500-600 रूपये में खरीदनी पड़ रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, विधानसभा के जवाब में है, सहकारी सोसायटी में जो खाद जानी चाहिए लेकिन सहकारी सोसायटी के बदले में निजी दुकानदारों को खादें गयी है। निजी दुकानदारों को जो खाद का प्रतिशत दिया गया है, वह लक्ष्य से अधिक है, सहकारी सोसायटी को जो दिया गया है, वह लक्ष्य से कम है। यह खाद की मात्रा दी गयी है। इसका प्रमुख कारण आज खाद की जो मुनाफाखोरी बढ़ी है, जो कालाबाजारी हो रही है, यह केन्द्र से कम खाद देने के कारण नहीं बल्कि आपकी नीति के कारण है जिसके कारण आज किसानों को दिक्कतें आ रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब वे विपक्ष में थे तो आवाज उठाते थे। एक नवंबर से धान खरीदी होनी चाहिए। आज हमारे बहुत सारे किसान समर्थन मूल्य पर धान की बिक्री नहीं कर पा रहे हैं। सरकार उनके धान की खरीदी नहीं कर रही है। सरकार खरीदी से बचना चाह रही है। इसलिए एक दिसंबर की तारीख तय की है। जब आपने एक नवंबर से धान खरीदी की बात की तो एक दिसंबर से खरीदने की क्या आवश्यकता है। हमारे जो छोटे किसान है, हमारे जो लघु किसान हैं, हमारे सारे लघु किसान जिनको समर्थन मूल्य मिलना चाहिए, वे उससे वंचित हो रहे हैं। 15 साल भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही लेकिन रकबा की कटौती नहीं की। आपने मेड़ के नाम पर रकबा की कटौती की, पेड़ के नाम पर रकबा की कटौती की, पंप के नाम पर रकबा की कटौती की है। आपने लाखों किसानों की रकबा कटौती कर उनको धान बेचने से वंचित किया है। यह किसान हितैषी सरकार है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से पी.डी.एस. का मामला है। छत्तीसगढ़ को पी.डी.एस. के मामला में कहें तो हमारा यह राज्य भोजन के अधिकार का कानून बनाया। कानून बनाने के बाद, केन्द्र ने लागू किया और अन्य राज्यों ने भी लागू किया। उस समय छत्तीसगढ़ की स्थिति पूरे देश में प्रथम रही। आखिर आज पी.डी.एस. का क्या हुआ ? अभी वर्ष 2022 में N.F.S.A (National food security Act) की एक रिपोर्ट आई है। वर्ष 2022 की जो रिपोर्ट आई है, आज पी.डी.एस. के मामले में छत्तीसगढ़ 16 वें स्थान पर है। हमारे बहुत सारे जिले दंतेवाड़ा, सुकमा, बीजापुर में ट्रांसपोटिंग की इतनी शिकायतें मिली है कि जो ट्रक दुकानों में पहुंचनी चाहिए, वह दुकान के बजाय कहीं निजी दुकानों में पहुंच जाती है। राईस मिल में पहुंच जाती है, यह दंतेवाड़ा का प्रमाणिक है। कई जिलों का यह मामला आया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आखिर यह गरीबों के चावल पर डाका क्यों हो रहा है ? आज गरीबों को चावल नहीं मिल पा रही है। हम जहां पी.डी.एस. सिस्टम में देश में प्रथम स्थान में थे, कांग्रेस की सरकार आने के बाद साढ़े तीन साल में 16 वें स्थान पर हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा यह जो प्रदेश है, यहां पर बड़ी संख्या में अनुसूचित जनजाति समाज हैं। डॉ. रमन सिंह के द्वारा 15 साल में इस समाज के लिए बहुत सारे कार्य किए गए। वनोपज खरीदी से ले करके चरण पादुका से ले करके उनको आत्मनिर्भर बनाने का भी लेकिन...।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे बस्तर के लोगों को 8 नंबर का जूता दे दिये थे इसलिए उसको कोई पहन नहीं पा रहे थे । आज हमारे सुकमा जिला वनमंडल में 40-45 करोड़ रूपये बंटा है । 4000 रूपये हिंदुस्तान में सबसे ज्यादा देने वाले मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ सरकार के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी हैं । केवल सुकमा वनमंडल में 40-45 करोड़ ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वे अपना छोड़कर हर बात में, हर विषय में खड़े होते हैं । उनके लिये आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी है ।

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप 5-6 करोड़ रूपये बांट रहे थे ।

श्री अजय चंद्राकर :- आप थोड़ा सा यह बता दें कि सुकमा में साढ़े 3 साल में कितने पैसे का निवेश आया ?

अध्यक्ष महोदय :- अब आप इस तरह से बातें क्यों कर रहे हैं ?

श्री कवासी लखमा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सुकमा के लोगों को आंध्रप्रदेश में भगाने का काम किसने किया था ? आप यह बताईये कि तारमेटला में किसने घर जलाया था ? जगरगुंडा, गोलापल्ली, आमापल्ली के पूरे आदिवासी लोगों के स्कूल बंद किये थे । हम माननीय मुख्यमंत्री जी को बधाई देते हैं कि उन्होंने हमारे आदिवासी लोगों के लिये स्कूल चालू किया है और आज आंध्रप्रदेश के लोगों ने पलायन किया था । हमारे अधिकारियों ने जाकर उनको वापस लाने के लिये सर्वे किया है । बुरकापाल के 120 लोगों को जेल भेजे थे, अभी वे छूट गये । उनके घर बर्बाद हो गये, उनको किसने जेल भेजा था ? बस्तर के आदिवासियों को बर्बाद कर दिया गया था । हमारे मुख्यमंत्री जी देवगुड़ी बना रहे हैं । वहां का कुपोषण खत्म हो रहा है । दंतेवाड़ा का महुआ 116 रूपये में बाहर जा रहा है उसमें आपको पेट दर्द हो रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2018 में यह सरकार बनी और बनने के बाद आदिवासियों की जो बात कर रहे हैं, जनजातियों की बात कर रहे हैं । आदिवासियों के खिलाफ में अपराध की घटनायें भी बढ़ी हैं । अभी जो एक मामला आया कि कांग्रेस के एक वरिष्ठ मंत्री कहते हैं कि पेसा एक्ट के लिये विभाग की अनुशंसित प्रेसी केबिनेट में जाने से पहले ही बदल दी गयी । मुख्यमंत्री

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जी पेसा कानून की बात कर रहे थे । मैं उम्मीद कर रहा था कि पेसा कानून लेकर आयेंगे करके लेकिन उसके प्रेसी को ही बदल दिये । पेसा कानून बना हुआ है ।

मानानीय अध्यक्ष महोदय, कुल-मिलाकर इस सरकार ने केवल आदिवासी समाज को छलने का काम किया है, धोखा देने का काम किया है । हमें सिलगेर की घटना याद है, हम लोगों ने उस समय यह मांग की थी कि मुख्यमंत्री जी यदि व्यस्त हैं तो गृहमंत्री जी को जाना चाहिए और वहां जाकर देखना चाहिए कि 3 आदिवासियों की पुलिस की गोली से मौत हो जाती है लेकिन उसके बाद में इस सरकार के मंत्री के पास में समय नहीं है कि ये आदिवासियों की बात तो करते हैं लेकिन वहां जाकर उनके परिवार से मिलें, उनको देख लें इसके लिये समय नहीं है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एनसीआरबी की रिपोर्ट है । मैंने आदिवासियों के अपराध के बारे में कहा कि वृद्धि हुई है । आदिवासी समाज की एनसीआरबी की रिपोर्ट है कि वर्ष 2018 में 388, वर्ष 2019 में 427, वर्ष 2020 में 502 आदिवासियों के खिलाफ घटनाओं से संबंधित है । हम वर्ष 2018 के मुकाबले देखेंगे तो वर्ष 2020 में अनुसूचित जाति के खिलाफ आपराधिक घटनायें बढ़ी हैं । वर्ष 2021 और 2022 में तो यह आंकड़ा और बढ़ गया है । लगातार अपराध में वृद्धि हो रही है आखिर इसका जवाबदार कौन है ? 30 से ज्यादा, हम पण्डो जाति की बात करते हैं । राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र संरक्षित जाति जिसको बचाने के लिये जो प्रयास होना चाहिए, उनकी चिंता होनी चाहिए । लगातार हम लोगों ने बलरामपुर और जशपुर की घटना देखी है । हम लोगों ने कोरबा की घटना देखी है । 30 से ज्यादा पण्डो जाति के कुपोषण के कारण मृत्यु हो गयी । कुपोषण की बड़ी-बड़ी बातें होती हैं । केंद्र सरकार के द्वारा राशि दी जाती है, राज्य सरकार के द्वारा राशि दी जा रही है । डीएमएफ फंड से राशि दी जा रही है लेकिन आखिर उस राशि का उपयोग क्या है और किसके लिये है ? हमारे जो संरक्षित जनजाति हैं, यदि इन्हें नहीं बचा पाये और यदि इनकी मृत्यु हो रही है, इनकी संख्या वैसी भी कम है, यह निश्चित रूप से हम यह कह सकते हैं कि कुपोषण के लिए जो राशि जानी चाहिए, वह भ्रष्टाचार की बलि चढ़ रही है और उनको बचाने में यह सरकार अक्षम साबित हुई है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज बाकी चीजों में सरकार पीछे है। हम यदि केन्द्रीय योजनाओं की बात करेंगे तो केन्द्रीय योजनाओं में पंचायत में तो हमने देख लिया, मुझे प्रधान मंत्री आवास योजना में बहुत ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है। मोहम्मद अकबर जी बोल रहे थे कि 600-700 करोड़ रूपये हम लोग कर्जा ले रहे हैं, लेकिन 18 लाख मकान के लिए वे कितना कर्जा ले रहे हैं और कितने मकान मैचिंग ग्रांट की उसमें बनेंगे, आपको भी मालूम है। ये जो पुराने मकान ढह गये हैं, उसके लिए ले रहे हैं और उसके भी कर्जे के संबंध में लगातार पंचायत मंत्री के द्वारा प्रयास हुआ, लेकिन फाइल वापस आ गयी, जिसका मुख्य रूप से उन्होंने हवाला दिया कि मैं अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पा रहा हूं, केन्द्र की योजना है उसे देने में हम लोग विफल रहे हैं। आज हम लोगों ने कुछ देर पहले पी.एच.ई. की चर्चा की। केन्द्रीय योजनाओं में पी.एच.ई. की क्या स्थिति है?

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

30वें नंबर पर, 31वें नंबर पर हैं। 74 लाख लोगों के घर में टेप नल के माध्यम से पानी पहुंचाना है। 6 लाख, 8 लाख तक पहुंच रहा है। सितंबर, 2023 में योजना पूर्ण करनी है। आप तो ¼ में नहीं पहुंचे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के क्षेत्र में जो रिपोर्ट आयी और रिपोर्ट आने के बाद हम देश में 28वां और 30वां नंबर पर हैं। इस प्रदेश में शिक्षा में आप पीछे हो रहे हैं। आप आवास में पीछे हो रहे हैं। आज पानी में पीछे हो रहे हैं। स्वास्थ्य की भी लगभग वही स्थिति है। बजट का खर्च नहीं कर पा रहे हैं। बजट की राशि खर्च नहीं कर पाये। स्वास्थ्य के क्षेत्र में यह स्थिति है और यदि हम यह कहें कि पहले नंबर पर प्रदेश यदि किसी में है तो वह शराब में है। पहले नंबर पर केवल शराब में है। बाकी सारी योजनाओं में सरकार फिसड्डी साबित हो रही है।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, मैं प्रतिपक्ष नेता जी को थोड़ा याद दिलाना चाहूंगा कि पुन्नी मेला में शराबबंदी का जो निर्णय है, यह कांग्रेस सरकार ने लिया और उसके कारण आज छत्तीसगढ़ के लोग खुश है। जो मेला होता है, उसमें 15 दिन की शराबबंदी है। इनके समय में लगातार शंकराचार्य जी तक ने बोला और वहां शराबबंदी नहीं हुई थी।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नक्सल घटनाओं के बारे में बोलना चाहूंगा। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद में नक्सलियों का मनोबल बढ़ा हुआ है। नक्सलियों का मनोबल जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी, तब अंतिम छोर में चले गया था। आज क्या स्थिति है?

श्री कवासी लखमा :- किसी भी बात में जब बोलना है तो ढंग से बोलना चाहिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- आज नक्सली सड़कों के किनारे पर्चा फेंककर जा रहे हैं। नक्सल गतिविधियां लगातार बढ़ रही हैं। सड़कों को उखाड़ रहे हैं। काम करने वाले लोगों का अपहरण कर रहे हैं। उपकरण जलाये जा रहे हैं और केवल एक जगह नहीं। यहां मुख्यमंत्री जी यह बताते हैं कि 2 तहसील में नक्सली हैं। 2 जिले में नक्सली हैं और जब दिल्ली में जाते हैं तो बताते हैं कि नक्सल प्रदेश है। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये स्वीकार करते हैं कि नक्सल प्रभावित है और यहां नक्सल 2 तहसीलों में सिमटने की बात करते हैं। अभी कुछ दिन पहले गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट आयी है, जिसमें देश में जो नक्सल प्रभावित राज्य हैं, वहां पर साल-दर-साल कम हो रही है, लेकिन छत्तीसगढ़ में क्या स्थिति है ? अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में 2019 में 263, 2020 में 315, 2021 में 255 घटनाएं हुई हैं और 2019 में 77, 2020 में 111, 2021 में रिपोर्ट के मुताबिक 101 लोगों की नक्सल घटनाओं में मौत हुई है । हम जब दूसरे प्रदेश की बात करेंगे, जिस परिप्रेक्ष्य में केन्द्र सरकार के गृहमंत्रालय ने रिपोर्ट जारी किया कि साल दर साल नक्सली वारदातें कम हो रही हैं । मैंने छत्तीसगढ़ का बताया । आंध्रप्रदेश, झारखंड, बिहार महाराष्ट्र और ओडिशा में लगातार नक्सली घटनाएं और मौतें कम हो रही हैं लेकिन छत्तीसगढ़ में नक्सल घटनाएं अधिक हो रही हैं । मौत के आंकड़े भी बढ़े हैं, इन तीन सालों में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नक्सलियों ने 833 वारदातों को अंजाम दिया और 289 मौतें हुई हैं जो पूरे देश में सर्वाधिक हैं । यह मैं नहीं बोल रहा हूं, यह गृहमंत्री द्वारा नक्सल को लेकर दी गई रिपोर्ट में है । इससे पता चलता है कि हमारा प्रदेश कहां पर है ।

अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के आने के बाद धर्मान्तरण एवं धार्मिक उन्माद की घटनाएं बढ़ रही हैं । आप कवर्धा की घटना से कोई अछूते नहीं है कि जिस प्रकार से भगवा ध्वज को रौंदने का काम किया गया, रौंदने के बाद गिरफ्तारी उनकी होनी चाहिए जिन्होंने ध्वज को गिराया और रौंदा । लेकिन कार्रवाई किसके ऊपर हुई ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नेता जी, बाद में पता चला कि भाजपा के ही कुछ लोग थे । भाजपा के कुछ लोगों ने यह काम किया, ऐसी जानकारी मिली थी ।

श्री धरमलाल कौशिक :- कार्रवाई किसके ऊपर हुई ? वहां के सांसद के ऊपर एफ.आई.आर. की गई । पूर्व सांसद के ऊपर अपराध पंजीबद्ध हुआ । भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को एवं अन्य लोगों को अपराधी बनाया गया लेकिन जहां पर इतना साहस और हिम्मत कि जो रौंदने का काम कर रहे हैं उनको गिरफ्तार करने का नहीं है,बाकी को गिरफ्तार करने का है ।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता जी आप जानकारी प्राप्त कर लीजिए, रौंदने का काम करने वाले 29 लोगों को जेल भेजा गया बाद में बड़ी मुश्किल से जमानत हो पाई है । सबसे पहली गिरफ्तारी उनकी हुई है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं गया था, गिरफ्तारी कैसे हुई है, कब हुई है यह भी मुझे मालूम है । इसके लिए वहां धरना और प्रदर्शन करना पड़ा । धरना प्रदर्शन के बाद में भी वन साइडेड गिरफ्तारी हो रही थी । यह तो बाद में उनकी गिरफ्तारी हुई है, आप तारीख देख लेंगे । तारीख देख लीजिएगा कि पहले किसकी गिरफ्तारी हुई है । अध्यक्ष महोदय, केवल इतना ही नहीं बल्कि हिंदुओं के देवी-देवताओं के स्थल हैं उनको भी अपमानित करने और खंडित करने का काम इस सरकार में हो रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- इस तरह की बातें यहां न करें, अच्छा होगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- दोरनापाल में दुर्गा मंदिर को क्षतिग्रस्त और हनुमान प्रतिमा को खंडित करने का काम, सरगुजा संभाग में जशपुर ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इन लोगों को इस तरह की लड़ाई कराने की पूरी ट्रेनिंग है । आर.एस.एस. से ट्रेनिंग मिली हुई है, समाज में वैमनस्यता फैलाने का ही काम करते हैं । दूसरा कोई काम नहीं है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- ये खंडित करने की जो बातें कर रहे हैं, यह कोई सरकार थोड़े ही इस चीज को करवा रही है ।

डॉ. शिव कुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, इनका समय खत्म हो गया है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- गौमाता की रक्षा हम लोग कर रहे हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, विश्व के सबसे बड़े शिवलिंग को तोड़ने की घटना हुई है। हिंदुओं और आदिवासियों के मंदिर और देवस्थलों के साथ जो अनावश्यक छेड़छाड़ हो रही है, निश्चित रूप से सरकार उनके खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय बाकी लोगों को अपमानित करने का काम हो रहा है, कहीं न कहीं संरक्षण है । तुष्टिकरण की राजनीति से कांग्रेस माहौल बिगाड़ रही है । जशपुर की घटना आपको मालूम है, जब वहां से दुर्गा विसर्जन के लिए जुलूस निकाल रहे थे तो एक जीप के द्वारा श्रद्धालुओं को कैसे रौंदा गया । रौंदने के बाद यह बात सामने आई कि उनको कहां से संरक्षण मिल रहा है । अध्यक्ष महोदय, कोरबा में असामाजिक तत्वों ने भगवान शिव के मंदिर में तोड़फोड़ की, शिवलिंग पर स्थापित नाग को उखाड़कर फेंक दिया । हनुमान जी की मूर्ति में लगी चांदी की आंखें निकाल लीं और वहीं रखी भागवत गीता और रामचरित मानस को जला दिया गया।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी, यह कांग्रेस सरकार ने करवाया है क्या? (व्यवधान)

श्री यू.डी. मिंज :- आदरणीय नेता जी, मैं आपको एक घटना के बारे में बताना चाहूंगा। आप जशपुर की घटता बता रहे थे तो मैं आपको बताना चाहता हूं। कुनकुरी में गणेश जी की मूर्ति को खंडन किया गया था। उसमें आपके ग्रुप के एक कृष्णा यादव पकड़ा गया था, जिन्होंने गणेश जी की मूर्ति का खंडन किया था।

(पक्ष के सदस्यों के द्वारा नारे लगाये गये।)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कानून व्यवस्था की स्थिति में हमारे मोहम्मद अकबर जी बता रहे थे कि उस समय क्या स्थिति थी और इस समय क्या स्थिति है? काननू व्यवस्था की क्या स्थिति है, यह तो हमने देख लिया है। आज पूरे प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति चौपट हो गई है। जिस प्रकार से आप आम आदमी को छोड़ दीजिये, जो सरकार के खिलाफ आवाज उठायें, उनके खिलाफ में पुलिस कार्रवाई करेगी। चाहे वह जनता हो, राजनीतिक दल हो, चाहे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ पत्रकार हो। इस सरकार में पत्रकारों के ऊपर में लगभग 100 से ज्यादा अपराध दर्ज किये गये हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, बस्तर के पत्रकार कमल शुक्ला से पिटाई का मामला हुआ। चाहे पत्रकार मृगेन्द्र पाण्डेय हो, पत्रकार निलेश शर्मा हो, सरगुजा के जितेन्द्र जयसवाल की गिरफ्तारी का मामला हो, चाहे वरिष्ठ पत्रकार सुनिल शर्मा को जेल भेजने का मामला हो। यह सरकार भी पत्रकारों के साथ आतंकवादियों जैसा व्यवहार कर रही हैं। यह सरकार पत्रकारों के लिए एक कानून बनाने वाली थी। एक पत्रकार को गिरफ्तार करने गाजियाबाद गये थे। जो भी पत्रकार सरकार के खिलाफ में आवाज उठाये, वह आज छत्तीसगढ़ की सरकार में सुरक्षित नहीं हैं तो हम आम आदमी की सुरक्षा की क्या बात करेंगे? पत्रकारों के ऊपर में लगभग लगभग 110 एफ.आर.दर्ज किये गये हैं। हम आजादी की अभिव्यक्ति की

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बात करते हैं। छत्तीसगढ़ में लगभग आजादी की अभिव्यक्ति समाप्त हो रही है। हमारे किसी मित्र ने कहा कि पत्रकारों को ..।

अध्यक्ष महोदय :- आप और कितना समय लेंगे?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नेता जी, अध्यक्ष जी आपसे कुछ पूछ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- और कितना समय लेंगे?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी रात बाकी है, बात बाकी है। अब यह तो अविश्वास प्रस्ताव का मामला है।

अध्यक्ष महोदय :- आपने कहा था कि आप अपने समय कम करेंगे। आप दोनों ने स्वीकार किया था।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष जी, यह अविश्वास प्रस्ताव जैसा नहीं लग रहा है।

एक माननीय सदस्य :- अध्यक्ष महोदय, स्वतंत्रता दिवस की सुबह आने वाली है।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोगों को 15 मिनट दे सकता हूं। इसलिए जल्दी कहिये। थोड़ा जल्दी करिये, इतना निवेदन है।

श्री धरमलाल कौशिक :- हाँ, ठीक है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष जी, यह अविश्वास प्रस्ताव जैसा कुछ नहीं लग रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- आप फिर मत बोला करो। अब ज्यादा रात हो गई, हमारा दिमाग खराब होते जा रहा है। प्लीज।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष जी, जो अनाचार घटनाओं की चर्चा हमारे साथियों के द्वारा की गई है। जो अनाचार की घटनाएं हैं, वह यह कि डोंगरगढ़ के केन्द्रीय विद्यालय में 14 साल की छात्रा के साथ दुष्कर्म के बाद बेरहमी से उसकी हत्या कर दी गई। जशपुर के दिव्यांग केन्द्र में दिव्यांग बच्चों के रेप की शर्मनाक घटना हुई और सरकार सोती रहीं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- कांकेर में आपकी सरकार में क्या हुआ था?

अध्यक्ष महोदय :- वह तीन साल पहले की घटनाएँ। वह सारी घटनाएँ पहले की हैं।

श्री अरूण वोरा :- वह सारी बातें अकबर जी ने बता दी है।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह सरकार आने के बाद में प्रदेश की युवा और जनता अवसादग्रस्त हो गई है। 24,500 से ज्यादा लोगों ने आत्महत्या की है, जिसमें 572 से ऊपर लोग हमारे किसान हैं, 9,000 से ऊपर युवा हैं। आखिर इन परिस्थितियों का निर्माण क्यों हो रही है? अब तो एक नई संस्कृति गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ में सामूहिक हत्या हो रही है। अध्यक्ष महोदय, आप रिकार्ड निकलवा करके देख लीजिये कि इस प्रदेश में बच्चों को लेकर अग्नि स्नान कर रहे हैं । बच्चों को लेकर के नदी में डूब रहे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

हैं। परिवार के परिवार आत्महत्या कर रहे हैं। यह जो अवसाद की स्थिति निर्मित हुई है निश्चित रूप से यह प्रदेश के लिए चिंता का विषय है।

श्री अजय चंद्राकर :- नेता जी। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक सर्वे के अनुसार छत्तीसगढ़ का हर पांचवां आदमी डिप्रेशन में है।

अध्यक्ष महोदय :- यह सब कोरोना के बाद हुआ है।

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबके घरों से पत्नियों के फोन आने चालू हो गये हैं। सबके घर से फोन आने चालू हो गये हैं। मेरे घर से अभी फोन आया है।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी हमारे बहुत सारे मित्रों ने रेत की बात की कि रेत की क्या स्थिति है ?

अध्यक्ष महोदय :- तो रेत की बात हो गई न। जब आपके मित्रों ने कह दी तो फिर आप क्यों कह रहे हैं ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं उसी बात को बता रहा हूं कि आज कांग्रेस के कार्यकर्ता कर्मचारियों को पीट रहे हैं और पुलिस को पीट रहे हैं।

श्री गुलाब कमरो :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट। रेत की बात हमारे...।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वसूली की कार्रवाई चल रही है और इस प्रकार से यह सरकार आंख-कान बंद कर के बैठी हुई है। 8 दिसम्बर, वर्ष 2021 को इंडिया टुडे ने कानून-व्यवस्था को लेकर अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की है। उस रिपोर्ट में छत्तीसगढ़ नीचे से चौथे स्थान पर है और इन्होंने जो पर्यटन की बात की है तो छत्तीसगढ़ पर्यटन में सबसे नीचे है। मैंने आपको बता दिया है कि यह इंडिया टूडे रिपोर्ट है आप जाकर उसको थोड़ा-सा पढ़ लीजिए। तो कानून-व्यवस्था की स्थिति कहां पर है, मुझे इसको बताने की जरूरत नहीं है। जिस प्रकार से सरकार के संरक्षण में यहां पर माफियाओं का बोलबाला है और इस बोलबाले के साथ में सरकार चल रही है। सभी प्रकार के माफियाओं पर आई.टी. के छापे पड़ रहे हैं। 30 स्थानों पर आई.टी. का छापा पड़ा और 30 स्थानों में छापा पड़ने के बाद में और भी बहुत सारे उजागर होने वाले हैं कि उनको किसका संरक्षण है। यह बताने की जरूरत नहीं है। मैंने 30 स्थानों के छापों के बारे में कहा। लगभग...।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी अर्पिता मुखर्जी के दूसरे फ्लैट से 15 करोड़ रूपये नगद और 3 किलो सोना और बरामद हो गया है।

अध्यक्ष महोदय :- वह यहां की थोड़ी हैं। वह यहां की रहने वाली थोड़ी न हैं।

श्री विनोद सेवन लाल चंद्राकर :- नान घोटाला हुआ है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तो दावा कर दें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से इनको सरकार का संरक्षण प्राप्त है और मैं यह कह सकता हूं कि यदि हम इस सरकार की बात करें तो इस ढाई-ढाई साल वाली सरकार की पूरे डेढ़ साल तो अभी सरकार को बचाने में और यह जो काला धंधा करने वालों को बचाने में सरकार का समय निकल गया तो यह सरकार जनता के लिए कब काम करेगी ? इतनी बहुमत की सरकार है लेकिन बहुमत की सरकार होने के बाद भी आये दिन इस सरकार को दिल्ली परेड करनी पड़ रही है। अभी यह फिर दिल्ली जाने वाले हैं। दिल्ली परेड कराने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है ? तो यदि सरकार अपनी कुर्सी बचाने में लगी रही और ऐसे लोगों को बचाने में लगी रही तो फिर उनके पास जनता के लिए कब समय है ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से यह सरकार चल रही है उससे आज यहां पर छत्तीसगढ़ में माफियाओं का बोलबाला चल रहा है और खुले आम लोगों को लूटने का काम हो रहा है। अभी बहुत सारे लोग मिले थे जिनमें से कुछ को नोटिस दी गई और कुछ को नोटिस नहीं दी गई। साढ़े 3 साल के बाद में डिपो वाले, कोलवाशरी वालों के यहां छापा पड़ा और छापा पड़ने के बाद में, यह छापा उन पर कार्रवाई करने के लिए नहीं है बल्कि यह उनको डराने, धमकाने, चमकाने और वसूली करने का एक तरीका है। जिस प्रकार से यहां पर अवैध वसूली और अवैध कारोबार चल रहा है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- क्या वह सब आपके लोग हैं ? अब कहिये न।

श्री अजय चंद्राकर :- हां, हमारे लोग हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- यदि वह हमारे लोग होते न तो। वह आपके लोग हैं और आपको ज्यादा मालूम है कि वह किसके लोग हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सरकार विज्ञापनजीवी सरकार है। मैं ऐसा इसलिए कह सकता हूं कि जितनी योजनाएं हैं और यदि हम उन योजनाओं की बात करेंगे तो यह बिना बजट की योजनाएं हैं। पता नहीं उसका क्रियान्वयन कितना हुआ है लेकिन विज्ञापन के माध्यम से लोगों को केवल यह मालूम है कि योजनाएं चल रही हैं और यह जो योजनाएं चल रही हैं तो मैं कह सकता हूं और मैं आपको इस सरकार का एक उदाहरण बताना चाहूंगा। मैंने शिक्षा के बारे में बताया कि क्या स्थिति है ?

अध्यक्ष महोदय :- मुझ पर भी दया कीजिए ।

श्री धरम लाल कौशिक :- स्वामी आत्मानंद स्कूल के बारे में बहुत चर्चा हुई।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा कि मुझ पर भी दया करिए ।

श्री धरम लाल कौशिक :- मैं स्वामी आत्मानंद स्कूल के बारे में बताता हूं कि इन्होंने कैसे आदेश जारी किया है । महानदी अटल नगर, नया रायपुर का दिनांक 24.6 का आदेश है । उसमें लिखा है कि राज्य शासन एतद् द्वारा शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला का है । मैं कुछ स्कूलों का उदाहरण बताता हूं,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सब स्कूलों का नहीं बताऊंगा कि कितने आदेश जारी किये हैं । शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, तिलकनगर, बिलासपुर, विकासखण्ड बिल्हा, लाल बहादुर शास्त्री, बिलासपुर, अम्बेडकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बिलासपुर । लगभग 15-16 स्कूल स्वीकृत किये हैं और स्वीकृति की कंडीशन क्या है ? तालिका एक में दिए गए पदों का स्थानीय संसाधन निधि से निर्मित करने हेतु जिला कलेक्टर को अनापत्ति इस शर्त पर प्रदान करता है कि इन पदों पर होने वाले स्थापना व्यय, वेतन भत्ते आदि की पूर्ति हेतु राज्य शासन द्वारा किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता या अनुदान नहीं दी जाएगी। आप किसके भरोसे में स्कूल खोल रहे हैं ? उसके लिए आपके पास बजट की व्यवस्था नहीं है । उस स्कूल के लिए आप कलेक्टर को बोल रहे हैं कि यदि आप अनुमति ले रहे हैं तो आपकी जवाबदारी है कि आप उस स्कूल को चलाएंगे, आपकी जवाबदारी है और उसमें दिया गया है कि तालिका क्रमांक 1 प्राचार्य का पद प्रतिनियुक्ति के लिए आरक्षित है । अत: इस पद पर समिति द्वारा संविदा नियुक्ति नहीं की जाएगी, अन्य पदों पर प्रतिनियुक्ति अथवा संविदा नियुक्ति से भरा जा सकता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, जब कलेक्टर का ट्रांसफर हो जाएगा तो उन बच्चों का क्या होगा ? इस प्रकार का स्कूल खोलकर वाहवाही लेने की आवश्यकता नहीं है ।

अपनी पीठ खुद ही थपथपाते रहिए ।
जनता को झूठे ख्वाब दिखाते रहिए ।
यह हरगिज न भूलो कि यह बापू की अमानत है ।
बुरा किया यदि तो नतीजा भी भयानक है ।
न किसी न जागीर है, न किसी की बपौती है ।
नेतागिरी भी एक भयानक कसौटी है ।

केवल नेतागिरी करने के लिए ये स्कूल खोल रहे हैं । कोई संस्थान खोली जाती है, कोई स्कूल खोल रहे हैं, मैं तो पहली बार देख रहा हूं कि बिना बजट के आप स्कूल खोल रहे हैं, झूठी वाहवाही लूटने का प्रयास कर रहे हैं ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- अब बापू याद आ रहे हैं ।

श्री देवेन्द्र यादव :- बापू का नाम लिये ।

श्री धरम लाल कौशिक :- हम लोग बापू का नाम हमेशा लेते हैं । बापू विराजमान हैं । बापू का नाम हम लोग ले रहे हैं, बापू के रास्ते पर हम लोग चल रहे हैं, लेकिन कांग्रेस भटक गई है । कांग्रेस भटक गई है, उसके कारण अवसाद की स्थिति बन रही है ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आपको पता है कि बापू के हत्यारे कौन थे ?

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नरवा, गरूआ, घुरूआ, बारी की बहुत बात हुई है । हम लोग क्षेत्र में जाकर देख रहे हैं और हम लोग इस बात को चौबे जी से लगातार बोल चुके हैं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कि हम लोग आपके मॉडल गौठान को देखना चाहते हैं । हम हर सत्र में यह चर्चा करते हैं, लेकिन आजतक सरकार की स्थिति नहीं है कि वह 5-10 मॉडल गौठान की सूची दे सके और हम उसको जाकर देख लें । बिना बजट की योजनाएं हैं ।

मानननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले सत्र में यह जानकारी दी गई थी कि 24 हजार करोड़ रूपए की लागत से सड़क, पुल-पुलिया का निर्माण किया जा रहा है । आपने पूरे छत्तीसगढ़ को देख लिया और पूरे छत्तीसगढ़ में खोजकर आ जाएंगे कि यह कार्य कहीं पर संपादित नहीं हो रहे हैं । जो सड़कें बनाई गई थीं, यह सरकार पौने चार साल में उस सड़क की मरम्मत कराने की स्थिति में नहीं है । अभी दो-तीन पहले सड़कों को लेकर हाईकोर्ट के द्वारा फटकार लगाई गई है । यह स्थिति इस सरकार की है ।

अध्यक्ष महोदय :- अब खत्म कर दीजिए ।

एक माननीय सदस्य :- हो गया, हो गया।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग नहीं कह सकते, ये आप लोग नहीं कह सकते, मैं कह सकता हूं।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धान की बात हो रही थी।

अध्यक्ष महोदय :- उस पर सब लोगों ने कह दिया है।

श्री धरम लाल कौशिक :- मैं उस पर केवल बताना चाहूंगा कि..।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा न कि राज्यपाल के नाम से मेरे हाथ बंधे हुए हैं, आप मुझ पर दया कर दीजिये।

श्री धरम लाल कौशिक :- आज किसानों की जेब में जो पैसा जा रहा है, वह केन्द्र सरकार का पैसा है। केन्द्र सरकार चावल के माध्यम से राशि मिल रही है। सन् 2018 से लेकर धान खरीदी की गई है, तो 65 हजार करोड़ रूपये केन्द्र सरकार के द्वारा दिया गया है और उसमें मात्र 23 हजार करोड़ रूपये राज्य का हिस्सा है। मुख्यमंत्री जी बड़े शान से कहते हैं कि मैं 25 रूपया धान की कीमत दे रहा हूं। मुख्यमंत्री जी, उस दिन 25 सौ रूपये की बात आ गई थी, इसलिए अब कहने की आवश्यकता नहीं है। ना 25 सौ रूपया देन में सफल हुए ना 15 क्विंटल धान खरीदने में सफल हुए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, केन्द्र की बात आती है, केन्द्र की राशि की बात आती है कि कितनी राशि दी गई है ? मैं आपको बताना चाहता हूं सन् 2004-05 से 2013-14 तक राज्य को केन्द्रीय करों में हिस्से की राशि दी गई है। सन् 2004-05 से 2013-14 तक जब यू.पी.ए. की सरकार थी, तो राज्य को 47 हजार करोड़ रूपये प्राप्त हुए थे और सन् 2014-15 से लेकर 2020-21 तक 1 लाख 27 हजार 669 करोड़ रूपये राज्य को प्राप्त हुए हैं। यदि हम हिसाब लगायेंगे तो इन 10 वर्षों में यह तीन गुना ज्यादा है, जो केन्द्र के द्वारा राज्य को राशि दी गई है।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, आप समाप्त कर दीजये न।

श्री धरम लाल कौशिक :- बहुत सारे मुद्दें हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- अग्रवाल जी, आप उस समय चर्चा में नहीं थे। बात यह हुई थी कि आप एक घंटे में से आप अपने सदस्यों को दे रहे हैं। अग्रवाल जी, आप नहीं सुन रहे हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- बहुत सारे मुद्दे हैं। आपने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव पर हमारे कि किस बात का अविश्वास है ? तो मैं आपको बताना चाहता हूं कि ऐसे राज्य हैं, जहां भ्रष्टाचार के दीमक लग चुके हैं, मैं आपको कुछ उदाहरण देना चाहता हूं :-

"यहां तहजीब बिकती है, यहां फरमान बिकते हैं,
जरा तुम दाम तो बोले यहां ईमान भी बिकते हैं।"
छत्तीसगढ़ की यह स्थिति बनाकर रखे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, डी.एम.एफ. फण्ड के बारे में बात है। प्रति वर्ष लगभग 2 हजार करोड़ रूपये की राशि खनिज न्यास के रूप में जिलों को प्राप्त होती है। लेकिन डी.एम.एफ; की क्या स्थिति है ? बंदरबांट चल रहा है। आज सबसे ज्यादा जो खतरे में है, वह छत्तीसगढ़ की जमीन है। चाहे वह भू-माफिया हो, चाहे अन्य हो, छत्तीसगढ़ के जमीनों की नीलामी हो रही है। उस दिन 10 साल और 20 साल का एक विधेयक लाया गया, इस विधेयक में जमीन के उनकी हो जायेगी, स्थानान्तरण हो जायेगा। वास्तव में यदि सबसे अधिक कोई संकट में है तो छत्तीसगढ़ की हमारी धरती है, हमारी भूमि, जमीन संकट में है। मैंने उस दिन बताया था कि अधिकारियों के द्वारा..।

अध्यक्ष महोदय :- आप नहीं समझ पा रहे हैं, अभी आप बहुत समय लेंगे ? हैलो, हैलो।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो शासकीय जमीन के पट्टे दिए जा रहे हैं, जो सरकारी जमीन है, उसके पट्टे दे रहे हैं और उसका हस्तान्तरण हो रहा है। एक तहसीलदार को सस्पेण्ड किया गया है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, क्या है कि नेता प्रतिपक्ष का पौने 3 घंटे भाषण का रिकार्ड है।

अध्यक्ष महोदय :- रिकार्ड है, मगर आपने वादा किया था। बोल दीजिये कि वादा खिलाफी कर रहे हैं। आप लोगों ने कहा था कि एक घंटे में से 5-5 मिनट उनको दे दीजिये, 45 मिनट हम रखेंगे। जब यह वादा हो गया है तो फिर क्या दिक्कत है।

श्री धरम लाल कौशिक :- अच्छा 12 बजे..।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि आप मौका देंगे तो मैं इस सरकार खिलाफ श्रीनिवास तिवारी के रिकार्ड को तोड़ना चाहता हूँ । मध्यप्रदेश विधान सभा में उनका सबसे लम्बा भाषण है । आप मौका भर दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- अभी तो अंदर बात करके आये हैं, आप लोग जल्दी खत्म कर देंगे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बिल्हा की बात बताई थी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आपने कहा था ना कि जल्दी खत्म कर देंगे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- हॉ, जल्दी खत्म कर दूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- करिये ना, प्लीज ।

श्री धरमलाल कौशिक :- हमारे जो पूर्व नेता प्रतिपक्ष रहे तीन घण्टे बोले, मैंने कहा कि मैं जल्दी खत्म कर दूंगा । माननीय अध्यक्ष महोदय, कोरिया जिला पटवारी हल्का नंबर 10, ग्राम सागरपुर, खसरा नंबर 442/2 वहां पर पंचायत भवन खेल मैदान, उस जमीन को वहां के पटवारी रिकार्ड में अंकित है, उसको बदलकर दूसरे व्यक्ति को पट्टे में दिया गया । माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से अवैध अतिक्रमण और शहरों में और गांवों में, मैं केवल बिलासपुर की बात करूं तो 80 से अधिक अवैध कॉलोनी वहां है । लगातार जो अवैध कालोनिया बनाई जा रही है... ।

अध्यक्ष महोदय :- 12 बजने में सिर्फ 4 मिनट कम है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे जो स्कूल है, जहां बच्चों को भोजन दिया जाता है, उसको भी ये लोग नहीं छोड़ें हैं । उसमें लगभग 300-400 करोड़ के घोटाले हैं । वन विभाग के जो मनरेगा में कार्य हुये हैं, उसमें जो अनियमितता हुई है, अनियमितता होने के बाद में अधिकारियों के ऊपर में जो कार्यवाही होनी थी, यहां विधान सभा में घोषणा करने के बाद में अभी तक कार्यवाही नहीं हुई है ।

समय :

11:56 बजे **(सभापति महोदय (श्री सत्यनारायण शर्मा) पीठासीन हुये)**

माननीय सभापति महोदय, जिस प्रकार से कैम्पा का दुरूपयोग किया गया, उसी प्रकार से मनरेगा की राशि का दुरूपयोग किया जा रहा है । जिन अधिकारियों, कर्मचारियों के ऊपर कार्यवाही होनी चाहिये, लेकिन सरकार में इतनी हिम्मत नहीं है कि कार्यवाही कर सके । माननीय सभापति महोदय, कोविड का समय आपदा को अवसर में बदलना, पूरे प्रदेश में लगभग यही स्थिति रही है । आपको एक उदाहरण रायपुर का दिया गया । रायपुर का उदाहरण ही नहीं दिया गया, मंत्री जी ने कहा कि मैं दिखवा लूंगा, लेकिन आज तक पता नहीं दिखवाये कि नहीं दिखवाये । कोरोना से मृत व्यक्ति को जो 50 हजार रूपये देना था, सभापति महोदय आंकड़े भी अलग-अलग आ रहे हैं । मृत व्यक्तियों की 31 जनवरी 2022 की स्थिति में 13,853 और इसी अवधि में 19,300 मृत व्यक्ति के परिजनों को मुआवजा की राशि 50 हजार रूपये वितरित किया गया । यदि उनके परिवार को गया है तो कोई बात नहीं है । जानी चाहिये, मैं उससे सहमत हूँ । माननीय सभापति महोदय, अभी मुख्यमंत्री जी ने 10 हजार शिक्षकों की घोषणा की है । 10 हजार शिक्षकों की घोषणा में एक नई उम्मीद जगी है । लेकिन वर्ष 2019 में आपने जो 14,500 शिक्षकों की भर्ती की जो प्रक्रिया हुई । वर्ष 2019 से लेकर वर्ष 2022 तक आप 14,000

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

शिक्षकों की भर्ती नहीं कर पाये । पता नहीं किस प्रायवेट एजेंसी से जो सर्वे कराया कि 0.6 बेरोजगारी का दर बताया । इस सरकार में अपने ही घोषणा, अपने ही विज्ञापन, उसके सत्यापन के लिये तीन साल, चार साल का समय लगे, यह 10 हजार शिक्षकों की भर्ती कब होगी, जब 14 हजार का आप नहीं कर पाये । माननीय सभापति महोदय, जिनको अभी तक नियुक्ति नहीं मिली है, कई लोग स्वर्ग सिधार गये । मैं आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी को कहना चाहूंगा कि ऐसे जो परिवार हैं, चयनित रहे हैं । ऐसे चयनित परिवार के एक व्यक्ति को शिक्षा की भर्ती के आधार पर नौकरी मिलना चाहिये । उनकी गलती नहीं है, यह सरकार की गलती के कारण से है । टेबलेट खरीदी में भ्रष्ट्राचार, दवाई और उपकरण खरीदी में घोटाला, रैपिड एंटीजन में घोटाला, भारत पर्यटन यूनिकोड जैसी संस्थाओं को ब्लैक लिस्ट किया, उसको भी इन्होंने 25 करोड़ का दिया। एम्बुलेंस की निविदा में भारी भ्रष्टाचार हुआ है। जशपुर जिले में 12 करोड़ की सामग्री दवाई खरीदी, एक्सपायरी डेट की दवाई जो किसी के उपयोग में नहीं आई। अरपा-भैंसाझार बड़ी परियोजना है। उस परियोजना में जो उसके नक्शे बनाये गये, उसमें जमीन अधिग्रहण की गई और अधिग्रहण करने के बाद जिनको मुआवजा राशि मिलनी चाहिए वह मुआवजा राशि नहीं मिली। उसकी लाईनिंग चेंज कर दी गई, नक्शा चेंज हो गया। जिन लोगों की जमीन अधिग्रहण नहीं हुई है उनको करोड़ों रुपये का भुगतान हो गया। यह प्रमाणित है। कलेक्टर को जांच के आदेश दिये गये हैं, अभी तक रिपोर्ट नहीं आई है। माननीय सभापति महोदय, सोसायटियों में भर्ती घोटाला, कस्टम मिलिंग में घोटाला, अभी जिस प्रकार से कस्टम मिलिंग की आम चर्चा बाजार में है। जो लेन-देन की बात हो रही है और लेन-देन की बात में वह पैसे कैसे वापस आ रहा है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता साड़ी खरीदी में घोटाला। जो केन्द्र के द्वारा राशि दी गई है, 01 लाख से ऊपर साड़ी खरीदी गई। लेकिन जो साड़ी खरीदी गई, वह उनको 50-60 रुपये की साड़ी दे दिये। इसको ले करके उन्होंने प्रदर्शन किया।

महिला बाल विकास मंत्री (श्रीमती अनिला भेंडिया) :- 50-60 रुपये में तो रूमाल भी नहीं आता है, आप साड़ी की बात कर रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- उन लोगों ने प्रदर्शन किया कि यह साड़ी कैसी है। माननीय सभापति महोदय, बोधघाट परियोजना की बात आई है। चौबे जी अभी भी बोल रहे हैं कि उसको बनायेंगे। बनाने की जिस बात का उल्लेख किया गया उस समय बृजमोहन अग्रवाल जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- नेता जी, चौबे जी संपने में बनाते हैं, वास्तविकता में थोड़ी बनाते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, बोधघाट परियोजना को ले करके जब चौबे जी और मुख्यमंत्री जी खड़े हो करके बात किये कि हम इसको बना करके रहेंगे। तब उस समय डॉ. रमन सिंह और बृजमोहन अग्रवाल जी ने खड़े हो करके कहा कि आप इसको बनाने को तो छोड़ दीजिए, आप इसका डी.पी.आर. बना करके दिखा दीजिए। साढ़े 03 साल हो गये और साढ़े 03 साल होने के बाद में डी.पी.आर. तो छोड़ दीजिए, उसका अभी सर्वे का काम चल रहा है। माननीय मुख्यमंत्री जी का बयान

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आया कि उनकी सहमति के आधार पर बनायेंगे। मुख्यमंत्री जी के एक नहीं, अनेकों ऐसे बयान आ रहे हैं। चेलेन्ज करके घोषणा करते हैं और घोषणा करने के बाद में जब implementation की बात आती है तब यह कहा जाता है कि सहमति ले करके बनायेंगे। पहले ही सहमति ले लेते, उसके बाद में आप घोषणा करते। स्कूल में बर्तन व फर्नीचर घोटाला। सारंगढ़ बरमकेला में स्वामी आत्मानंद स्कूल में गुणवत्ताविहीन फर्नीचर की शिकायतें लगातार आ रही हैं। प्री-स्कूल किट में भ्रष्टाचार। मैं आपको केवल एक-एक लाईन में बता रहा हूं। जिस प्रकार से उद्योगों की बड़ी-बड़ी बात हुई है। उद्योगों की बड़ी-बड़ी बात होने के बाद में सरकार के द्वारा उद्योगों से 185 से अधिक एम.ओ.यू. 03 वर्षों के लिये किये गये। उसमें अनुमानित था कि 94 हजार करोड़ रुपये के विनिवेश होना है। कितने का विनिवेश हुआ, 1500 करोड़ रुपये का विनिवेश हुआ। उससे रोजगार कितने को मिलना था, 1 लाख 20 हजार लोगों को रोजगार मिलना था, 2500 लोगों को रोजगार मिला। आखिर हमारी औद्योगिक नीति है और उस नीति के अंतर्गत में आपका विनिवेश आयेगा और विनिवेश के बाद में रोजगार मिलेगा, केवल कहने के लिए है। हमारे औद्योगिक क्षेत्र की क्या स्थिति है? जो सिंचाई के रकबे में वृद्धि की बात है तो उसको चौबे जी, ...। जब जोगी जी की सरकार थी तो उस समय सिंचाई की क्षमता 23 प्रतिशत थी। सिंचाई की क्षमता को 23 प्रतिशत से 36 प्रतिशत करने का काम 15 सालों में हुआ। सरकार के द्वारा यह कहा गया कि हम सिंचाई को डबल करेंगे।

सभापति महोदय :- नेता जी, यह बातें तो आ चुकी है। समय भी काफी हो गया है, समय का ध्यान रखेंगे तो बड़ी कृपा होगी।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, केन्द्र सरकार के द्वारा गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत लगातार चावल दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री जी ने घोषणा किया कि मेरे द्वारा भी दिया जायेगा। लेकिन जब देने की बारी आई तो केन्द्र सरकार के द्वारा जो इस देश के 80 करोड़ लोगों को चावल दिया जा रहा है, लेकिन छत्तीसगढ़ एक अपवाद है, जहां पर गरीबों को चावल नहीं मिल रहा है। अंत्योदय कार्ड धारकों को चावल दिया गया है लेकिन बाकी कार्डों में यह दिया गया है कि 4 सदस्यों से ऊपर होंगे या 5 सदस्यों से ऊपर होंगे तो चावल दिया जायेगा। आखिर इस गरीब कल्याण योजना का चावल कहां है? यह गरीबों को क्यों नहीं मिल रहा है?

माननीय सभापति महोदय, अभी मनरेगा की बात आयी थी। मुख्यमंत्री जी ने साजिश के तहत मनरेगा का काम रोकवाया। मैं नहीं बोल रहा हूं, यह आपके मंत्री बोल रहे हैं कि साजिश की गयी और साजिश करके पूरी गर्मी में मनरेगा के काम को रूकवाने का प्रयास किया गया। जिसमें लगभग 1200 करोड़ रूपये की राशि जो गरीबों के खातों में जानी थी, उनको उस राशि से वंचित किया गया।

माननीय सभापति महोदय, पंचायतों को जो 500 करोड़ रूपये की राशि जानी थी, वह राशि भी नहीं गयी। मुख्यमंत्री समग्र योजना, इसमें मंत्री के ऊपर में अधिकारी है और अधिकारी की कमेटी। उसके

कारण जो पंचायतें हैं, उसमें जो कार्य होना चाहिये, जिससे गांव के लोग लाभान्वित होते, उससे वंचित करने का काम किया गया।

मानननीय सभापति महोदय, आज यहां प्रदेश के पूरे कर्मचारी, चाहे मंत्रालय के कर्मचारी हो, शिक्षक हो या अन्य जो, पहले सब लोगों को क्रमोन्नति का, वेतन वृद्धि का, डी.ए. का आश्वासन दिया गया था। आज गुजरात और उड़ीसा सरकार ने केन्द्र के बराबर 34 प्रतिशत महंगाई भत्ता (डी.ए.) दिया है। गुजरात और उड़ीसा की सरकार दे रही है लेकिन हम छत्तीसगढ़ में कहां पर है? उनकी क्रमोन्नति और प्रमोशन क्यों नहीं हो रहे हैं? हम यहां पर 14-17 प्रतिशत डी.ए. में अटके हुए हैं। आखिर उनकी समस्या का समाधान कौन करेगा? आज लगातार समाचार पत्रों में छप रहा है कि बच्चे मायूस होकर जा रहे हैं। लोग तहसील, कलेक्ट्रेट और मंत्रालय में जा रहे हैं, सब जगह काम बंद है। सब लोगों ने पांच दिन का अवकाश लिया है।

समय :

12.08 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय :- आप मान जाईये। अब हमारी भी तो सुन लीजिये। आप भी अध्यक्ष रहे हैं, हमारी भी तो सुन लीजिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, जी। आप जब बोलेंगे मैं बैठ जाऊंगा।

अध्यक्ष महोदय :- हमारी भी सुन लीजिये और कुछ नहीं कह रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, आप जब आदेश करेंगे मैं बैठ जाऊंगा।

अध्यक्ष महोदय :- आदेश की बात नहीं है। हमारी बात सुन लीजिये।

ग्रामोद्योग मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम बचपन से एक कहावत सुनते आ रहे थे कि जब नेता जी बोलना शुरू करते हैं तो घड़ी मत देखिये कैलेण्डर देखिये, तारीख बदलती है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रभु 12 बज चुके हैं।

श्री गुरू रूद्र कुमार :- तारीख बदल गयी है।

अध्यक्ष महोदय :- राज्यपाल जी का आदेश, हम सब के लिये बाध्यता है। राज्यपाल जी का आदेश है कि 27 तारीख तक समाप्त करना है।

श्री धरमलाल कौशिक :- अब तो समाप्त हो गया, तो मुख्यमंत्री जी कल बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- फिर तो खत्म ही हो गया।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, विधान सभा कल बुला लीजिये। कल एक दिन के लिये सत्र बढ़ा दीजिये। यदि 12 बजे के बाद खत्म हो गया तो।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- मुख्यमंत्री जी के भाषण तक ही बढ़ेगा। आप समाप्त कर दीजिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपको एक दिन का सत्र बढ़ाना पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदय :- आप खत्म कर दीजिये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नेता जी, कुछ जम ही नहीं रहा है। पढ़ रहे हो पर उसका कुछ औचित्य नहीं है। समय खराब कर रहे हो उसके अलावा कोई काम नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से सरकार की योजनाएं चल रही हैं। जिस प्रकार से नीतियां बनाई गईं हैं और जिस प्रकार से यहां पर लूटने का काम किया जा रहा है यहां पर पीठ थपथपाने का काम किया जा रहा है।

"अनपढ़ी किताब की जिल्दें ही संवारते रहे
वर्तमान को डूबोकर भविष्य बिगाड़ते रहे,
कर्ज पर कर्ज लें, चला रहे जो घर अपना,
मूर्खता को अपनी बुद्धिमानी बता रहे हैं।"

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार के खिलाफ में न केवल हम लोगों का अविश्वास है, बल्कि प्रदेश की जनता का अविश्वास है। इस सरकार को एक मिनट भी कुर्सी में बने रहने का अधिकार नहीं है। इसलिए इस अविश्वास प्रस्ताव को पारित किया जाये और इस सरकार को बर्खास्त किया जाये। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्। (मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विपक्ष के द्वारा सरकार के प्रति अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी, माननीय मोहन मरकाम, माननीय पुन्नूलाल मोहले, माननीय रविन्द्र चौबे जी, माननीया श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू जी, माननीय धनेन्द्र साहू जी, माननीय श्री शिवरतन शर्मा जी, माननीय श्री धर्मजीत सिंह, माननीय डॉ. शिवकुमार डहरिया, माननीय केशव प्रसाद चन्द्रा, माननीय अमरजीत भगत जी, माननीय अजय चन्द्राकर जी, माननीय मोहम्मद अकबर जी, माननीय सौरभ सिंह जी, माननीय देवेन्द्र यादव जी, माननीय नारायण चंदेल जी, माननीय शैलेश पाण्डे जी, माननीय रजनीश कुमार सिंह जी, माननीय संतराम नेताम जी, माननीय धरमलाल कौशिक जी सभी साथियों ने कहा। विपक्ष के लोग अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में और सत्तापक्ष के लोगों ने अविश्वास प्रस्ताव के खिलाफ में वक्तव्य दिया। मैं सभी साथियों को धन्यवाद् देता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको सबसे ज्यादा धन्यवाद् देता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- भईया, मेरी क्या गलती हो गई ?(हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, संख्या बल कम होने के बावजूद भी संभवत: इक्के दुक्के विधायक बचे होंगे जो नहीं बोले होंगे। इस पर बचे सारे लोग बोले हैं। वह आखिरी वाली बसपा की विधायक, शायद वही भर नहीं बोल पायी है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लहूट पहूट के बोले हैं। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी तो पेपर को पता नहीं, उसी-उसी पेपर को दो-तीन बार उठाकर बोले हैं। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, उसमें थोड़ा नंबर-वंबर डालकर आया करें। क्या है, आप उसी-उसी पेपर को दो-तीन बार पढ़ देते हैं तो कई लोग ...।

श्री संतराम नेताम :- इसीलिये आपने उलट पुलट बोला।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे नेता जी ने टी.एस. सिंहदेव साहब को देखा है। वह तीन घण्टे बोलते थे और वह 4 बार उसी पेपर को पढ़ते थे।

श्री रविन्द्र चौबे :- भई, यह कोई परम्परा डालने की चीज थोड़ी है। वह नेता प्रतिपक्ष थे तो उन्होंने 4 बार पढ़ दिया। माननीय आप तो इधर भी बैठे हुए है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या बृजमोहन जी, हम लोगों से बदला ले रहे हैं ? (हंसी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे भाषण का सार यह था कि विपक्ष के साथियों ने हमसे जनता से किये हुए वायदों का स्मरण दिलाया। वह स्मरण दिलाया जो खुद वायदों का पालन करें। इसी पवित्र सदन में कुछ देर पहले या दो घण्टे पहले इस सदन में माननीय विपक्ष के सदस्यों, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी के द्वारा किये गये वायदे के बारे में बताना चाहूंगा कि आपको आश्वस्त किया था कि आप मेरे भाषण में कटौती कर दीजिए, लेकिन हमारे सदस्यों को बोलने दीजिए। जो खुद अपने वायदों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं, वह दूसरे को वायदों का...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह वायदा नहीं, आश्वासन था।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जुमला था।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इन लोगों से गिरगिट भी लज्जित होगा।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हां जैसे शपथ नहीं, यह स्थिति है। मतलब जब आपने कहा कि नहीं और सदस्यों को बोलने नहीं दिया जायेगा तो माननीय अजय चन्द्राकर जी उठकर आये और माननीय नेता जी से बोलवाए कि आप ऐसा बोल दीजिए। अश्वस्थमा मारा गया, नरवा कुंजरो, लेकिन माननीय नेता प्रतिपक्ष जी तैयार नहीं थे, लेकिन उनके दवाब के चलते उनको बोलना पड़ा। उनको दिल में पत्थर रखकर बोलना पड़ा, क्योंकि उनको मालूम है कि उनके साथ बहुमत नहीं है। उसके कारण से उनको दवाब के चलते स्वीकार करना पड़ा। यह खुद वादा नहीं निभा सकते, वह दूसरों से वादा पूरा कराने के लिए अपनी बात 12 बजे से अभी तक रख रहे हैं। 12 बज गया। माननीय अध्यक्ष महोदय,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय बृजमोहन जी ने भाषण शुरू की और मैं समझता हूं कि जो प्रथम वक्ता हैं और जो बृजमोहन जी को जानते हैं, हम लोगों ने मध्यप्रदेश में सुना है, इस सदन में भी सुना है, विपक्ष में रहे तब भी सुना है, सत्ता में रहे तब भी सुना है, आप आसंदी में बैठकर उम्मीद कर रहे थे कि आज कुछ नया बृजमोहन जी देंगे, लेकिन बृजमोहन जी जो आसंदी से टिप्पणी आई, मैं समझता हूं आज तक आपकी वह टिप्पणी नहीं आई होगी जो इस सदन में आज अध्यक्ष जी ने आपको टिप्पणी दी। ऐती के मन धार भोथरा गे कहात रिहिस।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, आपसे भय खा रहे थे, इसलिए ऐसी टिप्पणी की।

श्री भूपेश बघेल :- हम सब अध्यक्ष जी के संरक्षण में हैं। अध्यक्ष जी हमसे क्यों कोई भय खायेंगे। भय, दहशत की बात कहकर दहशत फैलाने का काम अजय जी करते हैं। बृजमोहन जी, पता नहीं आजकल किसके संगत में हैं। अध्यक्ष महोदय, आंकडों के मामले में उनका कोई मुकाबला नहीं है लेकिन आज फेक रहे थे। देश में 29 राज्य हैं, हमारे छत्तीसगढ़ के लिए वह 36 वां स्थान आया। इतना तो मत फेकिए। वह फेकने का काम दिल्ली वालों का है। लेकिन आप ऐसा मत फेकिए कि चल न पाए। आपने फेकने का काम किया और एक से एक आंकड़े दिए। गोबर 150 करोड़ रूपए का खरीदे, 110 करोड़ रूपये का विज्ञापन में खर्च हुआ। मैं तो चकरा गया कि 110 करोड़ रूपये का विज्ञापन कहां से आ जायेगा। जब बजट ही कम है, इतना कैसे आ जायेगा ? अध्यक्ष महोदय, जब मैंने अधिकारियों से पूछा, निकाला तो हम लोग जो पहली बार बजट रखे हैं, इनके कार्यकाल के जो कर्ज थे, उसको पटाने के लिए 275 करोड़ रूपए रखे थे, उसमें 100 करोड़ रूपए इनके विज्ञापन का पटाए। माननीय अध्यक्ष महोदय, उसमें अब आंकड़े में जाऊंगा तो बहुत समय लगेगा। मुश्किल से अब इतनी बड़ी योजना है, देश भर में चल रही है, यह पहली योजना है, यह पूरे विश्व में इस प्रकार की पहली योजना है तो बहुत सारी बातें कहनी पड़ेगी। गोधन न्याय योजना में वर्ष 2020-21 में 7 करोड़ 44 लाख रूपये खर्च हुए और वर्ष 2021-22 में 2 करोड़ 66 लाख रूपए खर्च हुए। कुल मिलाकर 10 करोड़ 10 लाख रूपए इसके विज्ञापन में प्रचार-प्रसार में व्यय हुआ। यहां बृजमोहन जी, अजय जी और पता नहीं सब साथियों ने क्या बताया। गोबर 150 करोड़ रूपए की खरीदी और 100 करोड़ का विज्ञापन बताया। आप कितना असत्य कथन करेंगे, कितना फेंकेंगे ? इतना मत फेकिए कि विश्वास ही करना छोड़ दें। अभी मैं कहां से शुरू करूं, यही समझ में नहीं आ रहा है। क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव में ऐसी कोई बात नहीं है, कोई तथ्य नहीं है, जो प्रश्न के माध्यम से न आए हो, ध्यानाकर्षण के माध्यम से न आए हो, स्थगन के माध्यम से न आए हो, इस सदन में बात न उठी हो, ऐसी एक बात भी किसी माननीय सदस्य ने नहीं कहा। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार बनी और हमने गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ कहा। इस नारा को लेकर चल रहे हैं। लोगों ने पूछा कि छत्तीसगढ़ तो वर्ष 2000 में बन गया था, आप क्या नया छत्तीसगढ़ गढ़ेंगे ? 15 साल इनकी सरकार रही, यह मूल भावना के लोगों को नहीं समझ पाए। जो छत्तीसगढ़ की आत्मा है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उसको नहीं समझ पाए। यहां के लोग चाहते क्या हैं, इसको यह नहीं समझ पाए। यहां के पुर्खों ने क्या सपना देखा है, उसको नहीं देख पाए। यह अनाप-शनाप बिल्डिंग बनाने लगे। अभी हमको कह रहे हैं कि कर्ज बहुत ले लिए। अध्यक्ष जी, मैं इनसे पूछता हूं, मैं कर्ज लिया हूं तो मुझे पता है और मैं कहता भी हूं। मैने कर्ज लिया है तो मुझे पता है और मैं कहता भी हूं कि मैंने कर्जा लिया है । किसानों को उऋण करने के लिये कर्ज लिया है, लोगों का भला करने के लिये कर्ज लिया है लेकिन इन्होंने 41,000 करोड़ रूपये का कर्ज लिया, किसलिये किये हैं ? क्या ये बता पायेंगे कि इन्होंने 41,000 करोड़ रूपये का कर्ज किसलिये लिया है ? इन्होंने नयी राजधानी बनायी है, माचिस का डिब्बा । हवा चलती है तो पूरी खिड़कियों की आवाज आती है । इस प्रकार से पैसों को खर्च किया और छत्तीसगढ़ एवं छत्तीसगढ़ियों के लिये इनकी जो सोच है, गरीबों के लिये, किसानों के लिये, मजदूरों के लिये, आदिवासियों के लिये उसको बताने की जरूरत नहीं है वह एक शब्द में माननीय अजय जी का आ गया । हम जितना किसानों के लिये, मजदूरों के लिये, गरीबों के लिये, अन्नदाताओं के लिये जो कर रहे हैं वह सब इनकी परिभाषा में रेवड़ी है । इनके लिये यह रेवड़ी बांटना हो गया । आप तो रेवड़ी भी नहीं बांटते, रेवड़ी का सपना दिखाते हैं कि हर खाते में 15 लाख रूपये जायेंगे । सरकार बन गयी, वन-धन खाता खोलवाया, उसको कलकत्ता में शुरू किया । बैंक में करोड़ों लोगों की लाईन लग गयी । खाता खोलवाने का पैसा और लगा और सब पैसा डूब गया, खाता बंद मतलब सपना भी दिखाये, रेवड़ी बांटना भी पड़ा और आपका काम निकल गया । आपकी योजना क्या है ? आपने कहा कि शौचालय बनाना है । मैं उस समय सदन में था, यहां धर्मजीत भैया बैठे हैं, मैं उस जगह में बैठता था । इधर यहां पर बृजमोहन जी बैठते थे, प्रेमप्रकाश पाण्डे जी बैठते थे, अजय जी इधर पीछे बैठते थे, अभी उधर खड़े होते हैं । पहले इधर खड़े होते थे, इधर हमने चेक करवाया, अकबर जी तो खड़े नहीं होते मतलब इधर सीट में कील वगैरह नहीं है जिससे वे बार-बार खड़े होते थे । हम लोग कहते थे कि उधर कुछ कील वगैरह है । कहीं दूसरी जगह गड़बड़ है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने उस समय भी कहा था कि पहले पानी की व्यवस्था कर लीजिये फिर शौचालय बनाना । शौचालय बन गया लेकिन आज भी उसका भुगतान नहीं हुआ । मैं कितनी जगह जाता हूं, सब कहते हैं कि शौचालन बना उसका भुगतान नहीं हुआ है । दबाव डाल-डालकर तुम्हारा राशनकॉर्ड कट जायेगा, बिजली कट जायेगी, तुमको शौचालय बनाना है, रिकॉर्डो में बन गया, कितने लोग उसका उपयोग कर रहे हैं ? आज फिर कह रहे हैं, आज क्या कह रहे हैं कि पूरे देश में आप सभी के घर में नल से जल पहुंचाना है । अब प्रतिव्यक्ति कितना 55 लीटर। मैं बिल्कुल इसके विरोध में नहीं हूं कि शौचालय नहीं बनना चाहिए, बिल्कुल बनना चाहिए, खुले में नहीं जाना चाहिए लेकिन पानी की व्यवस्था तो कर लीजिये । पानी की व्यवस्था नहीं है, उपयोग नहीं हो रहा है । अब कह रहे हैं कि हर व्यक्ति के यहां नल-जल योजना । कितनी खपत होगी ? जमीन से कितना पानी उलीचेंगे ? कितना सरफेस वाटर लगेगा ? देशभर में उसकी कोई गणना है ? क्या यह योजना सफल हो पायेगी ? और देशभर में इसे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लागू करने के लिये कह दिया । आपके जलसंसाधन मंत्री आये हुए थे, मैंने उनके सामने कहा । हमारे पीएचई मंत्री भी थे और चौबे जी भी थे, सेंट्रल के अधिकारी भी आये थे, मैंने उनसे कहा कि मैं पानी की व्यवस्था पहले कर रहा हूं । हमारा जो नाला प्रोजेक्ट है, वह वही है । हम पुनर्भरण की व्यवस्था कर लें, सतही जल की व्यवस्था कर लें ताकि हम नल भी लगायें तो नल में पानी भी आना चाहिए नहीं तो पता चला कि अभी क्या स्थिति है ? चौबे जी ने कल ही अपने प्रश्न के उत्तर में कहा कि हमारे जो 22 ब्लॉक हैं वे रेडजोन की स्थिति में आ रहे हैं, 2 ब्लॉक रेडजोन में चले गये और यही स्थिति रही तो पानी का भारी संकट होगा तो पहले आप पानी की व्यवस्था तो कर लें । कैसे होगा ? आपने उसका कोई मैकेनिजम तैयार किया है ? आप पहले योजना बना देते हैं और उसके बाद भी कहते हैं कि सफल हो तो कहां से सफल होगा ? कैसे सफल होगा ? माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी जो नीति है । हमारी नीति यह है कि हम व्यक्ति को सामने रखते हैं, व्यक्ति हमारे केंद्र में है । इसके और हम में अंतर यही है। मैं व्यक्ति को केन्द्र में रखकर सारी योजनाएं बना रहे हैं। चाहे वह कुपोषण हो, चाहे स्वास्थ्य हो, चाहे शिक्षा हो, चाहे रोजगार हो। अध्यक्ष महोदय, इनके शासनकाल में 15 साल अवसर मिला, एक ऐसा हॉस्पीटल नहीं बना पाये, जिसमें अपने परिवार का इलाज करा सके। एक स्कूल नहीं बना पाये, जिसमें अपने बच्चों का एडमिशन करा सकें। एक स्कूल तो बता दें, जिसमें कोई आई.ए.एस. अधिकारी, कोई नेता अपने बच्चों का एडमिशन करायें। हमने कोरोनाकाल के बावजूद सारी शुरूआत की। हमारा 2 साल कोरोना में निकला, उसके बावजूद भी स्वास्थ्य के, शिक्षा के, रोजगार के सारे अवसर उपलबध कराये और उसका उदाहरण आप आंकड़े निकालकर देख लें। छत्तीसगढ़ में पहले मलेरिया कितना था और आज कितना है? पहले 4. से ऊपर था। आपके पास स्वास्थ्य विभाग था। आपको जानकारी है। अब .7 हो गया। मलेरिया में गिरावट हो गई। आपके शासनकाल में उल्टी-दस्त से कितने मरते थे, यह बरसात का सिजन है। बस्तर में सैकड़ों लोग प्रभावित होते हैं। उल्टी-दस्त से प्रभावित कितने लोगों की जानें चली गईं। कितने लोग प्रभावित थे? कितने गांव में कैम्प लगता था? आज स्थिति में क्यों सुधार हुआ है। इसके लिए हमने हाट बाजार क्लीनिक योजना शुरू की। हमने सिस्टम को मजबूत किया। शहरी क्षेत्र में शहरी स्वास्थ्य स्लम योजना शुरू की। अलग-अलग मद से पैसे है। हमने कहीं श्रम विभाग से पैसा लगाया, कहीं डी.एम.एफ. से लगाया, कहीं हेल्थ से लगाया। हमारे पास जो संसाधन हैं, उसका पूरा उपयोग किया। ये लोग बार-बार कहते हैं कि आपके फ्लैगशिप प्रोग्राम के लिए पैसा कहां है? बजट कहां है? जो व्यवस्था है, उसी में थोड़ा सा दिमाग लगा लो, थोड़ा सा अरेंजमेंट कर दो, काम चल जाता है। अभी नेता जी स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल के बारे में पढ़ रहे थे। राज्य के बजट से नहीं जायेगा। यदि हम कह देते तो अधिकारी लोगों को क्या है, आदेश मिला है, वे सारी भर्तियां कर देते। हमने युक्तियुक्त तय किया कि हमारे पास जो टीचर हैं, उसमें से जो थ्रू-आउट अंग्रेजी पढ़े हों, उन्हें वहां पदस्थ कर दें तो जो मैन पॉवर है, उसका हम उपयोग कर लें। पिछले साल 171 स्वामी आत्मानंद इंग्लिश स्कूल खोले थे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और इस साल फिर 76 स्कूल खोल दिये। आज सारी जगह स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल की डिमांड है। आपकी इतनी व्यवस्था पहले कहां थी? आज बस्तर हो या सरगुजा, मैंने 27 विधान सभा का दौरा और भेंट-मुलाकात कर लिया है। आदिवासी क्षेत्रों में 2 चीजों की डिमांड आयी कि आपने लघु वनोपज खरीदी की व्यवस्था कर दी, वैल्यू एडीशन हो रहा है, हमारी आय में वृद्धि हो गयी। आपने हेल्थ की व्यवस्था कर दी। आवागमन की सुविधाएं हो गईं। एक-दो काम हमारे लिए और कर दीजिए। एक स्वर से पहला आदिवासी अंचलों में स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूल हमारे यहां भी खोल दीजिए और दूसरा हमारे यहां बैंक खोल दीजिए। मैं वर्षों से बस्तर जा रहा हूं। मैं विधायक नहीं था तब भी घूमने जाता था। राजनीति में था, युवा कांग्रेस में था तब भी चंदूलाल जी के साथ, अरविंद नेताम जी के साथ दौरा करता था, लेकिन आदिवासी कभी बैंक नहीं मांगते थे। पहली बार है। ये सारे विधायक हैं, बैठे हुए हैं। सबने कहा, आम जनता ने कहा कि हमारे यहां बैंक खोल दीजिए। क्यों, क्योंकि आपने हमारे यहां जो धान खरीदी की व्यवस्था की है, जो पैसा हमारे पास आया है, लघु वनोपज का समर्थन मूल्य जो आपने घोषित की, मिलेट्स है, कोदो, कुटकी, रागी का समर्थन मूल्य में खरीदी की व्यवस्था की, हमारे पास पैसा है। हम बैंक में निकालने जाते हैं। लाइन लगी रहती है और हम एक दिन में नहीं निकाल पाते हैं, सुबह जाते हैं, शाम तक नहीं निकाल पाते। दूसरा दिन फिर जाना पड़ता है तो हमें बैंक दे दीजिए। इससे क्या हुआ कि सब लोगों के पास पैसा आया। अभी भाई कवासी लखमा जी बोल रहे थे, कल ही मेरे पास यू.के. की एक टीम मिलने आयी थी, जिसने महुआ खरीदा है जिसने आपके यहां भी महुआ खरीदा है और बस्तर से, कोरबा से, जशपुर से भी महुआ खरीदा है । पांच हजार क्विंटल सप्लाई हुआ है । 116 रूपए में खरीदा । अब वे कहते हैं कि हम और ज्यादा कीमत में खरीदेंगे लेकिन उसमें थोड़ी टेक्नालॉजी दे देंगे, किस प्रकार से संग्रहण करना है, किस प्रकार से ग्रेडिंग करना है, किस प्रकार से पैकिंग करना है, हम और ज्यादा कीमत दे देंगे । यदि इस प्रकार से हम टेक्नालॉजी का सहयोग लेते हैं और इससे हमारे आदिवासियों का, वनांचल में रहने वालों की आय में वृद्धि हो रही है तो तकलीफ क्या है, हमें करना चाहिए । हमारा टारगेट इस साल पांच हजार क्विंटल गया है, अगले साल 7 हजार क्विंटल का टारगेट है । अब नेट लगाना है, हमारे यहां टपकता है तो उसे महुआ पेड़ के नीचे साफ कर देते हैं, बिन लेते हैं, उसमें मिट्टी भी रहती है, कंकड़ भी रहता है। लेकिन अब वे चाहते हैं कि वह शुद्ध हो इसलिए नेट लगा दिये हैं । कटेकल्याण में मुख्यमंत्री, मंत्री जाते नहीं, एकाध बार कोई मुख्यमंत्री गया होगा, मुझे याद है जोगी जी गए थे, मैंने उनके कार्यक्रम का आयोजन किया था । उनके बाद कोई मुख्यमंत्री कटेकल्याण नहीं गया है । अगर गया होगा तो मैं नहीं कह सकता लेकिन मुझे याद नहीं । वहां की महिला ने मुझसे कहा कि भइया, हमारे यहां के महुआ को इंग्लैंड वाले 116 रूपए में खरीदकर गए हैं । मैं देखना चाहती हूं कि वे उस महुआ का उपयोग क्या करते हैं ? मैंने कहा ज़रूर भेजूंगा । कल ही एक टीम आई, जो सिंगापुर गई थी । चार महिलाएं थीं, दो काजू प्रसंस्करण में हैं । 1998 में काजू प्रसंस्करण संयत्र बना है लेकिन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उपयोग कभी नहीं हुआ । लखेश्वर जी के बकावंड क्षेत्र में, 300 महिलाएं काम कर रही हैं । कैसे उसकी प्रोसेसिंग करते हैं, एक-एक चीज मशीन से, मेन्युअल में और पैकिंग करना है । वही महुआ जो 50/60 रूपए में बेच देते थे आज 300 रूपए से 1900 रूपए में बेच रहे हैं । आदिवासियों महिलाओं को रोजगार भी मिल रहा है और आय में वृद्धि भी हो रही है । आपके कोरबा में वनौषधि बना रहे हैं, लाखों रूपए का उनका टर्न ओवर है । वे महिलाएं सिंगापुर गई थीं और वहां प्रेजेंटेशन देकर आईं । बड़ी-बड़ी कंपनी के लोग वहां बैठे थे और आदिवासी महिला धड़ल्ले से पूरे आत्मविश्वास के साथ छत्तीसगढ़ की बात सिंगापुर में, इंटरनेशनल मंच पर करके आई हैं । यह आत्मविश्वास बढ़ा है । काम मिल रहा है और सम्मान भी मिल रहा है, इससे आत्मसम्मान बढ़ा है, आत्मबल बढ़ा है । यही कारण है कि आज आपके समय में जब बस्तर में सड़कें बनती थीं तो कहते थे कि यह फोर्स के आने जाने के लिए बन रही है, आज लोग सड़कों की डिमांड करते हैं इसलिए कि हमको आना जाना है, क्यों ? तब आपने आदिवासियों केवल पैदल चलने के लायक रखा था, आज हमारे आदिवासियों के पास मोटर सायकल भी है, ट्रैक्टर भी है, चार पहिया गाड़ी भी है (मेजो की थपथपाहट) । यह अंतर आया है । आप तो 2 रूपए, 3 रूपए किलो में चावल देकर चांउर वाले बाबा बन गए थे । केवल उसी लायक बनाकर रखा था, उनकी आय में कैसे वृद्धि होगी इसके बारे में नहीं सोचा था । यह हम कर रहे हैं । आपके समय में तो केवल 7 प्रकार के लघु वनोपज की खरीदी होती थी और छत्तीसगढ़ में डेढ सौ प्रकार की वस्तुएं बनती थीं । इन तीन, साढ़े तीन सालों में लॉकडाउन के बावजूद आज 65 प्रकार के लघु वनोपज खरीद रहे हैं और 600 प्रकार की वस्तुएं बन रही हैं (मेजो की थपथपाहट) । न केवल उत्पादन कर रहे हैं, बल्कि विक्रय की भी व्यवस्था कर रहे हैं । सब जिलों में सी-मार्ट बन गए, वहां सामग्री बिक रही है । हम तो नेशनल और इंटरनेशनल मार्केट से भी जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। डेनेक्स की डिमांड पूरे देश में, दंतेवाड़ा की लड़कियां, हमारी बच्चियों को आप बेरोजगार करके रखे थे, कहीं रोजगार नहीं मिलता था । आप उनका लघु वनोपज नहीं खरीदते थे, वे 2 रूपए किलो में बेचने के लिए और सड़कों में फेंकने के लिए बाध्य होते थे और मजबूरी में वही बंदूक उठाने के लिए बाध्य होते थे । आज वही लड़कियां डेनेक्स में काम कर रही हैं । हजारों रूपए महीना कमा रही हैं । एक आत्मविश्वास । विश्वास, विकास और सुरक्षा, सड़कें बनाईं । अकेले बस्तर संभाग में हमने साढ़े तीन साल में 3500 किलोमीटर का 713 कार्य स्वीकृत किया है। इसमें कुल लागत 2,697 करोड़ है। कुछ पूर्ण हो गया है और कुछ प्रगति पर है। राजनांदगांव से राजहरा, अंतागढ़, नारायणपुर और वहां के ओरछा से होते हुए बारसुर तक की जो सड़कें जाती थीं, आपके समय में आप उसके बारे में क्या किये? आप एक बार सोच सकते थे। हमारे सड़कें बन गई है, लोग आना-जाना शुरू कर दिये हैं। यह फर्क आया है। वह जो नक्सलियों की बात कर रहे हैं। अब नक्सली दबाव में मध्यप्रदेश पलायन कर रहे हैं। हमें शिवराज सिंह जी मिले थे तो हमने कहा अब नक्सली पयालन कर रहे हैं। आप देखिये। और हुआ यह कि वहां नक्सली मुठभेड़ हुआ। वर्षों बाद मण्डला में नक्सली मारे गये। नक्सली

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

14 जिले में थे। आपने बढ़ाया, हमको तो विरासत में दिया। 18 प्रतिशत लोग झोपड़ी में रहते थे, वह हमको विरासत में मिला। 40 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करते थे, यह हमको विरासत में मिला। आप 6 लाख, 9 लाख नल टेप की बात कर रहे हैं, यह हमको विरासत में मिला। आपको 15 साल मौका मिला तो आपने क्या किया? क्यों मकान नहीं बना। आप दूसरे प्रदेशों से तुलना करते हैं। आप दूसरे प्रदेश से तुलना कर लीजिये। हमारे से बुरा स्थिति उत्तर प्रदेश की है। आज आप किसानों के बारे में कह रहे हैं। अब नेता जी सदन को गुमराह करने में लगे हैं कि केन्द्र सरकार पैसा देती है। भैया, इस साल तो 52 लाख दिया, इसके पहले कितना किया था? 26 लाख नहीं खरीदे। नहीं खरीदे तो क्या करना पड़ा? केन्द्र ने फैसला किया। हम किसानों के धान हर हालत में खरीदेंगे। केन्द्र सरकार हमारा पैसा दे या ना दे, हमारा चावल खरीदे या ना खरीदे, लेकिन हम चावल खरीदेंगे। (मेजों की थपथपाहट) मैंने सब कमेटी बनाई। मंत्री अमरजीत भगत, रविन्द्र चौबे, अकबर जी और उमेश पटेल जी, इन मंत्रियों की सब कमेटी बनाई और मैंने कहा कि नीलामी करो, भले ही सरकार को घाटा लग जाये, लेकिन हमने अन्नदाताओं से जो वादा किया है, उसको हम पूरा करेंगे। हम वादा से पीछे नहीं हटेंगे। कोरोनाकाल में हट भी सकते थे, हमको बहाना मिल सकता था, लेकिन हमने कहा कि अन्नदाताओं के साथ में धोखा नहीं। यह लोग धोखा दिये, हमने धोखा नहीं दिया। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, हमने चार किस्तों में पैसा दी। खजाना खाली था। हमारे पास पैसे नहीं थे। व्यापार बंद, उद्योग बंद, खदान बंद। कहां जाता है पैसा? फिर भी हमने उस समय नहीं कहा कि हम विधायकों के वेतन में कटौती करेंगे, हमने नहीं कहा कि आपके क्षेत्र विकास निधि में कटौती करेंगे, हमने अधिकारियों/कर्मचारियों ने नहीं कहा कि 30 प्रतिशत तनख्वाह में कटौती करेंगे, हमने कहा कि हर स्थिति में जब तक की चल सकता है कि हम किसी को भी जो दे रहे हैं, उसे कम नहीं होना चाहिये। यह हमारा कमीटमेंट है। क्या आप इसलिए अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं? विपरित परिस्थिति के बावजूद भी हमारे किसानों के संख्या में वृद्धि हुई, रकबा में वृद्धि हुई, धान उत्पादन में वृद्धि हुई और जो 70 लाख कह रहे हैं, आज 98 लाख और अगले साल 1,10,000 मीट्रिक टन धान खरीदी करेंगे। यह हमारा कमीटमेंट है। लोग हम पर विश्वास कर रहे हैं। तभी तो रकबा बढ़ रहा है। आपके समय में 90,000 किसानों की जमीन को लेकर उद्योगपतियों को दे दिया था। हर साल कृषि का रकबा घट रहा था। हमारे समय में लगातार वृद्धि हो रही है। 15 लाख की जगह 22-23 लाख किसान पंजीयन करा रहे हैं। 22 लाख हेक्टेयर की जगह 30 लाख हेक्टेयर का पंजीयन हो रहा है। कोदो-कुटकी, रागी की और मक्का की खरीदी का भी व्यवस्था कर रहे हैं, हम लोग गन्ना की खरीदी की भी व्यवस्था कर रहे हैं। हमारा लगातार कोशिश है कि यहां के अन्नदाताओं, किसानों, मजदूरों के जीवन स्तर में बदलाव आये। यह हमारी कोशिश है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय, यह लोग गोधन न्याय योजना के बारे में खूब विरोध कर रहे हैं। वह इसलिए अविश्वास लाये हैं कि हम गोबर खरीद रहे हैं, वह इसलिए अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं, क्योंकि जब से हम गो-मूत्र खरीदने जा रहे हैं। अब तो उसकी तरीख बदल गई। आज जाकर खरीदी शुरू करेंगे। हमने गौठान की जमीन सुरक्षित कर लिये, इसलिए वह अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। इसलिए अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं कि हम वर्मी कम्पोस्ट बना रहे हैं । हम धरती माता कहते हैं। हम छत्तीसगढ़ को महतारी कहते हैं। हम इस महतारी की सेवा करेंगे और इसलिए खेतों में वर्मी कंपोस्ट पहुंचना चाहिए। प्रकृति भी कहती है, वैज्ञानिक भी कहते हैं और वेदा में भी यही कहा गया है कि हम जो धरती से लिये हैं उसको वापस करो। किसी न किसी रूप में धरती को वापस करो। यदि आप धरती को वापस नहीं करोगे तो आपको उसका भुगतान भुगतना पड़ेगा। आज ग्लोबल वार्मिंग से सब चिंतित हैं। देश में गेहूं का उत्पादन कम हो रहा है कि 1 डिग्री टेम्प्रेचर बढ़ गया। देश में 20 प्रतिशत गेहूं का उत्पादन घट गया। पूरी दुनिया में गेहूं का उत्पादन कम हो रहा है और ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रहा है और उस दिशा में हमारी सरकार प्रयत्न कर रही है। अभी माननीय अजय जी क्या बोल रहे थे कि आपने इतना क्विंटल पैरा दान कराया। किसान पैरा को दान कर रहे हैं हम किसान से पैरा को खरीद थोड़ी न रहे हैं। हम तो पैरा का संग्रहण करने के लिए समितियों को पैसा दे दिये ताकि वह ट्रैक्टर का और डीजल का खर्चा ले ले और वह पैरा वहां तक पहुंच जाए।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, मुझे आपसे ऐसे उत्तर की अपेक्षा नहीं थी। आपके बजट भाषण में लिखा है कि 15 लाख 70 हजार पैरा दान में मिला। जो पैरा दान में मिला उसके लिए कोई राशि नहीं दी जाती है।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप मुझे समय बता दीजिए तो मैं अपनी बात समाप्त कर दूंगा। आपका इशारा हो जाए।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, आप बोलिये। मैं दूसरी बात कह रहा था।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज देश में सबसे ज्यादा नुकसान किसका हो रहा है ? गांव का हो रहा है। गांव में रोजगार के अवसर नहीं हैं। गांव के लोगों के पास काम नहीं हैं। गांव के लोग खाली बैठे हैं। आपके जांजगीर जिले में बड़े-बड़े किसानों के खेत में पर्ती पड़ा हुआ है और छोटे किसान पलायन करने के लिए बाध्य हो रहे हैं। आज गांव की क्या स्थिति है ? पहले देहरिया ठाकुर लोगों की क्या स्थिति थी और आज उनकी क्या स्थिति है ? आपके बड़े-बड़े किसान हैं, ठाकुर लोग भी हैं, कुर्मी लोग भी हैं, साहू लोग भी हैं और ब्राम्हण भी हैं। बड़े-बड़े किसान खेती छोड़ चुके थे और आज वह सब खेती की तरफ वापस लौट रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, रिवर्स माइग्रेशन हुआ, लोग गांव से शहर की ओर पलायन किये तो सबसे ज्यादा नुकसान किसको हुआ ? जो लोग गांव से शहर में पलायन किये उससे नुकसान हुआ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मजदूर तो पलायन किये और उसकी चर्चा सब करते हैं लेकिन जो सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है वह गांव से बौद्धिक पलायन होने से हुआ है। जो सक्षम लोग हैं और जो गांव के विकास के बारे में सोचते थे और जो काम करते थे, उनका पलायन हुआ और एक-दो वर्ष तक नहीं हुआ बल्कि सालों-सालों उनका पलायन हुआ। हम सबके परिवार गांव को छोड़कर शहर में बसने लगे। कभी बच्चों को पढ़ाने के लिए तो कभी इलाज के नाम से और उसका नुकसान गांव को हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सामाजिक रूप से, सांस्कृतिक रूप से, आर्थिक रूप से, शैक्षणिक रूप से और जिस रूप में भी हम देखें, हमारा नुकसान हुआ है। उसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती है लेकिन जब से हमने खेती को लाभकारी किया है और रिवर्स माइग्रेशन हुआ है तब से मजदूर तो वापस आये, 7 लाख मजदूर तो वापस आये साथ में जो बुद्धिजीवी वर्ग के लोग हैं जो शहर में बस गये थे, जो दूसरी रोजी-रोटी को देख रहे थे, अब वह खेती की तरफ वापस लौट रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) हमारे छत्तीसगढ़ में जो सबसे ज्यादा मजबूत होगा तो हमारा गांव बौद्धिक संपदा से लैस होगा और वह गांव समृद्ध गांव होगा। हम इस दिशा में काम कर रहे हैं तो आपको इसमें अविश्वास है। आपका विश्वास किस बात पर है ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप भ्रष्टाचार की बात कर रहे हैं तो हम सारे पैसे सीधे किसानों के बैंक खातों में दे रहे हैं। लघु वनोपज खरीद रहे हैं तो बैंक खाते में दे पैसा रहे हैं। मनरेगा का भुगतान हुआ तो वह भी बैंक खाते में हुआ। भूमिहीन श्रमिक न्याय योजना का भुगतान किये हैं तो उसका भुगतान भी बैंक खाते में किये हैं। हमारी योजनाओं में डायरेक्ट ट्रांसफर हो रहा है। इसमें किसी बिचौलिये की जरूरत नहीं है। आपके समय में ऐसा होता था। आपके समय में राशन में भी घोटाला होता था। आपने पिछले समय में जितने राशन कार्ड बनाये थे, उन सबको निरस्त किया और हम नया राशन कार्ड बनवाये। कहीं एक जगह भी चू-चपड़ नहीं। कहीं कोई आवाज नहीं हुआ। हमने सबको आधार कार्ड से लिंक कर दिया है। नहीं तो होता यह था कि आपके जितने भी नेता थे और आपके जो कार्यकर्ता थे, उनके पास 100-100 राशन कार्ड पड़े होते थे। छत्तीसगढ़ में जितने परिवार नहीं हैं उससे ज्यादा आपने राशन बना दिये। आप राशन की बात कर रहे हैं तो आज 99 प्रतिशत लोगों के पास राशन कार्ड है और 98 प्रतिशत लोग भौतिक रूप से उपस्थित होकर अनाज ले रहे हैं। ...(जारी)

श्री अग्रवाल

अग्रवाल\27-07-2022\n10\12.45-50

(पूर्व से जारी) श्री भूपेश बघेल :- उपस्थित होकर अनाज ले रहे हैं । यह हमारी उपलब्धि है । जो सार्वभौम पी.डी.एस. सिस्टम हमने लागू किया, उसका लाभ आम जनता को मिल रहा है और जहां लाभ नहीं मिल रहा है, उन अधिकारियों के खिलाफ हम कार्रवाई भी कर रहे हैं । आप चप्पल खरीदते थे, मोबाईल खरीदते थे, आप टिफिन खरीदते थे । कमीशन तो वही शुरू होता है और हमने इन सबको सीधा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पैसा दिया है । और बचत जहां नामांकन के लिए, बंटवारा के लिए आप जो बात कर रहे हैं, यह कोई आज की बात है ? यह पहले भी होता था। मुझे एक घटना याद आ रही है । मैं युवक कांग्रेस में था, उस समय पटवा जी की सरकार थी । मैंने पटवारी कार्यालय का घेराव किया, गांव के लोगों ने कहा कि वह पटवारी बहुत भ्रष्ट है । मैंने अपने नेता वासुदेव चन्द्राकर जी को बुलाया । यह जामुल की बात थी, गुरू रूद्रकुमार जी का क्षेत्र है । हम लोग सब रावणभाटा में इकट्ठा हुए । वासुदेव दाऊ भाषण देने के लिए खड़े हुए और कहा कि पटवारी के लिए तुम लोग कुछ व्यवस्था नहीं करते हो । हमारे समय में हमारे गांव में पटवारी के लिए घर की व्यवस्था करते थे, उसके राशन की भी व्यवस्था करते थे और उसके लकड़ी-छेना की भी व्यवस्था करते थे । तुम लोग उसकी व्यवस्था नहीं करते हो, उसकी सुख-सुविधा का ध्यान नहीं रखते हो । उसके लिए व्यवहार तो नहीं करते हो और भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हो । अब वह रूप बदल गया, अब तो सीधा नगडोंगा की बात हो गई । फिर आपकी सरकार आई तो परसेंटेज और बढ़ गया। फिर पटवारी लोग अपना असिस्टेंट रखने लगे । रायपुर में ऐसा कोई पटवारी नहीं है, जिसके पास दो-तीन असिस्टेंट न हो । उनका अलग आफिस है, पहले तो ऐसा नहीं होता था । भैया, आपने जो सिस्टम बिगाड़ दिया है, उसे मुझे सुधारने में समय तो लगेगा । आज जितने भी भेंट, मुलाकात के कार्यक्रम में मैं जा रहा हूं, मैं सार्वजनिक रूप से पूछता हूं कि किसका जाति प्रमाण पत्र नहीं बना, किसका नामांतरण नहीं हुआ, किसका बंटवारा नहीं हुआ, किसकी खतौनी नहीं हुई और वहीं कार्रवाई हो रही है। आपके समय में आम जनता से मिलना तो दूर, मुख्यमंत्री का निवास कभी आम जनता के लिए नहीं खुला था । आपके जो प्रमुख सचिव, जिसके बारे में अकबर भाई बोल रहे थे, वहां तो यह हाल था कि छत्तीसगढ़ के जो बड़े मिलेनियर हैं, उनको ही एपाइंटमेंट मिलता था । रोलिंग मिल और स्पंज आयरन वालों की कोई बखत नहीं थी, वे नहीं मिल पाते थे । मुख्यमंत्री की बात को दूर है । आज आम जनता अपने मुख्यमंत्री से बात कर सकती है, आम आदमी हमारे विधायक और मंत्रियों से बात कर सकते हैं (मेजों की थपथपाहट) ये अंतर आया है । इसमें आपको विश्वास है । अगर गलत है तो कार्रवाई करेंगे, लेकिन सिस्टम एक दिन का नहीं है । आपने भ्रष्टाचार के जितने आरोप लगाये हैं । सौरभ सिंह जी ने कहा कि कोयला में भारी भ्रष्टाचार हो रहा है । शिवरतन जी ने कहा कि भारी भ्रष्टाचार हो रहा है । बहुत अच्छी बात है, आपने मामला उठाया, आपको धन्यवाद ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में कोयले की 58 खदानें चल रही हैं । एलॉट कितना है, मैं उसकी बात नहीं कर रहा हूं । जो संचालित है, उसमें से 52 खदान एस.ई.सी.एल. के पास है । सौरभ जी, मैं आंकड़े गलत तो नहीं बोल रहा हूं। 52 खदान है, वह एस.ई.सी.एल. के पास है । एस.ई.सी.एल. भारत सरकार का उपक्रम है, अधिकारी-कर्मचारी भारत सरकार के हैं, उसकी सुरक्षा के लिए जो एजेंसी लगी है, वह भारत सरकार की है । एस.आई.एफ. बोलते हैं या सी.आई.एस.एफ. बोलते हैं ? डीजल चोरी का आरोप हम पर लगता है । खोदने वाले इनके लोग, संचालित करने वाले इनके लोग, ट्रांसपोर्टिंग करने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का काम इनके लोग का है, कोयला चोरी का आरोप हम पर लगाते हैं कि हम चोरी करवा रहे हैं । खदान आपका है, आपके मंत्री चार दिन आकर रहते हैं, कोयला मंत्री कितने बार कोरबा आ चुके हैं और आप हम पर आरोप लगाएंगे। हम तो समझ रहे थे कि 15 साल से खनिज विभाग रमन सिंह जी रखे हुए हैं, अब चूंकि वे यहां उपस्थित नहीं है इसलिए मैं उनके बारे में बहुत ज्यादा नहीं बोलूंगा । वह ठीक ही चल रहा था । कोयला पर आरोप लग गए कि 25 रूपए ले रहे हैं । खदान आपका, संचालित करने वाले आपके लोग हैं, ट्रांसपोर्टिंग करने वाले आपके लोग हैं, ट्रक में जाएगा, ट्रेन में जाएगा, वह हमको क्या पता ? ले रहे हैं तो कार्रवाई करो, कौन रोक रहा है । जब पता चला कि गड़बड़ी है तो हमने भी सब जगह छापा मरवाया । जितने भी कोल वाशरी हैं, कोल डिपो हैं, सब जगह छापा डालो, पकड़ो। हमने यह नहीं किया कि एक के खिलाफ कार्रवाई करे और दूसरे को छोड़ दो। हमारा एक टारगेट नहीं था, हम सबके यहां कार्रवाई किए। लगना चाहिए कि हम किसी एक के बायस नहीं हैं। जहां-जहां गलती पकड़ी गई, उनके खिलाफ कार्रवाई हुई। लेकिन आपका उदेद्श्य क्या है ? आप ई.डी. के बारे में बोल रहे थे, आप आई.टी. के बारे में बोल रहे थे। मैं इस सदन के माध्यम से बहुत जिम्मेदारी से बोल रहा हूं कि जितने भी सेन्ट्रल एजेंसी हैं, मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं। पुलिस वाले हैं, उनका भी सम्मान करता हूं, जो स्टेट एजेंसी हैं, उनका भी सम्मान है। लेकिन अध्यक्ष महोदय, वह बायस होकर काम करें, आप बता दो, आप नेशनल हेराल्ड की बात कर रहे थे। सारा पेमेन्ट चेक में हुआ है। आपके पास सारे दस्तावेज हैं आप क्या पूछ रहे हैं ? आपका उदेद्श्य केवल बदनाम करना है, आपका उदेद्श्य केवल प्रताड़ित करना है। कोई मनी लांड्रिग तो हुआ नहीं है, नकद पैसे का लेनदेन तो हुआ नहीं है। जो कुछ भुगतान हुआ, वह चेक से हुआ है। सब दस्तावेज है। दस्तावेज उपलब्ध है, यदि दस्तावेज गलत है तो कार्रवाई करो। लेकिन आप बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। आपकी सेन्ट्रल एजेंसी यहां आकर करती क्या है ? सेन्ट्रल एजेंसी यहां आकर क्या कर रही है ? कार्रवाई करें, हमें तकलीफ नहीं है। जो गलत है, उसको पकड़ो अंदर करो, कार्रवाई करो, हम उसको बचाने वाले नहीं हैं। लेकिन आपकी सेन्ट्रल एजेंसी पूछती क्या है कि आप धर्मजीत का नाम ले दो हम आपको छोड़ देंगे, आप चन्द्रा जी का नाम ले दो, हम आपको छोड़ देंगे। आपकी यह जिम्मेदारी है ? तो आप षड़यंत्रपूर्वक, एक उदेद्श्य को लेकर कि इस आदमी को घेरना है, ये कार्रवाई ? इसलिए मैंने कहा कि मां का दूध पीया है तो ई.डी. में केस दर्ज है, हमने पत्र लिखा है। नॉन घोटाले में नाम है, कौन सी.एम. सर है, कौन सी.एम. मैडम है, आप क्यों नहीं पूछते ? जनता का हजारो करोड़ रूपया चिटफण्ड कम्पनी में है। आप सबके परिचित लोग है, उसमें जिनका पैसा जमा है। कह रहे हैं कि हमने कार्रवाई नहीं की। अध्यक्ष महोदय, हमने कार्रवाई की है, जितने डायरेक्टर हैं, सैकड़ों लोग अंदर हैं, 5 सौ से ऊपर डायरेक्टर अंदर हैं। हमने उनकी सम्पत्ति की जांच की है। हमने यहां के एजेन्टों को कहा कि आप उनकी सम्पत्ति बताओ, उसकी लिस्टिंग किये और कलेक्टर, एस.पी. उसकी छानबीन किए, कोर्ट से आदेश करवाया। पूरे देश में छत्तीसगढ़ पहला राज्य है,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जो चिटफण्ड कम्पनियों से पैसा लेकर इनवेस्टर के खाते में जमा की है। राशि बहुत कम है। राजनांदगांव, रायपुर, बिलासपुर, धमतरी, कुल मिलाकर 40 करोड़ जमा कर पाये हैं और इनवेस्टर का पैसा कितना है ? साढ़े छः हजार करोड़। माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष जी भी बैठे हैं, यहां चंदेल जी बैठे हैं, आपके जांजगीर-चाम्पा, अकलतरा में रोजगार मेला लगाये थे या नहीं लगाये थे ? आपने उन एजेन्टों को रोजगार की गारन्टी दिया था या नहीं ? आपने सर्टिफिकेट दिया या नहीं दिया ? फोटो खिचवाये या नहीं खिचवाये ? अध्यक्ष महोदय, शासकीय तौर पर हुआ था। कलेक्टर ने आयोजन किया और ये लोग प्रमाण-पत्र बांटे हैं। अब पैसा है ही नहीं, ना उनके खाते में पैसा दिख रहा है ना यहां सम्पत्ति दिखाई दे रही है। लेकिन छः हजार करोड़ तो गया और हम तो 40 करोड़ रूपये ही वसूल कर पाये तो मनी लांडिंग हुआ या नहीं ? जब मनी लांडिंग हुआ तो सेन्ट्रल एजेंसी जांच क्यों नहीं करती है ? हमने पत्र लिखा है, हमने प्रधानमंत्री जी को भी पत्र लिखा है, वित्त मंत्री को भी पत्र लिखा है, गृहमंत्री को भी पत्र लिखा है। जांच होनी चाहिए। छत्तीसगढ़ की गरीब जनता, यहां के लोगों की गाढ़ी कमाई का पैसा वहां जमा है, लूट लिए हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आप उसमें भागीदार है। लेकिन पैसा तो गया, क्यों धर्म भईया, मैं गलत बोल रहा हूं ? गरीब जनता का पैसा गया, किसानों का, मजदूरों का, नौकरी पेशा लोगों का, रिटायर्ड लोगों का पैसा गया। पैसा क्यों नहीं मिलना चाहिए ? आखिर ई.डी. क्या कर रही है ? जब छत्तीसगढ़ की जनता का साढ़े छः हजार करोड़ गया तो ई.डी. को क्यों नहीं जांच करनी चाहिए ? हमें किसी बात का डर नहीं है, हमको जेल भेजे थे न, हमारे खिलाफ एफ.आई.आर. किये थे। शिवरतन जी मेरे घर की जांच कराये थे, मेरे दादा के पास 1000 एकड़ जमीन था, 150 एकड़ भिलाई स्टील प्लाण्ट को जमीन मेरे दादा ने दिया, अध्यक्ष महोदय, मैं 4 डिसमिल जमीन बेजा कब्जा करूंगा ? यह शिकायत करने गया था ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं शिकायत करने गया था ?

श्री भूपेश बघेल :- हॉ, हॉ । ई.ओ.डब्लू, आपने शिकायत किया था ?

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, मेरी कोई शिकायत नहीं है ।

श्री भूपेश बघेल :- आपने प्रेस कांफ्रेंस किया है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- आप पता कर लेना, मैंने कोई शिकायत नहीं की है ।

श्री भूपेश बघेल :- आपने किया, विजय बघेल ने किया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मेरी कोई शिकायत नहीं है, मैं जिम्मेदारी के साथ बोल रहा हूँ । मैंने जो बोला, विधान सभा में बोला है । मैंने कोई लिखित शिकायत नहीं की है ।

श्री भूपेश बघेल :- मैं बदले की राजनीति कभी नहीं करता हूँ ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं बोल रहा हूँ, मैंने लिखित शिकायत नहीं की है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भूपेश बघेल :- जो अधिकारी मेरे खेत को भरे बरसात में, यही सावन का महीना है, रविवार के दिन, कभी सीमांकन नहीं होता । मेरे खेत को नपवाया गया, कहां है भूपेश बघेल की जमीन । आज मेरा सचिव है । मुझे कोई तकलीफ नहीं है ।मैं बदले की राजनीति नहीं करता हूँ । बदले की राजनीति दिल्ली वाले कर रहे हैं।एक भी विधायक बता दे कि मैं बदले की राजनीति से किसी के खिलाफ कार्यवाही करवाया हूँ । कृपा करके अपने नेताओं से कहिये, प्रजातंत्र की दुहाई केवल छत्तीसगढ़ में मत दीजिएगा । प्रजातंत्र की दुहाई महाराष्ट्र में भी दीजिए, गोवा में भी दीजिए, कर्नाटक में दीजिए, मध्यप्रदेश में दीजिए, राजस्थान में दीजिए, खरीद-फरोख्त का काम आपकी पार्टी कर रही है, आपकी सरकार कर रही है । (मेजों की थपथपाहट) प्रजातंत्र को कलंकित करने का काम कर रहे हैं, यह काम मत होने दीजिए ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- सब की बोलती बंद ।

श्री भूपेश बघेल :- कल आप यहां थे, आज आप वहां है, कल हो सकता है, फिर इधर आ जायें, प्रजातंत्र है, लेकिन उस सौहार्दता को मत मिटाने दीजिए । आप विरोध को कुचलिये मत । असहमति का सम्मान करिये, जैसे अजय चन्द्राकर जी बार-बार करते हैं । असहमति का सम्मान तो करिये ? आज मेरे कृत्यों के बारे में अजय जी उल्लेख कर रहे थे, मैंने पेपर पटका । बिल्कुल सही कह रहे हैं । क्यों किया अध्यक्ष महोदय ? आज पूरे दिन भर के अजय जी के व्यवहार को देख लीजिए, जब वह बोलने खड़े हुये, सीधा मुंह करके रविन्द्र चौबे की तरफ देख रहे थे और आप उनको रोक रहे थे । आप अध्यक्ष जी को इशारा करके बोल रहे थे, आप रूको और चौबे जी से बात कर रहे थे । अध्यक्ष महोदय, उस समय प्रश्नकाल में क्या हुआ, नेताजी सक्षम है, नेताजी खड़े हैं तो दूसरे सदस्य को खड़े होने चाहिये ? नहीं खड़ा होना चाहिये । मेरे सदस्य को भी खड़ा नहीं होना चाहिये, उधर भी खड़ा नहीं होना चाहिये । नेता प्रतिपक्ष को भी ओव्हर रूल करो । आप अपने नेता का सम्मान नहीं कर पा रहे हैं, सदन के नेता का भी सम्मान नहीं करते । जब दोनों नेता आपस में प्रश्न कर रहे हैं, उत्तर दे रहे हैं, बीच में पड़ने की क्या जरूरत है ? उसको रोकने की क्या जरूरत है ? अध्यक्ष महोदय, जब इस प्रकार से आसंदी की व्यवस्था है, यदि तार-तार होती है तो तकलीफ होती है । इस कारण से मैं दु:खी भी हुआ और क्रोधित भी हुआ । अध्यक्ष महोदय, सदन है वह नियम प्रक्रियाओं से चलती है, परम्पराओं से चलती है । माननीय सदस्य वरिष्ठ सदस्य हैं, इनको सब देखकर सीखते हैं, जो बात आप दूसरों के लिये अपेक्षा करते हैं, वहीं बात आपके ऊपर भी लागू होती है । आप ज्यादा पढ़े-लिखे हैं, अनुभव ज्यादा है, ठीक है, आप ज्ञानी होंगे । आप 10 बार बोलने के बाद भी स्थान ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, यह उचित नहीं है । पहली बार सदस्य आये हैं, उनका भी उतना अधिकार है, जितना 8 बार, 9 बार जीतकर आये हैं, रामपुकार जी 8 बार जीतकर आये हैं, पुन्नूलाल मोहले जी लोक सभा, विधान सभा में रहे हैं, ननकीराम कंवर जी हमारे सीनियर, सत्तू भईया कितने सीनियर हैं, आप लोग विधान सभा में रहे हैं । आप ज्यादा ज्ञानी है, सबको ओव्हर रूल्ड नहीं कर सकते, लेकिन यही हो रहा था और इस कारण

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

से दु:खी हुआ । अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत खिन्न था । अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष ने धर्मांतरण की एक बात उठाई, नेता जी मैं आपसे केवल इतना कहना चाहता हूँ कि 15 साल आप सत्ता में रहे, कितने चर्च आपके शासनकाल में बने, वह निकाल लीजिएगा । मैं दावे के साथ, पूरी जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूँ, 95 परशेंट चर्चेज जो हैं, वह आपके शासनकाल में बने हैं । (मेजों की थपथपाहट)

समय :

1:00 बजे

आपने कानून लाया, धर्मांतरण के विरोध में 2012 में आप कानून लाये, क्यों कानून लाये? धर्मांतरण हो रहा था तब तो आप कानून लाये। यदि नहीं होता तो कानून लाने की जरूरत क्या थी? आप सत्ता में थे और आपने कानून लाया। इसका मतलब धर्मांतरण हो रहा था। आपने कार्यवाई कितनी किये? वर्ष 2003 से लेकर 2018 तक आप देखें मुश्किल से आपने 19 कार्यवाई की है। हमारे शासनकाल में 15 शिकायतें हुई, हम 12 शिकायतों में कार्यवाई कर दिये हैं और 03 शिकायतें प्रचलन में हैं। हमने 12 शिकायतों में कार्यवाई कर दी है। और जो गलत किये हैं वह लोग अंदर हैं। यदि गलत पाया गया है तो वह अंदर ही है। जो धार्मिक सद्भाव बिगाड़ने की कोशिश करे, चाहे वह आपका हो या मेरा हो, मैं वह नहीं देखता। जो भी गलत है, उसके खिलाफ कार्यवाई होगी। कानून का राज होना चाहिए। हमारे छत्तीसगढ़ में जो शांति और भाईचारे का वातावरण है, उसे खंडित नहीं होने देना है। संस्कृति की बात कहना चाहता हूं। अजय जी बड़े ज्ञानी हैं। आज ठाकुर जगमोहन सिंह जी, पाण्डेय जी, बख्शी जी के बारे में बोल रहे थे। हम लोग भी थोडा बहुत पढ़े हैं। हम लोग भी जानते हैं। उनके योगदान के बारे में जानते हैं। लेकिन आपने क्या किया ? जितना नाम गिना दिये, उनके लिए आपने क्या किया ? क्या उसके लिए कुछ किया है ? दिमाग भर में रखने से आपके साथ स्मृति भी चली जायेगी। उसके लिए आपको करना चाहिए था। आज हम कर रहे हैं। नया राजधानी में हम सब महापुरूखों के नामकरण कर रहे हैं चाहे वह गुंडाधुर, शहीद वीरनारायण सिंह जी, ज्ञान सिंह जी, मिनीमाता, गुरू घासीदास जी, कर्मा जी, कबीर जी, धनी धर्मदास साहब, बिसाहूदास महंत जी हों, जो भी हमारे महापुरूष हुए हैं, हमारे जितने पूर्व मुख्यमंत्री हैं। माननीय अकबर जी और चौबे जी जब लिस्ट लाये। हमारे छत्तीसगढ़ के राजा नरेशचंद्र जी पहले मुख्यमंत्री थे। मैंने कहा वह भले 13 दिन के लिए मुख्यमंत्री रहे हैं लेकिन वह नाम आप लोगों से छूट गया है। यह लोग बहुत मेहनत करके बनाये हैं। मैंने कहा और उनके नाम से भी सरोवर का नाम रखा। अब इनके नेता जी कहते हैं कि हम 2023 में सत्ता में आयेंगे तो सब बदल दिया जायेगा। आप हमारे महापुरूषों के योगदान को मिटाना चाहते हैं। आज तक मिटाते रहे हैं और आगे भी मिटायेंगे। छत्तीसगढ़ की जनता आपको कभी स्वीकार नहीं करेगी। आदिवासियों के बारे में जो सोच आपकी है, वह आज परिलक्षित हो गई है। उसको मैं रिपीट नहीं करना चाहूंगा। आदिवासी संस्कृति, नृत्य, संगीत, कला, इन सबको संरक्षित करने का काम हमारी सरकार कर रही है। हमारी लगातार कोशिश हो रही है। इसके

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बावजूद कि हम कोरोना में थे, हम कभी चुप नहीं बैठे, शांत नहीं बैठे। सारी योजनायें बनाते रहें और क्रियान्वयन भी करते रहे। अध्यक्ष महोदय, यह हमारा छत्तीसगढ़ है। छत्तीसगढ़ के मूल में जो हमारी भावनायें थीं, हमारे पुरखों के जो सपने थे उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। काम करते-करते हो सकता है कि कहीं त्रुटि हो जाये, चूक हो जाये, लेकिन हमारी नियत में कभी खोट नहीं है। हमारी नियत में कभी खराबी नहीं है। कभी हम बदले की राजनीति नहीं करते। बदले की राजनीति तो आपकी संस्कृति में है, आपके संस्कार में है। यह बदले की राजनीति हम नहीं करते। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी कोशिश है। हमारे विपक्ष के साथियों को बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं। बहुत सारी बातें आईं। हंसदेव अरण्य की बात किये। कल अशासकीय संकल्प ध्वनिमत से सर्वसम्मति से पास भी हुआ। आखिर अध्यक्ष महोदय, उन कोल ब्लाकों को किसने एलाट किया ? उसको कौन संचालित करवा रहा था ? उसको मांगा किसने ? गिधमुरी पुतरिया, मोरगा, चोटिया हमने मांगा था ? सारी खदानें आपके समय में एलाट हुईं। आपको भारत सरकार ने 2007 में अनुमति दे दी थी, पहले तो ज्यादा था, फिर 450 वर्ग किलोमीटर के लिए आपको अनुमति दी जाती है। उसी अनुमति के आधार पर 2007 में जो अनुमति इनकी सरकार को मिली थी उस आधार पर 1995.84 वर्ग किलोमीटर को आरक्षित करने का काम हमने अभी 2021 में किया। आदेश 2007 का था। हम भारत सरकार से और नहीं पूछे, क्योंकि वह आदेश हमारे पास पड़ा था। आज हंसदेव के लिए जैव विविधता के बारे में बडी चिंता कर रहे । आप सत्ता में थे क्यों नहीं किये? आपकी चलती नहीं थी, आपकी सुनते नहीं थे? आपने मंत्रिमण्डल में अंतर्विरोध के बारे में बड़ी चर्चा की। अमर अग्रवाल जी के साथ क्या हुआ था? ननकीराम कंवर जी के साथ क्या हुआ था? पूरे विधायक 2007 में विरोध में दिल्ली गये थे या नहीं गये थे? आपकी सुने? बृजमोहन अग्रवाल जी, अजय चंद्राकर जी, आपकी कभी सुनवाई नहीं होगी। आप यहां कितना भी परफॉरमेंस दिखाते जाईये, कुछ फर्क नहीं पड़ना है। चलेगा तो सिर्फ उन्हीं का। डॉ. रमन सिंह जी दिल्ली गये हैं तो उनको भेज ही दो तब कहीं आप लोगों का नंबर लगेगा। आप उनको भेज भी नहीं पा रहे हो। आप हमारी योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हो, आप अपनी योग्यता तो बताओ। एक आदमी को तो ठीक से दिल्ली भेज नहीं पा रहे हो। डॉ. रमन सिंह जी को उपाध्यक्ष बनवा दिये हो, तो उनको भेज भी दो। आप लोग उनको भेज भी नहीं पा रहे हो।

अजय जी, जब आपके बाल काले थे, छात्र जीवन से, यूनिवर्सिटी के समय से, आप तब से राजनीति कर रहे हैं,। आपके बाल सफेद भी हो गये, झड़ भी गये। आप लोगों को कब मौका मिलेगा? वहां से यहां पर आ जाते लेकिन यहां भी आपकी पसंद नहीं चलनी है, उन्हीं की पसंद चलनी है। आपकी पार्टी का अध्यक्ष बनाना है। आप मेरी पार्टी के अध्यक्ष श्री मोहन मरकाम जी के बारे में बोल रहे थे। वह मेरे छोटे भाई है, उन्होंने कहा कि मुझको उन्हें डाटने का अधिकार है। मैंने क्या कहा कि आप कमेटी में जो तय कर रहे हो उसका क्रियान्वयन करें। उन्होंने नहीं किया, उसमें लेट हो गया तो मैंने नाराजगी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

व्यक्त की कि कितना दिन हो गया, संगठन चुनाव आ रहा है, जो निर्णय है उसको करो। इसमें ऐसी कौन-सी गलत बात हो गयी, जिसको विधान सभा में अविश्वास प्रस्ताव में कंडिका बनाये हो? वह मेरी अनुशंसा में अध्यक्ष बने हैं और हम सब की सहमति थी तब वह पार्टी अध्यक्ष बने हैं। वह मेरे अध्यक्ष है और अध्यक्ष पार्टी में जो आदेश देते हैं, मैं बैठक में जाता हूं। ऐसी कोई बैठक बता दीजिये, जिसमें मैं अनुपस्थित रहा हूं। आप उसको भी मुद्दा बना रहे हो।

दूसरा, हमारे महाराज साहब, आप लोगों के अविश्वास प्रस्ताव में उनकी चिट्ठी ही मुद्दा बना है, वह चिट्ठी नहीं लिखते तो आप लोगों के पास मुद्दा ही नहीं था। वही नेता जी बोल रहे थे कि आपके पास कोई मुद्दा है ही नहीं। लेकिन आपने अच्छा किया कि आपने अविश्वास प्रस्ताव लाया। हमारे बहुत सारे साथियों को बोलने का अवसर मिला, बहुत सारी जानकारियां आयी और उसके हिसाब से आगे काम भी करेंगे। आप लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद कि आप अविश्वास प्रस्ताव लाये। लेकिन आप सब से निवेदन है कि इस बीच में बहुत उतार चढ़ाव आये। बहुत लोगों को बोलना था, लेकिन समय हो गया वह नहीं बोल पाये। मुझे इसका दुख है कि हमारे साथियों को बोलने का मौका नहीं मिला। हम लोग ही 1-1 घण्टे तक बोल दिये तो दूसरों को मौका नहीं मिला। लेकिन मैं आप सब से यही निवेदन करना चाहूंगा कि अविश्वास प्रस्ताव में कोई दम तो नहीं है। आरोप में कोई दम नहीं है। अच्छा यह होगा कि आप इसको वापस ले ले। अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिये समय दिया, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव में दोबारा कुछ बिंदुओं के ऊपर बोलने का अवसर मिलता है।

अध्यक्ष महोदय :- समय बहुत ज्यादा हो गया है। आप अब क्या बोलेंगे?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्यमंत्री जी ने जो प्रश्न उठाया कि आप लोगों ने 41 हजार करोड़ रूपये का कर्ज लेकर क्या किया? मैं बहुत सारे बिंदुओं पर बात नहीं करूंगा।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- अध्यक्ष महोदय, इसके बाद और बोलने का अवसर नहीं मिलता और अवसर कहां से मिल जायेगा? आपको जो बोलना था वह खत्म हो गया।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, लेकिन मैं यह बोलना चाहूंगा कि 41 हजार करोड़ रूपये का जो कर्जा है। उसमें 8000 करोड़ रूपये इनका कर्जा है। जब कांग्रेस की सरकार थी, जब जोगी मुख्यमंत्री थे, तब का कर्जा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष महोदय, फिर हम लोग भी बोलेंगे।

संसदीय सचिव (श्रीमती रश्मि आशीष सिंह) :- अध्यक्ष महोदय, महिलाओं को बोलने का अवसर नहीं मिला है। हम लोग भी बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग चुप रहिये।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती रश्मि आशीष सिंह :- अध्यक्ष महोदय, महिला लोग नहीं बोल पाये हैं, हम लोग भी बोलेंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव (सिहावा) :- अध्यक्ष महोदय, हम लोगों को भी बोलने का अवसर नहीं मिला है, इसलिये आप दूसरों को भी मौका न दें।

एक माननीय सदस्य :- हां, फिर हम लोगों को भी अवसर दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- हो सकता है कि भाषण के बाद आप लोगों को अवसर मिले। इनको थोड़ा सुन कर देखते हैं। सुन लेते हैं, देखते हैं क्या है। हो सकता है आपका ..।

एक माननीय सदस्य :- अऊ का बच गे? काए ... तेला।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सुन कर मत देखिये। यह नियमों में है, प्रक्रियाओं में है, परंपराओं में है, जिसकी लंबी-लंबी हांक रहे थे। अभी इसमें लंबी-लंबी बहस चली है। यह कोई किसी का एहसान नहीं है। यह अविश्वास की प्रक्रिया में है कि वह आपका उत्तर दे सकते हैं। अब आप अवसर दें तो ठीक और न दें तो ठीक। लेकिन सुनकर देखते हैं यह..।

अध्यक्ष महोदय :- आप इतने गुस्से में क्यों बोल रहे हैं?

श्री अमितेश शुक्ल :- वह अधिकार क्षेत्र तो अध्यक्ष जी के पास है।

श्री अजय चंद्राकर :- यह मेरा स्वाभाविक स्वर है। मैं गुस्सा नहीं करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- सुनिये न।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता के बोलने के बाद, बोल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट सुनिये। आप गुस्सा मत होईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे तो गुस्सा हो ही नहीं सकता। आपने जो भाषा कही कि हम सुनकर देखते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- अरे, भईया मुझे नियम भी मालूम है, मुझे प्रक्रिया भी मालूम है इसलिए मैंने उन्हें सहज भाव से कहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने सुनकर देखते हैं कहा, इसलिए मैंने आपत्ति ली है।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं। मुझे पता है कि जब भी अविश्वास प्रस्ताव आता है तो उसका उत्तर देने के बाद, उसमें माननीय नेता प्रतिपक्ष बोलते हैं वह भले 1 मिनट बोलें या 5 मिनट बोलें। चाहे वह 10 मिनट बोलें। हमने तो माननीय नेता प्रतिपक्ष जी को यह भी कह दिया है कि आप इस बार सिर्फ हां की जीत हुई, ना की जीत हुई, में ही मान जाना। मत विभाजन मत कराईयेगा। वह सहज भाव से मानकर, आ गये तो कम से कम उनको इतना बोलने का अधिकार है वह बोलेंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ। पहली सरकार कांग्रेस की बनी और यह हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को मालूम था कि बहुमत कांग्रेस की है और सरकार कांग्रेस की बनेगी, लेकिन उन्होंने बहुत उदार मन से छत्तीसगढ़ राज्य को छत्तीसगढ़ की जनता को सौंपा। इस प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी, माननीय जोगी जी मुख्यमंत्री बने, आप राजस्व मंत्री बनें। अलग-अलग मंत्री बने होंगे, मुझे राजस्व मंत्री का याद है वह लोक स्वास्थ्य मंत्री भी थे, उस समय आपने सबको एक नल जल योजना दी थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, तीन सालों की सरकार में छत्तीसगढ़ नये राज्य का निर्माण हुआ था और नये राज्य के निर्माण होने के बाद, आधारभूत संरचना की कमी थी। जोगी जी, 3 सालों तक मुख्यमंत्री रहे, जब माननीय डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री बनें तो उस समय जोगी जी की सरकार से 8 हजार करोड़ रूपये का कर्ज विरासत में मिला। डॉ. रमन सिंह जी ने 15 सालों तक सरकार चलायी। मैं आपके सामने कुछ आंकड़े रख देता हूँ। उस समय 33 हजार करोड़ का कर्ज था 15 साल मतलब लगभग सवा दो ढाई के आसपास में एक साल में कर्ज लिया। जब राज्य बना तो 3 साल बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तब उस समय राष्ट्रीय राजमार्ग 2225 किलोमीटर था, जिला मार्ग की लम्बाई 2118 किलोमीटर थी। वर्ष 2018 में राष्ट्रीय राजमार्ग की लम्बाई 3526 किलोमीटर हो गई और मुख्य जिला मार्ग 2118 किलोमीटर से बढ़कर, 11 हजार 501 किलोमीटर हो गई। यह हम लोगों ने खर्च किया। इसी तरह से वर्ष 2003 में प्रधानमंत्री सड़क योजना की लम्बाई 1 हजार 72 किलोमीटर थी और यह वर्ष 2018 में बढ़कर, 22 हजार 750 किलोमीटर हुई।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मालगाड़ी पीछे लुड़कने वाली है।

अध्यक्ष महोदय :- कृपया खत्म होने दीजिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 1 हजार से 22 हजार 750 किलोमीटर हुई। प्रदेश में वर्ष 2003 में कुल सड़कों की लम्बाई 29 हजार 900 किलोमीटर थी। यह वर्ष 2018 में बढ़कर, 61 हजार 800 किलोमीटर हुई। तो पैसा कहां खर्च हुआ? यहां सड़कों का क्या महत्व है, यह मुझे समझाने की जरूरत नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके साथ में मेडिकल कॉलेज खोले गए। विद्युत सब स्टेशन 400 के.व्ही., 277 सर्किट के.व्ही, एक हजार 827 किलोमीटर लाईन, 2022, 2020 के.व्ही. लाईन, मैं डिटेल में नहीं जाऊंगा, लेकिन जो कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं हैं

श्री सत्यनारायण शर्मा :- इसके बाद रिजल्ट क्या रहा ?आप लोग केवल 14 रह गये।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिसमें हम लोगों ने खर्च किया। लाईन का विस्तार किया।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- क्या लाईन का विस्तार हुआ ?आपकी लाईन तो कटी हुई है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपने कुल मिलाकर 75 हजार पम्प का कनेक्शन दिया। 15 सालों में 4 लाख 75 हजार पम्प का कनेक्शन दिया। धान खरीदी 12 लाख मेट्रिक टन से 17 लाख मेट्रिक टन पहुंचा है।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- इसके बाद रिजल्ट क्या रहा ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 14 प्रतिशत ब्याज की राशि रही।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- माननीय नेता जी, उसके बाद तो रिजल्ट आ गया।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अल्पकालीन ऋण पर 14 प्रतिशत ब्याज की राशि उसको जीरो प्रतिशत पर देने का काम किया, बुनकर सोसायटी को अपने पैरों पर खड़ा करने का काम किया। माननीय अध्यक्ष महोदय, साक्षरता 64.68 प्रतिशत से 71 प्रतिशत हुई। स्कूल 21082 से 60726 हुई। छात्रावास 1873 से 3252 हो गया। सरस्वती सायकल योजना शुरू की गयी। उसका परिणाम यह हुआ कि जो ड्राप अवरेट 11 प्रतिशत था, वह एक प्रतिशत हुआ। यह इसका लाभ मिला। विश्वविद्यालय की संख्या बढ़ाई गयी। आंगनबाड़ी 20 हजार से 52365 किया गया। माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल में आपके स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय से लेकर कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि महाविद्यालय, आयुर्वेदिक कॉलेज, सिंचाई की क्षमता में जो खर्च किए, पूरा विस्तार करने के बाद हम लोगों ने 15 साल में कुल 33 हजार करोड़ रूपए कर्ज लिया । यह सरकार न सड़क बना पा रही है, केवल 57 स्कूल को अपग्रेड किए हैं। इस सरकार के आने के बाद, स्वामी आत्मानंद स्कूल के बाद, एक भी नये स्कूल न खोले गये, न अपग्रेड किए गए। इन्होंने कहा कि हम लड़की के बाद लड़के को सायकल देंगे। लड़के का सायकल कहां है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने जो खर्च किया। आज जो आधारभूत संरचना है, वही दिखाई दे रहा है। मैं चाहता हूं कि मुख्यमंत्री जी बड़ी लाईन खींचे लेकिन बड़ी लाईन खींचने के अलावा यह मिटाने का काम कर रहे हैं। यह कांग्रेस की सरकार चल रही है। आज केवल कर्ज ही बढ़ रहा है लेकिन जहां विकास होना चाहिए, अधोसंरचना निर्माण होना चाहिए, सारी गति रूकी हुई है। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मैं कहना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि यह सदन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल...।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष जी, एक मिनट। यदि समय दे दें तो मैं पूरा बता दूं, कितना-कितना सड़क, बिल्डिंग बनाए हैं, ये बनाएं, वह बनाएं, सब गिनवा देता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह परंपरा नहीं है।

श्री भूपेश बघेल :- परंपरा नहीं है लेकिन वे कहां वर्ष 2003 में पहुंच गये।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए छोड़िए।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - ''यह सदन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल एवं उनके मंत्रि-मंडल के विरूद्ध अविश्वास व्यक्त करता है।''

अविश्वास का प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ।

(मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्षीय उद्बोधन

पंचम विधान सभा का यह चौदहवां सत्र जो कि पावस सत्र है, उसका अंतिम कार्यदिवस है, यह सत्र 20 जुलाई से 27 जुलाई 2022 तक आहूत रहा, इस 8 दिवसीय सत्र में कुल 6 बैठकें सम्पन्न हुई, आज सत्र समापन के अवसर पर मैं सर्वप्रथम सत्र के सुव्यवस्थित संचालन में सहयोग के लिए सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, मानीय संसदीय कार्य मंत्री जी एवं आप सभी माननीय सदस्यों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

इस सत्र आरंभ होने के पूर्व राष्ट्रपति निर्वाचन 2022 का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। माननीया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी देश की 15वें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुई, मैं अपनी ओर से और सदन की ओर से उन्हें सादर बधाई देता हूं एवं अपेक्षा करता हूं कि उनका आशीष और स्नेह हमारे छत्तीसगढ़ राज्य को विशेष तौर पर प्राप्त होगा। (मेजों की थपथपाहट)

यह हमारे लिए उपलब्धि है कि इस पावस सत्र में छत्तीसगढ़ राज्य के विकास से जुड़े प्रत्येक विषयों पर आप माननीय सदस्यगणों ने सार्थक परिणाममूलक चर्चा की है। संसदीय लोकतंत्र में सबसे बड़ी अपेक्षा यह होती है कि पक्ष प्रतिपक्ष लोकहित के मुद्दे पर एकमत हों, छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिए यह गौरव का विषय है कि यह पवित्र सदन राज्य के विकास और सुखमय भविष्य के लिए वचनबद्ध है। इसका एक अच्छा उदाहरण है कि इस पावस सत्र में दो महत्वपूर्ण अशासकीय संकल्पों को आप पक्ष प्रतिपक्ष के सदस्यगणों ने सर्वमतेन पारित किया। छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिये यह गौरव का विषय है कि यह पवित्र सदन राज्य के विकास और सुखमय भविष्य के लिये वचनबद्ध है । इसका एक अच्छा उदाहरण है कि इस पावस सत्र में 2 महत्वपूर्ण अशासकीय संकल्पों को आप पक्ष-प्रतिपक्ष के सदस्यगणों ने सर्वमतेन पारित किया । छत्तीसगढ़ विधानसभा की उच्च संसदीय परंपराओं का यह भी एक उत्कृष्ट उदाहरण है । मैं समझता हूं कि आपके इन प्रयासों से विधायिका का सम्मान बढ़ा है, संसदीय लोकतंत्र को मजबूती देने में आपकी सहभागिता प्रशंसनीय है । छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान राज्य है । यहां की सम्पूर्ण व्यवस्था कृषि पर आधारित है और जब यहां का किसान संपन्न और प्रसन्न होगा तब राज्य के विकास की परिभाषा पूर्ण होगी । सदन के नेता माननीय श्री भूपेश बघेल जी और उनकी सरकार को किसानों के विषय में लिये गये निर्णय के लिये बधाई देता हूं । वहीं माननीय नेता प्रतिपक्ष,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय श्री धरमलाल कौशिक, मुख्य प्रतिपक्ष के सभी सदस्यगण, जनता कांग्रेस के नेता भाई धर्मजीत जी, बहुजन समाज पार्टी के नेता श्री केशव चंद्रा जी एवं उनके अन्य दलों के अन्य सदस्यों को इस बात के लिये धन्यवाद देता हूं कि आप सभी ने राज्य के किसान भाईयों के हितों के संरक्षण के लिये बहुत ही संजीदगी और गंभीरता से अपनी बात को रखा है ।

अब मैं आपको इस पावन सत्र में संपादित हुए संसदीय कार्यों के संक्षेप में सांख्यिकीय आंकड़ों से अवगत कराना चाहूंगा । इस पावन सत्र की कुल 6 बैठकों में लगभग 36 घंटे 50 मिनट चर्चा हुई, इन 6 बैठकों में 51 प्रश्न सभा में पूछे गए जिनके उत्तर शासन द्वारा दिए गए । इस प्रकार प्रतिदिन प्रश्नों का औसतन लगभग 8.5 प्रश्नों का रहा । इस सत्र में सभी तारांकित प्रश्न 459 एवं अतारांकित प्रश्न 435 सूचना प्राप्त हुई इस प्रकार कुल 894 प्रश्नों की सूचनाएं प्राप्त हुईं । इस सत्र में ध्यानाकर्षण की कुल 252 सूचनाएं प्राप्त हुईं जिसमें से 76 सूचनाएं ग्राह्य एवं 155 अग्राह्य हुईं एवं 21 सूचनाएं शून्यकाल में परिवर्तित हुईं । ग्राह्य ध्यानाकर्षण की सूचनाओं में से 9 विषय से संबंधित सूचनाओं पर सदन में चर्चा हुई तथा 1 ध्यानाकर्षण की सूचना व्यपगत हुई । इस सत्र में स्थगन की कुल 89 सूचनाएं प्राप्त हुईं जिसमें से 75 सूचनाएं अग्राह्य हुईं तथा एक विषय से संबंधित 14 स्थगन की सूचनाओं की ग्राह्यता पर सदन में चर्चा हुई । इस सत्र में नियम-139 के अंतर्गत 1 सूचना प्राप्त हुई जो अग्राह्य हुई । शून्यकाल की 49 सूचनाएं प्राप्त हुईं थीं, 28 सूचनाएं ग्राह्य और 21 अग्राह्य रहीं । वर्तमान में 89 याचिकाएं माननीय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की गई जिनमें 38 ग्राह्य और 43 अग्राह्य रहीं । इस सत्र में अशासकीय संकल्प की 11 सूचनाएं प्राप्त हुईं जिनमें से 6 ग्राह्य और 5 अग्राह्य हुए और 2 अशासकीय संकल्प चर्चा उपरांत स्वीकृत हुए । इस सत्र में एक शासकीय संकल्प की सूचना प्राप्त हुई एवं चर्चा उपरांत स्वीकृत हुआ । इस सत्र में विनियोग विधेयक सहित 13 विधेयकों की सूचनाएं प्राप्त हुई और सभी विधेयक चर्चा उपरांत पारित हुए ।

वित्तीय कार्यों के अंतर्गत प्रथम अनुपूरक अनुमान पर 4 घंटे 48 मिनट चर्चा हुई । पंचम विधानसभा के इस पावस सत्र में प्रतिपक्ष द्वारा अविश्वास प्रस्ताव लाया गया, जिस पर लगभग 12 घंटे 32 मिनट चर्चा हुई, पश्चात् अविश्वास प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ ।

मैं इस अवसर पर सभापति तालिका के माननीय सदस्यों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं, जिन्होंने सभा की कार्यवाही के संचालन में मुझे सहयोग दिया । मैं सम्माननीय पत्रकार साथियों एवं प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने सदन की कार्यवाही को बड़ी गंभीरता से प्रचार माध्यमों में प्रमुखता से स्थान देकर प्रदेश की जनता को सभा में सम्पादित कार्यवाही से अवगत कराया ।

इस पावस सत्र के समापन के अवसर पर राज्य शासन के मुख्य सचिव सहित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूं, सुरक्षा व्यवस्था में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

को भी बधाई देता हूं जिन्होंने सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था इस पावस सत्र के दौरान कायम रखी । मैं विधानसभा के सचिव श्री दिनेश शर्मा सहित सचिवालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रशंसा करता हूं । श्री दिनेश शर्मा का यह पहला सत्र है और उन्होंने कार्यमंत्रणा समिति में हम सबसे आशीर्वाद मांगा था कि यह उनका प्रशिक्षणकाल होगा । आप सबने उन्हें सहयोग प्रदान किया इसके लिये मैं आप सबको धन्यवाद देता हूं ।

देश अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आगामी स्वतंत्रता दिवस हम सबके लिए विशेष महत्व रखता है। मैं आप सभी को स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव की बधाई देता हूं। सत्र समापन अवसर पर आगामी सत्र की तिथियों की घोषणा की परंपरा रही है, तत्संबंध में यह अनुमान है कि पंचम विधान सभा का पंद्रहवां सत्र दिसंबर माह के द्वितीय, तृतीय सप्ताह में आहूत होने की संभावना है। आप सबको कल आने वाले हरेली त्यौहार की बधाई देता हूं।

आइये हम सब मिलकर अपने छत्तीसगढ़ राज्य को समग्र उन्नति के शीर्ष पर पहुंचाने का पुनीत संकल्प लें। धन्यवाद।

जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी को बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने जिन-जिन के प्रति धन्यवाद किया है, हम सब लोग सबके प्रति धन्यवाद देते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगान होगा, माननीय सदस्यगण राष्ट्रगान हेतु अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

राष्ट्रगान

"जन-गण-मन"

(राष्ट्रगान जन-गण-मन की धुन बजाई गई)

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित।

(मध्य रात्रि 1 बजकर 27 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हुई)

दिनेश शर्मा

सचिव

छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छ.ग.)

दिनांक 27 जुलाई, 2022

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं